गवाह है शेखूपुरा

सामयिक प्रकाशन
३५४३, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-११०००२

गवाह है शेरखुदा

धर्मेन्द्र गुप्त

मूल्य पचास रुपये
प्रकाशक जगदीश भारद्वाज
सामयिक प्रकाशन
३५४३ जटवाड़ा, दरियागंज,
नई दिल्ली ११०००२
संस्करण प्रथम, १९८५
सर्वाधिकार धर्मेन्द्र गुप्त, नई दिल्ली
कलापक्ष पाली
मुद्रक शान प्रिंटर्स, दिल्ली ३२

GAVAH HAI SHEKHUPURA
(Novel) by Dharamendra Gupta Rs 50.00

पिछले एक पखवाडे से मन्दिर को सजाया जा रहा है। पहले मिस्त्री आये, छोटी-मोटी टूट-फूट ठीक की। फिर पुताई वाले लम्बी लम्बी सीढियाँ लेकर आ गये, एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक सफेदी कर दी। फिर रग रोगन का नम्बर आया, सारे दरवाजे खिडकिया चमक गय, पीतल के कुण्डा परनीबू लगाकर चमकाया गया। मन्दिर के बडे दरवाजे पर तो दो आदमी सुबह से शाम तक जूझते रहे। सडक पर चलते हुए आदमी की नजर सबसे पहले इन्ही बडे दरवाजो पर जाती है। इनको चमकाना बहुत आवश्यक है। और आज जन्माष्टमी के दिन तो खुद शकरलाल सुबह से मन्दिर म आकर जम गये हैं। अपने सामने सारे मन्दिर की सजावट करायेंगे, कही कोई कमी नही रहने देंगे। साल का बडा त्योहार है जन्माष्टमी। मन्दिर अगर कृष्ण के जन्म दिन पर नही सजेगा तो फिर कब सजेगा।

"अरे, बायें हाथ पर झण्डी को और ऊपर उठा कमीने, देखता नही है झण्डी टेढी जा रही है।" मन्दिर के सामने वाले मकान के चबूतरे पर खडे होकर शकरलाल चिल्लाये, "ठीक से काम करो साला, नही तो खाल खीच लूगा।"

"हा, हाँ झण्डी बिलकुल सीधी लगाओ, झण्डी से ही तो सारी शोभा है।" साथ खडे भगतू पण्डत ने हाँ मे हाँ मिलाई।

अभी सुबह के नौ भी नही बजे, लेकिन धूप तेज हो गई थी। पसीने से कपडे तर होने लगे। पीछे छाता लिये खडे हरिया पर भगतू पण्डत चिल्ला पडे, "छाता सीधा कर, देखता नही मालिक पर धूप पड रही है, पसीने मे नहा गये है।"

"तुम्हें पसीने की पड़ी है, यहाँ सारा इंतजाम चौपट है।" शंकरलाल गुस्से में बोले, "हम पूछते हैं पण्डत तुम एक हफ्ते से कर क्या रहे थे, कोई चीज हमें ढंग की नहीं दिखाई दे रही।'

'मालिक सब हो गया है, आप नाहक गुस्सा कर रहे हैं।"

"क्या हो गया है, खाक। हम पूछते हैं अभी तक शहनाई क्यों नहीं बजी। जन्माष्टमी का दिन है, सर पर सूरज चढ़ आया, अभी तक मन्दिर में शहनाई नहीं बजी।"

"मालिक, शहनाई वाले आ गये हैं नाश्ता पानी कर रहे हैं, अभी बजवाये देते हैं शहनाई।" भगतू पण्डत ने सर झुकाकर कहा।

"लखनऊ से हमने शहनाई वालों को क्या सिर्फ नाश्ता-पानी करने के लिए ही बुलाया है ?" शंकरलाल फिर चिल्लाये, "अरे जाओ, उन्हें पकड़कर लाओ। कहो, अपनी तुतही में हवा फूँकें।"

डाँट खाकर भगतू पण्डत लम्बे डग भरते शंकरलाल के घर की ओर चल पड़े।

शंकरलाल आँखें तरेरते, जाते हुए पण्डत को देखते रहे, फिर पास खड़े नौकर नन्कू की ओर घूमकर बोले, "तुम साले खड़े खड़े क्या तमाशा देख रहे हो। तुमसे चूना-तम्बाकू मोज में नहीं दिया जाता। चिल्लाते चिल्लाते हमारा गला पड़ गया।'

नन्कू ने घबराकर जल्दी से जेब में पड़ी तम्बाकू की पुड़िया और चूने की डिबिया निकाली। बायें हाथ की हथेली पर चुटकी से तम्बाकू रखकर, उस पर ज़रा सा चूना लगाकर, सीधे हाथ के अँगूठे से घिस्सा देने लगा। फिर दो-तीन बार सीधे हाथ की उँगलियाँ मिलाकर फटकी दी। अब तैयार हो गया मुँह का मसाला। बायें हाथ की मुट्ठी को पूरा खोलकर मालिक के आगे बढ़ा दिया।

शंकरलाल ने चुटकी से तम्बाकू उठाई और मुँह खोलकर दाढ़ में दबा ली। 'पीपल महाराज को वस्त्र पहना दिये गये कि नहीं ?' अपने ही प्रश्न के उत्तर को पाने के लिए शंकरलाल चबूतरे से नीचे उतर पड़े। सड़क पार की, मन्दिर की सीढ़ियाँ चढ़ी, और दरवाजा पार करके मन्दिर के आँगन में आकर खड़े हो गये।

मन्दिर के खूब बड़े आँगन म बायी ओर कोने मे कुआँ है, उसी के पास हनुमान जी स्थापित हैं। इससे थोड़ा हटकर है पीपल का पेड़। कितनी उमर है इस पीपल के पड की, कोई नही बता सकता। हाँ, उमर का अन्दाजा कुछ कुछ इससे लगाया जा सकता है कि पिछले सात साल मे जमीन के नीचे-नीचे बढती जडो ने दो बार कुएँ की मेड को तोडकर कुएँ स लगी मन्दिर की दीवार मे दरार डाल दी। मन्दिर के आँगन को पार करके पीपल की जड़ें मन्दिर को नुकसान पहुँचायेंगी, इस पर किसी को विश्वास नही था। अभी तक कोई ऐसी बात सामने आई भी नही। मन्दिर ने सौ साल की उमर तो कब की पार कर ली। गदर से पहले का बना है मन्दिर, ऐसा ही कहा जाता है। फिर देवता को देवता कैसे नुकसान पहुँचा सकता है। पीपल भी तो देवता की श्रेणी मे आता है। मन्दिर म प्रवेश करने वाला सबसे पहले पीपल को ही प्रणाम करता है। सुबह-शाम जल चढाया जाता है। रोली अक्षत के साथ ही तने के चारो ओर कच्चा लाल-पीला सूत लपेटा जाता है। स्त्री पुरुष सभी परिक्रमा करते है। इस समय तो तने के चारो ओर एक गज चौडा लाल कपडा लपेटा गया है पर चमकीला गोटा लगा जो दुपट्टा खास तौर पर तैयार कराया गया, वह क्या नही उढाया गया। "पुजारी जी पुजारी जी " शकरलाल ने पुकारा।

कमर थोडी झुक गई है पुजारी जी की। चलते हैं तो शरीर दायें-बायें हिलता है। पुकार सुना तो दौड पडे।

"वह गोटे वाला दुपट्टा जो हमने बनवाया है, वह कहा है।" शकरलाल ने गरज के पूछा।

"कोठरी मे रक्खा है मालिक।' पुजारी जी ने हाथ जोडकर उत्तर दिया।

"कोठरी मे क्या दुपटटे का अचार पड रहा है? पीपल महाराज को क्यो नही पहनाया गया। जाओ, अभी लाकर पहनाओ।"

डाट खाकर पुजारी जी दुपट्टा लेने कोठरी की तरफ भागे।

"मालिक शहनाई वाले आ गये।" भगतू पण्डत ने पास आकर सूचना दी।

"अरे आ गये हैं तो चबूतरे पर दरी बिछी है, बैठाओ, शुरू कराओ शहनाई। इसमें पूछने की क्या बात है।" फिर शहनाई वालों को देखते खुद ही मन्दिर के बाहर चले आये, "आप लोग खड़े क्यों हैं, बैठो और शुरू करो।"

शंकरलाल की रोबीली आवाज़ को सुनकर शहनाई वाले घबरा गये। लपककर चबूतरे पर चढ़ गये। एक लाइन में पल्थी मारकर पाँचों शहनाई वाले बैठ गये। अपने बजाने वाले सामान को झाड़ पोंछकर सुर निकालने की तैयारी करने लगे।

"मालिक हुक्का तैयार है, कुर्सी लगा दी है, तनिक बैठकर सुस्ता लें।"

शंकरलाल ने घूमकर देखा, भगतू पण्डत के पास मातादीन हुक्का लिये खड़े थे। सड़क के दूसरी ओर चबूतरे पर कुर्सी भी घर से लाकर रख दी गई थी। शंकरलाल सड़क पार करके चबूतरे पर चढ़कर कुर्सी पर बैठ गये। हालांकि धूप उन पर सीधे नहीं पड़ रही थी, मगर फिर भी हरिया छत्र की तरह छाता ताने खड़ा था। मातादीन ने बगल में दबी खड़ाऊँ भी शंकरलाल के पैरों के पास रख दी, "घुंडी ठीक करा दी मालिक।" मातादीन ने कहा।

"अच्छा!" शंकरलाल ने खड़ाऊँ पहनते हुए सर हिलाया।

इधर शहनाई का स्वर उभरा, उधर शंकरलाल ने हुक्के के दो-तीन कश लेकर आँखें मूंदकर सर पीछे कुर्सी की पीठ पर टेक दिया। बहुत राहत पाई शंकरलाल ने। शहनाई का उठता स्वर जब ताल पर आता तो वह भी सर हिलाकर दाद देते। पर आसपास खड़े मुसाहिब ऊब गये थे। भगतू पण्डत ने ही पहल की, "मालिक, चलें बगिया में चलकर आराम करें। सुबह से भाग-दौड़ ने थका दिया।"

"हाँ हाँ, ठीक है, चलो।" शंकरलाल उठकर खड़े हो गये। खड़ाऊँ में पैर को ठीक से जमाया, चबूतरे से उतरकर बगिया की ओर चल दिये। पीछे पीछे मातादीन हुक्का लिये चल रहा था, हरिया अब भी छाता ताने था, नक्कू हाथ हिलाता साथ था, और भगतू पण्डत आगे आगे भागकर बगिया का छोटा फाटक खोलने की जल्दी में थे।

मन्दिर की दीवार जहाँ मोड़ लेती है ठीक उसी के सामने बगिया की

हद शुरू हो जाती। दोनो के बीच मे सडक लेटी हुइ है। भगवान की पूजा मे प्रतिदिन ताजे फूल चाहिए इसीलिए बगिया बनवाई गई। खूब लम्बी चौडी जगह को घेरकर बगिया को बनाया गया। शकरलाल ने इसे सुबह-शाम की सैरगाह मे बदल दिया। एक कोने मे बठने उठने के लिए एक वडा कमरा और बरामदा बनवाया, उसी के पास कुआँ खुदवाकर नहाने का प्रबन्ध भी कर दिया। चहलकदमी के लिए बगिया के चारो ओर खिंची दीवार के पास क्यारी से जरा हटकर पक्का फुटपाथ बनवा दिया, और बगिया के बीचोबीच गोलाई मे चार बेंचें खास तौर पर बनवाईं, जिसके बीच मे जमीन पर बनी हुई है चौपड। शाम को इसी जगह बैठक बाजी जमती है। चौपड की गोटो को खानो मे सजाकर, दोनो हाथो की हथेलियो मे चौपड के तीनो पासो को खरड खरड करते हुए जब शकरलाल पासें फेंकते, तो चारो ओर हलचल मच जाती। यह तो हाथो का ही करिश्मा था कि पासे हमेशा सीधे ही पडते। तीन-चार हाथ मे ही सामने वाले की गोटी पिट जाती।

पर इस समय बगिया के कमरे मे तख्त पर लेटे हुक्का गुडगुडाते शकरलाल को चौपड की बाजी जीतने की चिन्ता नही थी। उन्हे तो इस बात की चिन्ता सता रही थी कि नत्थूसिह गुलाब बाई को स्टेशन से घर तक ठीक से ला भी पायेगा।

"अरे पण्डत, नत्थूसिह को सब ठीक से समझा दिया था। गुलाब बाई के साथ उनके साजिन्दे भी हैं, अकेला सबको ठीक से ले भी आयेगा ?"

"क्यों नही ले आयेगा मालिक, कोई बच्चा तो है नही। दसियो बार स्टेशन से आदमियो को लाया है। दो इक्के और दो ताँगे भेजे हैं।"

"सो तो ठीक है। पर नत्थूसिह आदमी अफीमची है। अफीम की पिनक मे न जाने क्या कर गुजरे। पिछले साल स्वामी जी को लेने भेजा था, सो पट्ठा आने वाली गाडी की जगह जाने वाली गाडी को देखकर लौट आया। यहाँ आकर बोला स्वामी जी नही आये,, पीछे-पीछे स्वामी जी गिरते पडते आ पहुँचे। कितनी किरकिरी हुई थी हमारी।"

"ठीक कहा मालिक। पर आपने भी तो ऐसी सजा दी दिमाग ठिकाने आ गया। सब अफीम खाना भूल गया, पन्द्रह दिन तक घुमने नही दिया

था घर में। भूखों मरने लगा था।" भगतू पण्डत ने जवाब दिया।

"गाड़ी तो दस बजे आ जाती है, अब तक तो आ जाना चाहिए था।"

"गाड़ी की क्या है, दस पाँच मिनट लेट भी तो हो जाती है।"

"अरे, अब तो ग्यारह से ऊपर हो रहे हैं, अब तक तो आ जाना चाहिए था।" शंकरलाल उठकर बैठ गये, 'पण्डत तुम घर जाओ, मातादीन तुम भी इनके साथ जाओ। एक बार सारा इन्तजाम देखो। गुलाब बाई के ठहरने के लिए जो दो कमरे हैं, उनमें देखो कोई कमी तो नहीं है। खाने और चाय का इन्तजाम भी देखो।"

"मालिक आप भी चल के नहा धो लें। भोजन का समय हो गया है।"

'ये लो, अच्छी कही तुमने। अरे अगर हम चले जायेंगे तो यहाँ गुलाब बाई को कौन ताँगे से उतारेगा। इतनी दूर से हमारे बुलाने पर आ रही है हम अपने सामने नहीं पायेंगी तो क्या सोचेंगी, बाला।'

क्या बोलेंगे भगतू पण्डत, उनकी तो बोलती बन्द हो गई। धोती की लाँग ठीक करते हुए बगिया से निकलकर घर की ओर चल दिये, पीछे पीछे मातादीन चल रहे थे।

मन्दिर से थोड़ा हटकर पीछे की तरफ हजार गज में शंकरलाल ने अपने लिए मकान बनवाया था। दुमंजिले मकान में दो बड़े कमरों को मिलाकर पूरे दस कमरे थे। बीच में आँगन इतना बड़ा था कि दो सौ आदमी पंगत में बैठकर आराम से खाना खा लें। इसी आँगन में जब तब आदमियों की भीड़ जुटती रहती थी, कभी नाच गाने के लिए, तो कभी बड़े अफसरों की पार्टी के लिए, या इसी तरह के दूसरे कामों के लिए। रात के दस बजे से सुबह चार बजे तक जुआ तो कुछ खास मौकों को छोड़कर रोज ही खेला जाता था। यह बंधा टका काम था इसमें व्यवधान नहीं पड़ता। जुए की आमदनी पर ही तो शंकरलाल टिके हुए थे। जो नाल निकलती वह शंकरलाल की होती। दूर-दूर से लोग जुआ खेलने आते, सैकड़ों का वारा-न्यारा होता, पर मजाल है कि कोई उफ कर जाये। अपने हिस्से की जमींदारी तो न जाने कब की बेच खाई। अब तो यह जुए से निकली हुई 'नाल' की ही आमदनी है। इसी के सहारे जिन्दगी चल रही है।

मकान के दरवाजे पर आकर गली खतम हो जाती। इस गली म जो मकान बने हुए है, उनमे रहने वाले ही गली मे आते जाते हैं, या फिर जो शकरलाल की कृपा पाये हुए हैं वह गली मे पैर रखते हैं। दूसरे किसी की तो आने की हिम्मत नही है। यह सबको मालूम है कि शकरलाल के पास दुनाली बदूक है, कोई बोलेगा तो भूनकर रख देंगे। पुराने जमीदार हैं, यानी बोलचाल की भापा मे लम्बरदार। सारे तौर तरीके शाही हैं, इस शाहखर्ची के लिए पैसा कहा से आता है, बस्ती के लोग इसी विषय पर न जाने कब से चर्चा करते आ रहे हैं, पर स्थायी उत्तर नही खोज पाते। कुछ का तो कहना था कि आस-पास के डकैत भी शकरलाल से मिले हुए हैं। डाका डालने के लिए उनकी दुनाली बदूक किराये पर ले जाते है। वैसे बदूक के दशन बस्ती के लोगो मे से किसी ने भी नही किये। इतना साहस भी किसी म नही था। बदूक के दशन का मतलब था अपनी जान से हाथ धोना। बस वस ऐसी चीजें दूर से ही भली।

मकान के पीछे भी काफी खाली जमीन पडी है। इसके बाद आ जाती है मदिर से घूमती हुई वडी सडक। एक ओर छोटी गली भी है, उसी के पास है गऊशाला। इस तरह मकान के सामने अगर कोई खतरा नज़र आये तो पीछे से भागने के अच्छे मौके मिल जाते हैं। साथ ही पीछे से चुपचाप अगर कोई मकान मे आना चाहे, तो उसको भी कोई परेशानी नही होती। आगे वाली गली के लोग कुछ जान नही पाते कि कौन आया और कौन गया। इसीलिए पीछे की तरफ के बडे कमरे का शकरलाल ने बैठक का रूप दे रक्खा है। दो साल के बाद जब उनसे मदिर का प्रबध छिन जाता है तो उन्हें बगिया भी छोड देनी पडती है। ऐसे मे बैठने उठने के लिए मकान का पीछे वाला कमरा ही काम आता है। उस समय पीछे के खाली मैदान को बगिया का रूप द दिया जाता। नये पेड पौधे लगाये जात, क्यारिया ठीक की जाती। छोटे से कुएँ की मिट्टी निकलवाकर साफ कराया जाता। मदिर मे सुबह पूजा करने आने वाले भी अब फूल इसी बगिया से लेने लगते। मदिर की बगिया म तो बस घास ही उगती रहती। चचेरे भाई हरनारायण तो प्रबध के नाम पर, कुएँ के पास, एक दम जगह से गाठें लगा रस्सी और फूटी लाहे की बाल्टी ही रखना जानते हैं। दो साल के लिए

बगिया शकरलाल से जरूर छिन जाती लेकिन बगिया के सामने से निकलते समय लोग उन्ही के नाम का जाप करते। बगिया के कोने मे बना कमरा और कमरे के आगे बरामदे के ऊपर अग्रेजी के मोटे मोटे अक्षरो मे लिखा हुआ शकरलाल का नाम यह बताता है कि असली मालिक कौन है।

"बाई जी आ गयी, बाई जी आ गयी।" एक साथ तीन लडके चिल्लाते हुए बगिया मे घुसे।

शकरलाल हडबडाकर उठ बैठे। "अबे हरिया के बच्चे, जल्दी से कुर्सी ठीक कर, मूढे ला।" शकरलाल कमरे से बाहर निकल आये।

दोनो तागे और इक्के बगिया के बडे दरवाजे पर आकर रुक गये। गुलाब बाई, अपने साथ दो कमसिन लडकियो को लिए हुए तागे से उतरी और बडे दरवाजे को पार करके बगिया मे घुसी। उनके पीछे चार साजिन्दे थे, नत्थूसिह तागे वाले को कुछ समझा रहे थे।

"आइये आइये बाई जी, हम तो सुबह से आपका इन्तजार कर रहे है।"

शकरलाल ने थोडा आगे बढकर सबका स्वागत किया, फिर सबको कमरे मे ले आये। गुलाब बाई और उनके साथ की लडकियाँ मेढक के ढग पर बनी कुर्सियो पर बैठ गयी, साजिन्दे मूढो पर जम गये। शकरलाल तख्त पर पल्थी मारकर बैठ गये। हरिया पुराने ढग का दोनो हाथो से डुलाने वाला ताड का बडा पखा अन्दर से ले आया, अब जोरो स हवा कर रहा था।

"कहिये, रास्ते म कोई तकलीफ तो नही हुई। भई हम तो डर रहे थे पता नही आप आयेंगी भी कि नहा।" शकरलाल ने थोडा तारीफ के स्वर मे कहा।

"लीजिए, आप भी कमाल करते है जमीदार साहब। आप बुलाये और हम न आयें, यह कैसे हो सकता है। आप जैसे कद्रदान मिलते कहाँ है, क्या रहमत भाई, मैं ठीक बोल रही हूँ न।" गुलाब बाई न पास मे बैठे तबल्ची रहमत को देखते हुए कहा।

बेशक बेशक, आप बजा फरमा रही हैं बाई जी।" रहमत न हाँ म हा मिलाई।

"अर नहीं गुलाब बाई, आप तो मजाक कर रही हैं। आपके चाहने वालो की तादात हजारा मे है। हम तो बस आपकी आवाज के गुलाम हैं। सीतापुर मे आपका गाना सुना था तो तय कर लिया था कि आपको जन्म-अष्टमी पर जरूर बुलायेंगे। आप आ गयी, हमारी खुशकिस्मती।" शकरलाल ने गद्‌गद होकर कहा।

"बस कीजिए, आप तो हमे आफताब बनाये दे रहे हैं।" गुलाब बाई खुलकर हँसी, "देखिये, आपने तो सिफ हमें बुलाया, हम अपने साथ चम्पा और जूही को भी लाये हैं। इनकी खूबियाँ आज रात देखियेगा।" गुलाब बाई ने साथ आई लडकियो का परिचय देते हुए कहा। चम्पा और जूही ने सर झुकाकर सलाम किया। शकरलाल ने हँसकर सलाम स्वीकार किया।

नत्थूसिह आकर एक कोने मे खडे हो गये। अब मौका पाकर बोले—"मालिक, सब सामान पहुँचा दिया है। आप सब भी चलें, आराम करें।"

"अरे कुछ नाश्ता पानी भी तैयार किया है या नही।"

' सब तैयार है, आप पधारें। बाहर ताँगा खडा है।"

"कहाँ जाना है ?" गुलाब बाई ने पूछा।

"हमने अपने मकान पर आपके ठहरने का इतजाम किया है। काई तकलीफ आपको नही होगी।" शकरलाल न बडे विश्वास से कहा।

रामस्वरूप कमरे मे आकर तख्त पर बैठ गये। नया धुला कुर्ता-पाजामा पहने थे। बालो मे बायी ओर माग निकाली हुई थी। सीधी तरफ बालो मे एक पत्ता भी माथे पर बनाया था। पान भी खाकर आये थे, होठो के किनारो पर लाली दिखाई दे रही थी।

"यह हमारे छोट भाई हैं, रामस्वरूप।" शकरलाल ने परिचय कराया।

गुलाब बाई के साथ ही चम्पा और जूही ने भी सलाम किया। साजिन्दो ने थोडा-सा मूढे से उठकर सलाम किया। रामस्वरूप ने हाथ जोड दिये।

"अब आप लोग चलें, नाश्ता पानी करें।" शकरलाल ने आग्रह किया, फिर नत्थूसिह से बाले, "देखो इन्हें पीछे के दरवाजे से ले जाना, गली से

नहीं। ताँगा खड़ा है न बाहर, उसी में ले जाओ। चलिये आप लोग।"

गुलाब बाई के उठते ही सब उठकर चल दिये। हरिया भी पीछे-पीछे चला गया। अब कमरे में शकरलाल और रामस्वरूप रह गये।

"शंकरऊ, एक बात कहनी है, एकदम गुस्सा न करना। बात सोचने समझने की है।" रामस्वरूप ने समझाकर कहना चाहा।

"कहो कहो क्या बात है।" शकरलाल ने हुक्के की नली को मुंह से लगा लिया था, गुडगुड की आवाज शुरू हो गई।

"हरनारायण सुबह से पिनाये हुये घूम रहे हैं। कह रहे हैं पतुरिया का नाच नहीं होने देंगे मन्दिर में। भजन पूजन के लिए है मन्दिर, अइयाशी के लिए नहीं है।"

"फिर हमारे काम में टाँग अडाई हरनारायण ने। अबकि हम इनकी टाँग ही तोड देंगे।" शकरलाल ने हुक्के की नली को मुह से हटाकर कहा।

"बस हो गयी शुरुआत।" रामस्वरूप झुझला गये, "बात समझोगे नहीं, गुस्सा करोगे। गुलाब बाई मुसलमान है, मन्दिर में जाना ठीक नहीं है।"

"क्यों ठीक नहीं है ? तीन साल पहले जब मन्दिर में चोरी हुई थी तो यही हरनारायण अब्दुल अजीज थानदार को लेकर मन्दिर के कोने-कोने में डोले थे। उसके बाद क्या मन्दिर गंगाजल से धोया गया था, बोलो ? अरे, गुलाब बाई तो कलाकार हैं, वह न हिन्दू हैं न मुसलमान। और आज मन्दिर में तो वह भजन ही गायेंगी। मुजरा तो हमारे घर में करेंगी। और हाँ, " शकरलाल ने तख्त पर हाथ पटककर कहा, "यह जो जरा-सी मरम्मत कराई थी मन्दिर के फर्श पे, वह भी तो जुम्मन मिस्त्री ने की थी। वह भी तो मुसलमान था, वह कैसे घुस गया मन्दिर में, तब नहीं बोले भगत जी। कहाँ घुस गयी थी सारी भगताई ?"

"देखो भइया, हम तो यह कहने आये हैं कि तुम तो इतनी भाग दौड कर रहे हो। इतना इन्तजाम किया है, अब जे हरनारायण अपनी खुरपेंची से कहीं गडबड न कर दें।"

"का गडबड करेंगे बोलो।" शकरलाल सीधा हाथ नचाकर बोले, "उनसे कह देना, शाम को जन्माष्टमी के उत्सव में हरदोई से डिप्टी साहब भी आ रहे हैं। सारे जिले के हाकिम हैं। सरकारी गाडी पर चढ-

घर आयेंगे, अरदली साथ होगा। जरा कलम हिला दी तो धोनी गराब हो जायेगी हरनारायण की। अभी स दो सिपाहियो की ड्यूटी लग गई है मन्दिर के सामन, पूछो क्यो ? थाने मे भी खबर आ गयी है कि डिप्टी साहब आ रहे हैं। दो बार थान का आदमी आकर पूछ गया है। यह सब हँसी-ठट्ठा नही है। यह सब मेल मुलाकात की बात है। उनसे कह दो चुपचाप घर मे बैठकर माला जपें, ज्यादा चूं-चपड न करें, नही तो रोते बन नही पडेगा।"

ठीक कह रहे हैं शकरलाल। ठाकुर साहब सिंह का बडा नाम है जिले मे। कचहरी मे डिप्टी रजिस्ट्रार हैं। जिले का कलक्टर तक उनसे राय लेकर काम करता है। अभी नौजवान है, दिल के रसिया। जब सुना गुलाब बाई आ रही हैं जमीदार शकरलाल के घर पर मुजरा करने, तो खुद ही कहला दिया, हम भी आ रहे हैं। अब भला कोई कैसे रोके, और क्यों रोके। हाकिम कोई रोकने के लिए थोडी ही होता है, वह तो पलको पर बिठाने के लिए होता है। तुरन्त कहला भेजा शकरलाल ने, जरूर आयें सरकार, आपका ही घर है। हम तो सेवक हैं। जी भरके सेवा करेंगे सरकार की।

"अब सुबह से सारे इन्तजाम मे हम जो चकरघिन्नी की तरह घूम रहे है, सो क्या यो ही। अरे एक-एक चीज देखनी पड रही है, कही कोई कमी न रह जाये, हाकिम आ रहा है। आज हमारा जन्माष्टमी का बरत है, पानी तक नही पी सकते। सुबह से भूखे-प्यासे पडे हैं। पर नही, कुछ भी हो जाये, इन्तजाम सब चौचक होना चाहिए।" शकरलाल ने फिर हुक्के की नली को उठाकर मुह मे लगाया, लेकिन हुक्का ठण्डा पड गया था। गुस्से से नली पटक दी, चिल्लाये, "हरिया, ओ हरिया कहाँ मर गया है।"

"हरिया तो मकान पर गया है, काहे चिल्लाय रहे हो।" रामस्वरूप ने कहा।

"कोई ता यहाँ रहता, सब के सब भाग गये। एक नम्बर के हराम-खोर हैं।" शकरलाल खीज उठे, "हाँ, प्रसाद का प्रबन्ध तो ठीक है न, जरा ज्यादा ही बनवा लेना, कही कम न पड जाये।"

'नहीं नही, कम कैसे पडेगा, सुबह से काम चल रहा है। बूंदी छट गइ है, अब पजीरी भूनी जाय रही है। न हो चलकर देख लो।"

रामस्वरूप ने सफाई दी।

"चलो देख लें। उधर से ही घर चले जायेंगे। गुलाब बाई को भी देखना है, नाश्ता पानी ठीक से किया भी है। कोई साला यहाँ ठीक से काम नही करता। सब काम खुद देखना पड़ता है।" शंकरलाल ने खड़ाऊँ पहने, और रामस्वरूप के साथ चल दिये। पक्की जमीन पर खड़ाऊँ की आवाज चारों ओर गूँजने लगी खटर पटर, खटर पटर खटर पटर।

शाम होते होते मन्दिर भगवान कृष्ण जन्म के स्वागत में पूरी तरह सज धज के तैयार हो गया। सड़क पर आदमियों की रेलपेल शुरू हो गई। शहनाई वाले अभी नही आये, शहनाई आठ बजे से बजेगी। पर बच्चा लोग अपनी उछल कूद से अच्छा शोर मचाये हैं। इनमे हरिजन बच्चे भी शामिल हैं। मन्दिर म भले ही न घुस पायें, पर सडक पर खड़े होकर तो मजा ले ही सकते हैं। मन्दिर के अन्दर आंगन मे दरी बिछाई जा रही है। आंगन के बाद चौडा बरामदा है, उसके बाद बहुत बडा हॉल, और उसके बाद हैं छोटे छोटे तीन कक्ष, जिसमे भगवान की मूर्तियाँ विराजमान हैं। सामने के कक्ष म हैं राम और सीता, बाईं ओर के कक्ष म राधा और कृष्ण, दायीं ओर के कक्ष मे शिव-पार्वती। मन्दिर म सभी देवता विराजते हैं, किन्तु मन्दिर 'श्रीराम' के नाम से ही विख्यात है। इस समय भगवान के तीनो कक्ष बन्द हैं। पर्दा पड़ा है। कृष्णजी का जन्म होने के बाद ही पट खुलेंगे। हॉल के दोनो ओर भी बन्द-बरामदा है। उसके ऊपर भी बरामदा है, जिसे आधुनिक रूप मे बालकनी कह सकते हैं। इसम परिवार की, और मुहल्ले की स्त्रियाँ बैठेंगी। इसके बाद दो छोटे कमरे हैं। इनमे भगवान के काम आने वाली चीजें भरी रहती हैं। खास-खास आदमियों का उठना-बैठना भी होता है। नीचे भगवान के कक्ष के पीछे परिक्रमा के लिए गोल छोटी गली-सी बनी है। ऊपर इसे कमरो मे ही ले लिया गया है, इसलिए कमरे काफी बडे हो गये। सौ साल पहले मन्दिर बनवाया था शंकरलाल

के पिता और उनके दो भाइयो ने। एक गाँव मन्दिर के नाम कर दिया। उसी की आमदनी से मन्दिर का खर्च चलता है। तीन भाई थे शकरलाल के पिता, भगवानदीन चन्द्रमा प्रसाद, और बालकिशन। भगवानदीन के दो लडके हुए, स्वरूप नारायण और हरनारायण तथा दो लडकियाँ बुलाकी और शिब्बो। चन्द्रमा प्रसाद के तीन लडके हुए, रामलाल, जीवनलाल और शकरलाल। बालकिशन के सिर्फ एक लडका हुआ रामस्वरूप। स्वरूप नारायण के तीन लडके हुए पर एक जवान होने से पहले ही मर गया, दो बचे हैं बलराम और सज्जन। बच्चे अभी पाठशाला की पढाई भी पूरी नही कर पाये कि घोर गरीबी को झेलते हुए स्वरूप-नारायण स्वर्ग सिधार गये। बडे भाई की मौत के छोटे भाई हरनारायण बहुत कुछ जुम्मेदार हैं। बँटवारे मे जो जमीन हाथ आई उसमे भी काफी हिस्सा हरनारायण ने दाब लिया। बडे भाई को भूखो मरने के लिए छोड दिया। एक नम्बर के कजूस हैं। दो औरतें मर गयी, अब तीसरी शादी की है, पर औलाद इससे भी नही हो पाई। हो भी कहाँ से, दिन तो खेत और कचहरी मे बीत जाता है, रात भगवत भजन मे, स्त्री के पास बैठने का समय ही नही मिलता। हर समय माथे पर चन्दन लगाये रहते हैं। गले मे तुलसी की माला। भगतजी कहने पर बहुत प्रसन्न हो जाते हैं। जब मन्दिर का प्रबन्ध हाथ आता है तो उसमे भी पैसा बचाने से नही चूकते। अपनी बात खतम होने पर, हरे कृष्ण, हरे कृष्ण दो बार अवश्य कहते हैं। एक बहन ब्याह के बाद मर गयी दूसरी शिब्बा पीताम्बरपुर के आढती और आर्य समाजी सोमदत्त आर्य से ब्याही। बहनोई से कभी नही पटी हरनारायण की। दोनो एक दूसरे को उल्लू बनाने मे लगे रहते है।

चन्द्रमा प्रसाद के बडे लडके रामलाल निपूते हैं। इसलिए सारे झगडो से दूर घर म पत्नी के पास बने रहते हैं। सुबह-शाम बगियों मे घूमने आते है, फिर घर में घुस जाते हैं। किसी से कोई लेना-देना नही। दूसरे लडके जीवनलाल खुली तबीयत के आदमी थे, जमींदारी से मन नही भरा तो व्यापार किया और भारी घाटा उठाया। जब घाटा सह नही पाये तो जवानी मे ही स्वर्ग सिधार गये। एक ही बेटा जीवित है श्रीप्रकाश, जिन्हें प्यार से बडे भइया कहा जाता है। बनारस मे ऊँची शिक्षा पा रहे हैं।

सबसे छोटे हैं शकरलाल, बहुत हेकडीबाज। इसी हुकडीबाजी में अपने हिस्से की सारी जमींदारी बेच खाई। अब इधर-उधर के काम से गुजारा करत हैं। पर मूछ नीची नहीं होने देत। बड़े भाई के बड़े श्रीप्रकाश को अपना ही बेटा मानते हैं, उसी के ऊपर सारी आशायें लगा रखी हैं।

बालकिशन के सिर्फ एक औलाद हुई रामस्वरूप। सारी जायदाद का तीसरा हिस्सा इन्हें ही मिला। इसी से काफी सम्पन्न हैं। कम बोलते हैं, पर हैं शौकीन तबीयत के आदमी। मिलनसार, दुनियादार, घर आने वाले का खूब स्वागत करत हैं, पर स्वभाव के जरा सकोची हैं। लडाई-भिडाइ से दूर ही रहते हैं। रामस्वरूप की माँ अभी जिन्दा है। पूरे परिवार मे सबसे बूढी औरत, सब आदर से बडी अम्मा कहते हैं। सबका ख्याल रखती हैं, सबको खिलाकर खाती हैं। शकरलाल की औरत जल्दी ही मर गई। नौकर के हाथ का खाना नही खाने दिया बडी अम्मा ने। दोपहर का खाना अपने घर मे बुलाकर खिलाती हैं। शाम को भग का गोला चढाने के बाद शकरलाल को खाना खाने का होश ही नहीं रहता, शाम के खाने का प्रश्न ही क्या। रामस्वरूप भी शकरलाल को अपना बडा भाई मानते। हर काम मे सलाह ले लेते। पर जब हरनारायण और शकरलाल मे तू-तू, मैं-मैं होती है, तो तटस्थ ही रहते हैं। भगवान ने एक लडका दिया है विजयकुमार, जिसे घर मे सब छोटे भइया कहते हैं। इसे डाक्टर बनाना चाहते हैं रामस्वरूप। बस्ती मे डाक्टर बनके बैठेगा तो दुनिया कहेगी जमींदारा के परिवार का है डाक्टर, क्या ठाठ हैं। एक लडकी भी है पर वह बहुत छोटी है, अभी शादी की कोई चिन्ता नही।

बहुत कम उम्र में तीनो भाई भगवानदीन, चन्द्रमा प्रसाद और बालकिशन एक-एक करके मर गये। शायद कोई छूत की बीमारी घर मे घुस आयी थी, जो तीनो को खा गई। तीनों भाइयो के लडके छोटे छोटे थे। शेखूपुरा की आधी बस्ती इनकी थी, पर जिसे जहाँ मौका मिला, दबा बठा। बची जमीदारी, सो उसके तीन हिस्से हुए। फिर उसमे भी हिस्से होते गये। अब तो सम्पन्न हैं सिर्फ हरनारायण या रामस्वरूप। मदिर के नाम लिखा गाँव मगलपुर जरूर साबुत बचा है। लेकिन मदिर के गाव का आमदनी खाना हराम है, गो मास खाने के बराबर। कहने को तो

ऐसा हरनारायण भी कहते हैं, पर उनके हाथ मे जब प्रबन्ध आता है तो गाँव की आमदनी न जाने कहाँ चली जाती है। पुजारी तक को पूरा वेतन नही मिल पाता। एक साल म तीन-तीन पुजारी आते हैं और भाग जाते हैं। शाम की आरती भी हरनारायण कई बार खुद करते। पर जब शकरलाल के हाथ म प्रबन्ध आता है तो मन्दिर के भाग जाग जाते हैं। अपने जुए की कमाई का हिस्सा भी मन्दिर मे लगा देते हैं। भगवान के चरणो मे जाकर सब पवित्र हो जाता है। लिखित समझौता हो गया है। दो साल मन्दिर का प्रबन्ध हरनारायण के हाथ मे रहेगा फिर दो साल शकरलाल के हाथ मे। रामस्वरूप शकरलाल की तरफ है, जब शकरलाल के हाथ मे प्रबन्ध होता है तो बगिया मे सुबह शाम सैर को जाते हैं, नही तो पैर नही रखते।

मन्दिर के साथ साथ सडक के किनारे ही सबके मकान बने हुए हैं। पहला मकान रामस्वरूप का है, दूसरा हरनारायण का, तीसरा रामलाल का, उसी के ऊपर जीवनलाल का, और अन्त मे है स्वरूप नारायण का। उसी के पास से गली अन्दर को जाती है। इसी के अन्त मे नया मकान बनवाया है शकरलाल ने। खूब जमीन घेर ली। हवादार खुला मकान, ठाठदार दस कमरा वाला जिसमे अकेले शकरलाल रहते हैं अपने नौकरो-चाकरो के साथ।

बस्ती का नाम है शेखूपुरा। रहीसो की बस्ती कहलाती है। आबादी बहुत कम है, पर जो है वह या तो जमीदारो की या काश्तकारो की। कुछ छोटे-मोटे व्यापारी, नौकरी पेशा, या फिर कुम्हार, जुलाहे, धोबी, नाई, और भगियो की बस्ती है। मन्दिर के पीछे सडक पार करके पुराने टीले के नीचे भगी बसते हैं। इसे भगी टोला कहते हैं। मुश्किल से पच्चीस-तीस घर होंगे। शकरलाल ने इसे हरिजन बस्ती का नाम दे दिया, पर कहलाता भगी टोला ही है।

मन्दिर से बायें हाथ का सडक आगे बढती है तो आ जाता है, बडा बाजार। पक्की दुकान कम ही मिलती है, ज्यादातर तो खपरैल या फूस की दुकानें हैं। बिसाती, मिठाईवाले, नाई, आढती, या फिर पसारियो की दुकानें दिखाई देती है। फिर बाइ आर है जामा मस्जिद और उसके

सामने सड़क पार दायीं ओर खुला मैदान जिसमें सुबह से ही आकर कुंजड़े इकट्ठा हो जाते हैं, भीड़ अधिकतर कुंजड़नियों की ही रहती है। साग सब्जी बेचना इनका काम है।

इसके बाद ये बाजार में रौनक अच्छी रहती है। ठठेरों की दुकानों पर हर समय पीतल के बर्तन की ठुकाई होती रहती है। ठक ठक ठक ठक की आवाज गूँजती रहती है। ठठेरों के साथ चार पाँच सुनारों की दुकानें भी हैं, पर उनकी हथौड़ी बहुत हल्की आवाज करती है। दुकान के पास पहुँचने पर ही सुनी जा सकती है। इस बीच डाक्टर भी बस गये हैं। इसमें सबसे मशहूर हैं नौबत राय एम० बी० बी० एस०। शेखूपुरा के ही रहने वाले हैं। जैसे तैसे लखनऊ से डिग्री ले आये। सालों से बस्ती में छाए हुए हैं। पर इधर तीन साल से एक नौजवान मुसलमान अली जहीर भी एम० बी० बी० एस० करके बड़े बाजार के आखिर में दुकान खोलकर बैठ गया, मुसलमान भाई सब उधर खिंच गये। नौबतराय हँसकर कहते हैं, 'डिग्री ले लेने से ही कुछ नहीं होता। डाक्टरी का पेशा तो तजुर्बा माँगता है। हजारों मरीज हमारे हाथ से निकल गये। गरीब अमीर सबका इलाज किया हमने। जिले के सबसे बड़े सरकारी डाक्टर भी लोहा मानते हैं, यह सब किसलिए, क्योंकि पन्द्रह साल का तजुर्बा है हमारे पास।' यही बात वैद्य अयोध्यानाथ भी कहते हैं। पर जरा दूसरे ढंग से, 'कैसा भी मरीज ले आओ हमारे पास, नाड़ी पर हाथ रखकर बता देंगे कि कौन-सा साग खाया है। जो बात देसी जड़ी-बूटी में है वह अंग्रेजी दवा की कड़वी गोली में नहीं है।'

पर चलती दुकान खुदाबक्श अत्तार की है। दुकान के सामने से आते जाते लोग हकीम साहब कहकर सलाम करते हैं। तरह-तरह के अर्क रख रखे हैं दुकान में। गुलकन्द भी बेचते हैं।

नगीनचन्द इन सबमें अलग हैं। वह बरेली से आकर यहाँ बस गये हैं। बोर्ड पर उन्होंने डिग्री नहीं लिखी है। सिर्फ मेडिकल प्रेक्टीशनर अपने को कहते हैं। एलोपैथी और होम्योपैथी दोनों को जानते हैं। जैसा मरीज आये उस वैसी दवा देते हैं। सोमनाथ आर्य के छोटे भाई देवीदत्त के क्लासफलो हैं। दसवाँ दर्जा दोनों ने साथ ही पास किया था। जब भी

देवीदत्त शेखूपुरा आते तो नगीनचन्द के दवाखाने मे जरूर जाते । एक हत्थे वाली कुर्सी पर बैठकर घण्टा बातें किया करते ।

कपडा बेचने वाला के नेता हैं लाला खूबचन्द । हर मिल का कपडा रखने का और बेचने का दावा करते है । कपडे के छोटे दुकानदार और गली मुहल्लो मे फेरी लगाकर बेचने वाले इन्ही से कपडा ले जाते । उधार खूब देते हैं पर फिर एक एक पाई वसूलना भी जानते हैं ।

इसी सब मे बडा बाजार खतम हो जाता है, फिर सडक के दोनो ओर शुरू हो जाते हैं अमरूद के बाग, छोटे-मोट खेत या कि ऐसे किसान जो खेत बेचकर शेखूपुरा मे दो एक गाय भैंस पालकर बस गये हैं और दूध बेचकर अपना पेट भरते हैं ।

सडक खतम होती है जाकर तहसील पर । इससे पहले थोडा मुडकर आ जाता है सरकारी हाई स्कूल, जिसके पिछले नौ साल से हेडमास्टर हैं पण्डित माधवप्रसाद त्रिपाठी, ज्योतिषाचाय । खूब घनी दाढी चेहरे पर लहराती है । माथे पर लाल तिलक भी लगाते हैं, और छात्रो को सुधारने के लिए बगल मे सोटा हर समय रखते हैं । एक मिडिल स्कूल भी बस्ती मे खुल गया है, दा प्राइमरी पाठशाला भी हैं । डा० नौबतराय के प्रयत्ना स लडकियो के लिए भी आठवी तक का स्कल बस्ती के बीच म सरकार ने खोल दिया है ।

छोटी बाजारिया भी बस्ती मे है, पर यह उजडती ही जा रही है। यह बस्ती के दूसरे छोर पर है, जिधर आबादी ज्यादातर कुम्हारो की है । बस छोटी बाजारिया के पास रायसाहब की कोठी होने से जरूर छोटी बाजारिया अभी तक कायम है, नही तो कब की खतम हो गई होती । रायसाहब मुख्तियार सिंह भी पुराने रहीस हैं । बस्ती म उनके दादा ने सबस पहले हाथी खरीदा था, हाथी पर बैठकर जब वह बस्ती मे निकले ता शकरलाल के दादा की छाती पर साप लोट गया । ऐसी क्या रहीसी दिखाते हैं, हम भी किसी से कम रहीस नही हैं, जवाब देंगे, जरूर देंगे । फिर बहुत सोच-विचार के बाद तय हुआ कि मन्दिर बनवाया जाये, ऐसा, जो आसपास के इलाके मे ढूंढे पर न मिले । तभी मन्दिर की नीव पडी । पुश्त-दर पुश्त मन्दिर कायम रहे, इसलिए एक गाँव भी मन्दिर को दान

कर दिया गया।

मजहर हुसन शेर खाँ भी बस्ती के जाने माने रईस हैं। उनके अब्बा ने ही जामा मस्जिद बनवाई थी। जामा मस्जिद के पीछे ही उनकी कोठी है। दजनों आम के बागों के मालिक, और अच्छी खासी जमींदारी। खानदानी रईसी विरासत में मिलने के बाद भी, आज शेर खाँ खस्ता हालत में आ गये। रण्डी और शराब ने सब तबाह कर दिया। मगर व दूध लेकर जब कोठी से निकलते हैं तो जमीन काँप जाती है। पीलीभीत के जगल में अंग्रेज कलेक्टर को बचाने में तलवार लेकर शेर से भिड गये थे। तभी से शेर खाँ कहलाने लगे। कोठी के मदाने हिस्से में जगह-जगह मारे गये जानवरों की खालें टँगी हुई हैं। चार शादियाँ की जिनमें दो ही बेगमें जिन्दा हैं। घोडागाडी सब बिक गय, पर पैदल कोठी के बाहर फिर भी पैर नही रखता। बस्ती में दो ही ताँगे हैं, उनमे स एक छज्जू के ताँग को बुक कर रखा है, जब भी जरूरत होती है तो छज्जू आ जाता है। उसके ताँग में बैठकर ही जहाँ जाना होता है, जाते हैं। आज भी छज्जू से कह दिया गया, रात ग्यारह बजे ताँगा ले आये। शकरलाल के मकान पर जाना है। गुलाब बाई के मुजरे मे शामिल होने का उन्हें भी निमत्रण मिला है। शकरलाल से दाँत काटी दोस्ती है।

दो चार छोटे मोटे और भी हैं जो अपने को रईसो की पगत म शामिल कराने के लिए जब-तब उछल-कूद मचाये रहते हैं। सखतमल ने ठेकेदारी म अच्छी रकम पैदा की है। एक पुरानी जीप भी खरीद ली है। नये रईसो मे नाम लिखाने को बेताब हैं। ललन सिंह क लडके की शादी पुवाय के राजा के करीबी रिश्तेदारों म हो गयी। अच्छा पैसा दहज म आया। दो आम के बाग खरीद डाले। वह भी अपने को रईस समझने लग। तीन तोले की सोने की चैन गले में पहनकर बाजार म घूमते हैं। कच्ची शराब के ठेके म तोताराम के पास भी पसा आ गया। अब सूद पर भी रुपया उधार देता है। बस्ती म तीन चार पक्के मकान कर लिए हैं। वह भी अपने को किसी रईस से कम नहीं समझता। मगर इन सबको पुरान रईस मुह नहीं लगाते। पैसा आ जाने से ही तो कुछ नहीं होता। खानदानी रईसी की शान ही और होती है। हाथी मरे पर

भी सवा लाख का होता है। शंकरलाल ने बस्ती के अलावा आस-पास के तीन रईसों को मुजरे का न्योता दिया, उनमे ऐगवाँ के पुराने जमींदार ठाकुर गजेन्द्र सिंह बाजपुर के बिट्टन बाबू, और दौलतपुर के चौधरी हरसुख सिंह भी शामिल थे। रायबहादुर [illegible] सिंह तो पड़ोसी हैं। वह तो मुजरे मे आयेंगे ही।
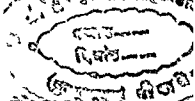
डिप्टी साहब तीन बजे तहसील म आ गये। सरकारी दौरे का बहाना भी तो करना है। दो चार हिदायतें देकर तहसील मे ही बने दो कमरो के गेस्ट हाउस मे ठहर गये। छ बजे मन्दिर मे आकर भगवान को प्रणाम भी कर गये। नारियल और फल फूल के साथ ही ग्यारह रुपये भी भगवान के चरणो मे चढ़ा गये। चारो तरफ दहशत सी छा गयी। मन्दिर के बाहर सरकारी जीप खड़ी है। सरकारी वर्दी डाटे ड्राइवर और अर्दली हाजिर है, किसकी हिम्मत जो छू कर जाये। बच्चे बूढ़े दूर से ही सरकारी गाड़ी देख रहे हैं। हरनारायण तो अपने घर से बाहर नही निकले। कौन मुसीबत ले डिप्टी का सामना करके। शंकरलाल ने न आने क्या सच्ची-झूठी लगाई होगी। जान का दुश्मन बना बैठा है। हरनारायण ने पत्नी से कह दिया, जो भी पूछे कह दो गाँव गये हैं। बस्ती मे रहकर डिप्टी के सामने पेश न होना भी तो एक जुर्म है। अच्छी मुसीबत आ गयी। भगवान रक्षा करें।

आठ बजे से शहनाई बजना शुरू हो गई। मन्दिर सज-सँवरकर तैयार हो गया। जगह जगह गैस के हण्डे जल रहे हैं। खूब रोशनी हो रही है। गहमागहमी मची हुई है। लोग आने शुरू हो गये। ऐसे-वैसे को आगन मे बिछी दरी पर बैठाया जा रहा है। दूसरे जाने-पहचाने लोगो को बरामदे मे बिछी दरी पर। भगवान के सामने बड़े हॉल मे बिछी चाँदनी पर तो खास खास लोग ही बैठेंगे। औरतें ऊपर आमने-सामने के बरामदो म बैठनी शुरू हो गया। ठीक नौ बजे गुलाब बाई अपने साजिन्दो के साथ आयी। कुछ मिनटो बाद ही रायसाहब, बिट्टन बाबू, ठाकुर गजेन्द्र सिंह,

और रामस्वरूप के साथ शकरलाल भी आ गये। बहुत खुश थे शकरलाल, वाह वाह क्या रौनक हो गई। सब प्रभु की माया है। ऐसी ही ईश्वर की कृपा बनी रहे तो हर साल इसी तरह जन्माष्टमी का त्यौहार मनाया करेंगे। खुशी की तरग म वह यह भूल गये कि मन्दिर का प्रबध उनके पास दो साल ही रहता है, फिर दो साल के लिए हरनारायण के हाथ म चला जाता है जो जन्माष्टमी पर परसाद के नाम पर सिफ गगाजल के साथ तुलसादल बाँटने म ही अपने कत्तव्य की इतिश्री मान लेते हैं।

साजिन्दो ने तबले पर थाप दी। सारगी के तारो को गज ने छुआ। मन्दिर के शात वातावरण म सगीत का स्वर बहने लगा।

"क्या गाऊँ सरकार," गुलाब बाई ने मुस्कुराकर शकरलाल से पूछा।

"इसमे पूछने की क्या बात है, आप अपनी तबीयत से गाइये। क्यो रायसाहब ठीक है न।" शकरलाल ने पास बैठे रायसाहब से राय ली।

"हाँ, हाँ आप अपने मन से गाइये।" रायसाहब ने कहा।

"सूरदास के भजन से शुरू करती हूँ।"

"बहुत ठीक बहुत ठीक।" शकरलाल ने कहा।

गुलाब बाई ने स्वर साधा एक बार खाँसकर गला साफ किया, फिर अलाप भरा मइया मा नही माखन खायो

वाह वाह पहली लाइन पर ही सब झूम उठे।

गुलाब बाई एक लाइन गाती थी। फिर उसी लाइन को चम्पा और जुही दोहराती थी। अजब समाँ था लगता था खामोश दरिया पर एक लहर उठती है और फुहार छोडकर चली जाती है।

खूब गाया गुलाब बाई ने। कई भजन सुनाये। अब कृष्णजी के जन्म मे एक घण्टा बाकी रह गया है। सहसा गुलाब बाई की नजर कोने मे बठे एक साधू की वेशभूषा वाले आदमी पर गई। उसके हाथ मे इकतारा था।

"आप अपने भक्तों से भी तो कुछ गवाइये।" गुलाब बाई ने कहा।

शकरलाल गुलाब बाई का इशारा समझ गये। कुछ राहत चाहती हैं। रात को मुजरा भी तो करना है। शकरलाल ने एकतारा लिए बाबा से

कहा, "प्रह्लाद, कोई भजन सुनाओ।"

"मालिक इनके सामने हम क्या गायें?" प्रह्लाद ने हाथ जोडकर कहा।

"यह लो, यह खूब कहा, अरे तुम बढिया कीर्तन करते हो, उसे ही शुरू करो।" शकरलाल ने उत्साह बढाया।

"जो आज्ञा मालिक।" प्रह्लाद ने खड़े होकर सीधे हाथ मे इकतारा ले लिया और बायें हाथ म खडतालें। पास बैठे ढोलकिया ने ढोलक पर चोट दी "राधे राधे बोल भय्या राधे राधे बोल" भजन के स्वर मदिर मे गजने लगे।

एक ही लाइन को तीन-चार बार दोहराने के बाद, प्रह्लाद ने दोनो हाथ उठाकर कहा—"हमारे साथ सब लोग बोलो खूब जोर से बोलो।"

अब जो लाइन प्रह्लाद कहता, उसी को सारे भक्त दोहराते। कीर्तन का सही रूप उभर आया था। खूब तन्मयता से कीतन हो रहा था। समय धीरे धीरे आगे सरक रहा था। प्रह्लाद ने जब कीतन समाप्त किया तो साढे ग्यारह बज रहे थे। अभी आधा घण्टा और है भगवान के जन्म लेने मे। शकरलाल ने गुलाब बाई की ओर देखा। गुलाब बाई ने खास कर गला साफ किया और अलाप भरी।

दो भजन और गाये कि बारह के करीब सुई पहुँच गई। चारो ओर खामोशी छा गई। नजरें दीवाल पर जडी बडी घडी पर टिक गयी। सब लोग उठकर खडे हो गये। गुलाब बाई, जूही, चम्पा भी खडी हो गयी, उनके साथ ही साजिन्दे भी अपने साज छोडकर खडे हो गये। एक-एक सेकेंड करके समय बीत रहा था।

बारह बजते ही मन्दिर मे घण्ट-घडियाल बजने लगे। मन्दिर के आँगन मे रखा नँगाडा कूटा जाने लगा। भगवान का जन्म हो गया था। पुजारी ने मूर्तियो के सामने से पर्दा हटा दिया। आरती करने लगे।

आरती समाप्त हुई तो शोर कुछ थमा। अब प्रसाद मिलने की बारी है। मन्दिर के द्वार पर प्रसाद लेने वालों की लाइन लग गई। भगत पण्डत प्रसाद बाटने मे लगे हैं। बडे लोगो को तो पुजारी जी खुद अपने हाथ से बूदी का दोना दे रहे है। गुलाब बाई ने भी बडे आदर से सर

झुककर प्रसाद लिया ।

"हम लोग पीछे की ओर से चलते हैं, आगे तो बहुत भीड है।" शकरलाल ने पास खडे नत्थू सिह की तरफ देखा, "तॉगा तैयार है न।"

"हॉं मालिक, मदिर के दरवाजे पर खडा है।"

"अरे उसे पीछे की तरफ लाओ, उधर उतनी भीड म से कसे चलें। इन सबको लेकर चलो, हम अभी आते हैं।"

नत्थू सिह तॉगे को पिछवाडे की तरफ लाने के लिए दौडे ।

शकरलाल के मकान मे मुजरे की पूरी तैयारी हो गई थी। आँगन के बीच मे बडी दरी बिछी हुई थी। उस पर सफेद चॉदनी बिछाई गई। कुछ देर पहले कल्लू धोबी ने चॉदनी पर खूब दबाकर प्रेस की थी। एक भी जगह से उठी हुई या सिकुडन नही मिल सकती। तीन तरफ गद्दे बिछा दिये गय थे। गाव तकिये लगे हुए थे। पास मे ही रखे थे उगालदान। और चाँदी के थाल मे ताजे गुथे हुए मोतियो के हार भी रखे थे।

सबसे पहले मजहर हुसैन शेर खाँ आये। गली के माड पर ही तॉगा छोड दिया। गली म तो पैदल ही जाना होगा। एक एक कदम तौलकर उठाते हुए छडी टेकते, चल रहे थे शेर खाँ। दरवाजे पर मातादीन और हरिया हाथ जोडे खडे थे। मातादीन ने सर झुकाकर कहा, 'पधारें सरकार, मालिक अभी मन्दिर से आते हैं।"

"कोई बात नही, शेर खाँ ने सर ऊँचा करके पान की पीक लीलते हुए कहा, "हम पता है, बारह बज रहे हैं। अभी तो किशन जी का जन्म हुआ है। दस-पाँच मिनट तो लग ही जायेंगे आने मे।" तकिये का सहारा लेकर गद्दे पर बैठ गये। साथ आया नौकर हुकम के इन्तजार मे खडा था।

'तुम वही तॉगे पर बैठो, जरूरत होगी तो बुला लेंगे।" शेर खाँ ने कहा।

हुकम पाकर नौकर चला गया।

दो मिनट बाद ही गली मे फिर भारी कदमो की आवाज आई। दरवाजे पर चौधरी हरसुख सिंह दिखाई दिये। गोल चेहरा, उमेठी हुई मूछा और चढी हुई आँखो से काफी रोब दिखाई पड रहा है। पूरे छ फुट के जवान हैं, हालांकि उमर पचास को छू रही है। तीन कोस से घोडे पर चले आ रहे हैं, पर फिर भी तनकर खडे हैं। शेर सिंह को देखा तो बाछे खिल गयी, "भई खूब, खाँ साहब मौजूद हैं, तबीयत खुश हो गई।"

शेर खा उठकर खडे हो गये। दोनो बाहे फैलाकर गले मिले, फिर अपने पास ही गद्दे पर बैठाया, "और कहो चौधरी, मजे मे तो हो।"

"सब ऊपर वाले की मेहरबानी है।" चौधरी हरसुख सिंह ने हँसते हुए कहा, फिर उनके स्वर मे शिकायत उभर आई, "खाँ साहब, आप तो बस किनारा ही कर बठे, कभी मिलते-जुलते नही, न ही कभी शिकार का प्रोग्राम बनाते हैं, ऐसी भी क्या नाराजगी।"

"अमाँ नही यार, यह सब कुछ नही।" शेर खाँ समझाते हुए बोले, "जमीन-जायदाद के झझट तो तुम जानते ही हो। इधर हमारी बडी बेगम ने अपनी बीमारी को लेकर घर को सर पर उठा लिया। महमूदाबाद के नवाब हमारे साले लगते हैं, वह जनाब अलग हमसे खार खाये बैठे है। अब क्या-क्या बतायें तुम्हें।"

'इसीलिए तो कहता हूँ कभी कभी शिकार पर चला करो। दिल-दिमाग को राहत मिलेगी।" हरसुख सिंह ने रास्ता सुझाया।

"ठीक कह रहे हो मियाँ," शेरसिंह ने सर हिलाकर समथन किया, "बरसात बीत जाए फिर बनाते हैं प्रोग्राम।"

गली म जडी ईंटो पर शकरलाल के खडाऊँ की आवाज आने लगी थी। इसका मतलब है कि शकरलाल अपने साथियो के साथ आ रहे हैं।

बिट्टनबाबू, रायसाहब, ठाकुर गजेन्द्र सिंह और रामस्वरूप को साथ लिए शकरलाल घर मे घुसे। शेर खाँ को और चौधरी हरसुख सिंह को बैठे देखा तो खुश हो गये, "वाह वाह जोडी जमी हुई है।"

शेर खाँ और चौधरी उठकर सबसे मिले, फिर तीनो गद्दा पर सब जम गये। बीच के गद्दे पर जगह छोड दी गई डिप्टी साहब के लिए। पर अभी तक डिप्टी साहब आये क्यो नही, मातादीन को दौडा दा साइकिल

पर। देख आये क्या बात है।

शंकरलाल ने एक नजर आँगन मे चारो तरफ डाली। सारा इंत-जाम ठीक है। सतोष की साँस ली, "नत्थूसिंह बाई जी को बुलाओ, अब देरी किस बात की है।" नत्थूसिंह बाई जी को लेने ऊपर की तरफ लपके।

पहले साजिन्दे आये, सबको सलाम झुकाया, फिर बैठकर अपने-अपने साज ठीक करने लगे।

हरिया बाहर से भागता हुआ आया, "डिप्टी साहब आ गये।" शंकरलाल स्वागत करने के लिए बाहर की तरफ लपके।

शंकरलाल डिप्टी साहब को लेकर घर म घुसे। सब उठकर खड़े हो गये। डिप्टी साहब बहुत खुश थे, एक-एक से हाथ मिलाया, "फिर शंकर लाल की तरफ घूमकर बोले, 'जवाब नही तुम्हारा शंकरलाल, क्या महफिल जमाई है। चुन चुन के रईस बुलाये हैं महफिल मे।"

"अजी जनाब महफिल तो गुलाब बाई से जमगी। उन्हें बुलाओ न।" मीर खाँ ने हँसकर कहा।

"बन्दी आदाब बजाती है, हुजूर।" जूही और चम्पा के साथ गुलाब बाई न पास आकर सबको झुककर सलाम किया।

सबकी नजरें गुलाब बाई पर जम गयी। उन्होंने इस समय लाल जारजेंट की साडी पहनी हुई थी जिस पर गोटे के सफेद सितारे जड़े हुए थे। जूही, चम्पा पीले मखमली लिबास मे थी, लखनऊ का पहनावा। चूड़ीदार पँजामा, उस पर कुर्ता, साथ ही कन्धे पर पीला जाजट का दुपट्टा।

"क्या बात है चम्पा बाई, आपने तो आकर आज महफिल म चार चाँद लगा दिये।" ठाकुर गजेन्द्र सिंह ने कहा।

गुलाब बाइ न फिर सलाम करते हुए कहा, "लौंडी को आपने इज्जत बख्शी, शुक्रिया।"

'नत्थूसिंह, बोतल गिलास लाओ, डिप्टी साहब आये हैं। इनकी सेहत के लिए एक एक जाम हो जाये।" शंकरलाल ने समर्थन के लिए सबकी ओर देखा "हाँ हाँ, क्यो नही, ठीक है।" सभी की रजामन्दी थी।

नत्थू सिंह चाँदी की बडी थाली मे चार ह्विस्की की बोतलें रखकर

लाये। पीछे पीछे हरिया दूसरी थाली मे दस गिलास और हाथ मे बर्फ से भरा थरमस लिये था। सारी चीजें लाकर बीच मे रख दी गयी। सोडे की बोतलें पहले से ही आगन मे एक ओर रखी थी, उन्हें भी अब बीच मे पहुँचा दिया गया।

"गुलाब बाई, जरा अपने हाथो से जाम तैयार करके डिप्टी साहब को पेश कीजिए।" शकरलाल ने आग्रह किया।

गुलाब बाई ने फिर सिर झुकाकर सलाम किया। जरा आगे बढकर गिलासों को एक लाइन मे थालिया मे सजाया। रहमत मियाँ ने आगे बढकर बोतलो का खोल दिया। साडे की बोतलें भी खोल दी गयी। गुलाब बाई ने एक एक गिलास मे पहले ह्विस्की डाली, फिर सोडा और फिर बर्फ की डली डाल दी। बायें हाथ की हथेली पर गिलासो से भरा थाल रखकर उठी और सबसे पहले डिप्टी साहब का जाम पेश किया। इसके बाद एक एक करके सभी के हाथो मे गिलास पकडा दिया। बस जब शकरलाल के सामने पहुँची तो शकरलाल ने सिर हिलाकर इकार किया।

"यह क्या, साथ नही दोगे।" डिप्टी साहब ने आश्चय से कहा।

"हम तो साहब शाम को ही शिवजी का परसाद ले लेते हैं। भग के गाले का नशा हमे सुबह तक रहता है। अब दूसरा नशा साथ मे चलता नही।" शकरलाल ने सफाई दी।

"अरे तो थोडा बहुत चख लो।" डिप्टी साहब ने आग्रह किया।

"दो नशे हम सह नही पात, शेर खा, और रायसाहब जानते हैं, हम इनके यहाँ भी जब जाते हैं तो वहाँ भी माफी माग लेते हैं।" शकरलाल ने हाथ जोडकर कहा।

"झूठ न बोलो शकरलाल, इस समय भी तुम दो नशे कर रहे हो।" शेर खा ने अदा से कहा, "एक नशा तो तुम पर भग का है, और दूसरा गुलाब बाई के शबाब का।"

"वाह वाह क्या बात कही है।" एक साथ सबने ऊँचे स्वर म समथन किया।

"अच्छा छाडो इस झगडे को, गिलास टकराओ, डिप्टी साहब के नाम पर।" चौधरी हरसुख सिंह ने हाथ के गिलास का आगे बढाकर कहा।

"नही गुलाब बाई के नाम पर।" डिप्टी साहब ने कहा।

"चलो, दोनो के नाम पर।" ठाकुर गजेन्द्र सिंह ने बीच का रास्ता निकाल लिया।

जाम टकराये गये, और बोतलो को उठाकर सामने रख दिया गया। जितनी चाहे नाये और पिये।

गुलाब बाई ने साजिन्दो को इशारा किया। तबले पर थाप पडा, सरगी के तारो को गज ने चूमा, और इस बीच गुलाब बाई के साथ ही जूही और चम्पा ने भी पैरो मे घुघरू बांध लिये।

"मैंने लाखो के बोल सहे सितमगर तेरे लिए मैंने लाखो के बोल सहे" गुलाब बाई के गले से स्वर निकला, और महफिल वाह वाह से गूंज उठी।

जूही और चम्पा उठकर खडी हो गयी, एक साथ उनके पैरो म बँधे घुँघरू बोल उठे—*"सितमगर तेरे लिए मैंने लाखो के बोल सहे।"*

तबले की थाप के साथ ही दोनो तेजी से घूमती तो बिजली-सी गिर जाती। सोलह-सत्तरह साल की कमसिन लडकियाँ, जिस्म म गजब का लोच, जिधर भी घूम जाती, कहर बरपा कर देती सितमगर तेरे लिए • वाह वाह क्या बात है।

डिप्टी साहब ने पाच का नोट जेब से निकाला, और जूही को पकडा दिया, फिर तो नोटो की वर्षा होने लगी।

पहली बोतलें खाली हो गयी तो उसकी जगह दूसरी बोतलें आ गयी।

पहला दौर गाने का खत्म हुआ तो जूही और चम्पा ऊपर चली गयी। अकेले गुलाब बाई ने पैरो मे बँधे घुघरू को स्वर दिया— 'हमे न सतइयो सौतन घर जाना हमे न सतइयो ' भरा पुरा जिस्म था गुलाब बाई का, उनकी अपनी अदा थी, जिधर टेढी आँख से देख लेती दिल थाम लेते देखने वाले हमे न सतइयो क्या बात है गुलाब बाई डिप्टी साहब हर तोड पर झूम उठते हमे न सतइयो ।

जूही चम्पा कपडे बदलकर लौट आयी, अब वह हरे रग के लहँगे दुपटटे म सजी हुई थी। जोबन उभर आया था, नाच ने नया रूप ले लिया था। राम लीला हो रही थी।

बोतलें फिर खाली हो गयी, उनकी जगह नई बोतलें आ गयी।

घुंघरुओं के बोल के बीच पता ही नही चला, भोर का तारा कब डूब गया।

"हुजूर, भोर का तारा डूब गया है, अब भैरवी मे कुछ पेश करती हूँ। इसके बाद महफिल खत्म करने की इजाजत दीजिए।"

"हा हा क्यो नही।" शकरलाल ने कहा।

गुलाब बाई ने अलाप भरी बाजूबन्द खुल खुल जाय

"क्या बात कही है गुलाब बाई शाबाश।" डिप्टी साहब झूम उठे।

गुलाब बाई ने सलाम झुकाकर गाना शुरू किया—

बाजूबन्द खुल-खुल जाय
सवरिया ने जादू डाला
जादू की पुडिया भर भर मारी
का करे वैद्य बिचारा बिचारा बिचारा
बाजूबन्द खुल-खुल जाय।

"बहुत खूब क्या बात है।" शेर खा ने दाद दी।

शेर खाँ के साथ ही सब वाह वाह कर उठे। वाह वाह कमाल है जवाब नही तुम्हारा गुलाब बाई एक से एक बढकर तारीफ के पुल बाँधे जा रहे थे, लेकिन आवाज दब रही थी जोर से बोलना चाहते हुए भी बोला नही जा रहा था। सब नशे म चूर थे, सिफ शकरलाल होश मे थे। गाना खतम हुआ तो विदा की बेला आ गई। डिप्टी साहब ने उठते हुए कहा, "कमाल कर दिया आपने गुलाब बाई, खूब महफिल जमाई। अब हम इन्हें सबको लेकर बहुत जल्द आपके दौलतखाने सीतापुर पहुँचेंगे आपका गाना सुनने।"

"बन्दी आपकी गुलाम है, जरूर आइयेगा।" गुलाब बाई ने झुककर सलाम किया।

"और दोस्त शकरलाल, तुम हजार साल जियो। जमीदार बहुत से देखे, पर तुम्हारा जवाब नही, समा बाँध दिया। आओ चलत समय गले मिल लें।" डिप्टी साहब ने शकरलाल को गले लगा लिया।

"आज यही रुक जाते डिप्टी साहब।" शकरलाल ने कहा।

"नही नही, हम दस बजे आफिस पहुँच जाना है। हम ड्यूटी के बड़े पाबन्द है।' डिप्टी साहब ने घर से बाहर जाने के लिए कदम बढ़ाया।

दरवाजे तक डिप्टी साहब को छोड़ने के लिये सब आये।

"अब हम भी चलते हैं।" शेर खाँ ने अपनी छड़ी उठाते हुए कहा। "रायसाहब, ताँगा हाजिर है, आप चलना चाहें तो साथ चलें, रास्ते मे छोड़ देंगे।'

"ठीक है चलिए।' राय साहब साथ हो लिये।

बिट्टन बाबू ने कुछ सोचा, फिर बोले, 'मैं चलता हूँ खाँ साहब, बस अड्डे से बस पकड़ लूगा।'

"चलिये, हम भी चलते हैं।" ठाकुर गजेन्द्र सिंह भी साथ हो लिये।

अब रह गये चौधरी हरसुख सिंह। नशे के कारण सर झुका जा रहा था, लेकिन हिम्मत करके खड़े हो गये, "हम भी चलते हैं शकरलाल।"

"अरे आप कहाँ जाते हैं यही आराम कीजिए।" शकरलाल ने कहा।

'आराम कैसा! सुबह की ठण्डी हवा खाते चले जायेंगे।" चौधरी हरसुख सिंह की आवाज़ चढ़ी हुई थी, "आप चिन्ता न करें, हमने पी है, हमारे घोड़े ने तो नही पी, सीधा घर ले जायेगा।" हरसुख सिंह के साथ ही शकरलाल भी खुलकर हँसे।

रामस्वरूप वही पैर फैलाकर लेट गये। इस हालत मे घर नहा जायेंगे। बड़ी अम्मा का सामना हो जायेगा तो मुश्किल आ जायेगी। दो घण्टे यहीं सोयेंगे।

गुलाब बाई अपने साजिन्दो और लड़कियो के साथ ऊपर वाले कमरे मे चली गयी थी। भगवू पण्डत बोले, "मालिक, आप भी थोड़ा लेट लें, पीठ सीधी कर लें।"

"नही, अब हम बगिया चलते हैं, वहीं स्नान करके बैठेंगे। मातादीन से कहो वही हमारे लिए चाय ले आये, और हुक्का भी ताजा कर लाये। और सुनो, बाई जी को नाश्ता पानी ठीक से कराना, समझे! नत्थू सिंह कहाँ हैं?" शकरलाल ने पूछा।

"हम यहाँ हैं मालिक।" पास की कोठरी मे सामान रखवा रहे थे

नत्थू सिंह। पुकार सुनी तो लपके आये।

"देखो, ठीक ग्यारह बजे गाड़ी जाती है। नौ बजे दोनों तांगे और इक्के ले आना, समझे। बाई जी को बैठाकर बगिया लाना, वहीं से हम विदा करेंगे।"

"ठीक है मालिक।" नत्थू सिंह ने हामी भरी।

बाई जी की विदा का वक्त आ गया। सवा नौ बजे बाई जी का तांगा आकर बगिया के फाटक पर खड़ा हो गया। बाई जी जूही चम्पा के साथ, रहमत मियाँ को लेकर बगिया में आयीं। शंकरलाल इन्तजार कर रहे थे, हुक्के की नली को एक ओर करके तख्त से उठकर खड़े हो गये, "आइये-आइये इधर बैठिये।"

गुलाब बाई के कुर्सी पर बैठते ही बाकी सब भी बैठ गये।

"कहिये नाश्ता पानी कर लिया कोई कमी तो नहीं रही।"

"अजी कमी कैसी, हमें तो अभी तक जलेबी में केवड़े की खुशबू याद आ रही है। बल्लाह क्या जलेबी थी, खुदा कसम जमींदार साहब ऐसी जलेबी तो हमने लखनऊ में भी किसी नवाब, जागीरदार के यहाँ नहीं खाई।" गुलाब बाई ने आँखें मटकाकर तारीफ की।

"हमने खास तौर पर आपके लिए बनवाई थी। चाशनी पकाते समय केवड़ा डाला जाता है, तभी स्वाद बनता है।" शंकरलाल अपनी बड़ाई सुनकर खुश हो गये। फिर कुछ याद आने पर बोले, "नत्थूसिंह, बाकी रुपया दे दिया न।"

"जी हां सरकार, रहमत भाई को सारा हिसाब कर दिया है।'

"हमें सब मिल गया, आप फिक्र न करें हुजूर।" रहमत खां ने सलाम करते हुए सर झुकाकर कहा।

"नत्थू सिंह आपके साथ जा रहे हैं। टिकट लिवाकर, आपको गाड़ी पर ठीक से बैठा देंगे।" शंकरलाल ने समझाते हुए कहा, "फिर तकिये के पास रखे तीन छोटे छोटे डिब्बों को हाथ बढ़ाकर उठाया और मुस्कुराकर

बोले, "अब हम आपकी क्या खातिर करें, समझ में नहीं आ रहा, यह छोटा-सा तोहफा हम आपको देना चाहते हैं, इसे कबूल कीजिए।" शंकर-लाल ने तीनों डिब्बों का खोलकर आगे बढ़ाया।

तीन खूबसूरत छोटे छोटे सफेद हरे-लाल नग जड़ी चाँदी की अँगूठियाँ गुलाब बाई के सामने थी। गुलाब बाई के साथ ही जूही और चम्पा के चेहरा पर भी आश्चय के साथ खुशी छा गई थी। गुलाब बाई ने तारीफ करते हुए कहा "अजी आप इसे छोटा-सा तोहफा कह रहे हैं! हमारे लिए तो यह नायाब चीज है, सीने से लगाकर रखेंगी। जब आपकी याद आयेगी तो देख लिया करेंगी। बहुत मेहरबान हैं आप जमींदार साहेब।'

अपनी तारीफ सुनकर शंकरलाल खिल उठे। हसकर बोले, "हम तो आपके लिए बहुत कुछ करना चाहते थे, मगर कुछ हो नहीं पाया। अब इसे कबूल कीजिये।'

"हमारे लिए तो यही बहुत है जमींदार साहेब, लीजिये, आप अपने हाथा से पहना दीजिये।' गुलाब बाई ने अपना सीधा हाथ आगे बढ़ा दिया।

शंकरलाल कुछ सकोच मे पड गये। नत्थूसिंह और हरिया कमरे म खडे थे, लेकिन इनका कोई चिंता नहीं, यह तो नौकर हैं। पर सुबह के टाइम जो आसपास के लोग बगिया में घूमने आ जाते हैं, उनमे से दो चार कमरे के बाहर खडे होकर तमाशा देखने लगे थे, पहले उन्हें हटाना होगा, नत्थूसिंह की तरफ जरा आँखें तरेरकर शंकरलाल ने कहा, "यह क्या भीड लगा रखी है हटाओ इन सबको।"

नत्थूसिंह एकदम बाहर लपके, "ऐई, यहाँ क्या कर रहे हो, चलो यहाँ से।' देखते ही देखते नत्थूसिंह ने सब को बगिया के बाहर खदेड दिया।

शंकरलाल के चेहरे पर फिर खुशी उभर आई। बायें हाथ मे गुलाब बाई का हाथ लेकर उन्होंने सीधे हाथ से बीच की उँगली मे अँगूठी पहना दी। गुलाब बाई ने अँगूठी को आखो से और माथे से छुआया, फिर सर झुकाकर सलाम किया। जूही और चम्पा ने भी अँगूठी पहनने के बाद सर झुकाकर सलाम किया।

"हजूर भूलियेगा नही, हमारे गरीबखाने पर जरूर आइयेगा।" गुलाब बाई ने नखरे से इसरार किया।

"कहिये तो साथ चलें।" शकरलाल अपनी ही बात पर खुलकर हँसे।

"जहे किस्मत, चलिये हजूर, आपको पलका पर बिठाकर ले चलेंगे।" गुलाब बाई ने तिरछी नजर से देखते हुए कहा।

नत्थूसिह कमरे मे आ गये थे, धीरे से बोले, "गाडी का टाइम हो रहा है।"

"हाँ हाँ चलें आप लोग।" शकरलाल जैसे ख्वाबो के बीच से जाग उठे हो।

गुलाब बाई को विदा करने के लिए बगिया के बडे दरवाजे तक शकरलाल आये। गुलाब बाई के जाते हुए ताँगे को हसरत की नजर से शकरलाल देखते रहे, "वाह वाह क्या कमाल की औरत है, जी खुश कर दिया!" फिर शकरलाल की नजर मन्दिर की ओर गई। मन्दिर के अन्दर और बाहर अब भी झण्डियो के लाल-पीले कागज हवा मे फडफडा रहे थे। खूब जशन रहा, बहुत रौनक रही, और क्या चाहिए जिन्दगी मे। शकरलाल सतोष और आनन्द के सागर मे गले-गले तक डूब गये।

हरिया ने हुक्का ताजा कर दिया, तख्त पर बैठे हुक्का गुडगुडाते हुए शकरलाल सामने वाली कुर्सियो की तरफ देख रहे थे। अभी कुछ देर पहले गुलाब बाई सामने बैठी थी। बहुत सलीके की औरत है। हुस्न के साथ हुनर भी दे, ऐसा तो ईश्वर किसी किसी के साथ ही करता है। रात नाच की एक एक अदा आँखो के आगे उभरने लगी। गाने की हर तोड के साथ गुलाब बाई का एक क्षण के लिए ठहरकर फिर बिजली की तडप की तरह घूम जाना और घुघरुओ को खनकाते हुए थिरकना वाह वाह कमाल है। जूही और चम्पा भी खूब नाची पर वे अभी बच्चियाँ है अभी बहुत कुछ सीखना है उन्हें, लेकिन गुलाब बाई तो फूल नही, खुशबुओ का एक गुलदस्ता है। क्या कहने।

अधमुँदी आखो से शकरलाल देख रहे थे। गुलाब बाई उनकी आखो के आगे आ गयी थी, आ ही नही गयी बल्कि थिरक रही थी। कमर की लोच, सीने का उभार और दोनो कलाइयो को मिलाकर हाथो का बल

देना, साथ ही तिरछी नजर से देखना, वही रात की हूरी, सितारों जड़ी साड़ी, वही बाकी अदा गुलाबी होठों पर वही बात सितमगर तेरे लिए मैंने लाखों के बोल सहे वाह वाह ।

"लम्बरदार कहाँ खोये हो। क्या दीवारों से बात कर रहे हो।"

शंकरलाल चौंक गये, आँख खोलकर देखा, सामने हेडमास्टर माधव प्रसाद त्रिपाठी खड़े थे, "आओ, आओ माधव प्रसाद, बैठो।"

"क्या बैठें, तुम तो न जाने किस दुनिया में खोये हुए हो। सुना रात बड़ा जशन रहा।"

'जशन ! अरे आनन्द आ गया।' शंकरलाल फिर जोश में आ गये, "बस कुछ पूछो मत, खूब महफिल जमी। डिप्टी साहब भी थे, बड़ी रौनक रही। अब क्या बतायें माधव प्रसाद तवायफें हमने बहुत देखीं, पर जो बात गुलाब बाई में है वह किसी में नहीं। खानदानी तवायफ है, बहुत सलीके की एक बार मिल लो तो जी खुश हो जाये, अरे हाँ, हमने कहलाया था, तुम आये क्यों नहीं ?"

"अब क्या बतायें लम्बरदार, हमारा ससुर पेशा ऐसा है कि मन मार के रह जाते हैं, कुछ कर नहीं सकते। अब अगर रात को हम भी महफिल में होते तो आज पूरी बस्ती में घर-घर यही बात होती कि खुद तो माधव प्रसाद रण्डी का नाच देखते हैं, वे भला स्कूल में लड़कों को क्या शिक्षा देंगे।"

"अरे छोडो यह सब बहाने। तुम साले एक नम्बर के मक्खीचूस हो, तुम क्या देखोगे नाच-गाना। अरे सोचा होगा, महफिल में गये तो पच्चीस-तीस जेब से निकल जायेंगे। सो घर में घुसे रहे।" शंकरलाल ने झुँझलाकर कहा।

'लम्बरदार, यह सब न कहो। हम फिजूलखर्ची नहीं हैं, पर हमने मौज मस्ती खूब की है। बड़े लोगों के साथ उठते बैठते हैं तो वैसा ही दिल रखते हैं। बस्ती में कुछ नहीं कर पाते। हाथ बँधे हैं हमारे। कहा न हमारा पेशा ही एकदम चौपट है। शिक्षक हैं सो एकदम चौकस रहना पड़ता है।

"अच्छा अच्छा, बहुत होशियारी देख ली तुम्हारी।" शंकरलाल ने

झुझलाकर हुक्के की नर्नी मुंह मे लगा ली और जोरो से हुक्का गुडगुडाने लगे ।
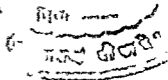
दोपहर के भोजन का समय हो गया। बडी अम्मा ने खाना खाने के लिए कहला भेजा । खडाऊँ खडकाते हुए शकरलाल मन्दिर पार करके, जीना चढकर, रामस्वरूप के घर मे, रसोई के सामने छोटे-से आँगन मे पहुँच गये । बडी अम्मा उनकी राह देख रही थी, "बडकऊ, रात तुमने खूब उछल कूद मचाई ।"

शकरलाल झेंप स गये । आँख नही मिला पा रहे थे, सो दूसरी तरफ देखते हुए बोले, "बडी अम्मा तुम जाना डिप्टी साहब आये थे, सो उनकी खातिर कुछ तो करना ही था ।"

"खूब किया तुमने," बडी अम्मा शिकायत के स्वर म बोली, "तुम्हारे भइया सुबह से ओक डोक रहे है । सर मे पट्टी बाघे पडे है । तुम्हे कुछ खबर है ।"

"का, रामस्वरूप की तबीयत ठीक नाही । कहाँ हैं, ऊपर कमरा मे ।" रसोइघर के पास से ऊपर के कमरे के लिए जीना जाना है । खटखट करते शकरनाल जीना चढकर कमरे मे पहुँच गये । रामस्वरूप सर म पट्टी बाघे पलँग पर पडे थे । उनकी पत्नी, छोटी बहू पैतियाने बैठी पैर दबा रही थी । शकरलाल को देखा तो थोडा घूघट निकालकर एक ओर खडी हो गयी । शकरलाल ने रामस्वरूप के सर पर हाथ रखकर पूछा, "के भइया, का बात, तबीयत नाही ठीक ।"

रामस्वरूप कुछ कसमसाये, धीरे से बोले, "ठीक है, जरा तबीयत मालिश कर रही है ।"

"दही की लस्सी पी लेतें, सब ठीक हो जाता ।" शकरलाल ने कहा ।

"पी पी, नीबू भी चाटा था, शाम तक ठीक हो जायेंगे ।" रामस्वरूप ने जवाब दिया ।

"जेठ जी, आपको मालूम है, इनका पेट ठीक नाही है, फिर अपने

साथ काहे बैठा लिया।" छोटी बहू ने घूघट के अन्दर से नाराजग जाहिर की।

'तुम चुप रहो, काहे चवड चवड लगाये। ठीक तो हैं हम। दो उल्टी हो गई तो क्या हुआ। आसमान टूट पडा।" रामस्वरूप अपनी पत्नी पर चिल्लाय।

नीचे से बडी अम्मा खाने के लिए बुला रही थी। शकरलाल जीना उतरकर, रसोईघर मे आ गये। गाय के गोबर से लीपी गई जमीन पर आसन बिछाया गया। सामने लकडी की छोटी सी चौकी रखी थी। बडी अम्मा ने कासे की थाली मे खाना परोसकर चौकी पर रख दिया। आसन पर बैठते हुए शकरलाल ने पूछा, "बडी अम्मा, आप खाना बनाय रही हो, महराजिन कहाँ गयी।"

"जायेगी कहाँ, अपने घर पर है। दो दिन बाद उसकी लडकी की शादी है। तुम्हें तो कुछू याद नाही।"

"हाँ हाँ कहा तो था हमसे किसी ने। करें क्या, जन्माष्टमी के चक्कर मे सब भूल गये। का लेना-देना है।" शकरलाल ने पूछा।

"जो हो सके सो कर दो। विधवा बामनी है बेचारी।" बडी अम्मा ने सुझाव दिया, "एक जोडी कपडा तो होगा ही, नेग पर रुपया-पैसा भी देना होगा। एक बखत बरात को भोजन करा दो तो बहुत पुन्न हागा।'

"लो, एव क्या है, हम दो बखत बरात को खिला देंगे। आज ही नत्थूसिह से कहे देते हैं, सब प्रबन्ध हो जायेगा।" शकरलाल ने उत्साह से कहा।

चौकी के पास मे रखे लोटे से सीधे हाथ की हथेली पर थोडा जल लेकर शकरलाल ने थाली के चारो ओर छिडका। हाथ जोडकर एक क्षण के लिए आखें मूदी, फिर खाना शुरू किया। एक एक रोटी चूल्हे मे से निकालकर गरम गरम थाली मे डालती जा रही थी बडी अम्मा। सब चीज शकरलाल के मनपसन्द बनी थीं। ऊडद की दाल, कटहल की सूखी सब्जी, चटनी, मूली के टुकडे और पापड। एक मुटठी चावल भी थे। खूब आनन्द आ रहा था भोजन मे।

"बडी अम्मा, तुम्हारे हाथ के खाने में स्वाद ही कुछ और है।'

उँगलियो मे लगे चावल-दाल को चाटते हुए शकरलाल बोले।
"रहन दो बडक्‍कऊ, रोज का खाना है।" बडी अम्मा मुह बिचकाकर हँसी।
आदत के मुताबिक खाना खत्म करके शकरलाल ने दो गिलास पानी पीकर जोरो की डकार ली। लोटा लेकर रसोई से बाहर निकल आय। एक कोने मे जाकर कुल्ला किया, धोती के छोर से मुह पोछते हुए जरा ऊँची आवाज मे बोले, 'बडी अम्मा, रामस्वरूप को दही पिलाती रहो, शाम तक ठीक हो जायेंगे।"
अब और अधिक नही रुक सकते शकरलाल। खाना खाने के बाद उनके लिए सोना जरूरी हो जाता है। अब सीधे अपने घर जायेंगे और कच्ची सिगरेट के दो कश लगाकर गहरी नीद सो लेंगे। घर जाते हुए सडक पर जडे खडजे पर उनके खडाऊँ की आवाज उठ गिर रही थी खटर पटर, खटर पटर।

शाम के चार बजे शकरलाल की आँख खुली। बहुत गहरी नीद आई जन्माष्टमी की भाग दौड मे ठीक से सो नही सके। तबियत भारी भारी-सी थी। अब जमकर सो लिए तो शरीर हल्का हो गया। हरिया ने ताजा हुक्का लाकर रक्खा तो बोले, "बगिया ले चल, वही चलकर पियेंगे।"
शाम होते ही बगिया मे चहल पहल शुरू हो जाती। इस समय भी दस-पन्द्रह आदमी बगिया म अड्डा जमाये हुए थे। माधव प्रसाद के साथ मेहदी हसन शतरज की बाजी लगाये हुए थे। चारा पत्थर की बेंच के बीच म बनी चौपड पर भी पास फेंके जा रहे थे। बार-बार हाथा मे रगडकर खिलाडी पासे फेंकते। पासो के सीधे पडत ही खिलाडी जोरो से चिल्लाता, वो मारा और गोटी पीट देता। आस-पास के चार-पाच तमाशबीन भी बैठे थे। दूर कुएँ की मुडेर के पास जमीन को अँगोछे से साफ करके दो आदमी ताश फेंट रहे थे। एक आने की हार-जीत से रमी खेली जा रही थी।

रामलाल अपने साथ शरीर से कमजोर और घर से उपेक्षित प्राइमरी के एक मास्टरजी को लिये हुए बगिया मे चारो ओर बने फुटपाथ पर आगे-पीछे होकर टहल रहे थे। कभी कभी कुछ बात भी कर लेते। वही घर-गृहस्थी की बात, बदले के प्रति नाराजगी भाग्य, और अपने जमाने का रोना। सब स्वार्थी हो गये है, जमाना ही बुरा है, क्या किया जा सकता है।

खडाऊँ खडखडाते हुए शकरलाल बगिया म घुसे। राम राम, नम्बरदार चारो तरफ से एक के बाद दूसरी आवाजें आने लगी शकरलाल ने सबका हाथ उठाकर उत्तर दिया। पहले कमरे मे जाकर खूटी पर टँगी अपनी बण्डी पहनी, फिर बाहर आकर पत्थर की बेंच के पास रखी आरामकुर्सी पर बैठ गये। हरिया ने हुक्का लाकर पास रख दिया था, वे जोरों से हुक्का गुडगुडाने लगे।

दो एक आदमी कमरे मे जाकर मूढे उठा लाये और शकरलाल के पास आकर बैठ गये, कुएँ के पास पडी छोटी बेंच भी वही आ गयी। दो-तीन उस पर टिक गये। और ऐसे भी आदमी निकल आये जिन्होंने पास पडी गुम्मा ईंटा को उठाया और चूतडो के नीचे जमाकर बैठ गये। अब शकरलाल के आसपास दरबार लग गया।

एक के बाद दूसरा नया विषय उठ रहा था। बस्ती की सारी खबरें शकरलाल को दी जा रही थी। किसके घर मे कौन-सी दाल पकी, इसका सिलसिलेवार विवरण सामने आ रहा था।

शकरलाल सबकी सुन रहे थे, बीच-बीच मे हा हूँ भी करते जाते थे, पर उनका ध्यान लगा था, जरा हटकर बठे जागीरा पर। जब नही रहा गया तो पूछ लिया, "कहो जगीरा, आज कैसे इधर निकल आये।"

"अब इधर न आयें तो कहाँ जायें लम्बरदार ?" जागीरा ने सर झुकाकर दबी जबान मे कहा।

"क्यो थाना-कचहरी से मन भर गया क्या ?" शकरलाल ने चोट की।

"सब मुकद्दर की बात है।" जागीरा ने सर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"मुकद्दर को क्यों दोष देते हो। तुमने तो छाती ठोक के कहा था, हम देख लेंगे। थाना-कचहरी दौड़ा-दौड़ाकर मार देंगे।"

जागीरा दोनों हाथों से सर को पकड़े खामोश बैठा था।

"तुमने अपनी जान में तो कुछ छोड़ा नहीं। एक से एक ऊँचा वकील पकड़ा और थाने के सिपाही की जेबें भी गरम की। पर हुआ क्या, कौड़ी के तीन हो गये। तुम्हारी औरत की हसुली, करधनी, हाथ के कंगन सब बिक गये। धनसिंह की घरवाली के पास जो दो चार सोने की चीजें थी वह भी सब खत्म हो गयी। किस्सा ससुर जहाँ का तहाँ है। उल्टे दो दिन तुम और धनसिंह मारपीट के जुर्म में थाने में और बन्द हो लिए। तुम जिस अपने छोटे भाई जिलासिंह के बल पर कूदते थे वह ऐन मौके पर अपना पल्ला छुड़ाकर अपनी बीवी को लेके ससुराल जा बैठा। कोई धन्ना सेठ तो तुम हो नहीं, जो दो पैसा बाजार में फेरी लगाकर कमाते थे, सो वह भी गया। अब पूछो, क्या मिला तुम्हें।" शंकरलाल का चेहरा गुस्से से तमतमा रहा था।

"अब का कहें लम्बरदार, हम तो मिट गये।" जागीरा इससे ज्यादा नहीं बोल पाया।

आसपास बैठे लोग बहुत ध्यान से सारी कथा सुन रहे थे। शंकरलाल के सामने बोलने की किसी में हिम्मत न थी। माधवप्रसाद की शतरंज की बाजी खत्म हो गई थी। वह भी पास जाकर बेंच पर टिक गये, वहीं से बोले— 'अब जो हो गया, सो हो गया, अब तो तुम्हीं इनकी विपदा दूर कर सकते हो। इस मामले को सुलझा ही डालो लम्बरदार।" माधवप्रसाद ने शंकरलाल से विनती की।

"अरे हम तो अभी सुलझा दें सारे किस्से को, पर यह जागीरा माने तब न।

"जे अब मानेंगे, खूब ठोकर खा ली हैं न, दिमाग ठिकाने आ गया है, अब मानेंगे।" माधवप्रसाद ने अपने बायें हाथ पर पटककर शर्त लगाने के अन्दाज में कहा।

"सब ठीक है।" शंकरलाल बोले, "धनसिंह इनका चचेरा भाई है, बाल-बच्चेदार आदमी है, कोई गैर तो है नहीं। फिर हम कह दें कि एक

टाँग से धप मे खडे हो जाओ, तो घूप मे खडा हो जाये, यह उसकी तारीफ है। मो भाई थोडा-बहुत उसका जो हक बनता है उसे दे दो, वात खत्म हो जाये।''

"अरे तो वही फमला सुनाओ न, बात खत्म हो जाये।" माधव प्रसाद ने कहा।

"बात क्या है, कुछ नही।" शकरलाल झुझलाकर बोले, "हमने इनके मकान की कीमत लगवाई थी। चार हजार से एक पैसा ज्यादा नही लगा। सो या तो आधा रुपया दे दें या आधा मकान। अब यह मकान तो किसी हालत मे देना नही चाहते, सो हमने कहा रुपया ही दे लो। हमारे कहने मे धनसिंह पाँच सौ कम करने को भी राजी हो गया। सौ-पचास जो श्रद्धा हो वह मदिर को दान दे दें, बस। यह इसी बात पर तुनक गये। समझे जैसे सौ पचास मदिर के बहाने हमारी गोट म जा रहे हैं।" शकर-लाल के स्वर म गुस्से के साथ ही शिकायत भी थी।

"राम राम ," जागीरा कानो मे हाथ लगाते हुए बोला, "हमारे मन म ऐसा पाप नही था लम्बरदार। भगवान की सेवा तो हम हर समय करना चाहते हैं, पर करें क्या, हमारी गोट म तो एक पैसा नही है। उल्टे तीन सौ चम्पालाल गोटे वाले के उधार हो गये हैं।"

"कोई बात नही, चम्पालाल पुराना सूदखोर है, जहाँ तीन सौ सूद पर तुम्हें दिये, वही डेढ हजार और दे सकता है। सुबह उसे पकड लाओ, यही बगिया म बैठकर लिखा-पढी करा देंगे।" शकरलाल ने फैसला सुना दिया।

"यह हुई न बात।" माधवप्रसाद चहके, "कोर्ट-कचहरी जाये भाड मे, जो इस भगवान की बगिया का फैसला है वही अटल है। हम तो कहते हैं लम्बरदार की जबान पर ब्रह्मा बिराजते हैं। ब्रह्मवाक्य जर्नादनम।'

"सही कहा ठीक कहा ।" आसपास बैठे दरबारियो ने सर हिला कर समथन किया।

शकरलाल के मुख पर खुशी छा गयी। एक नजर अपने चारो ओर बठे लोगो पर डाली। खूब सतोष मिला। सब कुछ भरा-पूरा है। हुक्क की नली को फिर मुह मे लगा लिया, कश खेंचने की कोशिश की, मगर

। ठण्डा पड गया था, तबीयत फिर झुझला गई।

तभी उन्हें याद आया अभी तक भग का गोला नही चढाया है, एकदम नाये, "साले हरिया, कहाँ मर गया। अभी तक तुझसे ठण्डाई तयार हुई।"

"तैयार हो गई, अभी लाया मालिक।" जल्दी-जल्दी सिल पर पिसी को समटते हुए हरिया बोला।

'जल्दी लाओ साले, नही तो सूत के रख देंगे।"

हरिया ने सिल पर पिसी भग का गाला बनाया, कटोरी मे रक्खा, ! मे ताजा कुएँ का जल लेकर हाजिर हो गया।

शकरलाल ने जलती आखो से हरिया को देखा, लेकिन कहा कुछ ो, वह इस समय भग का गले के नीचे उतारने की जल्दी मे थे।

भग का गोला सटकन के बाद एक गिलास पानी पिया। अब आत्मा तुष्ट हुई।

शाम घनी हो गयी थी। हल्का अँधेरा छाने लगा था। बगिया मे । भी दो-एक आ रहे थे, लेकिन जाने वाला की तादात ज्यादा थी। इसी ाय शकरलाल ने देखा बगिया के फाटक पर एक इक्का आकर रुका, एक सवारिया उतरी।

"अरे हरिया देख कौन आया है।" शकरलाल ने पुकारकर कहा।

हरिया कमरे मे लप जला रहा था, जब तक वह आये तब तक, के से उतरी सवारियो ने बगिया मे प्रवेश पा लिया। चालीस साल से पर की उम्र के आदमी के साथ एक तेरह साल का लडका था। लडका ागता हुआ आया और शकरलाल के पैर छूते हुए बोला, "मामाजी मस्त।'

"कौन, रोहित, जीते रहो जीते रहो अच्छा, बाबू जी भी आये ।"

शकरलाल भग के चढते नशे के बीच से जागते हुए बोले, "आओ ाबूजी, बहुत दिनो बाद दशन दिये।" शकरलाल कुर्सी से उठकर खडे हो ये। कुर्सी उन्होने आने वाले के लिए खाली कर दी, "इधर बठो बाबूजी।"

'नमस्कार देवीदत्तजी।" माधवप्रसाद ने उठकर आन वाले का

स्वागत किया, फिर पास बठे एक छोटी दाढ़ी वाले से परिचय कराते हुए कहा, "आप हमारे दामाद हैं बाबू देवीदत्त जी। लम्बरदार स्वरूप नारायण हैं न, उनकी छोटी बहन आपके बड़े भाई सोमदत्त जी को ब्याही हैं। पीताम्बरपुर के व्यापारी हैं।" फिर घूमकर देवीदत्त से बोले, "यह मेहदी हसन हैं। मुनिस्पल्टी मे नये लगे हैं, शतरज के अच्छे खिलाडी हैं इसी से इन्हें शाम को पकड लाते है।"

देवीदत्त ने मेहदी हसन से हाथ मिलाया, हँसकर बोले, "मियाँ जी शतरज के तो हम भी शौकीन हैं, कल हो जायें दो-दो बाजी।"

"जरूर जरूर हमारी खुशकिस्मती है।" मेहदीहसन न सलाम करते हुए कहा।

माधवप्रसाद और मेहदीहसन के साथ ही आसपास के लोग उठकर चले गये। शकरलाल पत्थर की बेंच पर बैठे थे, उन्होंने अपने पास रोहित को भी बैठा लिया।

"सामान कहाँ है?" शकरलाल ने पूछा।

रामस्वरूप के यहाँ भिजवा दिया है। बडी अम्मा के होते हुए कही और ठहर नही सकते।' देवीदत्त ने उत्तर दिया।

'सो तो ठीक है, बडी अम्मा का राज ही यहाँ चलता है।" शकरलाल ने समथन मे सिर हिलाया, "बडे बाबू जी नही आये?" शकरलाल ने पूछा।

"कौन, भाई, वह कल भौजी के साथ आयेंगे।"

"अभी तो कुछ दिन रहोगे?"

"हाँ, अभी ता दो-तीन दिन हैं फिर एक सप्ताह के लिए लखनऊ चले जायेंगे, लौटते हुए इसे रोहित को यहाँ से ले लेंगे।"

बातें तो बहुत होनी थी, लेकिन रात का अधेरा चारो ओर घिर आया था शकरलाल पर भी भग का नशा चढ चुका था, अब वे अकले रहना चाहते थे, सो सुबह मिलेंगे, कहकर घर चल दिये। देवीदत्त ने भी रोहित का हाथ पकडा और रामस्वरूप के घर की तरफ कदम बढाया।

"यह मामा जी को सब लोग लम्बरदार क्या कह रहे थे?" रोहित ने जिज्ञासा से पूछा।

"यहाँ जमीदार को आदर से लम्बरदार कहने का रिवाज है।" देवीदत्त ने अपने बेटे को समझाया।

- -

रोज की तरह सुबह हो रही थी। पूर्व मे लाली छा गयी। बगिया मे दिन की चहल पहल शुरू हो गयी थी। सैर करने वाले बगिया मे उनके फुटपाथ पर चहलकदमी कर रहे थे। कुएँ के पास भी नहाने वाले आ गये। हरिया ने झाड-पोछकर कमरा साफ कर दिया। कुर्सियाँ कायदे से लगा दी। तख्त पर चादर बदल दी।

सूरज पूरी तरह उग आया था, चारो ओर हल्की धूप छा गई। देवीदत्त, रोहित के साथ आकर कमरे मे बैठ गये। भगतू पण्डत ताजा अखबार लेकर आ गये।

"राम-राम बाबूजी, कब आये," अखबार देते हुए भगतू पडत ने पूछा।

"कल शाम आये हैं।" देवीदत्त ने उत्तर दिया और अखबार लेकर पढने लगे।

खडाऊ की आवाज ने बता दिया कि शकरलाल आ रहे हैं। पीछे-पीछे हुक्का लिये हरिया चल रहा था।

"अच्छा, बाबू जी डटे हुए हैं।' तख्त पर बैठते हुए शकरलाल ने हँसकर कहा, "कुछ नाश्ता पानी किया, या मँगवायें।"

'नही नही कुछ नही मँगाना। अभी बडी अम्मा ने चाय पिलाई है।" देवीदत्त ने अखबार एक तरफ रख दिया।

"और बताओ बाबू जी, क्या समाचार है, बरेली म तो बडा दगा-फसाद मचा है। हमे तो आपकी चिन्ता लगी रहती थी।" शकरलाल ने मुह मे हुक्के की नली लगा ली।

"चिन्ता तो होगी ही, घर से निकलना मुश्किल हो गया। सफर म भी जान जोखिम है। डिब्बे मे अगर मुसलमान चार हैं और एक हिन्दू फँस गया तो उसे उठाकर फेंक देंगे। अगर हिन्दू ज्यादा हैं और दो एक मुसलमान मुसाफिर आ गये, तो वे उसे गाडी के नीचे धकेल देंगे। किसी

का। किसी पर एतबार नहीं रहा। हम सरकारी नौकर हैं आना-जाना तो पडता ही है। अखबार मे तो पढते ही होगे, रोज ही कितनी बकसूर जानें जाती हैं।'

'बाबू जी, अखबार पढना तो हमने बन्द कर दिया।' शकरलाल ने हुक्के की नली को तख्त पर पटक दिया, 'एक एक खबर पढकर हमारा खन खौल जाता है। जिधर देखो मार-काट। पुलिस फौज सब बकार है। पाकिस्तान लेंगे पाकिस्तान लेंगे अरे लेओ साले पाकिस्तान, पर महाभारत काहे मचाये हो। जे अच्छी आजादी आय रही है, जीना मुश्किल कर दिया।"

'भाई शकरलाल, सारी गलती कांग्रेस की है। शुरू मे मुस्लिम लीग बिलोचिस्तान, पजाब, थोडा सा सिन्ध का इलाका, पाकिस्तान के नाम पर माँग रही थी, दे देते ता जान छूटती पर, अकड गय। अब ले लो मजा। अब मुस्लिम लीग बगाल भी माँग रही है, और भी न जाने क्या-क्या माँग रही है। हम लोग इस समय वष ४६ मे चल रहे हैं। आप दखना साल दो साल भी नही बीतेंगे, कांग्रेस मजबूर हो जायेगी, और पाकिस्तान कायम हो जायेगा।'

'जे वात हमारी समझ मे नहीं आई बाबू जी। पाकिस्तान नही बन सकता।" शकरलाल न सर हिलाकर इन्कार किया।

'क्यो नही बन सकता। जब सारी अग्रेजी ताकत हिन्दू मुसलमान को लडान पर लगी हुई है, और बकौल जिन्ना, सारी दुनिया का मुसलमान पाकिस्तान का मददगार है, तो क्यो नही बन सकता पाकिस्तान।" देवीदत्त ने समझाने की टोन मे कहा, "आपको मालूम है जिन्ना ने क्या कहा? जिन्ना कहते है, हिन्दुस्तान की ततीस करोड आबादी म हम भले ही हिन्दुओं से कम हा मगर सारी दुनिया में मुसलमानो की आबादी अस्सी करोड़ है, और सारी दुनिया का मुसलमान एक है। इधर हिन्दुओ का हाल यह है कि नौ कनौजियाँ ब्राह्मण तेरह चूल्हे। कभी हिन्दू एक हो ही नहीं सकता इसलिए लड नही सकता। फिर किस बात पर हम पाकिस्तान को बनने से रोक सकते हैं।

"तो क्या सारे मुसलमान पाकिस्तान चले जायेंगे।'

"सारे मुसलमान पाकिस्तान क्यों चले जायें। उनके तो दोनों हाथ में लड्डू हैं। जो पाकिस्तान चले जायेंगे, वह वहां राज करेंगे। जो हिंदुस्तान में रहेंगे वह यहां के नागरिक बनकर अपना हक मांगेंगे। बेवकूफ तो हिंदू है जो हर जगह पिटेंगे।"

'लेकिन अगर पाकिस्तान बन गया और हिंदुस्तान बँट गया तो फिर आजादी मिली भी तो क्या फायदा।" शंकरलाल ने बचैन होकर कहा।

'फायदा-नुकसान सियासत में उस तरह नहीं देखा जाता जैसा कि हम आप देखते हैं। लीगी और कांग्रेसी दोनों ही हकूमत करने को तडप रहे हैं। हकूमत मिलनी चाहिए, भले ही वह लँगडी हो या लूली। जनता मरे या पिसे, नेताओं को तो राज्य करने से मतलब।"

"महात्मा गांधी तो कह रहे हैं कि उनकी लाश पर ही पाकिस्तान बनेगा। इसके बारे में आप क्या कहेंगे बाबू जी।'

"ठीक है, गांधी जी नहीं चाहते हिंदुस्तान का बँटवारा हो। लेकिन चाहने से ही तो सब कुछ नहीं होता। हालत जिस तरह बिगड गये हैं, उसे कैसे सम्हाला जायेगा। लीग पाकिस्तान की माँग से एक इंच हटने को तैयार नहीं है, सारे उत्तर भारत में हिंदू-मुसलमान के बीच नफरत की आग सुलग रही है, अंग्रेज अपनी राजनीति चला रहा है फिर अकेले गांधी जी कहां तक हवा के रुख को मोडेंगे। एक वक्त ऐसा आयेगा कि उन्हें लगेगा वह बिलकुल अकेले पड गये हैं।" देवीदत्त एक क्षण को रुके फिर बोले, "भाई शंकरलाल बात को समझो, आज कांग्रेस तो एक धर्मशाला बन गई है जहां सभी तरह के लोग आकर टिक गये हैं। इसमें अवसरवादी ज्यादा है, और ऐसे भी हैं जो सिर्फ एक दायरे में सोचते हैं, जिनके लिए अपनी बात सबसे बडी होती है। पिछले दिनों जो नेता जी स्वर्ग सिधारे हैं, मेरा मतलब मदनमोहन मालवीय जी से है वह इसी में बडप्पन मानते थे कि हिंदुस्तान से इंग्लण्ड जाते हुए मिट्टी से हाथ धोने के लिए भारत से मिट्टी साथ ले जायें। उन्हें डर था कहीं इंग्लण्ड की मिट्टी से हाथ धोकर अपवित्र न हो जायें। बताइये, यह भयंकर संकीर्णता! बनारस में हिंदू युनिवर्सिटी तो उन्होंने जरूर कायम कर दी, लेकिन हिंदुओं को कोई सामाजिक क्रांति नहीं दी। उल्टे हिंदू महासभा जैसी

भ्रष्ट सस्था कायम करके ऐसी हिन्दू साम्प्रदायिकता को जन्म दिया जो हमे अपने ही हरिजन भाई से नफरत करना सिखाती है। भला ऐसी लाचार हिन्दू जाति कही वैल आगनाइजड मुस्लिम जमात से जीत सकती है।"

'तो क्या लीगियो के सामने घुटने टेक दें।" शकरलाल को गुस्सा आ गया।

"मैंने यह कब कहा, चाहे हिन्दू गुण्डागर्दी हो या मुस्लिम गुण्डागर्दी, वह तो एक सी बुराई है। गुण्डागर्दी से तो हमे लडना ही होगा। सिर्फ मुसलमानो के खिलाफ हिन्दू इकट्ठा हो जायें, इससे कोई बहुत बडी बात नही होने वाली। तुरन्त जरूर थोडा लाभ मिल सकता है, लेकिन फिर बिखर जायेंगे क्योकि कोई सामाजिक चेतना तो इससे पैदा होती नही। क्या बात है कि पिछले हजार सालो से हिन्दू पिटता ही चला आ रहा है, इसलिए कि वह हजारो खानो मे बँटा हुआ है, और साथ ही पैसे के नाम पर बिका हुआ।" दवीदत्त अपनी बात कहकर एक क्षण को रुके। फिर वाक्य को जैसे पूरा करते हुए बोले, "और यह जो मुस्लिम लीग है यह क्या मुसलमानो की सेवा कर रही है ? अरे यह तो मुसलमानो को उल्लू बना रही है। जिस पार्टी मे नवाबजादे, शहजादे, साहबजादे भरे पडे हो। जिसका सबसे बडा लीडर मुहम्मद अली जिन्ना खुद पाँच वक्त का पक्का नमाजी न हो, बस राजनीतिक उल्लू सीधा करने के लिए ही इस्लाम का झण्डा उठाये हो, वह इस्लाम के नाम पर अपनी कौम की क्या खिदमत करेगा। देख लेना अगर पाकिस्तान बन भी गया तो वहाँ पर यह लीग मे लीडरान सिर्फ नाम के लिए होंगे। असली हकूमत तो वहाँ अँग्रेजो की होगी।"

'बाबू जी, इतनी दूर की बात तो हमे पता नही, हाँ, बच्चो की, औरतो की कमजोर आदमियो की हत्या की बात पढकर हमारा खून खौल जाता है। अगर मर्द हो तो बराबर वाले से लडो। हम तो बाबू जी, पिछला जमाना पसन्द है। राजा खुद फौज लेके मैदान मे जाता था और दो दो हाथ हो जाते थे। जो जीते सो राज करे। यह है असली जवामर्दी।" शकरलाल ने तख्त पर हाथ मार के कहा।

'सुना है यहाँ भी कुछ गडबड होने वाली थी, पर तुमने बडी सफाई से

शंकरलाल ने कुछ ऐसे जोश से हाथ हिलाकर कहा कि देवीदत्त को भी हँसी आ गई। शंकरलाल अब भी जोश में थे, 'के बाबू जी, गलत कहा हमने।"

'गलत क्यों, सही बात है। समय पर दण्ड की भी जरूरत पड़ती है।" देवीदत्त ने समर्थन में सिर हिलाया, "जरा ठण्डा पानी मँगवाओ।'

शंकरलाल को सहसा जैसे कुछ ख्याल आ गया, जोरों से आवाज दी, "हरिया, अबे आ हरिया।'

एक मिनट में हरिया सामने हाजिर था।

'जा दौड़ के पलटू हलवाई के यहाँ से एक किलो गरम जलेबी ले आ।"

देवीदत्त ने मना किया मगर शंकरलाल नहीं माने, सर हिलाकर बोले, "वाह बाबू जी, कहीं खाली पानी पिया जाता है।"

अचानक बगिया में एक नया काण्ड हो गया। नत्थूसिंह और माता दीन एक हट्टे कट्टे गाँव वाले को पकड़े हुए बगिया में घुसे। उसे देखते ही शंकरलाल की त्यौरियाँ चढ़ गयीं, "अच्छा, ले आये इसे इधर लाओ, हम इहे सीधा करें।" शंकरलाल ने कमरे में नजर दौड़ाई, लेकिन उन्हें कोई डण्डा नहीं दिखाई दिया, जल्दी में उन्होंने हुक्के की नली निकाल ली, और एक मिनट में बाहर आ गये। नत्थूसिंह और मातादीन ने आदमी को छोड़ दिया था। गाँव वाला शंकरलाल से आँख नहीं मिला पा रहा था। उसका सारा शरीर काँप रहा था।

'हाँ साले घूरा, अब बोल, क्यों भागे ऐन टाइम पर।' शंकरलाल ने घुड़ककर पूछा।

"लम्बरदार हम भाजे कहाँ, हम तो "

"झूठ बोलता है हरामी कुत्ते शंकरलाल हुक्के की नली लेकर गाँव वाले पर पिल पड़े। गाँव वाला एक मैली फटी धोती कमर के नीचे बाँधे था। बाकी सारा शरीर खुला था। जहाँ भी हुक्के की नली पड़ती बरत उछल आती। सर पर लगते ही हुक्के की नली बीच से टूट गई।

देवीदत्त भी घबरा गये, लपककर शंकरलाल के पास पहुँचकर, एक तरफ हटाते हुए बोले, "बस करो, बस करो शंकरलाल, छोड़ो भी ।'

"बाबू जी आप हट जाओ आज हम इसे ठीक कर देंगे।" शकर लाल हाथ मे टूटी हुई हुक्के की नली लिए अब भी उफन रहे थे।

लेकिन देवीदत्त नही माने, किसी तरह खीचकर कमरे के अन्दर ले आये। तख्त पर बैठते हुए भी शकरलाल बमक रह थे, "बाबू जी, आपको नही मालूम हमने इस घूरा के साथ क्या किया है। यह एक नम्बर का बदमाश और खूनी है। इसकी औरत पास के गाँव के एक आदमी से फँसी हुई थी। इसने बजाय अपनी औरत को कुछ कहने के, उस आदमी को अपनी औरत के जरिये झोपडी मे बुलवाया, और फिर कुट्टी काटने के गडासे से उसकी बोटी-बोटी काट डाली। जब पुलिस पहुँची तो सारी झोपडी मे खून ही-खून भरा था। सीधे फाँसी थी। पर नही, हमने कहा, हमारे गाव का आदमी है, गलती हो गई, पर अब हमे बचाना होगा। सो हमने दौड़ धूप की, रुपया पानी की तरह बहाया, अपने रसूक से काम लिया, बस दो साल की जेल कटवाकर निकाल लाये। फिर एक साल अपने घर पर रक्खा। अब यह नमकहराम वह सारे अहसान भूल गया। जरा सा हमारा काम पडा तो भाग गया। गाव के किनारे एक आम का पेड है। पास के गाँव के चौधरी से आजकल हमारी अदा बदी चल रही है। उन्होने हमारे पेड के पास खिची मेड को ताडकर पेड को अपनी ओर कर लिया। हमने नत्थूसिह का भेजा कि इसे और दो चार और आदमियो को लेकर मड को ठीक कर दो। तो एन टाइम पर यह आदमी भाग गया।"

"लम्बरदार, हम भागे नही, आदमी लान गये थे।' घूरा ने रोते हुए कहा।

"चुप रह साले, झूठा बईमान।' शकरलाल चीखे। फिर जसे कुछ याद आया, नत्थूसिह की तरफ देखकर बोले, "जन्माष्टमी के पैसों का हिसाब कर दिया इसने।'

"कहा तीन रुपये दिए है बस।" नत्थूसिह ने कहा।

"देखा मारे गाव वालो ने जन्माष्टमी पर भगवान को पाच रुपये चढाये, इसने उनमे भी धोखा कर दिया यह बडा कमीना है।" शकरलाल के चेहरे पर घृणा उभर आई थी।

"मजूरी ही नही मिली लम्बरदार पाच रुपया कहा से पाते।" घूरा

ने कहा।

हरिया जलेबी ले आया था। शकरलाल अब शान्ति चाहते थे नत्थूसिंह से बोले, "ले जाओ इसे हमारे सामने से, घर जाकर फसला करो।"

नत्थूसिंह ने घूरा की बाँह पकडी, खेंचते हुए बगिया के बाहर चले गये। रोहित सुबह से बगिया म फूलो पर मँडराती लाल पीली तितलियो को पकडता घूम रहा था। मारपीट देखी तो सहमकर बेंच के पीछे छुप गया। अब नत्थूसिंह के साथ घूरा को बगिया के बाहर जाते देखा तो धीरे धीरे चलता हुआ कमरे के दरवाजे के पास आकर खडा हो गया। शकरलाल ने प्यार से बुलाया, "इधर आओ रोहित, जलेबी खाओ।"

ताजी जलेबी का स्वाद देवीदत्त के लिए खतम हो गया था। वह तो एकटक शकरलाल की ओर देख रहे थे। शकरलाल का कद छोटा था, शरीर भी दुबला पतला। मुह पर मूछें जरूर ऐंठी हुई थी। भग के नशे से आखा मे लाल डोरे खिच गये थे, बस इतना ही। इतन से बल पर ही क्या उन्होने अभी अपने से तिगनी ताकत वाले आदमी को मारा था। नही यह तो उस जमीदारी का प्रताप है जहा एक आदमी के सामने दसिया आदमी बलि के बकरे बने खडे रहत हैं।

बगिया के छोटे दरवाजे मे से एक गाय बार बार मुह डालकर दर वाजे के पास उगी घास खाने की कोशिश करती। दरवाजा बीच मे आ जाता इसलिए गाय घास पर पूरा मुह नही मार पाती। दरवाजा दीवार से टकराता तो आवाज होती। सबका ध्यान उधर ही चला गया। रोहित इस गाय को बगिया के बडे दरवाजे पर देख चुका था। अब गाय घूमकर इस दरवाजे पर आ गई। गाय क्या है, हड्डिया का ढाचा। देखकर आश्चय होता कि गाय अपने पैरो पर खडी कैसे है। आखो मे कीचड, मुह से राल टपकती। पीछे का आधा हिस्सा गोबर मे सना था। देखकर दया आती।

"मामा जी, यह किसकी गाय है बहुत कमजोर है, चल भी नही पाती।" रोहित ने शकरलाल से पूछा।

शकरलाल हँसे। पास रखी कची सिगरेट की डिब्बी से एक सिगरेट

निकालकर मुँह मे लगाते हुए बोले, "बेटा, यह तुम्हारी गाय है।"

"हमारी!" रोहित के साथ ही देवीदत्त भी चौंक गये।

"आपके बडे भाई सोमदत्त आय जी इस गाय को पीताम्बरपुर से यहाँ लाकर छोड गये। दूध देना बन्द कर दिया तो सोचा साले के खेतो पर मुफ्त मे चर लेगी। उनके साले हरनारायण एक नम्बर के सूम। वे भला मुफ्त मे क्यो गाय चरायें सो खेत पर छोडने के बजाय, छोड दिया सडको पर धक्के खाने के लिए। दिन भर इधर उधर मुह मारती रहती है, लोगों के डण्डे खाती है। पेट मे दाना नही जाता। सूखकर काँटा हो गई।"

रोहित तो बच्चा है, क्या बोलता, मगर इस समय तो अपने बडे भाई की बढाई सुनकर देवीदत्त की भी बोलती बन्द हो गई।

"देख लो बाबू जी, यह है हिन्दू धरम। वे बडे बाबू जी सोमदत्त पक्के आय समाजी हैं, और उनके जे साले हरनारायण पक्के सनातनी। एक घण्टा रोज सुबह पूजा करते हैं। माथे पर रोज चन्दन का तिलक लगाते हैं और गले मे तुलसी की माला हर समय पहने रहते हैं, पर गाय को दो रोटी नही दे सकते। गाय ने दूध देना बन्द कर दिया, तो दोनो ने धक्का दे दिया।" हरनारायण की बुराई करके शकरलाल के मुख पर सन्तोष उभर आया था।

"तो तुम ही कुछ करते। तुम्हारा भी तो कुछ फर्ज है। आदमी हो, चाहे जानवर, भूखा है तो दो रोटी तो डालनी ही चाहिए।" देवीदत्त चिढ गये थे।

"लो आ गई न वही बात। बाबू जी हमारे लिए तो इधर खाई है उधर खन्दक। अरे हम तो आपकी गाय को हाथ भी नही लगा सकते। साले-बहनोई दोनो हमारे पीछे पड जायेंगे कि हम उनकी गाय पर कब्जा कर रहे हैं। अगर गाय को कुछ हो गया तो गऊ हत्या का पाप मढ देंगे हमारे मत्थे। न बाबू जी न। हम आपकी गाय की सेवा नही कर सकते। हम तो पापी ही भले।" शकरलाल ने दोनों हाथ जोडकर सर मे लगाते हुए क्षमा माँगी।

रोहित बगिया के दरवाजे के पास पहुँच गया था। जमीन पर उगी घास को मुट्ठियो मे कसकर उखाडने लगा। घास आधी उखडती, आधी

टूट जाती। जो भी थोडी बहुत घास उखडी उसे गाय के सामने डाल दिया। गाय जमीन में बैठ गई थी, अब धीरे धीरे मुह मारने लगी।

हरनारायण पूजा करके मन्दिर के बाहर निकले तो रोहित दौडकर उनके पास पहुचा, "मामा जी, आप गाय को दाना क्यों नही डालते। बिचारी भूखा मर रही है।'

"कौन-सी गाय ।" हरनारायण ने शिव स्तुति बुदबुदाते हुए पूछा।

'वही, जो बगिया के आगे बैठी है।"

हरनारायण का मुह तीन कोने का हो गया। गुस्से से बोले, "वह हमारी गाय है जो हम उसका पेट भरें?"

"क्यो । ताऊ जी दे गये आपको। अब आपकी है वह गाय।" रोहित ने कहा।

"वाह भइया, अच्छी वकालत कर रहे हो अपने ताऊ की।" हरनारायण और ज्यादा चिढ गये, "साल भर तो थनो को निचोड निचोड के दूध पिया, अब जब थन सूख गये तो हड्डियो का ढाँचा हमारे आगे डाल दिया। हम क्या चूतिया समझा है। ले जायें अपनी गाय। हमने क्या ठेका लिया है दूसरो के जानवर पालने का वाह भाई, अच्छी कही। साल भर खूब दूध पियो, जब जानवर बेकार हो जाये तो दूसरो के मत्थे मढ दो।" हरनारायण पैर पटकते हुए घर की तरफ चल दिये।

रोहित खामोश खडा जाते हुए हरनारायण को देख रहा था।

तीन बजे की गाडी से सोमदत्त आर्य भी आ गये। इक्के से उतर भी नहीं पाये थे कि रोहित ने बोलना शुरू कर दिया, "ताऊ जी, हम अपनी गाय को यहाँ नही रखेंगे। यहाँ कोई उसे दाना घास नही देता। बेचारी भूखी है। हड्डियाँ निकल आयी हैं, खडी भी नही हो पाती। उसे साथ ले चलेंगे।"

"हम क्यो ले जायें गाय को?" सोमदत्त आर्य न आँखें तरेरकर पूछा, "हमने गाय तो हरनारायण को दे दी। वह चाहे रखें या मारें। हम क्या

मतलब।"

'वह तो कहते हैं कि गाय तुम्हारे ताऊ की है, वही जानें।"

"हैं ऽऽऐऽऽ ऐं ताऊ की है गाय, खूब कही।" सोमदत्त आय ने मुह चिढाते हुए कहा "पहले तो गाय मँगवा ली, अब पालना पडा तो बच्चू की फूक सरक गई। गाय मर गई तो बेटा को गऊ हत्या का पाप लगेगा। चारो धाम भागते फिरेगे। भूल जायेंगे सारी भगताई। खुद तो सेर भर अनाज ठूसेंगे पट मे, गाय को एक मुटठी नाज दते नानी मरी जाती है। अरे हमे क्या, हमने गाय उन्हे दे दी, अब वे जानें उनका काम जान।" सोमदत्त आय ने एक हाथ मे झोला पकडा, दूसरे मे छतरी थामी, और मन्दिर के अन्दर चले गये। रोहित मुँह वाय देखता रह गया।

शाम की गाडी से श्रीप्रकाश और विजय भी आ गये। श्रीप्रकाश को फोटोग्राफी का शौक बचपन से था, बी० ए० मे पहुँचते पहुचते एक कीमती कमरे का जुगाड बठा लिया। अब ता अच्छे खासे पशेवर फोटोग्राफर हो गये। अपन खेंचे फोटोग्राफ की एक प्रदशनी भी लखनऊ मे कर चके थे। इस प्रदशनी मे नीता शर्मा के भी दा फोटा प्रदर्शित करने का साहस दिखाया था। नीता के यह दानो चित्र श्रीप्रकाश ने बरेली मे खीचे थे। अपने को आर्टिस्ट कहलाना पसन्द करते थे, इसीलिए चातक उपनाम रख लिया था। स्वभाव के हँसमुख थे, लेकिन अपनी आलोचना कतई नही सुन सकते थे। जमीदार परिवार के होने के नाते जमीदारी के सस्कार घुटटी मे मिले थे। चलते तो अकड अपने आप आ जाती। हालाकि शरीर से दुबले होने के नाते अकड कोई खास रग नही लाती, मगर फिर भी दूसरो पर रौब डालने से नही चूकते। माँ ने कनखल मे गुरू कर लिया, खुद भी पक्के सनातनी। शराब और गोश्त से परहेज करते। दूध भात मन से खाते। वकालत करने की इच्छा है, मगर शेखूपुरा मे नही रहगे। यहा रहकर विकास नही हो सकता। बनारस मे ही जमने का विचार है।

विजय को साथ रखकर पढा रहे हैं। रामस्वरूप चाचा लगत हैं उनका लडका भाई हुआ। खानदान की इज्जत का सवाल है। शेखूपुरा म रहकर विजय बिगड रहा है, इसी से होस्टल छोडकर एक छाटा सा घर ले लिया बनारस म, अब उसी घर मे एक नौकर और विजय के साथ

रहना पड रहा है। विजय का मन पढाई मे नही है, पर इससे क्या, डण्डे और रुपये के जोर पर डाक्टर तो बनाना ही है, ऐसा तय कर लिया है, रामस्वरूप ने। श्रीप्रकाश उनका समर्थन करते हैं।

श्रीप्रकाश दो साल बरेली मे देवीदत्त के घर रहकर पढ चुके हैं। इन दो सालो की पढ़ाई के बीच ही उन्होंने मुहल्ले के पुराने रईस रघुवीर सहाय शर्मा की बेटी नीता शर्मा से प्रेम कर डाला, जो अब रग ले आया था। देवीदत्त आप अपने को बहुत होशियार समझते हैं। दूसरों को ब्रह्मचर्य का पाठ पढाने म उन्हें विशेष सुख मिलता है। पर श्रीप्रकाश और नीता के मामले म गच्चा खा गये। रोज सुबह अपने फूफा देवीदत्त से श्रीप्रकाश ब्रह्मचर्य का उपदेश सुनते, मगर अर्धरात्रि को उनके सो जाने पर दो मकानो की छत पार करके नीता की छत पर पहुँच जाते। बहुत रसिया तबीयत पाई है श्रीप्रकाश ने। जहाँ भी सौन्दर्य देखते, प्रशसा किये बगैर रह नही पाते।

विजय कुमार उर्फ छोटे भइया अभी नवी मे ही आये हैं, किन्तु उनकी मसें भीग गयी हैं। रोहित से दो साल बडे हैं विजय कुमार, मगर छठी और सातवी मे एक-एक साल फेल होने के कारण रोहित के साथ हो गये। गठा हुआ शरीर है। अपने बाप के अकेले बेटे, खाने पीने की कोई कमी नही, इसीलिए कम उम्र मे ही जवानी शरीर म अगडाई लेने लगी। नेकर के अन्दर लगोट पहनना पडता है, नही तो अपने को सम्हाल पाना मुश्किल हो जाता है। रोहित से विजय ने यह रहस्य की बात बताई तो वह मुह बाये देखता रह गया। उसकी कुछ समझ मे नही आया। मा की मौत पिता की उपेक्षा के साथ ही घर का सारा काम करना पडता। शरीर से भी कमजोर। हर पन्द्रह दिन बाद पेट खराब हो जाना, चक्कर आने लगता। जाडो मे हाथ-पैरों के जोडो मे दर्द शुरू हो जाना। खानदानी बीमारी गठिया का असर अभी से हो गया। इसी के साथ स्वर्गीय मा ने घरेलू और दब्बूपन के सस्कार भर दिये। नवी कक्षा मे आ जाने के बाद भी स्त्री की नाभि और योनि के बीच कितना अन्तर होता है यह नही जानता। विजय खिलखिलाकर हँसता है, "तुम तो पूरे भोंदू हो तुम्हे कुछ नही मालूम। चलो तुम्हें गाँव का तमाशा दिखायें।" विजय रोहित का हाथ पकडकर

भगी टोला की तरफ चल दिया।

अभी सुवह के नौ ही बजे हैं। ठण्डी हवा बह रही है। भगी टोला की औरतें घरों म कमाने गई हुई होंगी। आदमी खेता पर मजदूरी करने गये होंगे। ऐसे मे मुहल्ले मे या तो छोटे लडके होगे या फिर घर का काम करने के लिए छोटी-बडी लडकियाँ रह गयी होगी। घर क्या है, खपरैल की छत की बनी कच्ची कोठरिया। इन्ही कोठरियो के आगे थोडी-सी जगह घेरकर खाना बनता, नहाना धोना होता। छोटी-वडी लडकियाँ आने-जाने वाले की निगाहो से बच नही सकती। भगी टोला के सामने लगे नीम के पड से नीम की निबोलिया तोडने के बहाने विजय खडा हो जाता। कोई-न-कोई लडकी दिखाई दे जाती तो उसके उभरे सीने पर विजय की नजरें चिपक जाती। इतने से ही खूब सन्तोष मिलता। अगर मौका लग गया तो इससे आगे भी बहुत कुछ मिल सकता है। अपने बाप दादा की तरह विजय भी भगियो को अपनी रियाया मानता है, और भगियो की औरतो पर अपना खानदानी हक। रोहित का हाथ पकडे हुए विजय नीम के पड के नीचे पहुँचकर खडा हो गया।

इसे कहते है मौके की बात। विजय तो सिफ किसी लडकी की छाती के उभार को देखन की आशा लेकर आया था, पर यहाँ तो साक्षात कामदेव अवतरित हो गय थे। बरसात का मौसम। पशु-पक्षी भी मौसम की मार को नही सह पाते। एक मरियल सा कुत्ता और खाज से भरी कुतिया पहले एक दूसरे को प्रेम से देखते रहे, सूघते रहे और फिर एक जगह स्थिर हो गये। विजय के लिए यह बिना टिकट का ऐसा तमाशा था जिसे देखते हुए मन-ही-मन रस विभोर हुआ जा सकता था। पास ही पडे एक पत्थर पर विजय बैठ गया। उसकी आँखें पशु जोडे पर टिक गयी थी। बहुत सुख मिल रहा था।

लेकिन रोहित का खडा रहना मुश्किल हो गया। कसी गन्दी जगह है। जगह जगह गोबर पडा है। रात कुछ पानी गिरा, कच्ची सडक पर कीचड हो गया है। सामने भगी टोला के टूटे फूटे मकान, दो चार लडके पास आकर खडे हो गये, उनकी बहती नाक और गन्दा शरीर देखकर घिन आती। चारो ओर से अजब बदबू-सी उठ रही है, उस पर सामने खाज और खुजली से भरे गन्दे कुत्ता और कुतियाँ। अब यहाँ और खडा नही

रोहित खुर्पी लिए दोनो के सामने हाजिर हो गया, "अपनी गाय भूखी है, उसी के लिए घास खोद रहा हूँ।"

"अरे तो हरिया से कह दो खोद देगा, तुम क्यो यह सब कर रहे हो। पढे लिखे बच्चे घास नही खोदते। लोग देखेंगे तो क्या कहेंगे।" शकरलाल ने प्यार से समझाया।

"मामा जी, मैं तो अपनी भूखी गाय को खिलाने के लिए खोद रहा हूँ। अपना काम करने म कोई बुरी बात थोडी ही है।" रोहित ने कहा।

"हाँ, हाँ ठीक है। गाय की सेवा तो धम की सेवा है। कोई बात नही, घास खोदने मे शम काहे की।" देवीदत्त ने बेटे का उत्साह बढाया।

"वाह बाबूजी, जे आपने खूब कही।" शकरलाल चिढकर बोले, "हमारा भाजा घास खोदे, यह यहा नही हो सकता। हमारी बदनामी होगी।'

"अरे छोडो यह सब, अपना फर्जी बचाओ, अदब में आ रहा है।' देवीदत्त ने चेतावनी दी।

फर्जी की मुसीबत के आगे शकरलाल सब भूल गये। शकरलाल फिर शतरज के मोहरों मे खो गये। रोहित को मौका मिला तो भागकर फिर घास खादने मे लग गया।

घास खोदना भी एक अजूबा हो गया। गली से गुजरते लोग एक क्षण को ठिठककर खडे हो जाते। अच्छे घराने का लडका घास खोद रहा है! एक तो छत पर आ गये। औरतें भी छत पर घूघट की ओट से रोहित को देखकर 'हाय दइया' कहकर दम साध लेती। विजय भी आ गया। शायद कुत्ते-कुतियों का खेल खतम हो गया था। राहित को घास खोदते देखा तो खूब हँसा, फिर अकडकर कुएँ के पास पडी कुर्सी पर जा कर बैठ गया। कैसा गन्दा काम कर रहा है रोहित, घास खादता है। उसे तो कोई हजार रुपया दे तो भी न खोदे।

रोहित पर इस सबका कोई असर नही था। उसने जसे-तैसे थोडी-सी घास खोदी और लाकर गाय के सामने डाल दी। गाय ने मुह उठाकर देखा। गाय की आँखों से पानी बह रहा था। वह एकटक रोहित की ओर देख रही थी। शायद कहना चाह रही थी, बहुत देर हो गई। अब तो खाने के लिए मुह भी ठीक से नही खुलता। अब इतनी-सी घास जीने के

लिए कैसे सहारा बनेगी ?

एक दो बार गाय ने घास मे मुह मारा, फिर मुह घास पर रख दिया। मातादीन खाने के लिए बुलाने आ गये। रोहित ने कुएँ पर जाकर हाथ-मुह धोया, फिर खाने के लिए विजय के घर की तरफ चल दिया।

दूसरे दिन रोहित को घास खोदने की मेहनत नही करनी पडी। पहले दिन की खोदी घास ही अभी तक गाय ने नही खाई थी। घास म गाय मुँह मारने की कोशिश करती, लेकिन मुह चलता नही। आसपास मक्खिया भिना भिना रही थी। आने जाने वाले एक नजर डालकर 'बेचारी गाय' कहकर सहानुभूति प्रकट करते और फिर आग बढ जात। हरिया ने मिट्टी के एक बडे बतन में पानी लाकर रख दिया, वह भी नही पिया गया। सब बेकार, शायद अन्तिम समय आ गया।

सोमदत्त आय ने अपना झोला छाता उठाया और पीताम्बपुर की पहली गाडी पकड ली। शेखूपुरा में रहना अब ठीक नही। हरनारायण ने भी समझदारी दिखाई। खेतो की बुवाई ठीक से हुई या नही, यह देखन के लिए गाँव में जाकर बैठ गय। देवीदत्त श्रीप्रकाश के साथ दो दिन के लिए हरदोई चले गये थे, वह भी बच गये। फँस गये तो शकरलाल। सारी दुनिया जहान की मुसीबतें उन्ही के सर आती हैं।

भोर पहर गाय ने अन्तिम साँस ली। शकरलाल को खबर मिली तो सीधे पुजारी जी के पास पहुँचे, "गाय तो चल बसी, अब क्या विधान है शास्त्रो का।"

"मालिक, आप तो बेकार में परेशान हो रहे हो।" पुजारी ने समझाया, "जिनकी गाय थी वह पीताम्बरपुर में बैठे हैं। जिनको सौंपी थी वह गाँव जाकर बैठ गये। अब यह तो पचायती गाय हो गई।"

"सो तो ठीक है। शकरलाल ने सर खुजाते हुए कहा, "पर देह तो उसने बगिया के आग त्यागी है। इसी से तो हम धमसकट म पड गये हैं।'

"आप इस तरह का सोच-विचार न करो। गाय ने देह बगिया के

अन्दर तो त्यागी नही जो आप पर पाप लगे। वह तो गली में मरी है जो मुनिस्पैल्टी की है। अब तो सब भाई मिलकर इसका अन्तिम संस्कार करेंगे। हम अभी मुहल्ले-भर में घर घर जाकर दान इकट्ठा करते हैं। इसी से पाँच भाई मिलकर सारा काम कर देंगे।" पुजारी जी कन्धे पर अगोछा डालकर गाय के सतकम को तैयार हो गये।

सबसे पहले शकरलाल ने दो रुपये गाय के दाह संस्कार के लिए दिये। फिर पुजारी जी ने मुहल्ले भर मे चक्कर लगाया। साथ मे थे भगतू पण्डत और नत्थूसिंह। किसी ने अठन्नी दी तो किसी ने रुपया। ज्यादातर ने चवन्नी का दान दिया। अच्छी-खासी रकम जमा हो गई। किराये पर एक ठेला मगवाया गया। उस पर फटी पुरानी दरी डाली गई। जैसे-तैसे गाय की लाश ठेले पर चढाई गई। गाय पर सफेद कपडे का कफन डाला गया। फूल माला भी पडी। बस्ती के बाजे वाले भी आ गये। बाजे वालों को सख्त हिदायत दी शकरलाल ने। सिर्फ 'ओम जय जगदीश हरे' की धुन बजाई जायेगी, और कुछ नही। भगतू पण्डत और पुजारी जी हाथों मे करताले लिए कीतन करते चल रहे थे। शवयात्रा मे अच्छी खासी भीड-इकट्ठी हो गई। बडी अम्मा ने गऊ माता के पैर छुए, और जोरो से रो पडी। उनकी देखादेखी आसपास की औरतें भी रोने लगीं। माधवप्रसाद त्रिपाठी ने सबको दबे स्वर मे डाँटा, "रोने की क्या बात है। माटी का चोला था सा मुक्ति पा गया। यह ससार नश्वर है, सबको एक दिन जाना है, सो गऊ माता ने भी मुक्ति पाई।"

चौराहे तक शकरलाल ने भी शवयात्रा म साथ दिया, फिर बगिया मे लौट गये। स्नान करना है। हिन्दू के लिए शवयात्रा मे शामिल होने के बाद स्नान करना जरूरी है।

शवयात्रा अच्छे-खासे जलूस मे बदल गई। लाला खूबचन्द एक थली मे ढेर सारे पैसे लेकर आ गये। जै हो गऊ माता जै हो गऊ माता कह-कर गऊ माता पर पैसे फेंकने लगे। आसपास के हरिजन बच्चे इकट्ठे हो गय थे। आपस मे लडते झगडते पैसे बीन रहे थे। बडे बाजार मे अच्छी हलचल हो गई।

शवयात्रा मे शामिल लोग तरह-तरह की बात कर रहे थे। कुछ

नास्तिक भी आ गये। दबी जबान से आरोप लगा रहे थे "बेचारी गाय भूखा मर गई किसी न एक मुट्ठी दाना नही दिया दिन-रात सडक पर पडी रहती थी हम सब जानते हैं।"

"तुम कुछ नही जानते तुम्हे कुछ पता नही है।" पास चलते आस्तिक ने कहा, "यह गऊ माता देवी है। ससारिक चोला त्याग के स्वग जा रही हैं। इस ससार से मन भर गया सो अन्न-जल त्याग दिया। हमने अपनी आँखो से देखा, गटठर भर घास पडी रही, लेकिन तिनका मुह से नहीं तोडा, बडी पवित्र आत्मा थी।'

रोहित ठेले के साथ चल रहा था। बडी अम्मा जब रोई थी, तो उसके भी आँसू आ गये थे। थोडी सेवा और करता तो गाय बच जाती।

बस्ती के बाहर भैरो घाट है। जमीन नीची होने से बरसात का पानी भर जाता, सो किसी भक्त ने थोडी खुदाई कराकर तालाब बनवा दिया। दूसर भक्त ने तालाब के एक ओर सीढियाँ बनवाकर पक्का कर दिया। अब यही भैरो घाट कहलाता है। तालाब के किनारे पुराना पीपल है। उसी के नीचे किसी ने गोल पत्थर रख दिये, जो रोली चन्दन पाकर पुजने लगे। फिर चबूतरा बना, उसके आसपास दिवाल खिची, उस पर छत पडी और भैरो जी का मन्दिर बन गया। शिवरात्रि को यहाँ अच्छा-खासा मेला लगता। यही पर गऊ माता को धरती म गाडा जायेगा।

पीपल से थोडा हटकर बडा सा गडढा खोदकर वेद-मत्रो क साथ गऊ माता को धरती मे सुला दिया गया। तालाब मे पानी कम, कीचड ज्यादा था, लेकिन गऊ माता के भक्तो ने श्रद्धापूवक इसी मे स्नान किया। रोहित थोडी देर तालाब के किनारे खडा रहा, फिर बगिया म लौट आया। उसे अपने पिता पर बहुत गुस्सा आ रहा था। आज ही जाने को रह गया था। घर की गाय मरी, लेकिन वह शवयात्रा मे भी शामिल नही हुए।

पिछले दो चार दिन से जुए मे बहुत कम आदमी आ रहे थे। नाल ठीक से नही निकलती। पसा नही आता तो शकरलाल को गुस्सा आता है। इस

देवीदत्त रामस्वरूप के यहाँ से नाश्ता करके श्रीप्रकाश को साथ लिये बगिया मे घुसे, "क्या हो रहा है शकरलाल।" आराम कुर्सी पर बैठते हुए देवीदत्त ने पूछा।

"होना जाना क्या है, बस हुक्का गुडगुडा रहे है।" शकरलाल हुक्के की नली एक तरफ रखते हुए बोले, "क्या बतायें बाबूजी, बखत नही कटता।"

"हो हो हो ," जोरो से हँसे देवीदत्त, 'वाह भाई, यह खूब कही। तुम्हारी समस्या का जवाब नही । अरे लोग तो एक-एक मिनट के लिए जान देते हैं और तुम हो कि कहते हो वक्त नही कटता।'

"अब बाबूजी हम आपको कैसे समझायें। हमे तो दिन बहुत भारी पड जाता है। समझ मे नही आता, क्या करें जो बखत कटे।" शकरलाल ने मजबूरी प्रकट करते हुए कहा, 'हा, शाम को जब हम भग का गोला चढा लेते हैं तब जरूर बहुत सुख मिलता है, नही तो बस ताश खेलो, शतरज खेलो या फिर बैठे-बैठे हुक्का पियो। यहाँ तो साला कोई भला आदमी बात करने भी नही आता। सब साले उठाईगीरे इकट्ठा हो जाते हैं।"

"तुमन तबला भी तो सीखा था, अब नही बजात।" देवीदत्त ने पूछा।

'बस बाबूजी, जी भर गया।" शकरलाल ने मुह सिकोडकर कहा, "यहाँ एक मियाँ अच्छे खाँ आ गये थे, उन्ही की सोहबत म तबले का शौक हुआ। खूब बजाया। उँगलियाँ फट जाती थी बजाते बजाते, सो मोम लगाकर बजाते थे। अच्छा शगल था। पर हमन देखा कि बस्ती मे लोग हमे लम्बरदार शकरलाल की जगह, तबलची शकरलाल कहने लगे। सो हमारे तन बदन मे आग लग गई। सामने कोई बोलता ता हम उस गाली मार देते। पर पीठ पीछे हम किसके मुह को पकडते, सो हमने तबला उठाकर फेंक दिया।'

'तुम शादी क्यो नही कर लेते शकरलाल। गृहस्थी भी बस जायेगी और वक्त भी कट जायेगा।" देवीदत्त ने सुझाव दिया।

"नही बाबूजी, एक बार शादी करके देख ली। भाग म होता तो औरत मरती ही क्यों, सब जी का जजाल है। दुबारा शादी करें तो फिर मोह

माया मे फँसें । क्या करना है गले मे फन्दा डालकर । औरत तो बस रात की चीज होती है सो कुछ-न-कुछ इन्तजाम हो ही जाता है । आप तो यहाँ रहते नही नही तो आपका भी इन्तजाम कर दें ।" शकरलाल हँसे ।

देवीदत्त झेंप से गय, फिर बोले, "रात का सुख तो पैसे देकर बरेली मे भी मिल जाता है । पर इससे बात बनती नही । घर म तो औरत होनी ही चाहिए । कहा जाता है न, होटल का चटपटा खाना अच्छा लगता है, पर एक-दो दिन बस, रोज नही खाया जा सकता । खर्चीला भी होता है और पेट भी नही भरता, और अगर पेट भर खा लो तो अपच हो जाये । घर मे चाहे मूग की दाल पके पर समय से और कायदे से मिले तो वही चलती है । यही बात औरत पर भी लागू होती है । घर मे रह सेवा करे, रात का सुख दे, फिर और क्या चाहिए ।'

शकरलाल मुस्कराते हुए देवीदत्त की ओर देख रहे थे । लेकिन देवीदत्त अपनी ही तरग मे खोये हुए थे—"बात आई है तो हम तुमसे कह रहे हैं शकरलाल, रोहित की मा अब स्वग मे बैठी हैं, हम उनकी आत्मा को दुखाना नही चाहते, मगर सच्चाई यह है कि जब तक जिन्दा रही रोती-झीकती ही रही । माना कि बडे घर की थी, सुन्दर भी थी, पर हर समय पति पर लाछन लगाती रही करम को कोसती रही, यह सब क्या है ? तुम्हें तो पता है कि हम जरा मालिश के शौकीन हैं, बस इसी बात का बतगड बना दिया, शरीर पर तेल पोतते हो, बदबू आती है । हम आराम से रहने के आदी हैं । तहमद पहन लिया, या अन्डरवियर मे घर के बाहर घूमने लगे तो तूफान उठा दिया, कायदे से रहो कायदे से रहो । क्या हर समय पैण्ट डॉटे रहें । सारी जिन्दगी खुद भी दुखी हुइ और हमे भी चन नही लेने दिया । हमने तो अब सोच लिया है कि चाहे भले ही ज्यादा पढी-लिखी न हो, गरीब हो, सांवली हो, पर अगर औरत सीधी है ,आज्ञाकारी है, तो सबसे अच्छी । '

शकरलाल ने कोई जवाब नही दिया । हुक्के की नली मुह म लगा ली और गुडगुडान लगे ।

' तुम्हारी नजर म काई ढग की औरत हो तो बताना । असल म हमे रोहित की बहुत चिन्ता है । हम तो दिन भर घर के बाहर रहते हैं । यह

नौकर के साथ रहता है इसका चरित्र बिगड न जाये, सवाल यह है। कहा गया है, "इफ करेक्टर इज लास्ट, आल इज लास्ट।' अब इसके लिए हमारा शादी करना बहुत जरूरी है। घर पर औरत रहेगी, तो इस पर पूरा बन्धन रहेगा। हम पता चलेगा कि यह क्या करता है।"

"अगर आपने पक्का विचार कर लिया है तो लडकी हमारी निगाह मे है। आप देख लो, पसन्द हो, तो बात हो जायेगी।" शकरलाल ने गम्भीर होकर कहा।

देवीदत्त की आँखें खुशी से चमक उठी। जल्द ही औरत मिल जायेगी इस सूचना ने सारे शरीर को पुलकित कर दिया, हडबडाकर बोले—

"चलो, देख लेते हैं।"

"ऐसे तो देखना ठीक नही है। कोई बहाना होना चाहिए।' शकरलाल ने समझाया।

"हरखूलाल हमारे रिश्ते के भाई लगते हैं। मुनीमी करते हैं। उनके लडके राजा भइया की शादी तय हो गई है। हमारा भतीजा है, हमे तो जाना ही होगा, सो आप भी चलो बारात म। हरदोई से थोडा पहले ही गाँव है। उसी म बारात जायेगी। उसी गाँव मे वह लडकी भी है।'

देवीदत्त के लिए इतना ही काफी है, आधा रास्ता पूरा कर लिया है बाकी रास्ता भी पूरा हो ही जायेगा।

"शादी कब की है?"

"नवम्बर के बीच मे साइत निकली है।" शकरलाल ने उत्तर दिया और तख्त से उठकर खडे हो गये। अब उनके नहाने का समय हो गया था।

शकरलाल के पास से उठकर देवीदत्त बडे बाजार की ओर चल दिये। इस बस्ती मे शकरलाल के बाद जिससे मन की बात की जा सकती है, वह है डाक्टर नगीनचन्द। डाक्टर नगीनचन्द की दुकान बीच बाजार मे पडती है, लेकिन चलती फिर भी नही। भूले भटके कोई मरीज आ जाता

है तो सब काम छोडकर नगीनचन्द मरीज को दवा देते है, नही तो बठे-बैठे मखिया मारते रहते हैं। बात करने वाला कोई दुकान मे आ जाये, इसे वह अच्छा मानते हैं। इससे दुकान मे रौनक रहती है। देवीदत्त घण्टे-दो घण्टे बैठकी करते हैं तो नगीनचन्द को अच्छा लगता है। वैसे भी बच पन के साथी है। खलकर घर गहस्थी की बात होती है।

"आओ भाई दवीदत्त।" डाक्टर नगीनचन्द ने स्वागत किया।

"क्या आयें तुम कोई काम तो हमारा करते नही।" बेंच पर बठते हुए देवीदत्त ने शिकायत से कहा।

"क्या काम नही किया तुम्हारा, बोलो ?"

'हमने तुमसे पूछा था कोई दवा बताओ, जरा शरीर मे ताक्त आये, सो तुम गोल कर गये।" दवीदत्त ने लडाई लडने के मूड मे कहा।

नगीनचन्द एक मिनट को चुप रह, फिर बोले 'तो तुमने शादी करन का इरादा पक्का कर लिया, वैसे मैं तो अब भी यही कहूँगा, इस सबको छोडो, अपने लडके की तरफ दखो। लडका बडा हो गया है, दो चार साल बाद उसकी शादी करो।'

"रोहित अभी बच्चा है।" देवीदत्त चिढ़कर बोले, "तुम्हें क्या मालूम, मैं रोहित को क्या बनाना चाहता हूँ।"

'चलो अच्छा है खूब बडा आदमी बनाओ।' नगीनचन्द ने दोस्ती कायम रखने की गरज से कहा, "हम ता तुम्हारा भला चाहते हैं। पैंतालीस की उम्र का तुम छू रहे हो। गठिया के खानदानी मरीज हो। अब ऐसे मे बहुत गरम दवा तो बता नहीं सकते। हाँ, जडी बूटी ही काम कर सकती है। भौरो घाट के पास नगिया मे घी घुआर का पटटा लगा है, उसे सब्जी की तरह बनाकर रोज खाओ। वही फायदा देगा।'

"यह क्या कोई पौधा है।"

"हाँ पौधे की तरह ही है। जहाँ चाहो लगा लो, काटते जाओ और खाते जाओ। तारीफ यह कि जैसे चाहो सेवन करो। दूध के साथ लो, तो बहुत फायदा।"

दो-एक सवाल और किय देवीदत्त ने, फिर जवानी पाने के लिए घी-घुआर के पटठे की खोज म चल दिये।

रात के नौ बजते ही नीचे आँगन में ताश की गड्डी फेंटी जाने लगी। ताश के बावन पत्तों के चक्र में ही शंकरलाल जी रहे हैं। नत्थूसिंह जुआरियों के बीच में बैठे नाल का हिसाब रख रहे हैं। सुबह शंकरलाल को सारा हिसाब देना होगा।

शंकरलाल तिमंजले की खुली छत पर अपने बिस्तर पर बैठे हुक्का गुड़गुड़ा रहे हैं। सामने आराम कुर्सी पर देवीदत्त जमे हुए हैं। पास ही मूढ़े पर श्रीप्रकाश बैठे हैं।

"मकान तुमने खूब बनवाया। यहाँ खुली हवा भी है और दूर-दूर तक का सीन भी दिखाई दे रहा है।" देवीदत्त ने तारीफ करते हुए कहा।

'यह तो गाँव है बाबूजी, यहाँ क्या सीन और क्या सीनरी। बस दिन कट रहे हैं।"

'तुम कुछ दिनों बनारस क्यों नहीं रहते। सुबह-शाम गंगा नहाओगे तो मन प्रसन्न हो जायेगा। यह श्रीप्रकाश तो बनारस में है ही। रहने की भी कोई दिक्कत नहीं, क्या श्रीप्रकाश।" देवीदत्त ने श्रीप्रकाश की ओर देखकर कहा।

'मैं तो कब से कह रहा हूँ चाचा जी से, हमारे साथ चलकर रहें, पर यह हैं कि सुनते ही नहीं। न ढंग का खाना है, न ढंग का जीना। नौकरों के बल पर कब तक चलेगा।"

'अरे तो तुमने कौन सी गृहस्थी बसा रखी है जो दम भर रहे हो। कब से कह रहे हैं बबुआ शादी कर लो शादी कर लो, हम भी पोते का मुँह देख लें, मगर तुम हो कि सुनते ही नहीं। खुद होटलों में खाते हो, हम भी वहीं खिलाओगे। यहाँ है तो एक टाइम बड़ी अम्मा के हाथ की गरम गरम रोटी खाते हैं, तो मन भर जाता है। बनारस में यह सब मिलेगा?'

"माँ को बुला लेंगे। मकान तो किराये पर ले ही लिया है, अब परेशानी क्या है।" श्रीप्रकाश ने समझाना चाहा।

"अपनी माँ की बात कहने को रहने दो। गुरु मंत्र क्या ले लिया है, बस पूछ उठाये इधर-से उधर घूमती रहती हैं। उन्हें अपने गुरु से फुर्सत है जो हम रोटी खिलायेंगी। हम पूछते हैं कि तुम शादी कब करोगे? इतनी लड़कियाँ बतायी तुम्हें, कोई पसन्द ही नहीं आती।"

श्रीप्रकाश का मुह लटक गया, "हमने पहले भी कह दिया, जब तक पढाई पूरी नही हो जाती, अपने परो पर खड़े नही हो जाते, तब तक शादी नही करेंगे।" श्रीप्रकाश अपनी बात कहकर उठ खडे हुए और तेजी से छत पार करके नीचे चले गये।

शकरलाल के साथ ही देवीदत्त भी अचकचाकर देखते रह गये।

"देखा आपने बाबूजी। जब भी हम शादी की बात करते हैं, यह बबुआ इसी तरह उठकर चला जाता है। अब हम क्या करें समझ मे नही आता। इतनी उमर हो गई, आखिर कब शादी होगी।"

"तुम नही समझागे शकरलाल। इस किस्से को हम समझते हैं। जब यह हमारे पास बरेली मे था तभी सब गडबड हो गया। हमने बहुत नजर रक्खी, लेकिन क्या कहें, गच्चा खा गये। नीता ने इसे चक्कर मे डाल दिया।"

"हाँ बाबूजी, कुछ भनक तो हमे भी मिली थी मगर पूरी बात पता नही लगी।" शकरलाल के कान खड़े हो गये।

"इसमे पता लगने की क्या बात है। आज का जमाना ही ऐसा है। पैदा बाद मे होते हैं, इश्क-मुहोब्बत पहले शुरू कर देते हैं।" देवीदत्त ने झुझलाकर कहा।

"सो तो ठीक है, अब आप यह बताओ कि यह नीता है कौन।" शकरलाल की उत्सुकता चरम सीमा छू रही थी।

"हमारे मुहल्ले मे शर्मा जी हैं, पुराने बाशिंदे। बाप ने तहसीलदारी में खूब रकम बनाई, सो अपने को बडा आदमी समझते हैं, उन्ही की बडी लडकी है।"

"सुन्दर है न बाबू जी?" शकरलाल ने पूछा

'जवानी आते ही सब लडकियाँ सुन्दर हो जाती है। इसम नई बात क्या है।"

"हमारा कहना है कि लडकी सुन्दर है ऊँची जात की है, बबुआ को पसन्द है, फिर देरी क्या हम तैयार हैं, शादी किये देते हैं।"

'जी हाऽऽऽ आपके फसले से ही तो जस दुनिया चलती है खूब कही।' देवीदत्त चिढ गये, 'यह जमीदारी की अकड हर जगह नही

चलेगी। वे ब्राह्मण हैं, नाक पर मक्खी नही बैठने देते। वे भला गैरब्राह्मणो में शादी क्यो करेंगे ?"

"न करें, बबुआ के लिए क्या लडकियो की कमी है ?" शकरलाल को भी गुस्सा आ गया, "अरे वह तो हमने अभी तक पूरी तरह ध्यान नही दिया, नही तो एक से एक सुदर लडकियो की लाइन लगा दें।" शकरलाल शर्त लगाने को तैयार हो गये।

"यही ठीक है। कोई अच्छी लडकी देखकर इसकी शादी की कोशिश करो। नीता की शादी भी साल दो साल मे हो ही जायेगी। सब उतर जायेगा दोनो के सर से इश्क का भूत।"

नीचे आँगन से ताश के पत्तो को लेकर कुछ तेज आवाज आने लगी। शकरलाल ऊपर से ही चिल्लाये, "आवाज कैसी आ रही है। हम आयें नीचे।"

"नही मालिक, सब ठीक है।" नत्थूसिह ने उत्तर दिया। शकरलाल की आवाज ने पुन सब व्यवस्थित कर दिया था। जुआरी फिर मनोयोग से अपने खेल मे लिप्त हो गये।

देवीदत्त उठकर खडे हो गये, "अब चलें शकरलाल, सुबह लखनऊ जाना है। रोहित को हम यही छोडे जा रहे हैं। अगले हफ्ते लौटेंगे तो लेते जायेंगे।"

"हाँ हाँ छोड जाओ। विजय भी यही है, दोनो खेलत रहगे।" शकरलाल ने सहमति से सर हिलाया।

हरनारायण सुबह आठ बजे तक का समय पूजा मे व्यतीत करते थे। मन्दिर के ऊपर वाला कमरा इसी काम के लिए कब्जे मे कर लिया था। पूरे कर्मकाण्ड के साथ पूजा करने मे उनका विश्वास था। प्रत्येक देवी-देवता को मन मे बसाये हुए थे, मगर हनुमान जी को विशेष स्थान दे रखा था। हनुमान चालीसा पूरा कठस्थ था। रात-बिरात मे भय लगता तो भी हनुमान चालीसा का पाठ शुरू कर देते। इससे बडा बल मिलता। पूजा के

लिए फूल बगिया से नही लेते। शकरलाल जहाँ हैं वहाँ पैर नही रखना। प्रात उठकर भैरा घाट जाते वही से पूजा के लिए फूल चुन लेते। पूजा से पहले चन्दन घिसकर बडे मनोयोग से माथे पर लगाने के बाद बाँहो, छाती, गले पर भी पोत लेते। इससे उनका काला थुलथुल शरीर दिव्य शोभा पा जाता।

आज भी जब पूजा करके नीचे उतरे तो देखा हनुमान जी की सीढ़ियो से थोडा हटकर एक कमजोर-सा किसान बैठा है। जिसके शरीर पर कपडो के जगह चीथडे लटक रहे थे। सर मुडा हुआ था, एक लाठी के सहारे किसान उटकुरूआँ बैठा था।

"पाँय लागे लम्बरदार।" किसान ने जमीन पर माथा टेककर कहा।

हरनारायण ने गुस्से से किसान की तरफ देखा, फिर बिना कुछ बोले हनुमान मदिर की सीढियो पर बैठ गये।

आठ बज चुके थे। मदिर में दो-एक आदमी ही इधर उधर घूम रहे थे। कुछ दर पहले सीढिया के पास तीन इटो का चूल्हा बनाकर पुजारी ने शायद पानी गरम किया था। काम हो जाने के बाद लकडियो पर ठण्डे पानी का छीटा मार दिया था, लेकिन पतली पतली लकडियाँ बुझने के बाद भी हल्का धुआँ दे रही थी। अभी भी उनमे जलने की गर्मी बाकी थी।

रोहित कुएँ के डोल मे भरे पानी से ताजे तोडकर लाये जामुन धो रहा था। पेड पर लगे जामुन का ढेले मारकर ताडने से जामुन जमीन पर गिरकर मिट्टी मे लिपट जाते हैं। एक-एक जामुन को धोना पडता है, तब कही खाने लायक हाते हैं।

'सात रुपया लगान का बाकी है, लाय।' हरनारायण ने आँखें तरेरकर सान से कहा।

"लम्बरदार फसल चौपट हो गई, मजूरी मिलती नाही, भूखो मर रहे हैं।" किसान ने गिडगिडाकर कहा।

'हूँ खूब कही फसल चौपट हो गई।" हरनारायण मुह बनाकर बोले, "फसल पहले ही काटकर खा ली हमे सब मालूम है।"

"लम्बरदार, हम अपने लडका की कसम खाय रहे, फसल से हम कुछू नाही मिला।'

"तो हम का करें, हमे तो सात रुपया दे दो।"

"कहाँ से दें लम्बरदार, हमे कोई उधार नाही देत, का करें।" किसान ने हाथ जोडकर माफी माँगी।

"हम बताय रहे का करो।" हरनारायण तेजी से उठे। हल्का धुआँ दे रही एक पतली लकडी को उन्होंने उठाया और किसान के घुटे सर पर जोरो से मारा एक बार दो बार तीन बार। किसान ने अपने हाथो से अपना सर ढक लिया तो उँगलियो पर मारते गये। " झूठ बोलेगा हमसे झूठ बोलेगा।" हरनारायण एक ही बात को बार-बार दोहरा रहे थे।

"हाय लम्बरदार मर गये मर गये लम्बरदार ," सर को बचाते हुए दोनो हाथ की उँगलिया पर लकडी की चोट सहते हुए किसान दुहाई दे रहा था। रोने से उसकी आवाज पूरी तरह निकल नही रही थी।

रोहित चौंककर उठ खडा हुआ। जामुन वहीं छोडकर किसान से थोडी दूरी पर आकर खडा हो गया। रोहित को देखकर हरनारायण रुक गये। कुछ झेंप से भी गये। लकडी एक ओर फेंककर फिर हनुमान मन्दिर की सीढियो पर जाकर बैठ गये। अभी भी वे बुदबुदा रहे थे," हरामखोर साले पैसा टेंट से निकालते दम निकलता है हम सब बदमाशी ठीक कर देंगे।"

किसान अपने सर पर हाथ फेरते हुए अब भी रो रहा था "मर गये लम्बरदार, मर गये ।"

रोहित एक दो कदम आगे बढकर किसान के पास पहुँच गया। उसने झुककर किसान के घुटे सर को देखा। लकडी की मार से सर से खून निकल आया था। खून देखकर रोहित सिहर गया "हाय हाय बिचारे के खून निकल आया ।' रोहित के मन मे किसान के लिए दया उमड आई थी।

बहनोई के लडके को डाटना आसान नही, इसी से चुप रह गये हरनारायण। किसान से भी कुछ मिलने की आशा नहीं थी। पूजा की डोलची उठाई और चल दिये "जाओ सारे, आज छोड दिया, फिर दखेंगे।"

हरनारायण खडाऊ खडकाते चले गये। किसान अब भी अपने सर पर

हाथ रखे रो रहा था। रोहित चुपचाप किसान के सामने खडा था। उसकी समझ में नही आ रहा था कि क्या करे।

किसान ने सर उठाकर एक बार रोहित की ओर देखा, फिर पास पडी पोटली मे से एक चीथडा सा कपडा निकालकर सर पर डाल लिया। अब मक्खियों से बचाव हो जायेगा। लाठी के सहारे किसी तरह उठकर खडा हुआ, फिर धीरे धीरे लाठी टेकता मन्दिर के बाहर चला गया।

रोहित कुएँ की मेड पर रखे जामुनो के पास पहुँचा। धोकर दोने मे भर लिये। अब जामुन खाने का सारा उत्साह ही खत्म हो गया था। मारपीट से वह बहुत घबराता था, इस समय तो उसने किसान के सर पर पिटाई के बाद खून भी देख लिया था। दोने में जामुन लिये वह भी मन्दिर के बाहर आ गया। सामने बगिया है, बगिया मे बैठकर जामुन खायेगा। बगिया मे इस समय चौपड जोरो से खेली जा रही थी। पासे खडकाने की आवाज आ रही थी। जब भी पासा सीधा पडता तो खूब शोर होता। कमरे म बैठना सम्भव नही है, इसलिए रोहित पत्थर की बेंच पर जाकर बैठ गया। दोने मे से एक-एक जामुन निकालकर खाने लगा।

एक सप्ताह बाद बरेली जाते हुए देवीदत्त रोहित को अपने साथ लेते गये। श्रीप्रकाश के साथ विजय भी बनारस चला गया। रामस्वरूप की पत्नी विजय के जाने के बाद कुछ इतनी उदास हुइ कि अपनी छोटी लडकी को लेकर मायके चली गयी। घर मे बडी अम्मा के साथ रामस्वरूप रह गए। ऐसे खाली समय म ही रामस्वरूप के अन्दर का रसिया मन जाग उठता। आजकल घर मे चन्नू चमार की जवान बहू बरतन माँजने आती। बडी अम्मा के सामने तो रामस्वरूप कुछ कर नही पाते, लेकिन अगर बडी अम्मा कही पडोस मे गई होती तो जवान कहारिन से छेड छाड शुरू कर देते। एक दिन तो उन्होने हाथ ही पकड लिया। कहारिन हाथ छुडाते हुए बोली, "देखो लम्बरदार, हमे न छेडो, नाही तो हम चिल्लाय के सबको बुलाय लेंगे।'

रामस्वरूप डर गए, हाथ छोड दिया, और लल्लो-चप्पा करने लगे। कहारिन ने जैसे-तसे बरतन मांजे, और अपने घर भाग गई। दूसरे दिन से चन्नू की मां काम पर आने लगी। बडी अम्मा ने पूछा, वह नही आई तो चन्नू की मां ने कुढकर कहा, "उसके दिन चढ गये हैं अब वह काम पर नही आयेगी।"

इस मुहिम मे रामस्वरूप फेल हो गये। पर इससे क्या, दूसरा मैदान सामने है, उसे फतह करना होगा। सामने मकान मे भी तो जवान बहू बैठी है। भले ही वह रिश्ते म भौजी लगती हो, पर है तो जवान ही। हरनारायण की तीसरी पत्नी, नई बहू। दो बरस से ऊपर हो गया ब्याह को, अभी तक गोद नही भरी। भरे भी कहाँ से, हरनारायण को तो हर समय पूजा और पैसा जोडने से फुसत नही। एक-दो बार कोशिश भी की ता अपने ही ढीलेपन के कारण चित हो गये। खीज से गाली देने लगे, 'औरत साली टाँग भी सीधी नही रखती। पर जवान औरत की तो टाग सीधी की जाती है, यही हरनारायण कर नही पाते। वसे भी उन्हें इसमें ज्यादा रुचि नही है। औरत की टाँग सीधी हो जाए तो अच्छा है, नही हो तो पडी रहे घर में। दोनो टाइम रोटी पकाकर देती रहे, घर में झाडू-बुहारी करती रहे, और घर के बाहर बँधी गाय को दाना पानी देती रहे। यही औरत के सबसे बडे गुण हैं। यही उसका धर्म है ओम शिवाय ओम शिवाय ।

रामस्वरूप और हरनारायण के घरों के बीच में सिर्फ पाच हाथ की दीवार खिची है, इसलिए सीधे एक घर से दूसरे घर में जाना नही हो सकता। लेकिन ऊपर छत पर जाने का तो एक ही जीना है। जीना भी चौडाई में इतना छोटा कि दो आदमी एक साथ नही चढ सकते। यही जीना रोमांस स्थल बन गया। जब भी किसी काम से हरनारायण की बहू छत पर जाती तो रामस्वरूप भी छत पर पहुँच जाते। दो चार इधर उधर की बातें करते। आखिर को तो देवर-भोजाई का रिश्ता है। जब बहू नीचे उतरती ता जीने में साथ साथ चलने की कोशिश करते। अन्त में एक दिन जीने में ही पकड लिया।

"छोडो लाला, यह क्या करते हो ?" बहू ने कसमसा के कहा।

"अरे भौजी, देवर का भी तो कुछ हक होता है वही माँग रहे हैं।'

रामस्वरूप ने नई बहू की जवान गदराई देह को बाँहों में और कस लिया।

एक महीने में ही परिणाम सामने आ गया। शादी के बाद पहली बार बहू महीने से नहीं हुई। फिर जी मितलाने लगा, खाना-पीना सब छूट गया। हरनारायण जैसे सोते से जाग गये। यह क्या हुआ। वह तो तीन माह का शिवजी का विशेष जाप कर रहे हैं। औरत को छुआ तक नहीं, फिर यह सब कैसे हुआ। कड़क के पूछा, "के तुम्हें का हुआ। तुम ओक-छोक काहे रही ?"

बहू ने दीवाल की ओर मुँह कर लिया, अटकते हुए बोली, "हमने सुबह नहाय के तुम्हारी रात वाली धोती पहन ली थी।"

"तो इससे का हुआ ?" हरनारायण की कुछ समझ में नहीं आया।

"अब हम का बोलय।"

"बोलेगी नाही तो पता कैसे लगेगा, बोल सुसरी।" हरनारायण गुस्से से बमके।

"तुम्हारी रात वाली धोती पहन के हम अपवितर हुई गये।" बहू ने किसी तरह कहा।

गहरे सोच में पड़ गये हरनारायण। रात में कुविचार मन में आने से वस्त्र अपवित्र हो जाते हैं। अपवित्र वस्त्र शरीर से छू जाएँ तो शरीर भी अपवित्र हो जाता है। रामायण, महाभारत में भी ऐसे कई प्रसंग आये हैं। क्या कहा जाए। सब ईश्वर की माया है।

फिर मन में पाप आ जाता। कहीं औरत झूठ तो नहीं बोल रही। तिरिया चरितर तो नहीं दिखा रही। जोरों से डाँटा हरनारायण ने, "क्या पहनी थी रात की धोती, तू बच्ची है का।'

नई बहू रोने लगी।

"अब खड़ी-खड़ी ठसुवा का बहाय रही। हट जा सामने से।" हरनारायण का खून खौल रहा था। सब गलती इस औरत की है। जी में आया डण्डा उठाय के झोर के रख दें। फिर सोचा इससे बात फलेगी। औरत की जात अट शट बक द तो और आफत। औरतजात का क्या ठिकाना। इसी-लिए तो शास्त्रों में कहा गया है औरत विषयों की खान है। औरत स बच के रहो। कुछ सोचना पड़ेगा। कुछ सोच विचार के काम करना होगा।

बहू के शरीर में पहली बार परिवतन हो रहा है। जी मितलाता है, कुछ अच्छा नही लगता। मन में डर समाया हुआ है। राम जाने क्या होगा। करने को तो बहाना बना दिया। पर कौन जाने आगे क्या लिखा है भाग में। किसी काम में मन नही लगता।

रामस्वरूप को इस सबसे कुछ मतलब नही। वह तो नया स्वाद चख चुके थे, अब बार बार चखना चाहते थे। जी ही नही भरता। मौका मिलते ही छत पर जा पहुचते। नई बहू को बाँहो मे भरकर चूमने लगते। नई बहू ने मना किया, घुडकी दी, समझाया, जो होना था हो गया, अब बस भी करो लाला जी। पर रामस्वरूप नही माने। तब हाथ उठ गया बहू का। गाँव का कसा हुआ बदन। ऐसा घूसा मारा रामस्वरूप की नाक पर कि चक्कर खाकर वही जमीन पर बैठ गये। नाक से खून छलक आया। बहू तेजी से जीने की सीढिया उतरकर अपने कमरे में आकर दुबक गई।

हरनारायण अपनी बहू को उसके मायके पहुचा आये। यही ठीक है। औरत सामने रहती है तो दस तरह की बात मन में उठती है। गुस्सा भी आता है। मद आदमी है। गुस्से में हाथ उठ जाए तो न मालूम क्या अपराध हो जाए। पूजा पाठ में भी विघ्न पडता है। जवान औरत को देखो तो मन दूषित हो जाता है। न औरत सामने होगी, न मन दूषित होगा। गरीब किसान की बेटी है। न होगा एक बोरी गेहूँ पहुँचा देंगे। तब उसका बाप भी कुछ नही कहेगा। एक जोडी धोती जम्पर दे ही आए हैं, और क्या चाहिए। दोना टाइम की रोटी का क्या है। न होगा मन्दिर के पुजारी से कह देंगे, दोनो जून का वही खाना बना देंगे।

बडी अम्मा ने बहुत दुख देने वाली बात सुनी। शकरलाल ने नटनी चमारन को बैठा लिया। सारी बस्ती में बदनाम है नटनी चमारन। कौन नही जानता उसे। दो साल हरदोई मे रही तो बस्ती मे शान्ति था। अब इधर एक साल से फिर बस्ती मे आ गई तो हडकम्प मच गया है। देखने मे सुदर है। नाक नक्श भी तीखे हैं। बोलती भी मीठा है। पर

इससे क्या, है तो चमारन। उसे घर मे बैठाना ठीक नही। जात बिरादरी म मुह दिखाने लायक नही रहगे। शकरलाल का क्या है, निपूते हैं। न आगे राम, न पीछे पगहा। आज मरें कल दूसरा दिन। एक भतीजा है श्रीप्रकाश, सो आकर अग्नि द देगा। बस किस्सा खत्म। पर रामस्वरूप के घर तो ऐसा नही चल सकता। भगवान ने लडकी दी है कल को उसकी शादी ब्याह का सवाल है, तब क्या होगा। दुनिया तो कह देगी, नटनी चमारन घर बैठी है, इनके घर का पानी कैसे पियें, तब क्या होगा? किस किस का मुह पकडेंगे।

पर सुनी सुनाई बात पर विश्वास कैसे किया जाए जब तक अपनी आंखों से न देख लें। बडी अम्मा रामलाल के घर जा पहुँची। रामलाल शकरलाल के बडे भाई हैं। उनकी औरत शकरलाल की भोजी हैं। अपने देवर के बारे मे सारी बात बता सकती हैं। उन्ही से सलाह करने पहुँची बडी अम्मा।

रामलाल की औरत अपने देवर से कुढी बैठी थी। शकरलाल की हेकडी के आगे रामलाल की कुछ नही चलती। दब्बू बन जाते हैं छोटे भाई के सामने। शकरलाल सबसे छोटे हैं, लेकिन अकडते इतना है जसे सबसे बडे हो। जायदाद भी तीन हिस्सो मे शकरलाल के कारण बँटी, नहीं तो क्या था, एक ही घर मे चूल्हा जलता और रामलाल की औरत सब पर हुकुम चलाती। बडी अम्मा सास लगती हैं, उनके सामने छोटा-सा घूघट निकाल लेती हैं रामलाल की घरवाली। हौले हौले बोलती है ' अब का बताएँ बडी अम्मा, हम तो तग आय गये। सारी रात ऊधम मची रहत है। मरे जुआरी गाली गलौज करते हैं। पर हम का कहें।"

' सो सब हमे पता है।" बडी अम्मा सीधी बात पर आयीं, "वह नटनी चुडैल आती है का।"

' आयेगी काहे नाही, बडी अम्मा। जब लाला खुद बुलायेंगे तो आयगी। नाही तो वा ऐसी छिनाल घर मे घुसन लायक है। झोटा पकड़ के धक्का मार के घर के निकाल कर दें हा।

अब क्या कहें बडी अम्मा। दुविधा मे जान फँस गई।"

' हम दिखाय सकती हो।" बडी अम्मा ने कहा।

"आज ही देख लो।" रामलाल की बहू ने उत्तर दिया, "रात नौ बजे बाद देख लो। आज मंगल है सो जुआ बन्द है। हनुमान जी का दिन है न, मंगल को जुआ नहीं होता। लाला नीचे आँगन में सोते हैं, खाट पर बैठी नटनी बतियात है।"

बडी अम्मा उठकर खडी हो गईं। अब रात को अपनी आँखों से देखेंगी तो कुछ फैसला करेंगी।

रामलाल के मकान के पीछे का हिस्सा बरसात मे गिर गया, फिर कौन बनवाता, सो मिट्टी का ढेर पडा है। इसी हिस्से मे शंकरलाल के मकान का एक दरवाजा है। वह आँगन मे खुलता है। मगर उससे कोई काम नही लिया जाता, बन्द ही रहता है। इसी दरवाजे के पास ले जाकर रामलाल की बहू ने बडी अम्मा को खडा कर दिया। दरवाजे की झिरी में आँख लगाकर देख लो, बिलकुल दुरबीन की तरह दिखाई देगा।

बीच आंगन में पलँग पडा है। शंकरलाल पलँग पर लेटे है और नटनी उनके पैर दबा रही है। दोनो कुछ बोल भी रहे हैं, क्या बोल रहे हैं सुनाई नही देता। सुनकर भी क्या होगा। जो दिखाई दे रहा है वही बहुत है।

शंकरलाल ने नटनी का हाथ पकड के अपने पास खींच लिया। अब नटनी शंकरलाल की छाती पर सर रखे लेटी है। शंकरलाल प्यार मे नटनी के सर पर हाथ फेर रहे हैं। नटनी का लँहगा ऊपर सरक गया है। घुटनो तक पैर दिखाई दे रहे हैं बस बस अब और नही देखा जाता। कानों से सुनी बात झूठी हो सकती है, पर आंखो से देखी बात कैसे झूठी हो जाए। कल ही फैसला करना है।

फैसला कर दिया बडी अम्मा ने, मगर बहुत होशियारी से। बडी अम्मा सारा काम सोच समझकर करती है, साँप भी मर जाए और लाठी भी न

टूटे। नत्थूसिह को बुलाय भेजा। नत्थूसिह आए तो समझाकर कहा, "देखो भइया, हमारे लिए तो सब एक से लडका हैं। बडकऊ को हम ज्यादा मानत हैं, पर का करें जब तक प्रान है नेम धम छूट नही सकता। मरे पीछे कौन किसे देखे है। सो अभी तो हम जिन्दा हैं, हमसे आँखो के सामने अधम नही देखा जाता। नटनी चमारन घर मे घुसे जे हमसे नही सहा जाता। चूल्हा-चौका अब साथ नही निभ सकता, हा।"

शकरलाल ने सुना तो त्यौरियाँ चढ गईं, "हम समझ गये, यह सब हरनारायण की करतूत है। बडी अम्मा को हमारे खिलाफ उकसा दिया। कोई बात नही। हमे भी सारे दाँव पेँच आते हैं।" भगतू पण्डत से बोलो, "छोटी कोठरी गाय के गोबर से लीपकर रसोई बनाए। आज से हम अपने घर भाजन करेंगे।"

नत्थूसिह मन ही मन खुश थे। शकरलाल खाते ही क्या हैं, दो रोटी और एक मुट्ठी भात। मगर रसोई तो इतनी नही बनेगी। रसोई तो इतनी तयार होगी कि भगतू पण्डत के साथ ही नत्थूसिह और मातादीन, हरिया भी भर-पेट खा लें।

नवम्बर का पहला सप्ताह आ गया। राजा बाबू की बारात सजने लगी। सारा काम शकरलाल के मत्थे था। कहने वाले यही कह रहे थे कि लम्बरदार के भतीजे की शादी है, फिर भला किसी काम मे कोताही कैसे हो सकती है। राजा बाबू की शादी जिस गाव मे हो रही है वह न रेल से जुडा है न मोटर से। वहाँ तक ता बस बैलगाडी से ही पहुँचा जा सकता है। एकदम कच्चा रास्ता। बस गाँव से तीन मील पहले छोड देती है। अगर हरदोई होकर बस से जाएँ तो भी तो तीन मील पैदल चलना पडेगा। शकरलाल तो तीन फर्लांग भी पैदल नही चल सकते। तब फिर क्या किया जाए 'अरे लहडू मगवाओ, लहडू पर मजे-मजे म चलेंगे।' माधवप्रसाद त्रिपाठी ने कहा।

यही ठीक रहेगा। रायसाहब के यहाँ दो पुरान लहडू है। बहुत सुदर

और मजबूत है। खब बढिया लाल कपडे का चन्दोव तना है लहडू पर। पीले सिल्क की झालर लगी है। छोटी छोटी घण्टिया भी लगी हैं, जब लहडू चलता है तो घण्टियाँ बजती है। बीच मे खूब मोटा गद्दा डाला गया है। इसी पर रायसाहब बैठकर अब भी अपने गाव जाते है। पुराने रहीसो की शान है लहडू। दो छोटे छोटे बैल खीचते है लहडू को। दखने मे ही बैल छोटे होते है, मगर चाल मे ऐसी वैसी घोडी को भी मात कर दें।

बिट्टन बाबू और ठाकुर गजेन्द्रसिह के पास भी अपना लहडू है उनसे भी माग लिया जायेगा। तीन लहडू बस्ती मे किराए पर मिल जाएँगे। उन्हें दरी-गद्दा बिछाकर ठीक कर लिया जाएगा। एक दो इधर-उधर से और ले लिए जाएँगे। यह काम नत्थूसिह का है। इसम ज्यादा सर-खपाई की काई बात नही है।

बारात के लिए दूर दूर से रिश्तेदार आ गये। सोमदव आय भी आ गए। देवीदत्त तो बारात मे जाने को उतावले थे ही, सो अपने चौदह वष के पुत्र रोहित के साथ दो दिन पहले से आकर डेरा डाल दिया। दस लहडू, चार घोडो से सजी राजा बाबू की बारात चल पडी। नत्थूसिह और मातादीन साइकिलो पर साथ थे।

विजय और रोहित एक लहडू पर बैठे थे। खूब मजा आ रहा था। लहडू चलते हुए जब हिचकोले लेता तो एक-दूसर से टकराकर हँसते। खेतो के पास की कच्ची जमीन से गुजरते तो मन करता उतरकर हरे-भरे खेतो मे घुस जाएँ। जब किसी गाँव के पास से निकलते तो तमाशा बन जाते। एक कतार मे चलते हुए दस लहडू, उनके साथ चार घोडे पर सवार मर्दाने, फिर साइकिल पर घण्टी टनटनाते नत्थूसिह और मातादीन ऐसे जलूस को भला कौन नही देखना चाहेगा। गाव से निकलकर औरत, मद, बच्चे सब खेत की मेड पर लाइन लगाकर खडे हा जाते। हँसते ह, ठिठोली करते हैं। लहडू पर बैठे लडका लोग भी बाली मारते हैं।

सुबह छ बजे शेखूपुरा स चल पडे थे, अब नौ बज रहे हैं। शुरू का एक घण्टा हँसते गाते बीत गया। इसके बाद लहडू की सवारी भारी पडने लगी। घुटने मोडकर बैठने से टाग अकड गईं। कच्ची सडक पर लहडू का पहिया ऊँचा-नीचा होना तो हड्डिया चमक जाती। सारा बदन दद करने

लगा। रोहित तो पहली बार बठा था लहडू मे सो अच्छी नसीहत मिली।
अब कान को हाथ लगाये। आगे कभी लहडू की सवारी नहा करेगा।
एक मिनट को रोवत भी नही जा उतरकर हाथ पाँव सीध कर लें।
अभी तो आधा मफर हुआ है नाश्ता पानी भी कुछ नही। किससे कह।
मामाजी सबसे आखिरी लहडू म बैठे है।
पाम से मातादीन गडढा वचाने के लिए पैदल साइकिल घसीटने निकले
ता विजय चिढकर बोला 'पण्डत जी हम प्यास लगी है।"
"हाँ हाँ पानी मिलेगा नाश्ता देंगे। बडी सडक पार कर फिर
आम के बाग म कुआँ है वहीं डेरा लगेगा।
बडी सडक को एक एक लहडू ने पार किया। इस पर बस मिलती है
हरदोई क लिए। मामने आम का वाग दिखाई दे रहा है। खूब घनी छाया,
पक्का कुआँ क्या कहने मन खुश हो गया।
वाग के वाहर लहडू रोक दिए गए। आम के पडो क नीची खुली
जगह पर ब ी दरी बिछा दी गई चाहे बैठो, चाहे लेटो पर पहले कुए
पर जाकर हाथ मुह धो ला। रास्ते की धूल ने वाल भी मटमले कर
िए।
राहित से ता उठा नही जा रहा। दरी पर पैर फैलाकर पड गया।
विजय ने आकर टाँग खीची तो उठना पडा।
पत्तलो पर नाश्ता परोसा गया। वूदी के लडडू हैं, खोये का पेडा,
कचोरी नमकीन सेव और भी न जाने क्या-क्या 'एई लडका लोग,"
नत्थूसिह की आवाज कडकी 'यहाँ बन्दर वहुत है अपनी अपनी पत्तल
का ध्यान रखो।
रोहित ने सर उठाकर देखा पेड की हर डाल पर एक-दो बन्दर बठे
थे। राहित का अपनी ओर ताकते हुए पाया तो बन्दरो ने दाँत किचकिचा
कर की ना की। दो एक बडे बन्दर तो उचककर हमला करने की पाजी-
शन म आ गए खो खो अजब आवाज मुह से निकाली बन्दरा ने।
एई रोहित भइया, बन्दरा से खिलवाड अच्छा नही। चिपट गए तो
छुडाना मुश्किल हो जाएगा समझे। नत्थूसिह ने चेतावनी दी 'नाश्ता
कर लो, अभी ढेर सारा रास्ता पार करना है।'

सबने खूब छक्कर खाया। खाने की कोई कमी नही। कुएँ का ठण्
पानी, सो तबीयत खुश हो गई। चारो तरफ लाठी लेकर शकरलाल
आदमी पहरा दे रहे हैं। बन्दर पेडो की डालियो से चिपके बस खाखिय
रहे, नीचे उतरने की किसी ने हिम्मत नही दिखाई।

नाश्ता करने के बाद नीद आने लगी थी, पर सोना नही हो सकता
शाम से पहले ही गाँव पहुँच जाना है। रात को फेरे पडेंगे। देरी करने
सब काम गडबड हो जाएगा, नत्थूसिंह समझा रहे थे। मगर शकरला
के ऊपर कोई असर नही हुआ। ताजा भरा हुक्का गुडगुडाते रहे। ज
दुबारा नत्थूसिंह ने फिर जल्दी मचाई तो झुझलाकर बोले, "अरे
सर काहे खाय रहे हो। बला को तो जोता लहडू मे। ससुर हुक्का पीन
हराम कर दिया।"

बैलो को लहडू मे जोत दिया गया। सारा सामान बीन वगैरह
लहडू मे लाद दिया गया। दरियाँ लपेटकर रख दी गइ। एक एक कर
सारी बारात फिर लहडुओ मे सवार हो गई। अब तो शकरलाल को
हुक्के की नली मुह से हटानी पडी। हरिया ने चिलम का जमीन पर उल
करके आग निकाल दी और उस पर मिट्टी डालकर तोप दिया। शक
लाल भी अपने लहडू पर आकर बैठ गये। बारात फिर चल पडी।

राम राम करके दो-ढाई घण्टे भी किसी तरह बीत गये और चार ब
से पहले ही बारात अपने ठिकाने पर पहुँच गई।

गाव के बाहर बारात का स्वागत करने के लिए लडकी वाला के सा
ही गाव के प्रधान भी उपस्थित थे। शकरलाल लम्बरदार खुद बारात
आए है, बडे भाग्य की बात है। प्रधान जी ने सुबह तोडे गए फूलो
तैयार की गई माला शकरलाल जी के गले मे डालकर सर नवाकर प्रणा
किया, "बहुत कृपा की आपने लम्बरदार, जो हमारे गाव पधारे, धन भा
हमार।"

शकरलाल गदगद हो गए। प्यार से प्रधान जी का कधा थपथपाया
एक एक हार सारे बारातियो को भी पहनाया गया। एक लाइन मे खडे
बाजे वालो ने अपने ढोल ताशा को पीटना शुरू कर दिया, तुतही से बो
फूट रहे थे, हिल मिल के गावा सब यार, हमारे घर राम जी आए

गाँव की पाठशाला में बारात को ठहराने का इंतजाम किया गया। कोई कमी नहीं। सारा इंतजाम एकदम चौचक। कुएँ का ठण्डा पानी तैयार है। नहाइए, धोइए, फिर चाय पीजिए, नाश्ता कीजिए, चाहें तो पूड़ी कचौड़ी भी हाजिर है। वैसे तो रात का पूरा भोजन परोसा जाएगा। दावत की पूरी तयारी है।

शकरलाल को चाय नाश्ते से कोई मतलब नहीं। शाम होने को आई उन्हें तो भंग का गोला चाहिए। हरिया सिलबट्टा साथ लाया है, कुएँ की मेंड पर बैठकर भाँग पीसने लगा।

पाठशाला की अन्दर वाली कोठरी में बारात में आए शौकीन लोगों के लिए पीने का प्रबन्ध है। हरदोई से खास तौर पर 'लाल परी' मँगवाई गई। सुरजन मामा एक-एक को पकड़ लाए, रामस्वरूप, हरखू भइया, माधवप्रसाद खूबचन्द और दो-एक रिश्तेदार माधवप्रसाद त्रिपाठी ने जब पहले न नू की, तो रामस्वरूप ने डाँटा, "यहाँ कौन से तुम्हारे स्कूल के लड़के और अध्यापक बैठे हैं जो नखरे दिखा रहे हो।"

'यह बात नहीं," माधवप्रसाद झेंप से गये, "हमारा पेशा ही ऐसा है। जरा सावधान रहना पड़ता है।"

रामस्वरूप को अचानक देवीदत्त की याद आ गई, "अरे सुरजन मामा, छोटे बाबू जी को तो बुलाओ। वह तो हमारे दामाद हैं, उनकी तो खातिर करनी ही है।"

'कौन देवीदत्त जी, अभी लाते हैं।" सुरजन मामा दौड़कर देवीदत्त जी को पकड़ लाये।

'नहीं, नहीं, हमें जोर न दो, भाई साब हैं।" देवीदत्त ने आनाकानी की।

"अरे बाबू जी एक घूट लेने मे क्या बुराई है।'

"तुम भाई को नहीं जानत, वह जमीन-आसमान एक कर देंगे।" देवीदत्त ने पिण्ड छुड़ाना चाहा।

पर रामस्वरूप नहीं माने। आखिर साले की बात रखनी ही पड़ी। देवीदत्त ने दो-तीन पैग गले के नीचे उतार लिये।

माधवप्रसाद तीन पैग पीने के बाद रंग में आ गये। सुरजन मामा के

हाथ से बोतल छीन ली और गिलास मे डालकर गटक गये। फिर दाढी पर हाथ फेरकर बोले, "वाह वढिया चीज है मजा आ गया।'

असली मजा तो आधे घण्टे बाद आया जब माधवप्रसाद और सुरजन मामा एक-दूसरे का हाथ पकडकर नाचने लगे। रामस्वरूप का एक दो उल्टी हो गई थी। पर वो होश म थे और जब बारात चली तो छडी का सहारा लेकर धीरे धीरे चलन लगे। देवीदत्त अपने भाई से दूर होकर चल रहे थे, कही भाई को पता चल गया तो आफत हो जायेगी। सोमदत्त आय बगैर पिये ही हगामा खडा किये थे, "हमे पहले पता होता तो हम बारात में नही आते। शराब पीकर हुल्लड मचाना कहा की तमीज है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसी नशा पानी का विरोध किया था, पर लाग है कि पाप करने से बाज नही आते।'

माधवप्रसाद त्रिपाठी और सुरजन मामा बारात के आगे-आगे नाच करते हुए चल रहे थे। उचक उचककर एक-दूसरे के चूतडो पर तबला बजाने की कोशिश करते। शकरलाल खुश थे। बगैर रण्डी बुलाये ही नाच देखने को मिल रहा था। बच्चे भी खूब हो हल्ला मचा रहे थे। छोटा सा गाँव। एक चक्कर लगाकर ही बारात लडकी वालो के दरवाजे पर पहुँच गई।

द्वारचार के समय मगलगीत गाये जा रहे थे। खूब भीड इकट्ठी हो रही थी, गाव के सारे बच्चे-बूढे इकट्ठे हो गये थे। नत्थूसिह यहाँ भी अपनी ड्यूटी पूरी मुस्तैदी से दे रहे थे। डण्डा लिये आल्तू फाल्तू लोगो को दूर हटा रहे थे।

मकान के सामने पाठशाला से लाकर बेंचें बिछा दी गयी थी। बेंचो के आगे डेस्कें लगी थी। इन्ही पर बरातियो के लिए दावत का इन्तजाम किया गया था। पूडी, कचौरी हलुआ, वाह वाह तबीयत खुश हो गई।

द्वारचार के बाद गालिया शुरू हो गयी। यह भी एक रिवाज है कि खाना खाते हुए बारातियो पर लडकी वालो के यहाँ की औरतें गालियो की बौछार करें। दरवाजे पर खडी औरतें घघट उठा-उठाकर गालिया दे रही थी। लडके वालो की पुश्त दर पुश्त को याद किया जा रहा था।

बाराती गालियाँ खाकर खुश हो रहे थे। माधवप्रसाद त्रिपाठी और सुरजन मामा जमीन पर बिछी दरी पर औंधे मुह पड़े हुए थे। गालियो ने उनम नई चेतना पैदा कर दी। दोनो उठकर खड़े हो गये, पूरी शक्ति से गालिया का उत्तर गालियो से देने लगे। कोई कम तो हैं नही लडके वाले।

'नत्थूसिह हरिया अरे कहा मर गये। ले जाओ इन दोनों को, औरतो के मुह लग रहे हैं।" शकरलाल चिल्लाये।।

नत्थूसिह के साथ ही दो एक और आदमियो ने सुरजन मामा और माधवप्रसाद को पकडकर चुप कराते हुए एक ओर बैठा दिया। औरतो को भी चुप कराने की कोशिश हो रही थी। बाराती चाहते थे कि गालियो का आदान प्रदान चलता रहे, लेकिन शकरलाल के आगे किसी की नही चल सकती।

देवीदत्त का खाने मे मन नही लग रहा था। दो बार कोहनी मारकर शकरलाल को याद दिला चुके थे कि बारात मे वह किस मतलब से आये हैं। शकरलाल दिलासा दे रहे थे, थोडा सबर करें। लडकी दिखा देंगे।

खाना खतम हुआ तो फेरो की तैयारी शुरू हो गई। आधे बराती तो जनवासे चले गये सोने,, बाकी फेरे देखने के लिए बैठे रहे। सोमदत्त आय रोहित को भी साथ ले जाना चाहते थे, पर रोहित विजय के साथ चिपका रहा। विजय ने रोहित के कान मे मत्र फूका, "यही रह साले, लडकियाँ देखने को मिलेंगी। रोहित ने अपने ताऊ जी स कह दिया, "हम तो फेरे देखेंगे।"

'देखा ससुरऊ फेरे। सुबह चलना है, यह तो होता नही, पड के सोय जाय, फेरे देखन की पडी है। सोमदेव आय पर पटक्से भुनभुनाते चले गय।

घर के अन्दर आँगन मे फेरो के लिय मण्डप बनाया गया। खूब बडा आगन, दरियाँ बिछी हुई थी। एक तरफ शकरलाल देवीदत्त, रामस्वरूप, व दूसर रिश्तेदारो के साथ आकर बठ गये। अपने पास दूल्हे के बडे भाई हरखू भइया को बुलाकर बठा लिया। सामने पटरे पर दूल्हा बने राजा बाबू बैठे थे। बस दुल्हन के आने की देरी थी। पण्डित जी वेदी का सामान जमा रहे थे।

सात आठ लडकियां दुल्हन को लिये हुए आ गयी। दुल्हन को पटरे पर बैठा दिया। पास मे ही दुल्हन के साथ आई लडकियाँ बैठ गयी। नीली साडी पहने एक लडकी बहुत चुहल कर रही थी। दूल्हा को बार बार बोली मार देती, फिर खिलखिलाकर हँसती। घर की बडी-बूढी औरतें भी पीछे आकर खडी हो गयी थी, घूघट उठाकर लडकियो को घुडका हाथ बढा कर कोंचा, पर लडकियाँ नही मानी, ही ही ठी ठी करती ही रही। यह है नये जमाने की हवा, मुह उघाडे हँस रही है, जरा शरम-हया नही।

शकरलाल ने हाथ के इशारे से एक आदमी को बुलाया, धीरे से कुछ कहा, लेकिन जब बात ठीक से हो नही पाई तो उठकर एक कोने मे जाकर बात की, फिर लौटकर देवीदत्त से कहा, "यही लडकी है, नीली साडी वाली।"

देवीदत्त ने चौककर लडकी पर आँखें गडा दी। लडकी का रग साफ था, लेकिन मुह पर चेचक के दाग थे। जब हँसती थी तो मसूढे भी दिख जाते थे। बीच से माग निकाली हुई थी, इससे माथा कुछ ज्यादा ही बडा हो गया। हाथ पैरो से मजबूत ही लगी। ठीक है चलेगी। देवीदत्त ने मन मे बात पक्की कर ली।

विजय भी लडकियो की तरफ ही देख रहा था, रोहित को कोहनी मारकर धीरे से बोला, "अरे देख, साली कैसी चुहलबाजी कर रही है।" रोहित ने उचटी-सी नजर डाली, फिर दूसरी ओर देखने लगा। "कल सालियो का कलेवे के वखत तग करेंगे, है न।" विजय ने फिर कहा।

रोहित ने जरा भी उत्सुकता नही दिखाई। उसे तो सामने बैठे दूल्हे-दुल्हन को देखने मे आनन्द आ रहा था। रोहित की तरफ से कोई जवाब न पाकर विजय ने सीधा लडकियो की तरफ देखना शुरू कर दिया। अपनी आदत के मुताबिक सीधे हाथ की उँगली से नाक को दो बार रगडा और फिर सारा ध्यान लडकियो पर जमा दिया।

एक घण्टे म फेरो का कायक्रम पूरा हो गया। सब उठकर खडे हो गये। लडकियाँ भी दुल्हन को वापस ले जाने के लिये उठकर खडी हो गयी। देवीदत्त ने मौके का फायदा उठाया। नीली साडी वाली लडकी

की लम्बाई-चौडाई भी नाप ली, "बिलकुल ठीक है, कल ही बात पक्की कर लेंगे।"

कल तक भी रुकना देवीदत्त के लिए भारी पड रहा था। शकरलाल पर जोर डालकर लडकी के बाप को रात ग्यारह बजे ही जनवासे मे बुलवा भेजा। शकरलाल ने ही बात की। देवीलाल तो थोडी दूर पर टहलते रहे। चाहते तो थे कि खुद जाकर लडकी के बाप के सामने अपनी तारीफ के पुल बाध दें। मगर शकरलाल ने मना कर दिया। मन मसोस कर रह गये।

लडकी का बाप साधारण सा किसान था शायद थोडा पढा लिखा भी था। शकरलाल मे आगे कुछ बोल नही सका। बार-बार दूर टहलते देवीदत्त को जलती नजरो से देख लेता। 'अपनी औरत से राय ले लू', कह कर चला गया।

देवीदत्त को रात ठीक से नीद नही आई। लडकी का बाप किसान है, उसकी समझ ही कितनी है। अपनी बेटी की भलाई के बारे मे खुद ठीक से सोच नही सकता। अगर उन्हें एक बार बात करने का मौका मिले तो फिर इनकार नही कर सकता। रोहित की मां के सारे जेवर लाकर मे रखे हैं वह सब इसे ही तो मिलेंगे। भाई से पटती नही है, इसलिए अकेले ही रहते हैं। जेठानी का भी कोई डर नही। रहा रोहित का सवाल, सो वह बडा हो गया है, उसे अब किसी स्कूल के हॉस्टल मे रख देंगे। बस घर पर लडकी उनकी पत्नी बनकर सुख भोगेगी। यही सब कहना चाहते थे। लेकिन मौका ही नही मिला। खैर, सुबह अगर कुछ ऊँच नीच हुई तो इन सारी बातो को तुरुप के पत्ते की तरह इस्तेमाल करके काम बना लेंगे।

मगर सुबह होते ही सारी मन की मुरादें फीकी पड गयी। अभी सुबह का नाश्ता पानी चल ही रहा था कि लडकी का बाप आ गया। शकरलाल को एक ओर ले जाकर साफ मना कर दिया। दुजहे से अपनी लडकी की शादी नही करेगा। लडकी की मां राजी नही है। शकरलाल ने कुछ कहना चाहा तो किसान बिगडकर बोला, "लम्बरदार, हम तुम्हार आगे मुह नही खोलना चाहते, पर तुम्ही बताओ, जे तुम्हारे बहनोई देवीदत्त का हमारी उमर के नाही हैं। का हम अपनी बिटिया का ब्याह अपनी उमर के आदमी

से कर दे ? '

देवीदत्त ने सुना तो शंकरलाल से बिगड के बोले, "तुमने हमारी उम्र बताई ही क्यो ?"

'अरे हमने कुछ थोडी कहा बाबूजी, उसने तो सब कुछ अपनी तरफ से ही भाप लिया।" शंकरलाल ने सफाई दी।

देवीदत्त अन्दर ही-अन्दर जल-भुन के खाक हो गये। क्या समझता है यह किसान, ऐसे साले दस किसानो को खरीदकर रख दें। भाई अगर बारात मे साथ न होते तो दो-चार खरी-खरी सुना देते। साला अपनी लौंडिया को यही कही किसी घास खोदने वाले घसियार के पल्ले बाँध देगा। भूखो मरेगी। जाहिल, गवार। अपना भला-बुरा सोच भी कैसे सकता है ? उनके पास बाप-दादा की छोडी हुई लाखो की जायदाद है, अच्छी नौकरी है, जेवर कपडा है जो आयेगी राज करेगी। पर यह किसान साला कुछ देखता ही नही, उमर की बात करता है।

पास के कमरे म विजय और रोहित ताश खेलते हुए जोरो से हँस रहे थे। रोहित के हँसने की आवाज कानो मे पडते ही देवीदत्त को और ज्यादा गुस्सा आ गया। इसे रोहित का यहा नही लाना चाहिए था। इसे देखकर ही लडकी वालो ने उमर की बात उठाई। चौदह का है तो क्या हुआ, मसें तो भीग ही रही हैं। फिर शान्ति से भी एक जगह नही बैठता। हर समय उछल-कूद मचाता है। इसे साथ लाकर बहुत गलती की। आगे से कही साथ नही ले जायेंगे।

नाश्ता करके सोमदत्त आय अपना झोला ठीक करने लगे। बस इतना ही सामान साथ रखते हैं जितना उठा सकें। कुछ दिनो आय समाज के प्रचारक रहे हैं, तभी से यह आदत पड गई। भाई को चलने के लिए तयार देखा तो देवीदत्त ने पूछा, "क्या जा रहे हो भाई ?"

"हाँ, हमे बीसलपुर मे एक और शादी म जाना है।" सोमदत्त आर्य ने जवाब दिया।

'किधर से होकर जाओगे।"

"बस पकड के हरदोई जायेंगे, वहाँ से गाडी से एगवाँ उतरकर शेखूपुरा, फिर अपना सामान लेकर रात तक बीसलपुर पहुँच जायेंगे।"

'ऐसा करो, इसे रोहित को अपने साथ लेते जाओ, शेखूपुरा छोड देना। वहाँ से हम इसे ले लेंगे।"

"क्या, अपने साथ क्या नही ले जाते। बारात के साथ आया है, बारात के साथ ही चला जायेगा।"

'तुम नही समझते, कमजोर है यह, पहली बार लहडू पर सफर किया है। अच्छे भले को थकावट हो जाती है। जरा से मे तबीयत खराब हो गई तो लेने के देने पड जायेंगे। इसे अपन साथ लिये जाओ। रेल मे आराम स चला जायेगा।"

सोमदत्त आय को अपने छोटे भाई से जितनी नफरत थी, अपन भतीजे से उतना ही प्यार था। उनके अपनी कोई औलाद तो थी नही, भतीजे को ही अपना सब कुछ मानते थे। रोहित को साथ ले जाने के लिए तुरन्त तैयार हो गये।

रोहित ने सुना तो रुवाँसा हो आया, "बाबू जी, हम तो बारात क साथ जायेंगे।'

"नही, भाई के साथ जाओ। आराम से पहुँचोगे, बस।" देवीदत ने आखें तरेरकर कहा।

हिटलरी हुकुम हो चुका था। रोहित की आगे कुछ कहने की हिम्मत नही थी। जूते पहनकर अपने ताऊ के साथ चल पडा।

पक्की सडक तक लहडू दोना को छोड गया। दस मिनट बाद ही बस मिल गई, जिसने डेढ घण्टे मे हरदोई पहुँचा दिया। हरदोई शहर के बाहर चुगी पर बस के रुकते ही सोमदत्त आय उतर पडे। रोहित को भी उतरना पडा।

"यहाँ क्यो उतर पडे, शहर मे उतरते।" रोहित ने कहा।

"तुम्हें क्या मालूम। बस सीधी शहर नही जाती, दो एक गाँवो म घूमकर शहर मे पहुँचती है। बस अड्डा भी दूर है। वहाँ मे स्टेशन आते आते एक घण्टा लग जाता। दो बजे की गाडी पकडनी है देर हो जायेगी तो गाडी छूट जायेगी। यहा से पदल निकल लेंगे। पास मे ही तो है स्टेशन।' सोमदत्त आय ने सारा नक्शा खीच दिया।

रोहित को जोरो की प्यास लग आई थी। लकिन चुगी पर जो दो

आदमी बैठे थे वह दोनो ही दाढी वाले मुसलमान थे, इनसे पानी माँगकर कैसे पिया जा सकता है । चलो आगे कही मिलेगा तो पी लेंगे ।

चारो ओर खेत फैले हुए थे, उन्ही के बीच पगडण्डी पर अपने ताऊ के पीछे पीछे रोहित चलने लगा । ग्यारह बज गये थे । सूरज ठीक सर के ऊपर चमक रहा था । इस साल बरसात भी पूरी नही हुई सो गरमी और ज्यादा पड रही थी । पन्द्रह मिनट चलने के बाद ही सारा शरीर पसीने से नहा उठा । प्यास और जोरो से लग आई, लेकिन दूर दूर तक पानी मिलने के कोई आसार नजर नही आ रहे थे ।

बहुत गुस्सा आ रहा था रोहित को । अच्छा फँसाया उसे । अगर ताऊ के साथ न आता तो इस समय विजय के साथ बैठा पूडी कचौडी खा रहा होता । बाबू जी भी कभी कभी खूब काम करते है । तबीयत खराब हो जायेगी कहा, और यहाँ भेज दिया । अब यहा पानी भी पीने को नही है ।

पगडण्डी ने मोड लिया तो एक छोटा सा गाव दिखाई दिया । यहा जरूर पानी मिलेगा । रोहित सोमदत्त ताय से आगे-आगे चलने लगा । सोमदत्त ताय समझ गये, 'अरे भागता क्यो है, यह चमारो का गाँव है । पानी पीने को स्टेशन पर ही मिलेगा ।"

रोहित की चाल सहसा धीमी हो गई । सोचा था पीने को ठण्डा पानी मिलेगा, अब सब खतम हो गया । पैर घसीट घसीटकर किसी तरह चलने लगा ।

रोहित को ख्याल आया गाव मे सभी तो चमार नही होगे । जो अच्छा घर होगा उसी से लेकर पानी पी लेगा ।

गाव मे खपरैल के छोटे छोटे घर बने हुए थे । गाय के गोबर से लिपे पुते । कुछ तो बहुत ही साफ सुथरे, पर जब कहा कि पीने को पानी चाहिए तो घर के बाहर बैठे आदमी ने ही कह दिया, "हम भइया चमार है, पीने का पानी कही और से ले लो । '

रोहित प्यास के मारे पागल-सा हो रहा था । एक घर से दूसरे घर मे पूछते पूछते थक गया । अजब गाव है, सिवा चमारो के और कोई घर नहीं है ! -

अब गाँव का छोर आ गया था। सहसा सामने का मकान दूसरे कच्चे घरों से अलग लगा, क्योंकि इस घर के आगे पक्का दालान था, और दो चार फूलों के पौधे भी लगे थे। नेमप्लेट भी लगी हुई थी, जिस पर लिखा था, कौशिल्या माई। बारामदे में एक अधेड़ उम्र की औरत, सफेद साड़ी पहने कुर्सी पर बैठी कुछ पढ़ रही थी। चारों ओर सफाई थी, कहीं गन्दगी नहीं। यहाँ पानी पिया जा सकता है। रोहित दालान में पहुँचकर बोला, 'पानी पीने के लिए मिल सकता है, बहुत प्यास लगी है।"

बेटा पानी तो है, पर तुम अच्छे घर के लड़के लगते हो। हमारे यहाँ का पानी नहीं पियोगे। हम हरिजन हैं। अधेड़ औरत ने बहुत सहजता से कहा।

रोहित उसकी ओर देखता रह गया। कुछ कह नहीं पाया। तभी पीछे से जोरों की आवाज आई, 'रोहित इधर आओ।"

गली में खड़े सोमदत्त आर्य आवाज दे रहे थे। रोहित के पास पहुँचते ही बिगड़कर बोले, 'तुमसे कह दिया यहाँ पानी नहीं मिलेगा फिर भी समझ में नहीं आता। यहाँ सब चमारों के घर हैं हम सब पता है, हम खूब घूमे हैं यहाँ। स्टेशन आ गया है, अब काहे पानी पानी की रट लगाये हो?

क्या कहे रोहित, रुआँसा सा हो आया। कब से चल रहे हैं। पर स्टेशन नहीं आया। न जाने और कितना चलना होगा। अगर ताऊ साथ न होते तो वह इसी औरत से पानी लेकर पी लेता। पर सोमदत्त आर्य के होते वह अपनी मर्जी से कुछ नहीं कर सकता। चुपचाप पैर घसीटता पीछे पीछे चल पड़ा।

गाँव से निकलते ही मोड़ आ गया। सामने स्टेशन दिखाई दे रहा था। जहाँ इतनी दूरी पार की है वहाँ अब स्टेशन तक की दूरी भी पार करनी होगी।

स्टेशन पर पहुँचकर नल में मुँह लगाया तो गरम पानी का स्वाद मिला। गरम पानी को ही गले के नीचे उतारना होगा। प्यास तो आखिर बुझानी ही है।

सोमदत्त आर्य ने झोले में से घर के बने लड्डू निकाले। वह हर समय

घर के बने लडडू साथ रखते हैं। बगैर मुंह मीठा किये पानी नही पीते। रोहित को लडडू दिया तो उसने नही लिया। क्या खाये लडडू, इतनी दूर धूप मे पैर घसीटने पडे, बारात मे आने का सारा मजा किरकिरा हो गया। खुद तो पिताजी मजे से लडडू मे बैठे बारात के साथ जा रहे होंगे। मुझे यहा पटक दिया। गुस्से मे रोहित की आखो मे आंसू आ गये।

सोमदत्त जाय अपने मे ही खाये एक के बाद दूसरा लडडू खा रहे थे। वह जब मिठाई खाते तो फिर उन्हें आसपास का कोई ध्यान नहीं रहता था। इस समय भी वह अपने मे खोये लड्डू खाये जा रहे थे।

गाडी आने मे अभी कुछ देरी थी। रोहित प्लेटफार्म पर पडी बेंच पर लेट गया। गाडी आयेगी तो ताऊजी उठा ही लेंगे।

नत्थूसिह शकरनाल के आगे सर झुकाये खडे थे। जो खबर लाये हैं वह कोई अच्छी खबर नही है। नटनी चमारन के लडका हुआ है। मुनिस्पैल्टी म जाकर लडके के बाप का नाम शकरलाल लिखा दिया। यह काम ठीक नही हुआ। यही कहने सुबह सुबह भागते हुए आये हैं।

तुम ससुरऊ बडे मद बने फिरते हो, तुमसे यह न हुआ कि जाय के नटनिया को गोली मार देते।' शकरनाल गुस्से से नत्थूलाल की तरफ देखकर बोल।

'मालिक कहो तो नटनिया क्या, हम उसके सारे घर-भर को गोली मार दें। पर गोली मारने से काम नही चलेगा। नटनिया का मुंह बन्द करना होगा। बदनामी की बात है।''

'यही तो हम कह रहे है। नटनिया की हिम्मत कैसे हुई मुनिस्पैल्टी जाने की? अरे हमारे पास आती, तो हम झोली भर देते। कपडा-लत्ता सिला देते, क्या नही कर देते, पर सीधी मुनिस्पैल्टी पहुच गई। हिम्मत कैसे हुई उसकी।'

'उसकी हिम्मत कहाँ है मालिक,'' नत्थूसिह ने अपन सर पर हाथ मारकर कहा, ''आप बात को समझो तो। बस्ती के आधे आदमी आपकी

शान शौकत से जलते हैं, सो नटनी को चढा दिया बांस पर। अब ताली बजाकर तमाशा देखना चाहते हैं।"

"हम ताली बजने नही देंगे नत्थूसिह" शकरलाल ने भौंह चढाकर कहा, "जो साला ताली बजायेगा, हम उसके हाथ कलम करके रख देंगे।"

'फिर वही बात,' नत्थूसिह ने समझाते हुए कहा, "मालिक हाथ और सर कलम करने से काम नही चलेगा, काम चलेगा तरकीब से। कुछ ले देके नटनियों को तडी पार कर देंगे। दूसरे शहर चली जाये तो लोग सब भूल जायेंगे। रहा मुनिस्पैल्टी का मामला, सो हम निपट लेंगे। साला वह रजिस्टर ही गायब करा देंगे जिसमे आपका नाम लिखा गया है।'

"अरे ता फिर खडे-खडे मुह क्या देख रहे हो, जाओ मामला निपटाओ।" शकरलाल ने हुकुम सुनाया।

"हम सोच रहे है कि एक से दो भले। सुरजन मामा को भी साथ ले लें। थोडा और दबाव पड जायेगा।"

"ठीक है ले जाओ सुरजन को," शकरलाल न सहमति म सर हिलाया, 'सुरजन अपना आदमी है, अपने भले की ही बात करगा। रामस्वरूप का मुलाजिम है, कोई गर नही है, ले जाओ उसे।"

दोपहर बीत गई, नत्थूसिह अभी तक नही लौटा। न जाने किस कर वट ऊट बैठे। साले दुश्मन भी तो कम नही। जड खोदने के लिए ता हरनारायण ही काफी हैं। कही कोट-कचहरी तक मामला पहुच गया ता नटनी को खर्चा-पानी भी देना पडेगा और बदनामी होगी सो अलग। समय ही खराब आ गया है, नही तो क्या चमारिन की इतनी हिम्मत होती कि मुनिस्पल्टी तक पहुँच जाती। रईसो के यहाँ तो औरतें रहती ही हैं। रायसाहब ने दो औरतें रख रक्खी हैं। ठाकुर गजेन्द्रसिह ने अपनी बगिया के माली की औरत को ही हरम मे डाल लिया। बिट्टन बाबू बद्रीधाम की तीर्थयात्रा का गये तो लौटते हुए एक पहाडिन को ही खरीद लाये। चौधरी हरसुखसिह ने गाँव की विधवा पुजारिन के ही गभ टिका दिया। मजहर हुसैन शेरखां के तो कहने ही क्या, जानवरो के साथ ही औरत के शिकार म भी बहुत माहिर हैं। अब अगर नटनी को हमने रख लिया तो कौन-सी बडी बात हो गई। पर नही, दुश्मना को बोलने का मौका नहीं देंगे। जसे

भी होगा, किस्सा निपटा देंगे ।

शाम से पहले ही नत्थूसिंह सुरजन मामा के साथ लौटे। काफी थके लग रहे थे, पर जब तक मालिक न कहें कैसे बैठ जायें, सो अगोछे से मुंह पोंछते खड़े रहे।

"खटिया खेंच लो, शान्ति से बैठ जाओ। थोड़ा पानी-वानी पी लो, फिर निश्चिन्त होकर बात करो।" शंकरलाल ने दोनों को सम्हालते हुए कहा।

सुरजन ने खटिया खींच ली, और लद्द से बैठ गये। हरिया पानी ले आया था। नत्थूसिंह ने मुंह धोया, फिर ओक से पानी पिया। थोड़ा दम आया तो बोले, "मालिक, किस्सा तो हम निपटाय आये, पर सौदा बहुत महंगा पड़ा है।"

"महंगे सस्ते को छोड़ो, बात बताओ क्या हुई," शंकरलाल ने उत्सुकता से पूछा।

"बात क्या होनी थी, ससुरे को पैसा चाहिये, सोई पैंतरा बदल रहा था। कंधे पर हाथ ही नहीं रखने देता था। फिर मामा ने सम्हाला, साफ कहा कि बेटा डिप्टी साहब से कहकर किसी दफा में बन्द करा दिया तो दो तीन साल तो जेल से छूटने से रहे।" नत्थूसिंह ने कहा।

"असल में तो सारा कसूर गांधी बाबा का है। एकदम दिमाग चढ़ा दिया है इन छोटी जात वालों का। ससुरे बहस करने लगे, कानून बताने लगे। अरे हमने कहा, बच्चा, होश की दवा करो, अगर हम अपनी पर आ गये तो फिर तुम्हारे रोये नहीं चुकेगा। गांधी बाबा बचाने नहीं आयेंगे यहां, हां।"

'फिर तय क्या हुआ?" शंकरलाल के लिए तो मूल बात कुछ दूसरी ही थी।

"तीन सौ रुपये में राजी हुआ है नटनी का बाप।" नत्थूसिंह ने कहा।

'वह तो दो सौ में भी राजी हो जाता, लेकिन उसका साला बीच में आ गया, उसने सौ रुपये और बढ़ा दिये।'

'चलो, कोई नहीं, तीन सौ की क्या बात है, दे देंगे, पर तय क्या हुआ

है ?" शकरलाल ने पूछा।

"बस, तीन सौ मिलते ही नटनी का बाप अपने पूरे परिवार को लेकर तिलहर चला जायेगा। वहा उसकी रिश्तदारी है, वही बस जायेगा। यहाँ भी जूता गाँठते है, वहाँ भी जूता गाँठेंगे।"

शकरलाल न सतोष की सास ली। हुक्के की नली मुह मे लगाकर हुक्का गुडगुडाया, फिर नली मुह से हटाकर बोले, "तब फिर इस काम को जल्दी निपटा डाला। किस्सा खतम हो।" शकरलाल न जेब स दस का नोट निकाला, और अपने सीधे हाथ मे पहनी हीरे की अँगूठी उतारकर बोले, "यह लो किराया, तुम दोनो कल सुबह हरदोई जाकर अँगूठी बेच दो और नटनी को चलता करो।"

"मालिक, कोई और इन्तजाम किये लेत है अँगूठी काहे ," सुरजन मामा न अटकते हुए कहा।

"कोई बात नही,' शकरलाल न लापरवाही से कहा "इस समय हमारा हाथ जरा तग है वखत की बात है। अँगूठी का क्या है, फिर खरीद लेंगे। हा, जरा सम्भलकर ले जाना, असली हीरा जडा है।

"आप निश्चिन्त रहे सुबह ही निकलजायेंगे, शाम तक लौट आयेंगे।" सुरजन मामा ने अँगूठी को अपनी बण्डी की अन्दर वाली जेब मे रखत हुए कहा।

पाच सौ रुपये मे अँगूठी बिक गई। रुपये पाकर नटनी चमारिन का पूरा परिवार बस्ती छोडकर चला गया। पच्चीस रुपये मे मुनिस्पल्टी से रजिस्टर भी आ गया। शकरलाल ने अपने हाथो स रजिस्टर उठाकर जलते चूल्हे मे झोंक दिया। न होगा बाँस न बजेगी बासुरी। दस-दस रुपय नत्थूसिह और सुरजान मामा को इनाम मे दे दिये। बाकी बचे रुपयो को शकरलाल ने अटी मे खोस लिया। थोडा बहुत इधर-उधर का खर्चा पानी हो जायेगा।

मंदिर का प्रबन्ध शंकरलाल के हाथों से निकल गया। दो साल पूरे हो गये। अब हरनारायण मंदिर का प्रबन्ध सम्हालेंगे। शंकरलाल ने अपने मकान के पीछे वाले कमरे का झाड़ पोछकर ठीक कराया। कमरे के सामने की जमीन पर उगी बरार की घास को खोदकर फेंक दिया गया। नये पौधे लगाये गये। छोटे कुएँ का साफ किया गया। बस अब यहीं सुबह शाम महफिल जमेगी।

जिन्दगी अपनी रफ्तार में चल रही है। सुबह से शाम तक लोग आते हैं, शतरंज जमती है, ताश फेंटे जाते हैं बस्ती के एक दो किस्से भी निपटाये जाते हैं, पर न जाने क्या शंकरलाल का मन किसी काम में नहीं लगता। सब की उदासी छाई रहती। कुछ दिनों तो नटनिया ही दिमाग से नहीं उतरती थी। आखिर इतने दिनों का साथ था, सुख तो दिया ही उसने, पर निकली बहुत कमीनी। बाप ने रुपया लिया और लहंगा उठा कर चली गई। बच्चे का मुंह भी नहीं देख पाये हो सकता है उन्हीं पर गया हो। लेकिन तुरंत ही सर झटककर शंकरलाल ने एक क्षण के लिए मन में आई भावुकता को परे ढकेल दिया। कौन जाने किसका हो, यहां से जाने के बाद और कितनों के पास सोती हो, यह भी किसे पता है। जाय साली भाड़ में। शंकरलाल मुंह में हुक्के की नली लगाकर जोरों से हुक्का गुड़गुड़ाने लगे।

नत्थूसिंह मालिक की सेवा में कभी पीछे नहीं हटे। इस समय भी सेवा में पूरी तरह जुटे थे। पहले गांव के दूसर छोर पर रहने वाली एक घसियारन बिस्तर गरम करने के लिए पकड़ लाये, मगर वह औरत ठीक नहीं थी, लम्बरदार को पूरा खुश नहीं कर पाई, जरा सी देर में जाने की जल्दी मचाने लगती। सो फिर भंगी टोला से ही एक जवान भंगिन को हफ्ता बांध दिया। जब भी तबीयत हुई बुलवा लिया। पीछे का दरवाजा खुला रहता और आने जाने में कोई परेशानी नहीं। लेकिन धीरे धीरे इससे भी तबीयत ऊब गई। किसी काम में मन नहीं लगता। साला वखत काटे नहीं कटता। श्रीप्रकाश का लिखा था कि जाड़े की छुट्टियाँ यहाँ बिता जाओ सो वह भी नहीं आये, सब अपनी मर्जी के मालिक हैं, किसी को क्या कहें।

सुरजन मामा वर्षों से रामस्वरूप की जमीदारी को देख रहे हैं। खुद रामस्वरूप तो छठे छमाहे ही गाँव जाते। मरीज आदमी हैं, थोडा चलते तो दम फूल जाता, इसी से घर पर ही पड़े रहते। सारा काम सुरजन मामा ही देखते। तहसीली वसूली करके जो लाते रामस्वरूप चुपचाप ले लेते कभी रुपये पैसे के मामले में टोका-टाकी नहीं की। महीने का वेतन बंधा हुआ है, साथ ही फसल कटने पर अनाज भी दिया जाता। पर पेट नहीं भरता कारिंदों का, मालिक चाहे कितना ही दे दें। सुरजन मामा इधर बहुत कतर-ब्योंत करने लगे हैं। अपने मकान की छत पक्की बनवा रहे हैं, कहते हैं बरसात में बहुत चूती है, सारा कमरा पानी से भर जाता है। पर इस सबके लिए पैसा कहाँ से आ रहा है? जरूर कोई गड़बड़ है। सुरजन मामा कहते फिर रहे हैं कि उन्होंने अपनी औरत की हसुली गिरवी रख दी है, कहाँ रखी, किसी को पता नहीं। दाल में जरूर कुछ काला है। मगर रामस्वरूप की कान पर जू नहीं रेंग रही, अब भी सुरजन को अपना ही आदमी मान रहे हैं।

दोपहर का खाना खाकर रामस्वरूप पिछवाड़े के कमरे में जाकर लेटे ही थे कि सुरजन मामा बदहवास से जीना चढ़कर रामस्वरूप के सामने आकर खड़े हो गये। ऐसा लगता था कि जैसे भागते हुए चले आ रहे हों इसी से हाँफ रहे थे। मुंह से बोल भी ठीक से नहीं निकलता। लम्बरदार लम्बरदार ही कह पा रहे थे।

रामस्वरूप उठकर बैठ गये, आश्चर्य से सुरजन मामा को ऊपर से नीचे तक देखकर बोले, 'हां हां कहो-कहो क्या बात है। इतना घबराये क्यों हो।'

लम्बरदार वह वह काशी है न बहुत बिगड़ गया है। हम तहसीली वसूली करने पहुंचे तो हमसे उलझ पड़ा। छैनी और चेनी भी आ गये, जगसर भी साथ था। हमने काशी के एक दो हाथ धरे तो हमें जान से मारने आ गये, सो हम चले आये। आप सावधान रहें, वह सब हमारी शिकायत लेके आय रहे हैं। सब सम्हालो, हम जाय रहे हैं।" सुरजन मामा उल्टे परों लौट चले।

"अरे सुनो तो, पूरी बात तो बताओ।' रामस्वरूप ने पुकारा।

"बस बस जो कहना था, कह दिया। हम जाने दो, हम यहाँ रहेंगे तो खून खराबा हो जायेगा।' सुरजन मामा ने मुड़कर पीछे नही देखा, धड़धड़ाते हुए जीना उतरकर तेजी से कदम उठाते आँखो से ओझल हो गये।

खाना खाकर जरा लेट थे सो यह मुसीबत आ गई। जरा दर सोने को भी नही मिलता। जमीदारी साली क्या है, जान की मुसीबत। आने दो साले किसानो को, ऐसी मार लगायेंगे, सात जनम याद रखेंगे। आज सुरजन पर हमला किया है तो कल को हम पर हमला करेंगे। वाला भला, इस तरह तो कर ली जमीदारी। गुस्से से रामस्वरूप फनफना उठे।

एक घण्टे बाद ही छ किसान रामस्वरूप के दरवाजे पर खड़े थे। सबसे आग काशी लाठी के सहारे खड़ा कराह रहा था। उसके हाथ पैरो पर हल्दी चूना पुना हुआ था। माथे पर मैले कपड़े की पट्टी बधी थी जिसमे खून का निशान था। जगेसर का छाडकर सभी किसान अधेड उम्र के थे।

"लम्बरदार लम्बरदार न्याय करो। हमे मामा के जुलम से बचाओ लम्बरदार। सबसे बूढा किसान जोरो से चिल्लाया।

रामस्वरूप पलँग से उठकर खड़े हो गये, चप्पल पहनी हाथ मे छडी ली और फिर शाही शान से दरवाजा खोलकर कमरे से बाहर आये। धीरे धीरे कदम उठात हुए जीना उतरे, फिर बडा दरवाजा खोलकर बाहर आकर किसानो के सामन खड़े हो गये।

"दुहाई सरकार, सुरजन मामा न मार डाला, लाठी स पीटा है काशी को।' सबस ज्यादा उमर के किसान न आगे बढकर हाथ जोडकर कहा।

'मामा ने तुम्हे लाठी मारी, और तुमने क्या किया? तुमने मामा को जान से मारने की धमकी दी।' रामस्वरूप ने दात पीसकर कहा।

'नाही लम्बरदार नाहीं हमने मामा स कुछ नाहीं कहा। सारे किसान एक स्वर म चिल्लाये।

"लगान टाइम से तुम नही दत, तीज त्योहार का नेग नहीं देत। साग-भाजी को कभी नहीं पूछत ऐं और अब आ गये यहा शिकायत लेके। हल्दी चूना पात के यहा रामलीला करत आय हो? अरे हम निकालत हैं

अभी तुम्हारी सारी टेरडी।" रामस्वरूप ने अपने सीधे हाथ में थमी छड़ी से सामने खड़े काशी के कन्धे पर सीधा प्रहार किया। काशी तिलमिला उठा। जोर से चिल्लाया "मर गए लम्बरदार, मर गए।"

किसान रामस्वरूप का विकराल रूप देखकर चार कदम पीछे हटे। रामस्वरूप छड़ी उठाए किसानों को मारने के लिए तेजी से आगे बढ़े तो उनका सीधा पैर धोती में फँस गया। लड़खड़ाकर वहीं गिर पड़े। लम्बरदार को गिरते देखकर किसानों के होश उड़ गए। अब तो लम्बरदार जान से ही मार देंगे। एकदम तेजी से भाग खड़े हुए। काशी भी लाठी टेकता भागने की कोशिश कर रहा था। रामस्वरूप किसी तरह छड़ी टेककर उठे तो उनके सामने कोई नहीं था। हाँ, इस चीख-पुकार को सुनकर बड़ी अम्मा निकल आयीं। सामने के मकान से भी दो आदमी निकल आये। रामस्वरूप को सहारा देकर ऊपर कमरे में लाये। गिरने से सीधे पैर का घुटना फूट गया था। खून छलक आया। बड़ी अम्मा रोने लगी, "हाय भइया तुम काहे नीचे गये, कुछ ऊँच-नीच हो जाती तो हम का करते।"

"तुम हमारे बीच में टाँग न अड़ाओ, जाओ अपना काम देखो।" रामस्वरूप चिल्लाये।

"लम्बरदार गुस्सा न करो आराम से लेट जाओ। दवा लगाये देते हैं, अभी ठीक हो जायेगा। पड़ोस में रहने वाले आदमी ने कहा, फिर बड़ी अम्मा से बोला, "अम्मा, कोई लगाने की दवा घर में है, न हो तो हल्दी चूना ही घोलकर ले आओ, जल्दी करो। घुटना सूज गया है।"

बड़ी अम्मा जल्दी से हल्दी चूना लेने घर के अन्दर चली गयीं। रामस्वरूप पलँग पर लेट गये थे। पर लगता था अकड़ गया हो। बड़ी मुश्किल से सीधा हुआ। शरीर से वैसे ही कमजोर अब इतनी भाग दौड़ ने तो एकदम निढाल कर दिया। जोरों से साँसें लेते हुए हाय हाय करने लगे।

दोपहर की नींद लेने के बाद शंकरलाल अपनी बैठक में तख्त पर बैठे हुक्का गुडगुडा रहे थे। तभी छः किसानों को लिये माधवप्रसाद आँधी की तरह आ धमके। अधेड़ उम्र के किसानों ने शंकरलाल के पैर पकड़ लिये। एक ने अपना सर शंकरलाल के पैरों पर टिका दिया "दुहाई सरकार, हमें

बचा लें। हमारा कोई कसूर नाहीं मालिक।' '

"अरे अरे पैर काहे पकड़ रह हो, बात बताओ, किस्सा क्या है।" शकरलाल ने अपने पर छुड़ाते हुए कहा।

'अरे, यह क्या बतायेंगे किस्सा, हम बतात हैं।' माधवप्रसाद त्रिपाठी न किसाना का हुक्म दिया, 'तुम सब कुएँ पर जाकर बैठो, चाहो तो पानी वानी पियो, सुस्ता लो, हम बुलायें तब आना।"

किसाना क बाहर जात ही माधवप्रसाद शकरलाल के पास ही तख्त पर बैठ गये, "लम्बरदार, तुम इस मारपीट को सुलझाओ, नहीं तो केस बहुत बिगड़ जायेगा।"

"मारपीट किसके साथ हुई किस्सा क्या है, कुछ कहोगे भी।" शकरलाल ने उत्सुकता से पूछा।

"अब क्या कहें लम्बरदार, सारी बदमाशी तो सुरजन मामा की है। खूब लूट रहा है तुम्हारे भइया रामस्वरूप को। पर रामस्वरूप है कि सुरजन मामा को भगवान माने बैठे हैं। बस्ती मे सबको मालूम है सुरजन अपना पुराना मकान तुड़वाय के नया मकान बनवाय रहे हैं, पूछो इसके लिये रुपया कहा से आय रहा है। मँहगाई का जमाना है। तनखवाह से तो दोनो जून की रोटी खीचतान मे चलती है। तब फिर मकान बनवाने के लिए यह छप्पर फाड़ के रुपया की गठरी कहा से गिर पड़ी। अरे सीधी बात है, रामस्वरूप की जमीदारी को लूटे खाय जा रहे हैं सुरजन मामा, पर रामस्वरूप कान मे तेल डाले पड़े हैं।'

"मारपीट किससे हो गई।" शकरलाल तो मूल बात को पकड़ना चाहते थे।

'वही तो बताय रहे हैं।' माधवप्रसाद ने दम लेकर कहना शुरू किया, 'सुरजन मामा ने इधर तहसीली वसूली के नाम पर सीधे लूट मचाई है। काशी से बोले, चुपचाप आम के बाग से मोटी मोटी डालें काट दो, छत की धन्नी के लिए। काशी से मना कर दिया तो मारपीट पर उतर आये। कई डण्डे मार दिये, तब किसाना को भी ताव आ गया, लाठी ले के दौड़ पड़े इनके पीछे। तब सुरजन भागे और जाय के रामस्वरूप को भड़काय दिया। जे किसान रामस्वरूप के पास आ के अपना दुखड़ा रोय, तो राम-

स्वरूप ने आव न देखा ताव, अपनी छडी से काशी का पीट डाला, फिर खुद को सम्हाल नही पाये तो गिर पडे। जे किसान भाग के चौक के पीपल के नीचे बठे रोय रहे थे तो उधर से हम निकले। भीड को देखकर खडे हो गये तो दखा यह तो अपने ही घर का किस्सा है। अब इनमे सबसे छोटा जगेसर तो सीधे थाने चलने को कह रहा था। नई जवानी चढी है, ताव खा रहा है। हमने कहा कि बेटा, थाने वाने न जाओ, वरना थानेदार मुडिया पकड के धरती पे रगड देगा, हाँ। किसी तरह समझाय-बुझाय के लै आये हैं, अब इन्हें सम्हालो। वह ता कहो आज हरनारायण हरदोई गये हैं, नही तो वे भला चूकते, बात का बतगड बनाय देत। गांधी बाबा का जमाना है, पुलिस थाना भी इन किसानो की बात ही सुनता है। देख तो रह हो हर जगह हडताल, हर जगह आन्दोलन हो रहा है। सो अच्छा है इसे यही दबाय दो।"

"हूँ, तो यह सुरजन मामा अपनी औकात पर आ गये।" शकरलाल ने गुस्से से कहा, "ससुरऊ नया मकान बनाय रह हैं, अरे हमने अगर इनका बस्ती मे रहना दूभर न कर दिया ता हमारा नाम शकरलाल नाही, हाँ।" शकरलाल ने तरत पर हाथ पटककर कहा।

"तुम आगे की बात छोडो लम्बरदार, आगे जो करना हो सो करना। अभी ता इस केस का किसी तरह दबाओ।" माधवप्रसाद ने उतावल होकर कहा।

"दबाना क्या, समझो केस दब गया। हमने जब केस को हाथ मे ले लिया तो वह आगे कैसे जा सकता है। शकरलाल ने बडे विश्वास से कहा फिर जोरो से आवाज दी, 'मातादीन मातादीन !

मातादीन सामन आकर खडे हो गये।

"सत्तू घर मे होगा न मातादीन ?" शकरलाल ने पूछा।

'हाँ हा मालिक खूब है। अभी परसो ही तो पिसाया है।"

ठीक है, छ जनो के पानी पीन को हो जाये इतना माड लाओ। गुड जरा अच्छा डाल दना।

आना पाकर मातादीन अन्दर चले गय।

"बुलाओ इन सबको। शकर ने माधवप्रसाद से कहा।

माधवप्रसाद किसानो को बुला लाये। किसान डरते-डरते आकर शंकरलाल के सामने जमीन पर बैठ गये।

"देखो, जो हो गया, सो हो गया। अब तो आगे की सोचो। हमे सच्ची बात बताओ अब क्या चाहते हो?"

"लम्बरदार, हमे सुरजन मामा से बचाओ। हमारे प्राण सूत लिये। रोज रोज इनकी झोली भरत भरत हमारी कमर टूट गई। हम गरीब आदमी, हम कहाँ से रुपया पैसा लायें। अब बोले, लकडी काटकर छन के लिए पहुँचाओ। अब बताओ लम्बरदार हरा भरा पेड हम कैसे काट दें। सो डण्ड मारकर काशी को गिराय दिया। फिर हियाँ आय के लम्बरदार को ऊँच-नीच सिखाई, सो लम्बरदार ने भी पीट दिया। हमारे माईबाप हो लम्बरदार, मारो चाहे रक्खो, पर हमे सुरजन मामा से बचाओ।"

"सुरजन मामा भाग न जाते तो हम उनकी टाँगें तोड देते।" जगेसर ने गुस्से से कहा।

"तुम बीच मे न बोलो, जगेसर।" माधवप्रसाद ने डाटा, "जब तुमसे बडे बोल रहे हैं तो तुम चुप रहो, समझे।"

"हूँ तो अब हमारा फैसला सुन लो।" शंकरलाल ने सिर हिलाकर कहा, "अब गाँव मे तुम सुरजन मामा की सूरत भी नही देखोगे। आज ही से वह नौकरी से बरखास्त किये जाते हैं। और यह भी सुनो, तुम सब हमारी प्रजा हो, तुम्हें जिसने चोट पहुँचाई है वह अब हमारी आखो के आगे नही रह सकता। अब बस्ती मे भी नही टिक सकते मामा। समझो उनका बिस्तर गोल हो गया, हा।"

"जै हो जै हो लम्बरदार।" अधेड उमर के किसानो ने हाथ जोडकर माथे से लगाकर सर झुकाया, बहुत बडी जीत हो गई। सुरजन मामा को निकाल दिया गया। अब और क्या चाहिए!

"देखो, रामस्वरूप हमारे छोटे भाई हैं। हम उन्हे समझाय रहे है। अभी हम जा रहे हैं उनके पास, समझे। और हाँ, रामस्वरूप तुम्हारे मालिक हैं, उनसे ज्यादा बोलना ठीक नही।"

"लम्बरदार, हम सब कुछ नही बोले, हम तो बस सुरजन मामा से बोले थे।"

"ठीक है ठीक है" शंकरलाल ने हाथ के इशारे से उन्हें समझाया, फिर सहसा उन्हें मातादीन की याद आ गई, "अरे मातादीन मर गये क्या।"

"आय गये मालिक आय गये।" मातादीन परात में गुंधा हुआ सत्तू लेकर हाजिर हो गये।

"का आये गये आय गये लगाई जरा सा काम तुमसे टाइम से नहीं होता," शंकरलाल ने मातादीन को डाँटा, फिर किसानों से बोले, "तुम लोग सत्तू खाय के पानी पियो हम अभी भइया से बात करके आते हैं।"

किसान मुंह बाये शंकरलाल की ओर देखते रह गये। उनकी सत्तू लेने की हिम्मत नहीं हो रही थी।

"अरे देखत का, खाओ सत्तू हम अभी आय रहे हैं।" शंकरलाल ने जोर देकर कहा।

हड़बड़ाय के आगे खड़े किसान ने खाली कनस्तर गुंथा हुआ सत्तू पोटली में डलवा लिया। किसान फिर से कुएँ की मेड़ पर आकर बैठ गये। सबने सत्तू आपस में बांट लिया और अब वह गोले बनाकर मुंह में रख रहे थे।

शंकरलाल ने खड़ाऊ पहने, माधवप्रसाद को साथ लिया और रामस्वरूप के घर की तरफ चल दिये।

रामस्वरूप पलँग पर पड़े हाय हाय कर रहे थे। बड़ी अम्मा ने घुटने पर हल्दी चूना पोत दिया था। अँगीठी में चार कोयले डालकर सुलगा लायी थी अब कपड़े की पोटली बनाकर सिकाई करने लगी। पास में रामस्वरूप की बहू खड़ी थी। शंकरलाल को देखा तो थोड़ा सा घूंघट निकाल लिया। पलँग के पास ही मोढ़े पर सामने के मकान का पड़ोसी बैठा हुआ था।

"अरे जे का हुआ?" शंकरलाल ने घुटने को छूते हुए कहा, "यह तो बहुत चोट खा गये।"

"बड़कऊ, इन्हें सम्हालो, बहुत चोट खाय गये है।" बड़ी अम्मा सुबक सुबककर रोने लगी।

"तुम चुप करो, जाओ यहा से, हम ठीक हैं।" रामस्वरूप चिल्लाये, "साले अब दिखाई दें तो सबको गोली से भून देंगे। दुनाली बन्दूक है हमारे पास, एक एक को खतम कर देंगे।" रामस्वरूप लेटे लेटे ताव खा रहे थे।

रामस्वरूप की बहू ने पास पडी खाट बिछा दी। शकरलाल के साथ माधवप्रसाद भी खाट पर बैठ गये। शकरलाल चुप थे, लेकिन उनकी आखें बता रही थी कि उन्हे गुस्सा आ रहा था 'जे चोट उन सबने तो नही पहुचाई?" शकरलाल ने माधवप्रसाद से पूछा।

"नही नही बात कुछ और है' मूढे पर बैठे पडोसी ने कहा, "हम बताते हैं आपको सारी बात। हम सामने अपने कमरे म खडे खिडकी से सब देख रहे थे। यह लम्बरदार आगे बढे, तो धोती मे पैर उलझ गया, इसी से गिर पडे। किसान तो पहले ही भाग गये थे।"

'भाग न जाते तो हम उन्हे देख लेते, और अब हम उन्हे छाडेंगे नही हाय," रामस्वरूप जोरो से कराह उठे।

"अब तुम गुस्सा थूक दो भइया, और काम की बात सुनो।' शकरलाल ने जेब से कची सिगरेट का डिब्बी निकाली एक सिगरेट मुह से लगाकर सुलगाई फिर जोर का कश लेके बोले, सारी कारस्तानी सुरजन की है। यह घुन की तरह तुम्हे खाय रहा है समझे। तुम तो हो भोले-भण्डारी जो लाय के दे दिया सो तुम ने लिया। तुम्हे का मालूम सारी जमीदारी तुम्हारी लूट के खाय गया। इन किसाना से कहा, आम के पेड से छन के लिए लकडी काट दो जब इन सबने मना किया तो मारपीट की। तुम ऐसे, कि बात समझी नाही, बस सुरजन के कहे मे आकर पिल पडे लट्ठ लेके किसानो पर। अरे किसान तुम्हारी रियाया है, चाहे रखो, चाहे मार डालो, पर सुरजन कौन होता है मारपीट करने वाला।'

"हा भइया, यह तो हम भी कहेंगे। तुमने इस सुरजन को बहुत ही ढील दी है। इतनी ढील देना ठीक नही। भला बताओ आम फल देने वाला वृक्ष है, कही उसकी लकडी से छन डलवाई जाती है?" माधवप्रसाद त्रिपाठी ने प्रश्न किया, "और जरा यह भी तो पूछो, यह मकान बनवाने के लिये पैसा कहाँ से आ रहा है।'

"उसने अपनी औरत की सोने की हसुली बेच दी, उसी से मकान बन रहा है।" रामस्वरूप ने कहा।

"झूठा एकदम झूठा।" माधवप्रसाद जोरों से बोले, "उसके बाप ने भी कभी सोने की हसुली देखी थी। जब आया था तो तन पे कपड़ा नहीं था। तुम्हारी जमीदारी को लूट लूटकर मुटाय गया। ऊपर से फौजदारी अलग कर दी। शान्ति से सोचा, अगर इस मारपीट के बीच में पुलिस थाना आ जाये तो क्या हो? सौ-पचास तो थानेदार वैसे ही ऐंठ ले जाएगा।"

रामस्वरूप ने हाय हाय करना एकदम बन्द कर दिया। वह गहरे सोच में पड़ गये।

'हमारा कहा मानो तो अब इस सुरजन मामा का तुरन्त हिसाब कर दो, समझे।" माधवप्रसाद त्रिपाठी ने समझाया।

"फिर जमीदारी का काम कौन करेगा? रोज-रोज गाँव-गाँव कौन जायेगा?" रामस्वरूप ने कहा।

"तुम उसकी चिन्ता न करो। शेर खाँ के पास आजकल एक आदमी है, करीमुद्दीन, उसे काम पर लगा दो। सुरजन को जो तनख्वाह देते हो वह उसे दो, बस। शेर खा की जुम्मेदारी है।" शंकरलाल ने एक मिनट में फैसला कर दिया।

रामस्वरूप ने कुछ नहीं कहा। वह भी क्या सकते हैं। जो बड़कऊ कहेंगे वही होगा। उनकी बात टाली नहीं जा सकती।

'बड़ी अम्मा, इन्हें गरम दूध में हल्दी डाल के पिलाओ। चोट को आराम आ जायेगा। ज्यादा चलो फिरो मत। गइया दूध तो ठीक से दे रही है न।' शंकरलाल ने पूछा।

"का दें रही है सेर से भी कम निकलता है।' बड़ी अम्मा ने रुवांसे स्वर में कहा।

शंकरलाल ने कुछ सोचा, फिर बोले, "कोई बात नहीं, दो महीने बाद ब्याय जायेगी तब सब ठीक हो जायेगा। हम चैंती से कहे देते हैं, उनकी गइया पिछले महीने ब्याई है, सो इस गइया को अभी साथ लिये जायेगा, और अपनी गइया पहुंचा जायेगा। उसका काम तो चल जायेगा, पर भइया को तीन चार टाइम दूध चाहिए। अगले महीने कोई दूसरी गइया

मिल गई तो इसे वापस कर देंगे।" शंकरलाल उठकर खड़े हो गये।

'माधवप्रसाद, तुम उन छओ को यहाँ लाओ और भइया के पैर छुवाय के माफी मंगवाओ, समझे। हम जरा पुजारी जी के पास जाय रहे हैं।"

शंकरलाल के हुकुम के मुताबिक छहो किसानो ने आकर रामस्वरूप के पैर छूकर माफी माँगी। वापस गाँव जाते हुए उनके साथ रामस्वरूप की गाय भी चल रही थी। सुबह उठते ही चैती को अपनी चार सेर दूध देने वाली गाय को लाकर लम्बरदार के खूटे से बाँधना होगा।

शंकरलाल ने ठीक कहा था। पानी म रहकर मगरमच्छ से बैर करना ठीक नही। अगले दिन ही रात होते ही सुरजन मामा के घर पर पत्थरो की बौछार होने लगी। दस मिनट मे ही आँगन मे पत्थरो का ढेर लग गया। पीछे का खपरैला भी टूट फूट गया। किसी तरह चिल्लाते घर से बाहर निकले ता देखा गली मे दो चार आदमी भागते हुए अँधेरे मे लोप हो गये। आस पडोस के आदमी घरो से बाहर निकले, पर रात का थाना-कचहरी जाना ठीक नही, कहकर फिर अपने-अपने घरो म घुस गये। सुबह होत ही सुरजन मामा रपट लिखाने थाने पहुचे तो थानेदार ने डाँट-फटकारकर दस रुपया धराय लिया, रात को पहरेदारी के नाम पर। पर पहरेदारी एक तरफ धरी रह गई, आधी रात को फिर ईंट-रोडा की वर्षा होने लगी। सुबह फिर जब थाने पहुचे तो गालियों से स्वागत हुआ। सात पुश्त को याद करते हुए थानेदार ने साबित कर दिया कि सुरजन मामा ही चोर, बदमाश हैं, झूठी रपट लिखाने आ जाता है।

चौबीस घण्टे भी नही बीते कि पिछवाडे रखी लकडी म किसी ने आग लगा दी। वह तो कहो वक्त से देख लिया, नही तो सारा घर ही जलकर स्वाहा हो जाता। राम ' राम किससे कहें अपना दुख। लम्बरदार की नौकरी थी तो पूरी बस्ती मे इज्जत थी, बढ-चढकर बात करते थे, अब तो सभी को मालूम हो गया, नौकरी से निकाल दिये गये हैं। अब तो रोजी-रोटी का भी जुगाड करना है, साथ ही बदमाशो से भी

निपटना है, राम ही भली करें।

सामने से आ रही तेज साइकिल से टक्कर हो गई। मुह के बल जमीन पर गिर पड़े सुरजन मामा। उस पर दस गालियाँ सुनने को मिली सो अलग। कुछ कहना चाहा तो उल्टे साइकिल सवार लडने मरने का तयार हो गये। साइकिल पर डबलिंग जुम है, पर इस बस्ती म सब चलता है। लोग जुम भी करते हैं और शाहकार भी बनते हैं। सुरजन मामा को याद आया, साइकिल पर सवार दोना लफगा को उन्होंने शकरलाल के जुए के अडडे पर दखा है, तब क्या यह सब शकरलाल के कहने पर हो रहा है।

सुरजन मामा न माधवप्रसाद त्रिपाठी के घर पर जाकर धरना दे दिया, "पण्डित जी हमे बचाओ हम बाल-बच्चेदार आदमी हैं, शकरलाल हम मारे डाल रहे हैं।"

माधवप्रसाद त्रिपाठी ने अपनी दाढी पर हाथ फेरते हुए कुछ सोचा, फिर समझाते हुए बोले, "देखो भइया, बडे आदमियो की बडी बातें। वे लोग जमीदार आदमी हैं, जो भी करें उनके लिए सब ठीक है। उन्हे तो सात खून भी माफ हैं। पर तुम अगर जोर से साँस भी लोगे तो तुम्हारा गला टीप दिया जायेगा, का समझे। कल तक तुम उनके कारिदे थे तो सब ठीक था, पर आज तो हाथ झाडे सडक पर खडे हो। अब अपना भला बुरा सोच लो।"

"तो पण्डित जी हम करें का। कहाँ जाये।"

"जहाँ सीग समाये वही चले जाओ।" माधवप्रसाद ने साफ कहा, "यहाँ तो तुम्हारी अदा-बदी की बात हो गई। अब तो कुछ दिना के लिए बस्ती स दूर हो जाओ तभी काम चलेगा। तीरथ कर आओ, रिश्तेदारी मे जाओ, नही तो आसपास काम खोज लो, पर बस्ती छोड दो। हम तुम्हारे भले के लिये कह रहे हैं, आगे तुम्हारी मर्जी।'

ठीक कह रहे हैं माधवप्रसाद। जमीदारो से बिगाडकर बस्ती मे नहीं रहा जा सकता। आनन फानन मे सारी तैयारी कर ली। घर म ताला लगाकर सुरजन मामा निकल पडे परदेस का। इसे कहते हैं भाग्य का चक्कर। जब बुरे दिन आते हैं तो घर-बार सब छोडना पडता है। राजा रामचन्द्र जी के साथ भी ऐसा ही हुआ था हरे राम हरे कृष्ण।

नई बहू के मायके से खबर आई है। लड़का हुआ है हरनारायण के। बड़ी अम्मा एकदम खिल पड़ी। हरनारायण से बोलीं, "बहू को बुलाय लाओ। पोता खिलाय लें।"

हरनारायण के तन-बदन मे आग लग गई। एक खर्चा और आ पड़ा। बुढ़िया अलग से टर टर कर रही है। पोता खिलाउन की पड़ी है। औरत हमारी मायके मे है, बुढ़िया ने एक दिन रोटी को तो पूछा नही, अब पोता खिलाउन चली। हमको सब मालूम है, जे शकरलाल की तरफ से बोल रही है बुढ़िया।

जवाब दिये बिना हरनारायण मन्दिर मे चले गये। बड़ी अम्मा अपना-सा मुह लिये रह गईं। दूसरे दिन हरनारायण बगल मे बिस्तर दबाकर अपनी ससुराल चल दिये। चार दिन बाद लौटे तो कह दिया, "जच्चा-बच्चा बहुत कमजोर हैं, अभी वही रहेंगे।"

सुबह की गाड़ी से श्रीप्रकाश आ गए। साथ मे विजय भी है। शकरलाल ने श्रीप्रकाश को देखा तो खुशी मे फूल उठे। "आखिर चाचा की याद आ ही गई। कब से बुलाय रहे हैं, अब आये।" शकरलाल ने उलाहना देते हुए कहा।

"क्या कहें चाचा जी, पढाई छोडकर कसे आते। आखरी साल है, अच्छे नम्बर लाने हैं।"

"सो तो ठीक है।" गव से शकरलाल की छाती और फूल गई। नाम रोशन करेगा मारे खानदान का। पर जब तक इसकी गृहस्थी नहो बस जाती तब तक चैन नही आयेगा, "तुम्हारी अम्मा कब आ रही हैं, उन्ने गुरु मत्र क्या लिया, सारी जुम्मेदारी से छुट्टी पाय ली। इधर तो झाकने भी नहीं आती।'

'हमने चिट्ठी लिख दी है, दो तीन दिन मे आ रही हैं। फिर हम सब साथ बनारस चलेंगे। आप भी हमारे साथ चलना।"

"अरे भइया, अब हम कहा जायेंगे, बस यही पड़े हैं, यही दिन कट

जायेंगे।" शकरलाल ने लाचारी प्रगट की।

"बस हो गई न वही बात।" श्रीप्रकाश ने मुह बनाया, "जब भी कहो, इसी तरह टाल देत हैं। हम तो इस बार साथ लेके जायेंगे, देखें कसे नही चलते हो।"

शकरलाल को हँसी आ गई, "तुम शादी ब्याह करो, बहू ले आओ, फिर देखो हम सारी जिन्दगी तुम्हारे यहाँ ही पडे रहेंगे।"

"यह बहाना तो आप कई बार कर चुके, अब यह सब हम नही सुनेंगे। अम्मा को आने दो, इस बार फैसला करके रहेंगे।" श्रीप्रकाश गुस्सा दिखाते उठकर चल दिये।

दोपहर को ठीक से नीद नही आई शकरलाल को। दस चिन्तायें घेरे रहती हैं। इस समय तो सबसे बडी चिन्ता रुपयो की है। पता नही क्या हो गया है, हाथ मे रुपया रुकता ही नही। पहले जुए मे नाल इतनी निकल आती थी कि कोई कमी नही रहती थी, पर अब तो बहुत गिरावट आ गई। खेलने वाले भी बहुत कम आ रहे हैं। साला नत्थूसिंह भी पूरी तरह भाग-दौड नही करता। आस-पास के गाँवो से आदमी जुआ खेलने जब तक नही आयेंगे तब तक अच्छी आमदनी नही होगी। आज रात को खुद देखेंगे शकरलाल। कही कुछ गडबड है, तभी तो पूरी नाल नही मिलती। श्रीप्रकाश वापस जायेंगे तो उन्हें कुछ रुपया देना होगा, और अगर श्रीप्रकाश की माँ आ गईं तो फिर दस-बीस उनके हाथ मे भी रखना होगा।

हुक्का कुछ मध्यम पड गया था, शकरलाल ने जरा दम लगाकर हुक्के को गुडगुडाया। चिलम मे लाली आ गई। सामने से विजय आता दिखाई दिया। शकरलाल खुश हो गये, चलो कोई बात करने वाला मिला। अकेले तो एक मिनट को भी नही बैठा जाता।

विजय को अपने पास ही तख्त पर बैठा लिया शकरलाल ने, फिर प्यार से पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले, 'देखो बेटा, इस साल खूब मेहनत

करना। दस्वाँ पास नहीं करोगे तो कैसे काम चलेगा। पिछले दो साल तो निकल गये।"

विजय ने सर झुका लिया। क्या कहे। दस्वाँ तो वह भी पास करना चाहता है, लेकिन सगुरी अँग्रेजी पास होने दे तब न। अँग्रेजी और हिसाब के पर्चे ही बिगड जाते हैं। ऐसा कोई मास्टर भी नहीं मिलता जो पैसा ले के थाडी बहुत नक्ल करा दे।

"तुम्हारे घर से स्कूल कितनी दूर है ?" शकरलाल ने पूछा।

"पास मे ही है, पैदल चले जाते हैं।" विजय ने जवाब दिया।

दो चार पढाई की बातें और पूछी शकरलाल ने, फिर हुक्का गुड-गुडाने लगे। इस बीच उनका दिमाग तेजी से काम कर रहा था। श्रीप्रकाश के मन की बात विजय से मालूम हो सकती है। साथ रहता है, कुछ तो जानता ही होगा। पहले इधर-उधर की बात की, फिर असली बात पर आ गये।

'जे श्रीप्रकाश शादी नही करता, जब भी कहो टाल जाता है। अरे हम कहते हैं अपनी पसन्द की लडकी बता दो तो वह भी नही बताता। तुम तो साथ रहते हो, कुछ मालूम होगा। सुनते हैं, बरेली मे कोई नीता नाम की लडकी है उसी के लिए यह धूनी रमाए बैठे हैं।"

विजय ने सर नीचा कर लिया, क्या कहे। चाचा के सामने बाला नही जाता, वैसे जानता तो सब कुछ है।

"बोलो बोलो हमें कुछ बताओगे नही तो कैसे काम चलेगा ?"

विजय ने धीरे धीरे बोलना शुरू किया, 'बडे भइया ने कई फोटो भी उतार रखी हैं उनकी। हर दूसरे-तीसरे महीने जाते हैं बरेली। उनकी फोटो लिए घण्टो बठे रहते हैं। कभी कभी रात को छत पर बैठे चाद का देखते रहते है।"

"ऐं यह बात तो ठीक नही है, यह अन्दर-अन्दर गम पी रहे हैं श्रीप्रकाश।" शकरलाल के माथे पर बल पड गये, चिन्ता मे डूब गए। फिर अपने सर पर हाथ फेरते हुए बाले, "उस लडकी से कुछ शादी-ब्याह की बात भी करते थे क्या ?"

'हाँ, अपने एक दोस्त से कह रहे थे कि शादी नही हो सकती। उसकी

जात ऊँची है, वह ब्राह्मण है। लड़की का बाप भी बड़ा कठोर है। वह शादी नहीं होने देगा।

'हूँ' शंकरलाल ने हुँकार भरी। दो क्षण के लिए वह कुछ सोचते रहे, फिर हुमक के बोले, "क्या, ऐसा न करें, यहाँ से दस बीस लठैत ले चलें। उठाय लायें लड़की को, यहाँ मंदिर में लाय के फेरे डाल दें।"

"चाचा जी, यह बातें बन्द कीजिए। अच्छा नहीं लगता है।" अचानक श्रीप्रकाश पीछे वाले कमरे से आकर चिल्लाकर बोले। उनके हाथों की मुट्ठियाँ गुस्से से भिंची हुई थीं, और आँखों में लाल डोरे उभर आए थे। एक क्षण के लिए वह काँपते कमरे में खड़े रहे, फिर तेजी से बाहर चले गए।

शंकरलाल और विजय हक्के-बक्के रह गए। हालांकि तूफान गुजर गया था, लेकिन दोनों को लगा जैसे तूफान के आने के बाद कमरा अभी भी हिल रहा है। चोरी करने के बाद रँगे हाथों पकड़े जाने पर जो पछतावा चोर के मन में होता है, कुछ ऐसा ही पछतावा दोनों के अन्दर उभर आया था।

"श्रीप्रकाश अन्दर के कमरे में आकर कब बैठ गए, कुछ पता ही नहीं चला।" शंकरलाल ने दबी जबान से कहा।

विजय क्या जवाब दे, समझ में नहीं आ रहा। उसकी तो घिग्घी ही बँध गई। बड़े भइया का स्वभाव जानता है। जब खुश हो जाएँ तो लड्डुओं से मुँह भर देंगे, पर जब नाराज़ होंगे तो बस आगे सोचने से भी झुरझुरी आती है। बगैर कुछ बोले विजय उठकर खड़ा हो गया, फिर चुपचाप बाहर चला गया। शंकरलाल भी खामोश होकर हुक्का पीने लगे, दिल कुछ खट्टा-सा हो गया था।

'हे प्रभु तेरी माया, कहीं धूप कहीं छाया', शंकरलाल ने जमुहाई लेकर पुराने वाक्य को फिर से दोहराया। वाकई में धूप छाँह का खेल ही

शकरलाल के जीवन मे उतर आया था। दो-ढाई साल के अन्दर ही क्या से क्या हो गया। देश आजाद हो गया, जमीन्दारी खतम हो गई, शरणार्थियो ने धाकर बस्ती को घिचपिच कर दिया। मन्दिर का गाव भी सरकार ने छीन लिया, उसकी एवज म कुछ सौ रुपयों की वार्षिक सहायता बाँध दी। सारे पुराने अफसर दूर दराज म झोक दिए, उनकी जगह नए नए अफसर आ गए। इनम भी कुछ तो शेडयूल्ड कास्ट के नाम पर भगी-चमार घुस आए, जो हर समय स्वण जाति के लोगो से अपने पुरखो पर किए अत्याचार का मूल सूद सहित बदला चुकाना चाहते हैं। शकरलाल ने तो अपनी जमीदारी पहले ही बेच खाई, पर जिनके पास जमीदारी थी उन्हे दस बीस साल के बाण्ड पकडाकर सरकार ने उनकी जमीन भी खोस ली। जिन्होने जल्दी जल्दी कुछ जमीन खुद काश्त करने के नाम पर झपट ली, उनके घर मे तो फिर भी चूल्हा दोनो वखत जल रहा है, लेकिन जो खुद खेती करने के नाम पर कुछ भी जमीन न पा सके उनके होश ठिकाने आ गए। हरनारायण तो पहले से ही खुद खेती करते आ रहे थे, सो उनके पास तो खूब जमीन बच रही, लेकिन रामस्वरूप भाग दौड करने के बाद भी थोडे से बीघा जमीन पा सके। इसे भी बटाई पर देना पडा, क्योकि खुद तो हल चला नही सकते। इससे जो नाज मिलता उसमे से कुछ तो बेच लेते हैं और बाकी खाने के लिए रख लेते। फिर भी सुबह शाम भविष्य की चिन्ता सताती रहती, क्या करें क्या न करें, कुछ समझ मे नही आता। खाली बैठे-बठे बिजनेस करने की योजना बनाते रहते लेकिन हो कुछ नही पाता।

पहले खाना पकाने वाली महाराजिन हटा दी गई, फिर घर का काम करने वाला नौकर भी निकाल दिया। बस बतन माजने वाली महरी बाकी रह गई। वह भी कब तक है, पता नही। जब आमदनी ही नही रही तो नौकर चाकर कहाँ से बने रहेंगे।

सबसे ज्यादा तो मुसीबत आ गई खुद रामस्वरूप की। बाहर के जरा से काम के लिए भी दूसरा का मुह देखना पडता। सबसे बडी समस्या थी सब्जी लाने की। जब तक मन्दिर मे पुजारी थे तब तक पुजारी जी से सब्जी मँगा लेते थे, अब इधर हरनारायण ने पुजारी को पूरी तनख्वाह देने

से मना कर दिया तो पुजारी जी ने नौकरी छोड़ दी। जब पेट नहीं भरेगा तो मन्दिर में रहने से क्या लाभ। पुजारी जी ने अपना झोला-डण्डा उठाया और भगवान को प्रणाम करके चले गए। अब सुबह शाम हर नारायण ही भगवान की आरती उतारकर प्रसाद बाँट देते हैं। अरे ओम जै जगदीश हरे की आरती गाते हुए जरा देर के लिए घण्टी टन टनानी है, इसके लिए किसी की धौंस क्या सहें। खुद ही कर लेंगे सब। जब तक कोई दूसरा सस्ता-सा पुजारी नहीं मिलता, ऐसे ही पूजा होती रहेगी। जरा भगवान को भी पता चले, कैसा अन्धेर मचा है। पूरा गाँव छीन के मुट्ठी भर रुपयों की वार्षिक सहायता बाँध दी सरकार ने। घोर कलयुग आ गया है।

कई-कई दिन तक मन्दिर में झाड़ू भी नहीं लगती। हरनारायण इधर उधर से गरीब लड़कों को पकड़ लाते। लड़कों के लिए मन्दिर में झाड़ू लगाना भी एक खेल था। हँसी ठिठोली के बीच दो चार झाड़ू के हाथ मारते, बस लग जाती झाड़ू। इसके एवज में आना-दो आना मजूरी पा जाते, साथ ही प्रसाद के रूप में दो-दो बताशे अलग से।

अब दूसरे-तीसरे दिन सुबह के टाइम मन्दिर के बाहर रामस्वरूप को झोला लिये बैठे देखा जा सकता था। आस लगाये बैठे रहते कि कोई परिचित निकले तो उस झोला और पैसे देकर सब्जी या दूसरा कोई छोटा-मोटा सामान मँगवा लें। बड़ी अम्मा ने डरते-डरते एक दिन कह दिया, "भइया, जब भाग में बुरे दिन लिखे हैं तो शरम-हया काहे की। दूसरों से कब तक मगाओगे खुद लाओगे तो दो पैसा बचेंगे।"

'हमसे बाजार नहीं जाया जाएगा।" रामस्वरूप बमक पड़े, "हमने कभी दहरी के बाहर पैर निकाला है जो आज बाजार के चक्कर लगाएँ। हमसे नहीं होगा यह सब। बुलाय लो अपने पोता को। सम्हालें अपना घर द्वार।'

लेकिन विजय ने तो एकदम विद्रोह कर दिया। 'नहीं रहेगा शेखूपुरा में। कस्बे में रहकर क्या उसे अपनी जिन्दगी खराब करनी है? न यहाँ सिनेमा है, न घूमने को अच्छा बाजार। बातचीत के लिए चार पढ़े लिखे दोस्त चाहिए, सो भी यहाँ नहीं। वह तो बनारस में ही रहेगा। वहीं कोई नौकरी

करेगा।"

"तीन साल से तो इण्टर मे फेल हो रहे हो, नौकरी क्या करोगे खाक।" रामस्वरूप चिल्लाए, "हमारे पास अब पैसा नही है तुम्हें भेजने को, अपना इन्तजाम कर लो।"

"ठीक है, नहीं मँगाएगा बाप से पैसा। कोई छोटी-मोटी नौकरी ढूढ लेगा, पर इस कस्बे मे नही रहेगा।" विजय ने अपनी अटची उठाई और वापस बनारस को चल दिया। दादी ने पच्चीस रुपया छिपाय के विजय की जेब मे रख दिया। एक महीने के लिए इतना रुपया काफी है, आगे फिर देखा जाएगा।

लडकी बडी हो रही है, आज नही तो कल उसकी शादी करनी होगी। चिन्ता मे रामस्वरूप की कमर कुछ और झुक गई। जीवन मे कुछ किया नही, बैठे बठे जमीदारी से खाया। जब जमीदारी छिन गई है तो हाथ पैर हिलाना ही होगा। बस्ती के ही एक आदमी को ढूढा। साझे में चक्की लगा ली। कम से कम दानो टाइम घर के खाने का आटा ही निकल आयेगा।

सुबह आठ बजे से पहले ही नाश्ता करके रामस्वरूप चक्की पर चले जाते। फिर दिन के दो बजे लौटकर खाना खाते। एक घण्टे किसी तरह कमर सीधी करते फिर चक्की पर जाने की जल्दी पड जाती। लौटना होता कही रात के आठ नौ बजे। शरीर एकदम टूट जाता। इस उमर मे मेहनत नही होती, पर क्या करें, सब कुछ सहना होगा।

सोमदत्त आय घूमते फिरते एक दिन के लिए शेखूपुरा भी आ गए। दोपहर भोजन करके आराम कर रहे थे तो देखा चिलचिलाती धूप मे दो बजे रामस्वरूप चक्की से गिरते-पडते चले आ रहे ह। थोडा हँसे, फिर गला खँखारकर बोले, "अब तो भइया लम्बरदार लोग भी लाला लोगन की तरह दो बजे भोजन करने लगे हैं।"

रामस्वरूप ने सुना तो तीर की तरह दिल मे बात चुभ गई। क्या करें, बहनोई का रिश्ता आडे आ गया है, नही तो बताते लालाजी का। चूल्हे की लकडी उठाकर मुँह थोस देते। सब वखत की बात है किसे पता था जमीदारी चली जाएगी, नही तो थोडी बहुत जमीन और अपनी काश्त

मे दवा लेते तो आज मजे से बैठे-बैठे खाते। बाप-दादा एसे थे कि बस्ती म दसियों गरीब रिश्तेदारों को तो मकान और दुकानें दिला दी, पर अपने लिए वही डेढ इंट का घर बनाये रखा। सब करमों की बात है। करम खोटे न होते तो क्या विजय एसा निकलता। सोचा था डाक्टर बनकर बस्ती मे नाम कमायगा। पर वह तो तीन साल से इण्टर भी पास नही कर पाया। बस्ती में रहने को भी तैयार नही। जब देखो रुपया चाहिए रुपया चाहिए कहाँ से मिले रुपया। रुपया क्या पेड़ पर उगता है। इस बार आएगा तो दो टूक फैसला कर लेंगे। साथ रहकर खेती-बाड़ी देखनी हो तो रहो, नहीं तो अपना रास्ता नापो।

-

आँगन के कोने मे राख का ढेर लगा हुआ है। इसी जगह दो चार कोयले और जलाकर चिलम ताजी कर ली जाती है। घर म कई दिन से झाड़ू भी नही लगी। कौन लगाये झाड़ू, नौकर तो सब एक एक करके भाग गए, बस बच गए हैं, नत्थूसिंह। वह भी इसलिए साथ चिपके हुए हैं, क्योकि उन्हे रात को जुआ खिलाने के एवज म अब नाल मे से बँधी-टकी रकम मिलने लगी है। इसी से वह अपनी गृहस्थी चलाते हैं। और हरिया इसलिए टिका हुआ है क्योंकि शंकरलाल को छोड़ते नही बनता। बचपन से यहीं पला है। फिर साथ ही शंकरलाल जब तब दो पैसे भी दे ही देते हैं। ठेला भी शंकरलाल ने ले दिया, लाइसेंस भी दिला दिया। ठेले पर छोटा-मोटा खाने पीने का सामान लगाकर दिन भर बस्ती मे बेचो और पट भरो। सुबह शाम शंकरलाल का थोडा बहुत काम कर दो। रात को जुआ होता है तो उसम भी कुछ काम पड़ता है। जुआरियो की फरमाइश पूरी करो तो इकन्नी-दुअन्नी मिल ही जाती है। सो इसी तरह मिल बाँटकर काम चला लो। सब समय की बलिहारी है।

शंकरलाल के लिए अब वक्त काटना और भी मुश्किल हो गया। बैठक म बैठे हुक्का गुड़गुड़ाते रहते। इक्का-दुक्का लोग आते और अपना रोना रोकर चले जाते। किसी को इतनी फुर्सत नहीं कि बैठकर शांति से

दो बातें कर सके। सुबह शाम शतरंज जरूर जमनी, बाकी दिन काटे नहीं कटता। माधवप्रसाद त्रिपाठी जब एक सप्ताह तक नही आए तो शकर लाल ने उन्हें बुला भेजा। आते ही अपना रोना लेकर बैठ गए, "क्या कहे लम्बरदार, नई हकूमत क्या आई आफत आ गई। शिक्षा के नाम पर नई-नई योजनाएँ थोप रहे हैं। ऐसे नही, ऐसे पढाओ। अरे पढाएँ किसे, कोई साला पढना चाहे तब न। लडका लोग एकदम उद्दण्ड हो गए, कुछ बोला तो आँख दिखाते हैं। जरा भी किसी छात्र को सजा नही दे सकते। बेंत प्रहार एकदम बन्द। बोलो भला कही ऐसे पढाई हो सकती है। तुलसीदास जो कह गए हैं, 'भय बिन होये न प्रीत'। बगैर डण्डे के शिक्षा नही दी जा सकती।"

शकरलाल को माधवप्रसाद की बातो मे कोई दिलचस्पी नही थी, फिर भी हाँ, हाँ, किए जा रहे थे। दूसरा कोई समय होता तो वह डाँटकर माधवप्रसाद को चुप करा देते। साफ कह देते, क्या अपना पचडा लेके बैठ गए, बन्द करो यह सब, आओ हो जाए एक एक शतरंज की बाजी। पर अब कुछ नही बोले। माधवप्रसाद अपना रोना रोते रहे और वह सुनते रहे। गुस्सा और अकड अब भी उनके अन्दर पहले ही की तरह है लेकिन अब वह पहले की तरह फट नही पडते। बल्कि अन्दर-ही-अन्दर उबाल खाते रहते। जब नही रहा जाता तभी फूटते। यो थोडा-बहुत दूसरा को झेलना भी सीख गए। जैसे जुआ खेलते हुए अब वह यह नही देखते कि सामने कौन आदमी बैठा है। अब उन्हें बस जुए मे निकलने वाली नाल से मतलब था। इसलिए जुए मे आने की सभी को छूट मिल गई। वैसे भी बस्ती के पुराने रईस मर खप गए। जमीदारी जाने से आस-पास के खाते पीते छोटे जमीदार भी समाप्त हो गए। अब तो पैसा उनके पास आ गया जिनके लिए खानदान और इज्जत कोई माने नही रखती। पैसा आया है शराब और जुआ खेलेंगे ही। जुए के लिए सबसे ज्यादा सुरक्षित स्थान शकरलाल का मकान है। आढती, पसारी, तमोली, हलवाई से लेकर छोटी मोटी फेरी लगाने वाले तक जुआ खेलने आने लगे। आओ भाइयो आओ खूब आओ। नत्थूसिंह बस्ती मे घूम घूमकर जुआ खेलने के लिए उन सबको उत्साहित करने लगे, जिनकी जेब मे पैसा दिखाई दे

जाता। नत्थूसिंह के लिए तो यह एक प्रकार से व्यापार था, जितने ज्यादा लोग आएँगे, उतनी ज्यादा माल निकलेगी, और उतना ही ज्यादा उन्हें हिस्सा मिलेगा।

नत्थूसिंह की चाल म भी अब अकड आ गई थी। सीना तान के चलते शकरलाल के सामने कुर्सी पडी हो, तो कुर्सी पर बैठ जाते, नही तो खाट खीचकर बैठ जाते। कभी-कभी तो शकरलाल को ऊँच नीच भी समझाते। शकरलाल अब धीरे धीरे इस सबके आदी होते जा रहे थे। हाँ, जब कोई सीधे उनसे टकराता, या उन पर चोट करता तो वह खूखार हो जाते। नसो मे सोया हुआ पुराना जमीदाराना खून जाग उठता, वह मरने-मारने पर उतर आते। चीजो को थोडा बहुत दखा-अनदेखा करने लगे थे, मगर मूछ नीची नही कर सकते।

सुबह का नाश्ता करके शकरलाल अपनी बैठक मे बैठे हुक्का गुडगुडा रहे थे। रात जुए मे अच्छी आमदनी हुई, इसलिए प्रसन्न थे। मन ही मन कुछ सोच रहे थे कि देखा नत्थूसिंह घबराये हुए आकर कुर्सी पर धप से बैठ गये। उनके होश उडे हुए थे, "लम्बरदार, गजब हो गया।"

'क्या गजब हो गया, इतने घबराये हुए क्या हो। कुछ बताओ तो सही।" शकरलाल ने आश्चय से पूछा।

'नया थानेदार जो आया है, उसे मुहल्ले वालो ने अपने सामने वाला मकान ही किराये पर दिला दिया है। कल उसका सामान आ रहा है और परसो से वह खुद यहाँ आकर रहने लगेगा। अब जुआ तो समझो बन्द हो गया। थानेदार के डर से कौन खेलन आएगा यहाँ?"

एक क्षण के लिए शकरलाल भी सकते मे आ गए। कुछ सोचा फिर अपने पर काबू पाकर बोले, "अरे तो इसमे इतना घबराने की क्या बात है। हमने जिन्दगी म बडे बडे हाकिमो को देखा है, एक और सही। हाँ, अब तो चार दिन के लिए खेल बन्द कर दो। जरा बात कर लें, फिर गाडी पटरी पर आ जाएगी।"

"हमें तो कुछ अपशकुन सा दिखाई देता है, लम्बरदार।" नत्थूसिंह की घबराहट दूर नही हुई थी।

'हमारे सामने गीदड की बोली न बोलो नत्थूसिंह, समझे। शकर-

लाल ने आँखें तरेरकर कहा, "जब हमने कह दिया है कि हम सब देख लेंगे, तब फिर काहे मरे जाय रहे हो।"

नत्थूसिंह की आगे बोलने की हिम्मत नही हुई, चुपचाप उठे और चल दिये।

जुआ बन्द हो गया। मुहल्ले वाले खुश थे, चलो बला टली। बहुत तग कर रक्खा था शकरलाल ने। अब थानेदार सामने आकर बस गया तो सिट्टी पिट्टी गुम हो गई। अब खेलें बेटा जुआ, न जेल मे चक्की पिसाई तो नाम नही।

शकरलाल ने थानेदार का सामान आते देखा, फिर तीन छोटे बच्चो के साथ उनकी जवान औरत को भी मकान मे आते देखा। एक सिपाही की ड्यूटी चौबीसो घण्टे थानेदार के घर के सामने लग गई। शकरलाल का दरवाजा भी थानेदार के सामने था, इस तरह सिपाही का पहरा शकरलाल के मकान पर अपने आप ही हो गया। अब कुछ करना होगा। शकरलाल भी दो दो हाथ करने को तैयार हो गये।

ड्यूटी पर जाने के लिए जैसे ही थानेदार साहब अपने मकान से निकले कि शकरलाल ने अपने मकान से बाहर आकर थानेदार का रास्ता रोक लिया, "थानेदार साहब राम राम। आप हमारे पडोसी हैं, पर दुआ-सलाम तक नही, ऐसी भी क्या नाराजगी!"

थानेदार ने ऊपर से नीचे तक शकरलाल को देखा। तो यही हैं जमीदार शकरलाल। बहुत शोर सुनते थे, पर यह तो डेढ हड्डी का आदमी निकला। मूछें जरूर उमेठी हुई है। हमने तो ऐसी कई मूछें उखाडकर फेंक दी, देख लेंगे। जरा रोब से बोले, "नाराजगी की क्या बात है जमीदार जी, यहाँ आये दो ही दिन तो हुए हैं, मुलाकात तो होनी ही थी।"

"आइये, दो मिनट के लिए बैठिये, आप-जैसे बडे हाकिमो से बात करके जी खुश हो जाता है।" शकरलाल ने कहा।

"फिर बैठेंगे, अभी तो हम ड्यूटी पर जा रहे हैं।" थानेदार ने कहा।

'हमारे पास बैठना भी तो ड्यूटी में ही आता है।" शकरलाल ने जरा हँसकर कहा, "दो चार मिनट बैठने में क्या हरजा है, आइए भी।" शकरलाल ने थानेदार का हाथ पकड़कर घर के अन्दर चलने का आग्रह किया।

जिस अधिकार से शकरलाल ने थानेदार का हाथ पकड़ा था, उससे किसी को भी आश्चर्य हो सकता है। हाकिम का हाथ पकड़ना कोई हँसी ठट्ठा नहीं, बड़े दिल का काम है। शकरलाल की आँखों में कुछ ऐसी चमक थी कि थानेदार भी इन्कार न कर सका। खिंचा-सा चला आया।

आँगन में कुर्सी-मेज पहले से ही लगी थी, शकरलाल और थानेदार आमने सामने बैठ गये। थानेदार के साथ जो हवलदार था वह मकान के बाहर ही खड़ा रहा।

"आप तो यहाँ सीतापुर से आये हैं।" शकरलाल ने बात शुरू की।

"सीतापुर थाने में भी हम रहे हैं। इस समय तो खरबाद से यहाँ आये हैं।"

"अच्छा अच्छा,' शकरलाल ने हाँ में हाँ मिलाते हुए कहा, "हरदोई में पहले जो डिप्टी साहब थे वह हमारे जिगरी दोस्त थे, और शाहजहनपुर में जो मुंसिफ थे ।" शकरलाल ने एक एक करके अफसरों के नाम गिनाने शुरू कर दिये जो उनके मित्र थे।

थानेदार को कुछ गुस्सा-सा आ रहा था। यह आदमी रोब डालने के लिए ही क्या यह अफसरों की लिस्ट गिना रहा है, ज़रा चिढ़े स्वर में बोले, ' यह अच्छा ही है कि आप हाकिमों से दोस्ती करके रहते हैं, पर कभी कभी हाकिमों से दोस्ती महगी भी पड़ जाती है।'

"ठीक कहा आपने, मगर हम भी तो पुराने जमींदार हैं। दोस्त के साथ दोस्ती और दुश्मन के साथ दुश्मनी निभाना जानते हैं। हमारी दुनाली वक्त आने पर जानवर और आदमी के शिकार में भेद नहीं करती।' शकरलाल ने बहुत ठण्डे स्वर में कहा।

"धमकी दे रहे हैं ?" थानेदार की भौंहें चढ़ गयीं।

'राम राम कैसी बात कर रहे हैं थानेदार साहब। आप हमारे हाकिम हैं, भला हम आपको धमकी देंगे।' शकरलाल ने तरह देने के स्वर

मे कहा, "हम तो अपनी बात कह रहे थे अरे हम तो अकेले आदमी है, आगे नाथ न पीछे पगहा। मर गये तो कोई रोने वाला नही है। पर हमारी दुनाली से निकली गोली अगर किसी घर गिरस्थी वाले को नुकसान पहुचाती है तो यह ठीक नही। हम कहते हैं कि ऐसी नौबत आय ही क्या?'

"आप बहुत आगे बढते जा रहे हैं जमीदार जी।" थानेदार ने तिलमिलाकर कहा "आपको मालूम है, आप पर क्या क्या इल्जाम हैं। कैसी कैसी शिकायतें हरदोई हैडक्वाटर मे पहुँची हैं?"

"यही न कि हम यहा जुआ खिलाते हैं रण्डी का नाच कराते है, यही न। थानेदार साहब, हमने कहा न कि हम खानदानी जमीदार है, और जो जमीन्दारी के शौक होते हैं वह हम भी हैं। उन्हें तो हम मरते दम तक छोडेंगे नही। इसी आगन मे जहा आप बैठे है, लखनऊ, सीतापुर और खैराबाद की एक से एक नामी रण्डी नाच गई हैं, और नाच देखने के लिए हरदोई से बडे से-बडा हाकिम यहाँ आ चुका है, किसी ने गरकानूनी काम नही कहा। जुआ भी हम खेलते और खिलाते है, आपसे कोई बात हम छिपायेंगे नही। हमारा शौक है, और इसी के सहारे हम जिन्दा है। एक भी वाक्या आप बता दें कि हमने किसी को नुकसान पहुँचाया हो, या किसी का रुपया छीना हो, या बदअमनी फैलाई हो। या किसी को तग किया हो। फिर शिकायत किस बात की? असल मे चक्कर यह है थानेदार साहब कि यहाँ जो बहुत छोटे किस्म के लोग है, जिनके खानदान का भी पता नही, वह हमसे जलते है। चार पैसे आ गये तो आख दिखाते ह। आप तो ठाकुर हैं, सोचिए जरा, नीच लोगो से इस तरह क्या दबा जा सकता है।"

शकरलाल ने जिस तरह विश्वास के साथ अपनी बात कही थी, उससे एक बार तो थानेदार की समझ म नही आया कि क्या कहें। थोडा रुककर बोले, "जमीदार साहब, कानून की नजर मे न कोई बडा है न छोटा, हमे तो कानून के मुताबिक काम करना है। कानून कहता है कि जुआ खेलना और खिलाना जुर्म है। जहाँ जुआ होगा वहाँ हमे छापा मारना होगा, ऐसी हैडक्वाटर की तैयारी है।'

"अरे, तो हमने मना कब किया है, जरूर छापा मारिये, बस हम जरा

आँख का इशारा कर दीजिए। आप भी खुश और हम भी खुश। सब ठीक हो जायगा। आप अपने ढंग से काम करते जाइये, बस हम अपने ढंग से जीने दीजिए। इसी मुद्दे पर हमारी-आपकी दोस्ती पक्की। इस खुशी के मौके पर हमारी ओर से यह छोटी-सी चीज कबूल कीजिए।" शंकरलाल ने जल्दी से अपने कुर्ते की जेब से डिब्बे में बन्द हाथ की घड़ी निकाली, और डिब्बे का ढक्कन खोलकर थानेदार के आगे कर दी।

स्वीटजरलैण्ड की बनी घड़ी की जगमगाहट ने थानेदार की आँखों में चकाचौंध पैदा कर दी। आज किसका मुँह देखकर उठे जो सुबह-सुबह ही बोनी हो गई। मन-ही-मन थानेदार प्रसन्न हो गये, मगर ऊपर से उपेक्षा दिखाते हुए बोले, "यह क्या घड़ी। हम इसका क्या करेंगे। हमारे पास तो है। हम अपनी पत्नी के लिए जरूर एक खरीदना चाहते थे, उनके पास नहीं है, सो खरीद लेंगे कभी।"

"वाह, यह क्या बात हुई। हम किसलिए हैं।' शंकरलाल ने उलाहने से कहा, "नत्थूसिंह नत्थूसिंह," शंकरलाल ने जोरों से आवाज दी। नत्थूसिंह भागते हुए आकर सामने खड़े हो गये। शंकरलाल बोले, "देखो, आज ही जाकर एक लेडीज घड़ी लाओ बहन जी के लिए। एकदम बढ़िया। समझे। और हाँ, एक किलो बढ़िया कलाकन्द भी लेते आना बच्चों के लिए।" फिर थानेदार साहब की तरफ घूमकर बोले, "आप इस घड़ी को भी कभी कभी हाथ पर बाँध लेंगे तो हमारी याद आयेगी, और हमारी दोस्ती भी मजबूत रहेगी, है न।" शंकरलाल हँसे, इस बार उन्होंने फिर थानेदार का सीधा हाथ पकड़ लिया और राखी की तरह उस पर खुद घड़ी बाँध दी अब थानेदार भी हँस रहे थे। हँसते हुए बोले, "आप तो बहुत मजबूर कर रहे हैं जमींदार साहब।"

"अरे इसमें मजबूरी की क्या बात है, यह तो दोस्ती की बात है।" शंकरलाल भी हँसे। फिर जैसे याद आया, "अरे अभी चाय नहीं आई, नत्थूसिंह।"

"नहीं अब चाय रहने दीजिए, फिर कभी पियेंगे।" थानेदार उठकर खड़े हो गये, "अब चलने दीजिए, देरी हो रही है, थाने पर टाइम से पहुँचना चाहिए और हाँ, थानेदार ने आवाज को धीमी करके पूछा

"यह आपका आदमी नत्थूसिंह विश्वासी है न ?"

"एकदम पक्का आदमी, सालों से हमारे पास है।"

"तब ठीक है, इसी के जरिये जो कहलाना होगा, कहला देंगे। आपसे बार बार मिलना तो हमारे लिए ठीक नहीं है, मुहल्ले वाले नजर रखे हुए हैं।" थानेदार ने चलते चलते कहा।

पन्द्रह दिन बाद ही रात को शकरलाल के मकान पर छापा पड़ा। थानेदार की आँख का इशारा पहले ही हो चुका था। सारी तैयारी कर ली गई थी। गाव से दो किसान परिवार घर में रहने के लिये अपने बच्चो की पूरी पल्टन के साथ आ गये। बीच आँगन में भगतू पण्डित बैठे राम-कथा कह रहे थे, और शकरलाल आँख बन्द किये सर झुकाये ध्यानमग्न होकर रामकथा सुन रहे थे। किसान परिवार भी बैठा था, और सबकी सेवा कर रहे थे नत्थूसिंह। एक एक को पानी लाकर पिलाते। इस्पेशल फोर्स आई थी हरदोई से। सारा घर छान मारा, मगर एक गड्डी ताश की नहीं मिली, दुनाली बन्दूक की तो बात ही क्या। माफी माँगकर सब चले गये। दूसरे दिन शकरलाल ने एक बढ़िया काश्मीरी दुशाला, थानेदार साहब के घर भिजवा दिया। दुशाले के अन्दर एक सौ एक रुपया भी रखा था। खुश हो गये थानेदार साहब। जुआ दूने जोश से खेला जाने लगा। मुहल्ले वाले मुंह देखते रह गये।

बहुत दिनों बाद चक्कर लगा था देवीदत्तजी का। शकरलाल ने उलाहना दिया, "का बाबूजी, हमारे घर का तो आप रास्ता ही भूल गये।"

"रास्ता वास्ता कुछ नहीं भले बस कुछ ऐसे फँसे रहे कि इधर आना ही नहीं हो पाया। नई सरकार क्या आई है, बस हड़ताल और नई-नई मुसीबतें भी साथ ले आई है। हमारे दफ्तर में भी पूरे एक महीने हड़ताल रही इसी सबमें फँसे रहे।" देवीदत्त ने अपनी सफाई दी।

"अब तो सब ठीक है कोई खतरा तो नहीं है आपकी नौकरी को।" शकरलाल ने पूछा।

"अरे हम काहे का खतरा, न तीन म, न तेरह मे। हम किसी राजनीतिक पार्टी के मम्बर ता हैं नही, जो पालिटिक्स में फँसें। सरकारी नौकर ह ता अपनी पूरी ड्यूटी देते हैं। हाँ, यह जरूर है कि अब वह अंग्रेजो वाला डिसिप्लिन नही रहा। सिफारिशी टट्टू बढते जा रहे हैं नौकरियो म। अजब हौच-पौच मचा है।'

'हमने ता बाबूजी पहल ही कहा था, हकूमत करना कोई हँसी-ठट्ठा नही है। हकूमत तो वही कर सकता है जिसके हाथ म डण्डा हा और जा डण्डे को मजबूती स पकडकर चलाना भी जानता हो। इन कांग्रेसिया ने डण्डा पकडना ता दूर रहा, उसे छूना भी पाप मान लिया। अब हाथ जोड-कर शाह को भी ठीक बता रहे हैं और चोर को भी। ऐस कसे काम चलेगा।" शकरलाल के चेहरे पर गुस्सा उभर आया था।

दवीन्द्र ने सर हिलाकर समथन करत हुए कहा, "इसे यू कहो कि इनकी सारी योजनायें कागजी होती जा रही हैं, क्योकि बडे-से-बडा लीडर अब बस अपने को जमाने मे लग गया है। उसे इस बात की फिकर ही नही कि जनता क्या चाहती है। अब अपने प्रान्त की ही बात लो, पतजी कुर्सी पर बठ गय, बडी-बडी बात भी कह रहे हैं। पर अपनी बात लागू किससे कराना चाहत है, उसी अंग्रेजी राज्य के जमाने से चली आ रही नौकर शाही स ? बताइये भला, कल तक जो पुलिस और दूसरे अफसरान, अंग्रेजो के वफादार थे, जिन्होने जनता पर भयकर जुल्म ढाये, वही आज आजाद भारत के पुनर्निमाण का जुम्मा उठाने का दावा कर रहे हैं! पुलिस को ही लो, अंग्रेजो न अपन स्वाथ के लिए पुलिस को सबस ज्यादा करेप्ट किया। एक साँस म हजारा गालियाँ द, यही थानेदार की सबसे बडी सिफ्त रही है। कौन सा जुल्म पुलिस ने आजादी के दीवानो पर नही ढाया। अब हम देख रहे हैं वही पुलिस वाले मूछो पर ताव देकर आजाद भारत के रक्षक बने बठे हैं। यह लोग उन कांग्रेसियाक नो जी हुजूर बन गये है, जो मिनिस्टर और एम० एल० ए० कहलात है, लेकिन उन हजारा खद्दरधारियो को हिकारत की नजर से देखते हैं, जो आजादी की लडाई म अपना सब कुछ कुर्बान कर बठे। मुरादाबाद के उपध्याय जी को सारा प्रान्त जानता है। सारी जिन्दगी जेलो म बिता दी। अब चूंकि

वह सोशलिस्ट पार्टी मे आ गये तो कोतवाली के एक बदनाम पुलिस इन्स्पेक्टर ने, जो अँग्रेजो के जमाने से उनसे खार खाये बैठा था, उनके घर पर गुण्डा से हमला करा दिया, हर तरह से अपमानित करने पर उतर आया। पतन्नी तक बात पहुँचाई तो कहत ह, "दखेंगे, अनुशासन का मामला है।"

"आपकी बात तो ठीक है बाबूजी, आजादी आई जरूर, पर कुछ बदला नही। उल्टे सारी नीव ही हिल गई।"

"नीव तो हिलेगी ही शकरलाल, जब हर बात मे हम इग्लण्ड की आर मुह उठाय देखते रहेंगे, अँग्रेजो से ही अपने घर का सारा फैसला करायेंगे, तो फिर सब चौपट हो ही जायेगा। जिधर देखो आज भी अँग्रेजो का ही बोलबाला है, वही हमारे सबसे बडे हितैषी नजर आते हैं। भला कभी ऐसा भी सुना है कि कोई मुल्क आजाद हो जाये और मुल्क का दो सौ वर्षो तक गुलाम बनाये रखने वाली जाति का ही आदमी आजाद मुल्क का एक साल और सरगना बना रहे। लाड माउन्टबेटन ऊपर से भोले बने रहे पर अन्दर से सबसे ज्यादा लीग का भला किया। हिन्दुस्तान के बटवारे मे जो तबाही हुई उसके लिये यही आदमी बहुत कुछ जुम्मेदार है। पर चूकि साहब, वह नेहरू जी का दोस्त है, इसलिए आज भी उसे हिन्दुस्तान के शुभचिन्तक के रूप मे पेश किया जाता है। हर बात म राय ली जाती है। विदेश नीति के सारे मसले लन्दन मे ही बैठकर तय होते है।"

"असल म तो गाधी बाबा स ही सारी चूक हा गई। उन्हें अपने हाथ म शासन की बागडार लेनी चाहिए थी। अब खुद तो स्वग सिधार गय, रोने को हम छोड गये।" शकरलाल ने पछतावे के स्वर मे कहा।

"गाधी जी की क्या बात करें। आखिर के दिना म तो वह असफलताओ से घिर से गये थे। काग्रेसियो म शासन करने की लालसा इतनी पदा हो गई थी कि गाधी को बस दिखावे के लिए ही पूछा जाता था। गांधी के मरन के बाद ता सब खुल खेले। उन्ही लोगो को शासन मे हिस्सेदारी देने लगे जो अँग्रेजियत म पूरी तरह रगे हुए थे। तुम्ह बलिया के गिरजाशकर वाजपयी की याद हागी जिसन बयालिस के आन्दोलन में बलिया में बहुत जुल्म ढाया था।" देवीदत्त ने पूछा।

'हाँ हाँ वही न जिसने आन्दोलनकारियो को घोडे की टांग से बँधवाकर खिचवाया था, बडा जालिम था वह ," शकरलाल के चेहरे पर नफरत उभर आई।

"था नही है कहा।" देवीदत्त न कहा, "अंग्रेजो के बनाय इस आई० सी० एस० अफसर को नेहरू जी ने गले से लगा लिया है। उसे अपना खास अधिकारी बनाकर दिल्ली में बैठा लिया, बजाये इसके कि आजाद होते ही ऐसे अंग्रेजो के कुत्ता को सीधे गोली मार दी जाती, या चला भई आजादी के समय समझौता हो गया था कि आई० सी० एस० अफसरो को कुछ नही कहा जाएगा, तो उसे पेन्शन दकर एक कोने पर डाल देते। पर नहा, चूकि गिरजाशकर बाजपेयी का 'सर' की उपाधि मिली हुई है, अंग्रेजी ढग से उसे रहना आता है, अच्छी अंग्रेजी बोलता है, और अंग्रेजी कौम का वह खैरख्वाह है इसलिए हमारे प्राइममिनिस्टर ने उसे गले स लगा लिया, सर पर बैठा लिया, उसके सहारे आजाद भारत को नई दिशा देने की बात कहते नही थकते हैं। बताइए भला, गिरजाशकर बाजपेयी जैसा गुलाम मनोवत्ति का आदमी हमारे नौजवानो को क्या आदश देगा ?"

"हमने कही अखबार मे पढा था कि इन आई० सी० एस० अफसरो को लेकर नेहरू जी मे और पटेल मे खींचतान भी खूब चली।" शकरलाल ने दिमाग पर जोर डालते हुए कहा।

"वह तो चलती ही। ' देवीदत्त न कहा, "एक प्राइममिनिस्टर दूसरा डिप्टी प्राइममिनिस्टर, दोनो को ही शासक के नाते अपनी स्थिति मजबूत करनी थी, तो फिर अफसरो की फौज और उनके सेनापतियो को लेकर तो खींचतान होनी ही थी। बात यह है कि यहाँ भी गांधी बाबा की भावुकता तमाशा दिखा गई। पटेल का सीधा हक था आजाद भारत का पहला प्राइममिनिस्टर बनने का, पर चूकि पटेल का व्यक्तित्व भारी पडता था, एडमिनिस्टेटर के नाते वह किसी की बात सुनने को तैयार नही थे, इसलिए गांधी के लिए उसे पचाना कठिन हो गया। नेहरू जी लचीले स्वभाव के ह, गांधी के सामने अति विनम्र, तो गांधी ने उन्ही का पक्ष लिया, और वह हो गए प्राइममिनिस्टर पर पटेल ने फिर भी सिद्ध कर दिया कि शासक वही है जा ठीक समझा उस लागू करवा दिया, और जो लागू

किया वही बाद मे सही साबित हुआ। नेहरू जी तो भाषण देने मे उस्ताद हैं घण्टो भाषण दिलवा लो बडी-बडी बातें पश्चिमी समाज की तारीफ एकदम से औद्योगिक क्रान्ति योरोप के ढग पर भारत को जादू से खडा कर देने का दावा बस यही सुन लीजिए। जबकि देख लेना, अगर नेहरू इसी अग्रेजियत के चश्मे से हिन्दुस्तान को देखते परखते रहे, और यहा की आबोहवा को न पहचाना तो वह दिन दूर नही जब प्रगति के नाम पर समस्याओ का ढेर लग जाएगा। हम और भी गरीब, लूले, लँगडे, अपाहिज होकर जीने लगेंगे। और " देवीदत्त अभी अपनी बात पूरी कर भी नही पाये थे कि देखा, रामस्वरूप हाफते हुए चले आ रहे है।

'अरे तुम तो बहुत कमजोर हो गए रामस्वरूप?" देवीदत्त ने आश्चर्य से पूछा।

"हा बाबू जी, दम की शिकायत तो है ही, इधर चक्की लगाई है सो वह ससुरी जान खा गई, कभी मशीन खराब, तो कभी मिस्त्री गायब, बस ऐसा ही है सब। कब आए आप।" रामस्वरूप ने कहा।

"आज ही सुबह आए हैं तुम लोगो से मिले बहुत दिन हो गए थे। जमीदारी जाने से तुम्हें भी तो शकरलाल काफी परेशानी हो गई होगी।'

'अरे हमारी भली कही। हमे काहे की परेशानी, जमीदारी तो हमने पहले ही बेच दी। गाव मे कुछ पट्टी बची थी, सो वह भी सरकार ने ले ली। एक छोटा-सा आम का बाग है बस। हम तो जैसे पहले थे वैसे ही आज भी है। इन्हें भइया रामस्वरूप को जरूर कष्ट हो गया। जमीदारी के भरोसे दिन कट रहे थे, अब इस उमर मे नई समस्या खडी हो गई रोजी रोटी की।'

'जमीदारी के एवज मे सरकार ने कुछ दिया भी तो है।' देवीदत्त ने पूछा।

"अरे क्या दिया दस-दस साल के बान्ड पकडा दिए हाथ मे, बाजार मे बेचन जाओ तो पौने दाम भी नही मिलते हैं।' रामस्वरूप ने गुस्से से कहा, 'हमे इसका गिला नही कि जमीदारी चली गई, खेत खलिहान छीन लिए, चलो माफ किया। पर इस सबसे कौन सा ससुर तीर मार दिया सरकार ने। कौन सी खेती मे बढोतरी कर दी, कौन सी सोने की फसल उगाई

है। उल्टे दस नये चक्कर शुरू कर दिए हैं किसान की जान को। फिर हम भी तो इंसान हैं, हमारे भी तो खाने पीने का बन्दोबस्त करो।'

"तो क्या तुम्हें कुछ भी जमीन नहीं मिली।" देवीदत्त ने आश्चर्य से पूछा।

"क्या मिली म्हाने बहुत दौड़ धूप करके हमने कुछ बीघा जमीन बचा पाई है, अब उसी को बटाई पर देकर गुजर-बसर कर रहे हैं। किसान को ऐसा खत्ते पर चढ़ा दिया है इस सरकार ने, कि वह किसी की सुनता ही नहीं। जो हाल कल तक चू नहीं करते थे आज आँख दिखाते हैं। हमारी जमीन पर खेती करते हैं और हमीं को लूटने की सोचते हैं। सब कर्मों का फल है बाबूजी, क्या कहें।"

'तुम खुद क्यों नहीं खेती करते। मेरा मतलब है विजय जवान हो गया है उसे खेती के काम पर लगाओ। कुछ डेरी फार्म और पोल्ट्री फार्म-जैसा काम जमाओ।' देवीदत्त ने सुझाव दिया।

"आप भी बाबूजी अच्छा मजाक करते हैं।" रामस्वरूप ने हँसने की कोशिश की। "अरे जे शहर में अंग्रेजी पढ़े लड़का भला खेती करेंगे। इन्हें तो शहर की बाबूगिरी चाहिए, बस कोट पैण्ट पहनकर टहलेंगे। खेती इनके बस की नहीं।"

'सब बस में आ जायेगी, चिन्ता न करो। नौकरी कौन-सी धरी है शहर में, जो बैठे ठाले पा लेंगे। अभी जवानी की उमर है, सो टक्करें मार रहे हैं। जब जेब पूरी तरह खाली हो जायेगी तो इसी हल-बैल से सर न मारें तो कहना।"

रामस्वरूप विजय के बारे में ज्यादा बात करना नहीं चाहते थे। क्या बात करें, विजय आज लायक होता तो यह हाल होता ही क्यों। बात काटकर बोले, "चलो बाबूजी खाना खा लो, एक बजने को आय गया।"

"हाँ हाँ जाओ खाना खाओ। शाम को बात करेंगे।" दाकरलाल ने उठते हुए कहा।

शाम को देवीदत्त ने बहुत अच्छी खबर सुनाई शंकरलाल को। नीता शर्मा की शादी हो गई। शंकरलाल आश्चर्य से मुंह बाये देखते रह गये। देवीदत्त ने अपनी बात पर जोर डालते हुए कहा "हां हां भाई विश्वास करो, ठीक कह रहे हैं हम। नीता की शादी हो गई। लडकी थी, सो शादी तो होनी ही थी। बेटा श्रीप्रकाश भी पहुंचे थे। ऐसा हुमुक हुमुक के रोया कि हम क्या बतायें। बडी शरम आई हमें तो, मर्द होकर औरतों की तरह रोया! ठीक है, प्यार मुहब्बत हो ही जाता है, पर इतनी बेहयायी अच्छी नहीं।

शंकरलाल एकदम खामोश हो गये। सर झुक गया। क्या कहें अपने सपूत को। मर्द का रोना उन्हें एकदम नापसन्द है। पर देवीदत्त कह रहे हैं श्रीप्रकाश रोया, तो गलत तो वह नहीं रहे होंगे। क्या जमाना आ गया है। मर्द रोते हैं और औरतें हँसती हैं। हद हो गई।

"मजे की बात यह, कि लौंडिया साली के चेहरे पर शिकन नहीं। अग्नि के सात फेरे लगाये और चल दी अपने खसम के साथ कूल्हे मटकाती। इतने दिनों श्रीप्रकाश को बेकार में ही अटकाये रक्खा। अगर सच्ची मुहब्बत थी तो काटती सारी जिन्दगी कुआरी रहकर। पर इसके लिए बहुत दम होना चाहिए। नीता तो श्रीप्रकाश का चूतिया बनाकर चली गई।'

श्रीप्रकाश के बारे में जब और कुछ नहीं सुना जाता। बात बदलकर शंकरलाल बोले "चलो जो हुआ अच्छा हुआ। जान छूटी। अब श्रीप्रकाश शादी के लिए इनकार नहीं कर सकते। हम खूब धूमधाम से श्रीप्रकाश की शादी करेंगे।"

"यही ठीक है चूको मत जल्दी से कोई लडकी देखकर श्रीप्रकाश की शादी कर डालो। कहीं फिर किसी प्रेम व्रेम के चक्कर में पड गया तो हो गई छुट्टी।" देवीदत्त ने नेक सलाह दी।

शंकरलाल श्रीप्रकाश के बारे में कोई बात ही नहीं करना चाहते थे। आखिर को अपना खून है, बुराई नहीं सुनी जाती। देवीदत्त बहनोई हैं, इसलिए उनकी बकवास सहनी पडी। दूसरा कोई कहता तो गला पकड लेते। बात बदलकर बोले, 'और बाबूजी, कुछ नई-ताजी खबर सुनाओ,

इतने दिन रहे यहाँ।"

'अरे बस पूछो मत, यू ही फँसे रह। अब ता हम तुम्हें न्यौता दने आय हैं।'

"न्यौता ! काहे का न्यौता ?"

"अपनी शादी का और काहे का।" दवीदत्त उत्साह से बोले, "पटना मे लडकी दख ली है। बहुत अच्छा परिवार है। लडकी का बाप नही है, इसस हम क्या। लडकी अच्छे स्वभाव की है, एक नजर म हमने भाँप लिया। सब ठीक है , ' दवीदत्त अपनी ही रौ मे बहे जा रहे थे। शकरलाल को ऊब होन लगी। अजब आदमी हैं, अपनी ही हांके जा रहे हैं। जब नही रहा गया तो बोले, "बाबूजी, आप पढे लिखे हो, अब हम का कहें, पर अच्छा था आप रोहित की शादी करते। लडका जब बडा है, तो उसी की श दी होनी चाहिए।"

"कमाल करते हो।" देवीदत्त ने भऊंए चढाकर झुडका, "रोहित की अभी उम्र ही क्या है। अभी ती उसने इण्टर का इम्तहान दिया है। हम उसका भविष्य भी देखना है, फिर वह शरीर से भी कमजोर है। अभी उसकी शादी कसे कर दें। अब हम उसे आगे पढायेंगे। अगर नही पढा, तो कोई छोटी मोटी दुकान खुला देंगे। पर यह सब ता आगे की बात है। अभी तो हमे अपनी गहस्थी के बारे म सोचना ह और , ' देवीदत्त बोते चले जा रहे थे। शकरलाल ने जान छुडाने की गरज से हरिया को पुकारकर चाय लान के लिए कहा। देवीदत्त चाय का नाम सुनते ही उठकर खडे हा गये।

'नही, हम चाय नही पियेंगे। चाय नुकसान करती है। हम हकीम साहब से दवा ले रहे हैं। अब हम चलते हैं। तुम बारात म चलने की तयारी करो।" देवीदत्त न चलते चलते कहा।

शकरलाल जाते हुए दवीदत्त का दखत रह गय। एक तरफ हकीम मे ताकत की दवा ले रहे हैं दूसरी तरफ शादी की तयारी हो रही है। जवान लडका घर म बैठा है पर अपनी शादी के लिए भाग दौड कर रहे हैं। वसे तो बडी बडी बातें करत है दूसरो को उपदेश देते है पर जब अपने मतलब की बात हाती है ता एकदम नीचे उतर आत हैं।

शकरलाल के हाथ मे फिर से बगिया आ गई। नये सिरे से मन्दिर और बगिया का सारा प्रबन्ध करना होगा। सब गडवड हो गया। न टूट-फूट की मरम्मत हुई, न ही सफाई पुताई। मन्दिर के नाम गाँव भी निकल गया। आमदनी के नाम पर बस सात मे कुछ सौ रुपये मिलेंगे सरकार से। लेकिन शकरलाल इस सबसे निराश नही होंगे। प्रभु की कृपा बनी रहे तो सब ठीक हो जायेगा। बगिया को नये सिरे से ठीक करना है। बगिया मे महफिल जमाने का कुछ और ही सुख है। एक साथ चार मजूर लगा दिये बगिया का ठीक करने म। गाँव स माली भी बुला लिया, नय सिरे से पेड-पौधे लगेंगे। कमरे की पुताई भी करा डाली। एक बार फिर से बगिया बैठने-उठने लायक हो गई।

हरनारायण का बगिया जाने का कोई दुख नही था। उन्हें बगिया से पहले भी कोई मोह नही था, अब तो मन्दिर की आमदनी भी सीमित हो गई सो बगिया को सम्हालना तो जी का जजाल ही है। वैसे भी हरनारायण का ज्यादा समय अब गाव मे खेतो पर ही बीतता। खेतो पर पूरी नजर रखनी पड रही है। जमाना बदल गया है। छोटी जात वालो की नीयत खराब हो गई है। न जान कौन कब खेतो पर कब्जा कर ले। पूरी हिफाजत करनी पडती है।

खेतो की हिफाजत करन मे हरनारायण अपनी हिफाजत नही कर पाये। गाँव के नौजवान लडको ने हरनारायण को लाठियो से पीट गेरा। पूरा बदला ले लिया अपन बाप दादो का। हरनारायण न जिन किसानो को कभी अपन डण्ड से पीटा था, उन्ही के लडको ने अब लाठी उठा ली। गाव के बूढे किसान बीच मे आ गये, नही तो शायद प्राण ही चले जात। तीन चार लाठियो म ढेर हो गय। छाती खराब हो गई। राज रोज तिक्रि-मिकिर करते थे, अब गाव म पैर रखकर तो दखें। खाट पर डालकर घर लाय गये। जब शेखूपुरा के डाक्टरो न जवाब द दिया तो हरदोई अस्पताल ले जाये गये। तीन चार महीने को छुट्टी हो गई।

हरनारायण की पिटाई स रामस्वरूप बहुत डर गये। अकेले गाव म जाने का दम नही रहा। पर गाव जाये बिना भी तो रहा नही जा सकता। गाव नही जायेंगे तो खायेंगे क्या। पन्द्रह बीस दिन मे एक चक्कर गाव का

लगाना पडता। पर इससे भी बात कुछ बनती नहीं। बटाईदार अपने ढग से, अपनी मर्जी से काम करता, कुछ बाल नही सकते, फसल काटकर जो द द –सी मे सतोष करना पडता।

हरनारायण अस्पताल स घर आ गये। चलन फिरन भी लगे हैं, पर पहले-जसी बदन म ताकत नहा आ पाई है। ज्यादा बात करत हैं तो सर भन्नाने लगना है, चक्कर आ जाना है। सर पर लाठी की चोट गहरी आई थी, इसी मे सर कमजार हा गया।

हरनारायण पर हमला करने वाले किसानो के लडके भी जमानत पर छूट गय, केस चल रहा है, सजा जरूर होगी सुसरा को, ऐसा हरनारायण का वकील कहता है। पर इससे क्या, हरनारायण ता सब तरफ से लुट गये। पैसा टट से निकल गया, शरीर म चोट खाई सो अलग, गाँव जाना भी बन्द हा गया, न जाने फसल का क्या होगा कोई करने धरने वाला नही, जिस साथ लो वही धोखा दे जाता है।

पति के चोट लगन की खबर सुनत ही नई दुलहिन अपन पाँच साल के बटे का हाथ पकडे आ गया। अब अपने पति के पास ही रहकर सेवा करेंगी। बहुत रह ली अपन बाप के घर, फिर गाँव मे तो गरीब की जारू सबकी भाभी बन गयी थी। किस किस से बचें, सो अपने पति का घर ही ठीक है।

हरनारायण ने भी अब अपनी पत्नी से वापस मायके जाने को नहीं कहा। आखिर कोई तो सवा को होना ही चाहिए। अपने तो हाथ पाँव चलते नही। पर बच्चे के प्रति नफरत अब भी कम नहीं हुई थी। गोल-मटाल लडका अपनी माँ पर गया था, खूब स्वस्थ। तराती पर छोटा म, बडा आ लिखना भी सीख गया है। हरनारायण ने बच्चे की तरफ आँख उठाकर नही देखा। आ गया है तो पडा रह घर मे, जैस और प्राणी खाते हैं सो यह भी खा ले।

लेकिन दुनिया को क्या कह दुनिया तो जीने नहीं देती। हर समय टट से रकम खिसकती जाती है। बच्चा तो उन्हीं का कहलाता है, उनकी

औरत के पेट से निकला है तो फिर उन्हीं का रहेगा। सो एक दिन लडके की उँगली पकडकर हरनारायण बाजार गये, दो खाकी नेकर और दो सफेद कमीज खरीद दीं बस्ता भी लिवा दिया। सरकारी स्कूल मे नाम लिखा गया—सत्यनारायण। पिता का नाम हरनारायण, पेशा जमीदारी। नही नही जमीदारी तो खत्म हो गई। जमीदारी तो कानून जुर्म है। अब तो लिखवाना है पेशा खेती, खुद काश्तकार।

दवीदत्त ने जैसे-तैसे आसपास के दो चार दोस्तो का इकट्ठा किया और बारात लेकर पटना चल पडे। साथ मे रोहित भी था। जो देखता, वही हँसता। बाप की बारात मे बेटा जा रहा है, वाह भाई, यह उल्टी गगा खूब बह रही है।

देवीदत्त को किसी की चिन्ता नही थी। सब साले जलते हैं। उन्हे शादी करनी है सो करेंगे। पिछले दो साल से गरम दवायें खा रहे हैं। शरीर ऐंठा जा रहा है। औरत की बडी सख्त जरूरत है। दुनिया साली तो कुछ समझती ही नही।

बडे भाई सोमदत्त ने इस शादी का बायकाट कर दिया। न मालूम किस गली कूचे की औरत आ रही है घर म। धरम करम सब भ्रष्ट हो गया। श्रीप्रकाश भी अपने फूफा जी की शादी म नही जा सकते। बनारम म अपन ही काम मे बहुत व्यस्त हैं। श्रीप्रकाश की मा तो सन्यासिनी है। उन्हें किसी की शादी ब्याह से क्या लेना-देना। पर शकरलाल से और रामस्वरूप से तो पूरी उम्मीद है दवीदत्त को। वे जरूर बारात की शोभा बढायेंगे। इसीलिए गाडी जब एगवा स्टेशन पर पहुँची, तो खिडकी से सर निकालकर दखने लगे। शकरलाल और रामस्वरूप तो कही दिखाई नही दिये, हाँ, नत्थूसिह जरूर आये थे। साथ मे दो टोकरा आम लाये थे।

'मालिक की तबीयत ठीक नही है, सो आ नही पाये।' नत्थूसिह ने कहा, ''यह बारात के लिए आम भेजे है।' नत्थूसिह ने जल्दी से आमो के टोकरे गाडी मे चढा दिये।

देवीदत्त दात पीसकर रह गये। गाडी चल दी तो गुस्से से बोले, "यह सब करतूत बडी अम्मा की है। अरे हम क्या जानते नही हैं। यह बुढिया बडी मीन-मेख निकालती है। सिखा दिया होगा अपने लडको को ऊँच नीच। जब साले भगिन चमारिनो के साथ सोत है, तो धरम नही जाता, अब बारात म जाने से धम भ्रष्ट होता है। कोई बात नही, वखत आने दो, मैं भी सारा हिसाब मयसूद-ब्याज के वसूल लूगा।"

देवीदत्त ने ठीक सोचा था। बडी अम्मा ने शकरलाल स साफ कह दिया, "बडकऊ, कान खोल के सुन लो, पटना सटना नही जाना है। न जान कौन घर-घाट भोपा रचाउन जाय रहे है दवीदत्त। ऐ पूछो भला ऐसी कौन-सी जल्दी पडी थी, जो जात-पाँत सब बेंच खाई।"

"वे तो कह रहे थे कि जात मे ब्याह कर रहे ह।" रामस्वरूप बीच मे बोले।

"रहन देउ भइया हम न बहकाओ। हमे सब पता है। जात ठीक होती तो क्या टीका न चढता, ब्याह की सारी रस्म न होती। अरे हम बताओ उनके सगे बडे भइया काहे कन्नी काट गय," बडी अम्मा गुस्से से उफन रही थी, "मरद एक नही चार-चार शादी करें, पर कायदे स। तुम्हार सबके बाबा ने तीन-तीन शादी करी थी पर अपना धरम नही छोडा। हमे तो भगवान ने कन्या दी है, हम कसे इधर उधर मुह मार लें। जब बिटिया के हाथ पीरे करेंगे तो एक एक को जवाब देना होगा, समझें।"

दानो भाई सर झुकाये खटिया पर बठे थे। बडी अम्मा ने दुनिया देखी है, धूप मे बाल सफेद नही किये। बाबू जी की तो मति मारी गई है, जो पटना दौड पडे। पर हम तो सब ऊँच नीच देखनी है।

"कोई नही जायेगा बारात म बडी अम्मा, निसाखातिर रहो।' शकरलाल ने दिलासा दिया।

और बाबू जी न यहाँ आकर जवाब-तलब किया तब, आखिर को तो हमारे दमाद है।' रामस्वरूप पशोपेश मे पड गये थ।

अरे, तब की तब देख लेंगे। अभी तो जान छुडाओ। शकरलाल ने झुझलाकर कहा। जल्दी से खडाऊँ पहन और खटर-पटर करत चल दिय।

इसके बाद नत्थूसिंह बारात में देने के लिए दो टोकरा आम लेकर एगवा स्टेशन पहुँचे थे।

बाप की दूसरी शादी बेटे को बहुत भारी पड़ गई। नई मां ने तो कुछ नहीं कहा। मायके में गरीबी और भूख के सिवाय कुछ और देखा नहीं था, अब ससुराल में पहलवान जैसे अधेड़ पति को पाकर अचकचा गई। एक नई दुनिया में आ गई थी, ऐसी दुनिया जहां खाने पीने की कमी नहीं थी, पर इसके साथ और जो कुछ जुड़ा हुआ था, उससे चक्कर आने लगता था। अपने बाप की उम्र के बराबर आदमी के जिस्म से चिपकते हुए झुरझुरी उठती थी। देवीदत्त के सारे शरीर से कड़ुए तेल की गन्ध आती तो सिर भिन्नाने लगता। शादी के बाद भी देवीदत्त सुबह-शाम सरसों के तेल की मालिश करने से बाज नहीं आये। असल में मालिश के बहाने वह अपने पूरे जिस्म पर तेल पोत लेते थे। नहाते तो ठीक से साबुन नहीं लगाते। इसी से उनके पास बैठने वाले का जी घिना जाता। पर इससे क्या, देवीदत्त ने अपने आगे दूसरे का सुख कभी नहीं जाना। अपनी खुशी के लिए जो जी में आया किया। अपने सुख के लिए शादी कर डाली और अपने सुख के लिए रोहित को जिलाबदर कर दिया। इंटर की परीक्षा खत्म होते ही देवीदत्त ने ऐलान कर दिया, अब आगे पढ़ना बेकार है या तो कोई दुकान करा देंगे, या फिर रेलवे में लोको की नौकरी दिला देंगे।

'मैं तो बी० ए० में पढ़ूंगा।" रोहित ने धीरे से कहा।

"क्या" देवीदत्त ने आँखें तरेरी, "बी० ए० जानते भी हो किसे कहते हैं, कितनी मेहनत करनी पड़ती है। तुम्हारा शरीर सह पायेगा मेहनत। अंग्रेजी में तो बिलकुल सीफर हो, एक अर्जी तक तो लिखी नहीं जाती। बी० ए० करने की लाट साहबी सूझी है।'

रोहित की आंखों में आंसू आ गये। किसके कारण पढ़ने में कमजोर है, कोई पूछे जरा। माँ के मरने के बाद सारा घर चौपट कर दिया। रात रात भर तो घर से गायब रहते हैं, कभी ध्यान नहीं दिया कि स्कूल

जाता भी हूँ या नहीं, अपनी मेहनत से जितना कर पा रहा हूँ, कर रहा हूँ। अब उपदेश देने चले हैं शरम भी नही आती। मैं तो बी० ए० करूँगा, कालेज जरूर जाऊँगा, देखूं कौन रोकता है।

उसी दिन रोहित ने अपने ताऊ जी को चिट्ठी लिख दी। सारी बात साफ-साफ लिखी। पिताजी उसे लारी मे भर्ती कराना चाहते हैं। इनन मे कोयला झुकवाना चाहते हैं। नही करेगा वह यह सब, उसे बी० ए० पास करना है।

तीसरे दिन सोमदत्त आय आ गये। आते ही ऐलान कर दिया। रोहित को लेने आय हैं, अभी उनमे दम है। अपने पास रखकर बी० ए० करायेंगे खानदान म यही एक चिराग है, इसे बुझने नही देंगे।

भाई को सामने देखा तो देवीदत्त के तन-बदन मे आग लग गई। यही हैं, सारी फुराफात की जड। रोहित को भडका दते हैं, वरना रोहित की क्या मजाल जो मेरे सामने आँख उठा जाये। एक झापड दू तो बत्तीसा दाँत नीचे आ जायें। देखूं कैसे ले जाते हैं रोहित को।

युद्ध शुरू हो गया। पहले दोनो भाई घर के अन्दर चिल्ला चिल्लाकर लडते रहे फिर सडक पर आ गये। दोना भाइयो के अन्दर महान आय रक्त बह रहा था। शास्त्राथ करने की ट्रेनिंग दोना को ही बचपन से मिली थी, इसलिए इतनी जल्दी एक-दूसरे से हार कसे मान लेते।

"भाई, हमने शादी की है। हमारे खर्च बढ गय हैं। हम रोहित को नही पढा सकते।" देवीदत्त चिल्लाये।

'हा, इसीलिए तो शादी की कि बच्चे का गला काट दो। उसका भविष्य बिगाडो।"

"हम उसे नौकरी कराकर उसे अपने पैरो पर खडे होने की ट्रेनिंग दे रहे हैं।"

'रहने दीजिए प्राय ट्रेनिंग देने को। हम सब पता है। बच्चे की कमाई से मौज मस्ती करने की सूझी है। हम सब जानते हैं।'

बहसबाजी और भी बढती लेकिन सोमदत्त ज्यादा अनुभवी है। बाजी के बीच म टग काड मारना खूब जानत हैं, चिल्लाकर बोले, "हम अपनी आन पर आ गये हैं, हम बच्चे को लेकर जायेंगे। तुमने समझा क्या है,

नई शादी करके क्या बच्चे की जान ले लोगे। अरे हम थाना कचहरी जायेंगे। तुम्हारी सारी हड्डी निकाल देंगे समझा क्या है तुमने। सरकारी नौकर होकर हेकड़ीबाज बनते हो। एक मिनट में सीधा कर देंगे।'

वो यहीं पर फँस-सा गया। भाई का क्या ठौर, एक नम्बर के झगड़ाल हैं। हो सकता है थाने में रपट लिखा दें, फिर तो सरकारी नौकरी पर बन आयगी। देवीदत्त पीछे हट गये—'ले जाओ, रख लो छाती प ले जाकर। अरे हम भी देखेंगे क्या बनाते हो।"

'हाँ हाँ दिखा देंगे। बी० ए० पास कराकर दिखायेंगे। एम० ए० भी करायेंगे। स्वामी दयानन्द के प्रताप से जो कहते हैं सो करके रहते हैं। तुम्हारी तरह नहीं कि पचास की उमर में छोकरी ले आये और अब लड़के को धक्का मार दिया।"

शायद दोनों भाइयों में मारपीट हो जाती। पर मुहल्ले के बुजुर्ग बीच आ गये। देवीदत्त को पकड़कर एक ओर ले गये। ऊँच नीच समझाकर चुप कराया। रोहित ने जल्दी जल्दी अपने दो चार कपड़े बटोरे, थैले में किताबें ठूँसी और ताऊजी के साथ चल दिया।

सोमदत्त अपने साथ रोहित को गाँव ले आये। पर गाँव में तो पढ़ाई हो नहीं सकती। सो बनारस में होस्टल में रखकर पढ़ायेंगे। पर श्रीप्रकाश ने यह नहीं होने दिया। उनके रहते रोहित होस्टल में रहे तो दुनिया क्या कहेगी। आखिर को रोहित भी तो भाई है। पक्की रिश्तेदारी है। उसे होस्टल में कैसे रहने दें। हाथ पकड़कर घर ले आये। अब घर में तीन प्राणी हो गये। श्री प्रकाश और विजय तो पहले से ही थे, अब रोहित भी उसमें जुड़ गया।

आजादी के बाद कस्बे में पहली बार मुनिसपैल्टी का चुनाव होने जा रहा है। सारी राजनीतिक पार्टियाँ जोर अजमा रही हैं। इस कहते हैं प्रजातन्त्र जिसकी जी में आये चुनाव में भाग ले। कहीं कोई रोक टोक नहीं। जन-सेवा का पूरा अवसर है। आओ भाइयो, हाथ बटाओ।

बगिया मे आजकल खूब चहल पहल है। सारे दिन बस यही चर्चा रहती है कि कौन किस वाड से खडा हो रहा है। कौन किसका समथन कर रहा है। कस्बे म तरह-तरह क रग की टोपिया लगाय लोग घूम रहे हैं। लाल टोपी सोशलिस्टो की है, पीली टोपी जनसघी भाई लगाते हैं और हिन्दू महासभाई वीर सावरकर डिजाइन की काली टोपी लगात हैं। पर कांग्रेसी गाँधी टोपी सबसे अलग है। खादी भण्डार की शाखा कस्बे म कई साल से है। *इस समय खादी की टोपियाँ एकदम बिक गयी एक भी* नही बची। अब जिस लेनी हा वह सीधा हरदोई चला जाय। वहीं खादी आश्रम मे मिलेंगी।

मजदूर किसान पार्टी बनाकर एक दो कम्युनिस्ट भी मैदान मे आना चाहते हैं पर उनकी दाल गलने वाली नही है। एकदम नास्तिक है, विधर्मी, इनका भी कोई दीन ईमान है। इनके हाथ मे राज आ गया ता सब चौपट हा जायेगा। धरम करम नष्ट कर देंगे। नही देना है वोट रूसी पिट्ठुओं को। हिन्दू महासभा ने दो तीन सन्यासियो को नीममार से बुला लिया है, दिन रात धम प्रचार कर रहे हैं, और अधम के नाश का अलख जगा रहे हैं। अब देखें, कैसे कम्युनिस्ट पर जमाते हैं।

मुसलमान भाई एकदम चुप हैं। पाकिस्तान बन गया, अब उनका बोलना खतरे से खाली नही। पालिटिक्स लडानी है तो गुपचुप घात करो, नही तो रगडा पड जायेगा। वसे सारी-की-सारी राष्ट्रीय पार्टियाँ मुसलमान वोट अपनी ओर करने मे जुटी हुई हैं। जनसघी भाई खुश हैं। मुसलमानो के वोट बटेंगे तो वे हिन्दू वोट से जीत जायेंगे।

असली टक्कर कांग्रेस और सोशलिस्ट पार्टी म है। महात्मा गाँधी, ज्वाहरलाल नेहरू, और गोविन्द वल्लभ पत के फोटो वाले कलेण्डर दुकानो पर टँगे दिखाई देने लगे। इसके जवाब मे रातो रात लखनऊ से आचाय नरेन्द्र देव, जयप्रकाश की फोटो वाले कलेण्डर भी आ गये। महाराणा प्रताप, शिवाजी के साथ श्यामाप्रसाद मुकर्जी के फोटो वाले कलेण्डर भी दुकानो मे लग गये।

मुनिस्पैल्टी का चुनाव है। ज्यादा बात कस्बे मे सुधार को लेकर हो रही है। नाली पक्की कौन बनवायेगा। सडकें ठीक कौन करायेगा, इक्कों

और तांगो पर टोक्न की फीस कौन कम करायेगा। मच्छर मार दवाई कौन ज्यादा छिडकवायेगा। राशन की दुकान कौन ज्यादा खुलवायेगा। सब्जी मार्केट कौन पक्की बनवायगा। और सबसे बडा मुद्दा है कि वर्षों से स्टेशन से कस्बे तक की सडक जो टूटी पडी है उसे कौन ठीक करायगा,। अब तक मुनिस्पैल्टी म काम ही क्या हुआ है, कुओ में लाल दवा तक तो छिड़की नही गई अब मुनिस्पल्टी मे उसे चुनो जो जनता की सच्चे मन से सेवा करे।

'हम करेंगे सेवा हम।" तखतमल ने छाती ठोककर कहा, 'बाबू जयप्रकाश नारायण के जो आदर्श हैं वही हमारे है, हम गद्दी के भूखे नही हैं, हम सेवा करना चाहते हैं। इसी कस्बे मे पदा हुए हैं, इसी कस्बे मे अपने प्राण त्यागेंगे। शेखूपुरा का बच्चा-बच्चा जानता है कि हम समाज वादी आन्दोलन के अगुआ रहे है। आचाय नरेन्द्रदेव जी के साथ हमने लखनऊ मे गिरफ्तारी भी दी है। सब आदमियो को सुख मिले, सब भाई रोजी रोटी पायें, यही हमारा नारा है, बोलो सोशलिस्ट पार्टी जिन्दाबाद।"

तखतमल ने सफेद गाँधी टोपी लाल रग मे रगकर सर पर ओढ ली।' सोशलिस्टो की पहली पहचान है लाल टोपी। फिर नेता का रोब झाडने के लिए अपने साथ हर समय आठ दस आदमियो को साथ रखते है। इन सबके सर पर भी लाल टोपी रहने लगी। सडक पर जब लाल टोपी लगाये झुण्ड का झुण्ड चलता तो बहार आ जाती। माधवप्रसाद ने देखा तो कविताई कर दी, "वाह वाह लाली मेरे लाल की जित देखू उत लाल। अच्छा नक्शा खेंच दिया तखतमल। धन्य हो तुम।"

"पण्डित जी, यह कविताई का वखत नही है, सोच विचार का वखत है। खूब सोच विचारकर वोट देना, बस्ती के भाग का फैसला है। साशलिस्ट पार्टी ही है जो आदमी को सही इसाफ दिला सकती है।"

"पर हमें तो ऐसा कुछ दिखाई नही दिया।" माधवप्रसाद ने अपनी दाढी पर हाथ फेरते हुए कहा।

"आप देखना चाहोगे तब न दिखाई देगा। आखो पर पट्टी बाँध लोगे तो क्या दिखाई देगा।" तखतमल ने चिढकर कहा।

"हमने आँखो पर पट्टी कहाँ बाँधी है, हमे तो लाल रग खूब दिखाई दे रहा है।" माधवप्रसाद ने हँसकर कहा।

"बस तब फिर समझ लो कल्याण हो गया। लाल रग सबकी खुश हाली लायेगा।"

तखतमल अपने झुण्ड के साथ आगे बढ गये।

लाला खूबचन्द मण्डी के प्रेसिडेन्ट हैं, सारे दुकानदार उनकी मुट्ठी में हैं कपडे की फेरी लगाने वाले तो उन्ही के बल पर जीते हैं अगर उधार कपडा न दें तो भूखा मर जाये। उन्होने सबको पीली टोपी फ्री फण्ड में द दी। जीत गये तो सबको एक एक पीला कुर्ता भी सिला देने का वायदा कर दिया। हैण्ड बिल छपवाकर पकड़ा दिया, जिसमे हाथ जोडे विनम्रता की मूर्ति वाला फोटो उनका छपा हुआ था। जिस गली मुहल्ले मे जाओ, हैण्डबिल बाँट दो। कस्बे म जनसघ के मर्द सर्वा हैं। उन्ही के बल पर पार्टी चल रही है, अब ऐसे मे मुनिस्पैल्टी में जनसघ को अगर बहुमत न मिला ता नाक कट जायेगी। साम दाम दण्ड भेद सभी से काम लेना पडेगा।

कस्बे में काग्रेस के लीडर हैं डा० नौबतराय एम० बी० बी० एस०। किस बाड से कौन खडा हो इसकी लिस्ट उन्ह ही तैयार करनी है। सारा दिन मरीज़ो से ज्यादा काग्रेस पार्टी का टिकट माँगने वालो की भीड लगी रहती है। और क्यो न भीड लगेगी, आखिर को हुकूमत किसकी है काग्रेस की न। फिर जो काग्रेस की तरफ से खडा होगा, वह ता जीतगा ही।

रामस्वरूप इधर नौबतराय की दुकान पर बहुत जाने लग हैं। नौबतराय स शकरलाल की शुरू से ही बहसबाजी चलती रही है। दोना एक-दूसरे को नीचा दिखाने मे जुटे रहते हैं। वसे ऊपर से बडे प्रेम भाव से मिलते, पर अन्दर ही-अन्दर एक-दूसरे की काट बाजी करत रहते। अब अगर शकरलाल के भाई नौबतराय की दुकान पर सुबह शाम चक्कर लगायें तो शक शुबाह ता पैदा होगा ही। एक-आध ने दबी जबान से पूछ ही लिया,

लम्बरदार, तबीयत तो ठीक है न।"

"तबीयत का क्या है।" रामस्वरूप ने खासकर गला साफ किया। र सफाई देते हुए बोले, "खून की बहुत कमी हो गई है, दवाई ले रहे ।"

पर असलियत तो एक हफ्ते बाद खुली। अपने वाड से रामस्वरूप ग्रेस के टिकट से खडे हो रहे हैं। मुनिस्पैल्टी मे मेम्बर हो गये तो वारह कुछ न कुछ तो भला हो ही जायेगा।

ज की तरह शाम होते ही बगिया मे महफिल जुट गई। वही चुनाव र्चा चल रही थी। राजनीतिक पार्टियो से ज्यादा कस्बे के कायकर्ताओ । बखिया उधेडी जा रही थी। लेकिन शकरलाल कोई खास उत्साह नही खा रहे थे। लगता था जसे उनके अन्दर ही-अन्दर कुछ घुट-सा रहा ।

माधवप्रसाद अपने साथ, मेहदीहसन, लल्लनसिंह और वैद्य अयोध्या-साद को लिए बगिया मे आ गये। शकरलाल ने सभी का स्वागत किया। रिया जल्दी से कमरे से मूढे उठा लाया। सब लोग शकरलाल को घेरकर ठ गये।

"वद्य जी आज आपको इधर का रास्ता कसे याद आ गया, क्या ापको भी शतरज का चस्का लग गया है।' शकरलाल ने हँसकर पूछा।

"लो जी लम्बरदार, आपने यह खूब कही। हम तो आपको बराबर ाद करते रहते हैं। यह हेडमास्टर गवाह हैं, बराबर आपकी बात हम नसे करते हैं पर सुबह शाम दुकान पर वखत कट जाता है, रात को घर : निकलना नही होता सो इसलिए नही आ पाते।"

'सो तो ठीक है पर कभी-कभी आ जाया करो। मिल-बैठकर जी ुश हो जाता है।" शकरलाल प्रसन्न हो गये।

माधवप्रसाद ने खासकर गला साफ किया, फिर बोले, "आप सर-ारी पार्टी के तरफदार कब से हो गये।"

"कौन हम ," शकरलाल ने आश्चर्य से माधवप्रसाद की तरफ देखा, "हम साली सरकारी पार्टी के पास क्यो जायें ? हमारी क्या अटकी है जो हम सरकारी पार्टी का प्रचार करें।"

"क्यो, आपने रामस्वरूप को काग्रेस के टिकट पर खड़ा नही किया है ?"

शकरलाल का चेहरा उतर गया। उन्हें यह मालूम हो गया था, कि रामस्वरूप काग्रेस पार्टी के टिकट पर खड़े हो रहे हैं। जरूर खड़े हो, कोई रोक-टोक तो है नही। पर एक बार राय तो ले ली होती। उनके पुरान दुश्मन नौबतराय के खेमे मे चुपचाप शामिल हो गए। भाई होके धोखा दिया। बहुत चोट पहुँची थी शकरलाल के मन को। किसी तरह अपने को सम्हालकर बोले, 'हम कौन होते हैं किसी को खड़ा करने वाले और बैठाने वाले। सब अपने मन के मालिक हैं। जिस पार्टी से, चाहे खड़े हो।'

"यह हुई न बात।" माधवप्रसाद तमककर बोले, "हम पहले ही कहते थे, लम्बरदार कभी भी सरकारी पार्टी के पिछलगू नही हो सकते, आ गई न सच्चाई सामने।"

"देखो हम तो दो टूक बात करते हैं।" शकरलाल को गुस्सा आ गया, "जिन साले के मन मे कोई लालच हो, वह जाये सरकार के पर पकड़ने। हम तो उसूल के आदमी हैं। सालो से खद्दर पहन रहे हैं गांधी जी के भक्त हैं, पर साथ ही पक्के कानून को मनवाने वाले। हमे लल्लो-चप्पो नही आती। किसी के सामने इसलिए नही झुक सकते कि थोड़ा-सा लाभ मिले। हम चाहते तो काग्रेस पार्टी मे शामिल हो जाते और मजे करते। पर नही, हम आजाद तबीयत के आदमी हैं, आजादी से काम करत आए हैं, आगे भी आजादी से ही काम करेंगे।'

'बहुत खूब ।" माधवप्रसाद खिल उठे, ' आज तो आजाद आदमी ही जनता की सेवा कर सकता है। पार्टीबाज तो पार्टी अनुशासन क नाम पर अपने पैरों मे बेड़ियाँ डाल लेता है। वायदे तो बहुत करत हैं, पर काम वही करेंगे जो पार्टी कहेगी। और पार्टी वह कहेगी, जिसमे पार्टी का लाभ हो जनता जाए भाड़ मे।"

वैद्य अयोध्यानाथ ने माधवप्रसा " को आगे बोलने से रोका, और कहा, "लम्बरदार आपको शायद मालूम नही है। यह मुनिस्पैल्टी का चुनाव बहुत काँटे का हो रहा है। इसमें कस्बे के भाग्य का फैसला होने जा रहा है। अगर अच्छा आदमी चुना जायेगा तो कस्बे के दिन फिर जाएगे, नही तो सब चौपट हो जाएगा। नौबतराय मुनिस्पैल्टी के चेयरमैन पद के लिए खडे हो रहे हैं। अब पूछो भला अब तक कौन सी भलाई का काम किया है नौबतराय ने, जो अब चेयरमैन बनके करेंगे।'

"एँऽ ऽ ," शकरलाल चौंक गए, "नौबतराय चेयरमैन के लिए खडे हो रहे हैं ?"

'और क्या! आप तो यहाँ हुक्का गुडगुडा रहे हो, वहा सब चौपट हुआ जा रहा है।" माधवप्रसाद त्रिपाठी से नही रहा गया, बोल ही पडे।

शकरलाल सोच मे पड गये। मन-ही-मन इस खबर से बहुत पीडित हुए। नौबतराय चेयरमैन बनेगा, यह तो अंधेर हो गया। यह नही देखा जाएगा। लेकिन सीधे-सीधे अपने मन की बात कह नही सकते। घुमा फिराकर ही कहना होगा "अब हम क्या कहें आप लोग सब कस्बे की भलाई के बारे मे मिल बैठकर तय करो। हमसे जो होगा करेंगे। जिस कहोगे अपना समथन देंगे, अपना वोट देंगे।'

"हम आपका सिर्फ वोट ही नहीं चाहिए लम्बरदार सिर्फ वोट से काम नही चलेगा, हमे तो मजबूत कैंडीडेट चाहिए, कैंडीडेट और वह आप हो। हम आपको चेयरमैन के लिए खडा करेंगे।' वैद्य अयोध्यानाथ ने अपने शब्दो पर जोर देकर कहा।

"हमे !" शकरलाल का आश्चय से मुह खुला रह गया, "अरे नही भाई मजाक न करो। हम कोई नेता वेता तो है नही, हम तो सीधे सादे आदमी हैं, नेम धरम से अपनी जिन्दगी बिता रहे हैं, बस।' शकरलाल मन ही मन फूल के कुप्पा हो गये। उनका चेहरा दमकने लगा, जी मे आया उठकर वैद्य अयोध्यानाथ को गले लगा लें। कब कौन आदमी काम की बात कहेगा, यह पहले से पता नही चलता। वैद्य जी आदमी काम के हैं, तभी न इतने पते की बात कह रहे हैं। पर नहीं इस तरह उतावली दिखाना ठीक नही। थोडी गम्भीरता दिखानी चाहिए। शकरलाल

फिर हुक्का गुड़गुड़ाने लगे।

"यही तो हम कह रहे हैं। कस्बे को ऐसा चेयरमैन चाहिए जो नम-धरम का हो, सीधा सच्चा हो, पर साथ ही उसूल का पक्का और जनता के हक के लिए लड़ने वाला। यह सब गुण आपमें हैं लम्बरदार।" एक क्षण के लिए वैद्य जी रुके, फिर बोले, "नौबतराय से टक्कर लेने वाला और कौन है कस्बे में। अगर आप हिम्मत नहीं दिखाओगे तो वह निर्विरोध चुन जाएँगे, सोच लो।

बस यहीं पर बात खतम हो गई। शक्करलाल के तन-बदन में आग लग गई। नौबतराय को निर्विरोध चुना जाए, यह वह कभी नहीं होने देंगे। ऐसी टक्कर देंगे कि बेटा को छठी का दूध याद आ जाएगा, ऊँचे स्वर में बोले, "हिम्मत की बात मत करो वैद्य जी, हम अपनी पर आ जाएँगे तो शेर का सीना फाड़कर रख देंगे, नौबतराय क्या चीज है।"

"धन्य हो लम्बरदार तुम धन्य हो तुमने जनता की लाज रख ली।" माधवप्रसाद ने पहला नारा लगाया।

सहसा शक्करलाल की नजर पीछे बैठे मेहदीहसन पर गई, "क्या बात है मेहदीहसन, तुम बिलकुल खामोश बैठे हो।"

"हमारी तकदीर में तो खामोश रहना ही बदा है लम्बरदार। सर-कारी मुलाजिम जो ठहरे। चाहकर भी कुछ बोल नहीं सकते। सरकारी नौकरी ने हाथ बांध रखे हैं। पर इतना वायदा करते हैं, कि अन्दर ही-अन्दर हम आपके लिए जी जान एक कर देंगे। मुसलमान भाइयों के वोट आपकी झोली में लाकर डाल देंगे, बस।"

शक्करलाल जोरों से हँसे। एकदम खुश हो गए, दोनों हाथ ऊपर उठा कर बोले, "जब आप सब लोग कह रहे हैं तो फिर हमें क्या इंकार हो सकता है। हो जाएँ दो-दो हाथ। नौबतराय भी क्या याद करेंगे किसी से पाला पड़ा है।'

"आजाद उम्मीदवार शक्करलाल जिन्दाबाद।" नत्थूसिंह जोरों से चिल्लाए।

माधवप्रसाद त्रिपाठी ने नत्थूसिंह को चुप कराते हुए कहा, "ऐ ई नत्थूसिंह अभी चीख पुकार मत मचाओ। पहले काम कर जाने

दो, फिर गना फाडना। यह राजनीति है तुम इसके दाव पेच नही जानते। जब तक चुनाव चिह्न नही मिल जाता, एकदम चुप रहना होगा। पेट की बात बाहर न आए। दुश्मन चौकन्ना हो जाता है।"

माधवप्रसाद त्रिपाठी की बात मे दम था। सब चुप हो गये। लेकिन शकरलाल अपनी खुशी को नही रोक पा रहे है। इतना चाहती है पब्लिक उन्हें कमाल हो गया। अब वह भी पब्लिक के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर देंगे।

"तुम नत्थूसिंह खडे खडे मुह क्या देख रह हो जाओ, भाग के पल्टू हलवाई के यहा से दो किलो लडडू ले आओ, सब भाइयो का मुह मीठा कराओ।"

मालिक का हुकुम पाकर नत्थूसिंह लपकते हुए लडडू लेने चल दिए।

उसी रात शकरलाल ने श्रीप्रकाश को पत्र लिखवाया।

चिरजीव श्रीप्रकाश सदा प्रसन्न रहो, आगे समाचार यह है कि हम मुनिस्पल्टी के चुनाव मे चेयरमन के लिए खडे हो रहे हैं। इसके लिए तैयारी करनी है बहुत बडा काम है। तुमसे राय लेनी है, इसलिए तुरन्त आ जाओ। हमारी जिन्दगी की यह आखिरी इच्छा है कि चेयरमैन बनकर कस्बे की सेवा करें। हम तुम्हारी राह देख रहे हैं। तुम्हारा चाचा, शकरनाल।"

मगर समस्या यह थी कि श्रीप्रकाश को आने म हफ्ता तो लग ही जाएगा, और इधर फाम भरने की तिथि पास आ गई है। जमानत के लिए भी रुपया चाहिए, और भी काम है। इस सबका प्रबन्ध तो होना ही है। अब पीछे तो पर हटाया नही जा सकता, आगे ही बढना होगा।

शकरलाल ने कुछ सोचा, फिर गले मे पडी दो तोले की सोने की चेन उतारकर नत्थूसिंह को देते हुए बोले, "आज ही हरदोई चले जाओ। इसे बेचकर रुपया ले आओ। और हा, पर्ची बनवाए लाना।

नत्थूसिंह मन-ही मन प्रसन्न हो गए। एक नही हजार पर्ची बनवा

देंगे, पर्चा बनवाने म क्या लगता है। उससे अपना कमीशन तो कम हो नही जाता।

बगिया म खूब रौनक हो रही है। सुबह से शाम तक लोग आ-जा रहे हैं। कोई बधाई द रहा है, तो कोई शकरलाल के गुणो का बखान कर रहा है। इस बात पर सभी एक मत थे कि शकरलाल जसा जवामद नही देखा। एकदम सीधे अखाडे मे नौबतराय को ललकार लिया है।

फाम भरने का दिन आ गया। एक दिन पहले से ही तैयारी शुरू हा गई। अचकन पर अच्छी तरह प्रेस कराई गई, जूतो का पालिश से चमकाया गया। माधवप्रसाद त्रिपाठी, वैद्य जी, नत्थूसिंह, हरदोई से आया मस्तराम पहलवान, भगनू पण्डत, मातादीन, घूरा, हरिया। सब नए नए कपडे पहने तैयार हैं। जिनके पास कपडे थे उन्होन धो धाकर पहा लिए जिनके पास नही थे, उन्ह दो दिन म शकरलाल ने खादी भण्डार से दिला दिये। एक इक्के और एक तांगे पर सब लदकर चल दिए। पीछे-पीछे सात साइकिलो पर कस्बे के भगडी और गजडी चल रहे थे। आखिर जुए के अड्डे पर रोज साथ बैठते हैं, अब अपने लम्बरदार क लिए जान लडा देंगे।

माधवप्रसाद ने सब कुछ पहले ही समझ लिया था, एकदम चौचक फाम भरा दिया। कही कोई गलती नही।

फाम भरते ही नत्थूसिंह ने नारा लगा दिया, "आजाद उम्मीदवार शकरलाल जिन्दाबाद।" दूसरे आदमियो ने भी नत्थूसिंह का साथ दिया।

नत्थूसिंह की राय थी, इक्के पर अकेले शकरलाल बैठें, बाकी सब पैदल जलूस की शक्ल मे चलें। बडे बाजार म से नारे लगाते हुए चलना चाहिए। लेकिन शकरलाल ने एकदम नामजूर कर दिया। "तमाशा मत बनाओ नत्थूसिंह, सीधे बगिया चलो। हम चुनाव लड रहे है, कोई मदारी का तमाशा नही दिखा रह हैं।"

शकरलाल को यह बहुत अटपटा लगता कि नारा लगाते हुए छोटे से छाटा आदमी उनका सीधे नाम लेता है। लम्बरदार शब्द भी नही लगाता। आज तक किसी की उनका सीधे नाम लने की हिम्मत नहीं हुइ थी। अब जिसे देखा शकरलाल शकरलाल चिल्ला रहा है। पर किया क्या

जाए। यह चुनाव है। इसमे सब चलता है। वोट लेने हैं तो सब सहना होगा।

रात की गाड़ी से श्रीप्रकाश आ गए। बहुत उत्साह मे थे। उन्हे देखकर शंकरलाल की बाँछें खिल गयी, "भइया हम चुनाव मे खड़े हो गए हैं।" शंकरलाल ने हँसकर कहा, "हमने सोचा, जिन्दगी मे यह अरमान क्यो रह जाए कि चुनाव नही लड़ा।"

"ठीक है।" श्रीप्रकाश ने समर्थन किया, "आप क्या किसी से कम हो।" श्रीप्रकाश के अन्दर सोए जमीदार के सस्कार जाग उठे।

शंकरलाल ने तप्त होकर श्रीप्रकाश की ओर देखा। जीते रहो बेटा, जी खुश कर दिया। औलाद हो तो तुम्हारी तरह।

"छोटे चाचा और आप मिलकर चुनाव लड़ते तो ज्यादा अच्छा था।" श्रीप्रकाश ने कहा।

"हमसे पूछा तक नही रामस्वरूप ने। बस नौबतराय के सिखाए पढाए मे आ गए। अरे, गैर से राय ली, जरा अपनो से तो राय ले लेत। हम मदान म आते ही नहीं, रामस्वरूप को चेयरमैन बनाते मुनिस्पैल्टी का।"

"खैर, अब तो फाम भर गया है अब तो लड़ना ही है।" श्रीप्रकाश ने दिलासा दिया, 'उनके पास तो कांग्रेस पार्टी का जोर है, आप अकेले दम लड रहे हो।"

"अकेल काहे है।' शंकरलाल ताव खा गए, "अरे हम पब्लिक के बल पर खड़े हुए है, पब्लिक हमारा साथ द रही है। देखते नही, यहाँ बगिया म सुबह से शाम तक मेला लगा रहता है।'

श्रीप्रकाश कुछ कहना चाहते थे, लेकिन फिर चुप लगा गए। साफ कह देंग तो चाचा जी को दुख होगा। उनका देखते हुए तो कोई भला आदमी अभी तक बगिया मे आया नही। वही गजडी और भगडी, जुए के अड्डे के साथी इधर उधर घूम रहे हैं। या फिर बस्ती के चापलूस लोग

चक्कर लगा रहे हैं। इनके बल पर तो चुनाव जीता नहीं जा सकता।

"आप चाचा जी, बस्ती के दो एक चक्कर लगाओ, ताकि वोट पक्के हो जाएँ।' श्रीप्रकाश ने सुझाया।

"भइया, यह तो हमसे होगा नहीं कि घर घर जाकर हाथ जोड़कर वोट मांगें। भिखमंगे का काम तो हमें सिखाओ नहीं।" शंकरलाल एकदम उखड़ गए।

"आप कैसी बात करते हैं चाचा जी।" श्रीप्रकाश को भी ताव आ गया। 'प्रजातन्त्र में वोट माँगना तो कैंडीडेट का हक भी है और फर्ज भी। बड़े बड़े नेता चुनाव में यह सब करते हैं। अगर ऐसा ही आपका प्रण है, तो चुनाव में खड़े नहीं होते।"

'अरे चुनाव में खड़े होने का यह मतलब नहीं है कि हम भंगी टोला में जाकर वोट माँगें। अरे देखते हैं कौन साला वोट नहीं देगा, डण्डा नहीं पकड़ेंगे हम।"

"चाचा जी, आप चुनाव लड़ लिए।" श्रीप्रकाश ने हाथ जोड़कर माथे से लगाते हुए कहा, "प्रजातन्त्र में तो आपको सभी से वोट माँगना होगा। भंगी टोला में नौबतराय वोट माँगने पहुँचेंगे, अपनी सभा करेंगे, अपना कार्यक्रम बताएँगे, चुने जाने पर क्या-क्या काम करेंगे, यह सब समझाएँगे, इधर आप यहाँ बगिया में बैठे-बैठे वोट पा लेंगे। हमारी समझ में तो यह हिसाब आता नहीं।'

शंकरलाल सोच में पड़ गए। आज तक तो उन्होंने सिर्फ लोगों को दिया ही है, ईश्वर की दया से कुछ माँगने की नौबत नहीं आई, अब यह अच्छा धर्मसंकट आ पड़ा। वोट माँगना पड़ेगा, यह तो सोचा ही नहीं था।

अपने चाचा को दुविधा में पड़ा देखकर श्रीप्रकाश ने समझाने की कोशिश की, "इसमें इतना परेशान होने की क्या जरूरत है। वोट माँगने का मतलब यह तो नहीं कि आप एक एक के आगे हाथ जोड़ो, घिघियाओ। वोट माँगना भी एक कला है। इसमें थोड़ा दिमाग लगाना पड़ता है। सबसे पहले तो आप जो बस्ती के खास खास लोग हैं, जैसे रायसाहब, दोरखाँ साहब, दूसरे जमींदार, ताल्लुकेदार, उन सबसे सम्पर्क कीजिए,

ताकि वह अपने आदमियो को आपके फेवर म वोट डालने को कहे। फिर मुहल्ले मुहल्ले मे सभा कीजिए। सभा के आखिर मे वोट देन की अपील कीजिए । यह कोई ऐसा काम तो है नही कि माथा पकड के बैठा जाय। जब चुनाव मे खडे हुए है तो थाडी बहुत भाग-दौड ता करनी ही पडेगी।"

हम भाग दौड से नही घबराते, बस हम तो किसी छोटे आदमी के मुह नही लगना चाहते।" शकरलाल ने कहा, "तुम कहते हो ता चुनाव सभा कर लेंगे, उसमे वोट देने के लिए भी कह देंगे। पर चुनाव सभा होती कैसे है यह भी तो पता चले। हिया तो ससुर कोई तजुर्बेकार आदमी भी नही है जा कुछ बताये।"

"आप चिन्ता न करो। सब हो जायगा। मैं कल ही रोहित और विजय को यहाँ भेज देता हूँ। रोहित एलेक्शन का सब काम कर लेगा। उसने कालेज का एलेक्शन लडा है। उसे सारे दाँव-पेंच आते ह, सब हो जाएगा।"

शकरलाल की आखें खुशी से चमकने लगी, "फिर ता ठीक है, ऐसा बन्दा ही तो चाहिए जो सब जानता हो, जाते ही भेज देना। और हाँ, पोस्टरा का क्या होगा और वह क्या कहते हैं, हाथ मे देने वाले पर्चे भी चाहिए।

"मैं हैण्डबिल और पोस्टर दोना ही छपवाकर भेजे देता हूँ।" श्रीप्रकाश ने धीरज बँधाया, 'मैं तो खुद रहता, मगर इस समय अपने काम से बनारस मे ही रहना जरूरी हो गया है।'

चलते समय श्रीप्रकाश ने सौ का नोट चाचा जी को दिया, "आपको इस समय चुनाव मे जरूरत होगी, रख लीजिए।"

और समय हाता तो शकरलाल श्रीप्रकाश से रुपया कभी न लेत। पर यह तो चुनाव का मामला है। न जान कब क्या काम पड जाए। साला खर्चा बहुत होता है। चुपचाप रुपए लेकर अटी मे लगा लिए।

चार दिन बाद ही रोहित और विजय गट्ठर भर पोस्टर और हैण्डबिल

लिए आ पहुचे। बगिया मे महफिल जमी हुई थी। चुनाव मे जो दूसरे लाग खडे थे उनकी जात को लेकर खूब गरियाया जा रहा था, लेकिन शकरलाल कुछ चिन्ता मे थे। अब विजय और रोहित का देखा तो एकदम प्रसन्न हो गए।

छपकर आई सामग्री को देखने के लिए दरबारी लोग टूट पडे। पोस्टर की एक-एक खूबी का बखान होने लगा। पोस्टर मे शकरलाल का मुस्कराते हुए बडा-सा फोटो भी छपा था। सब उसी की तारीफ करने लगे

'वाह क्या फोटो छपा है एकदम फस्ट क्लास। लम्बरदार जच रहे हैं।"

हैंडबिल भी खूब जाँचा-परखा गया, लेकिन प्रभावित करने वाली चीज तो थी कविता। श्रीप्रकाश ने चुनाव पर एक लम्बी कविता बनवा कर अलग से छपवाई थी। इसम चुनाव की महत्ता, शकरलाल की वश-परम्परा, सेवा भाव, मानवता और देशभक्ति के साथ ही बस्ती की उन्नति का भाव भरा हुआ था। कविता का प्रारम्भ इस तरह होता था—

विगुल बजा है अब चुनाव का, हमको अलख जगाना है।
बस्ती को नवजीवन देता, यह सन्देश सुनाना है।
शकरलाल चुनाव लडइया, तीर कमान निशाना है।
जनता की सेवा मे अपना, तन-मन धन लुटाना है॥

कई लोग कविता का पर्चा लेकर बगिया मे इधर उधर फैल गए। बडे मनोयोग से टहल टहलकर कविता का पाठ कर रहे हैं। एक एक लाइन को तीन तीन बार दोहरा रहे हैं चुनाव सभा मे मिल जुलकर गाना होगा। वैसे भी,कविता बडा आनन्द दे रही है, आनन्द ही नही, उत्साह भी पैदा कर रही है पहली ही लाइन कितनी जोरदार है, बिगुल बज गया अब चुनाव का जरूर बजा है, जिसे सुनाई न दे वह सात जनम का बहरा है।

'अरे यह सब क्या कविता लिए डोल रहे हैं।" शकरलाल को गुस्सा आ गया,

"प्रहलाद कहाँ हैं प्रहलाद को कविता याद करनी है चुनाव सभा

में इकतारे पर इसका गाना होगा।"

"मालिक, प्रहलाद अब अपना आदमी नहीं रहा।" मातादीन ने सर झुकाकर कहा।

"ऐं क्या कहा!" आश्चर्य से शंकरलाल ने मातादीन की ओर देखा।

"हाँ मालिक, नौबतराय ने प्रहलाद को दो रुपए रोज पर अपनी चुनाव सभा में गाना गाने को रख लिया, खाना-नाश्ता अलग से।"

"वाह भाई बहुत खूब।" शंकरलाल ने अपने नथुनों से फुफकार छोड़ी। "इसे कहते हैं कलजुग। कोई दीन-ईमान न रहा। सारी जिन्दगी हमारा नमक खाया, अब जब मौका आया नमक हलाली का तो नौबतराय के यहाँ जाकर नौकरी कर ली। कोई बात नहीं नरक-स्वर्ग सब यहीं पर है हमारा खाया नमक फूट-फूटकर निकलेगा।" शंकरलाल ने नत्थूसिंह की तरफ देखा, "नत्थूसिंह, तुम एगवा के झम्मन कीर्तनियाँ को बुलाओ। वह अच्छा गवैया है उसी से गवायेंगे।"

नत्थूसिंह ने सर हिलाकर हामी भरी।

अचानक शंकरलाल को कुछ याद आ गया। हुक्के की नली एक ओर करके उठ खड़े हुए विजय और रोहित से बोले, "जरा तुम दोनों इधर आओ।"

कुएँ के पास कोने में पहुँचकर शंकरलाल धीरे से बोले, "कुछ रुपया भी भेजा है श्रीप्रकाश ने?"

"नहीं तो।" विजय और रोहित ने सर हिला दिया।

सोच में पड़ गये शंकरलाल। हाथ [illegible] है। [illegible] पर भी [illegible] ठीक से नहीं निकल रही है। चुनाव [illegible] है, पानी की तरह रुपया बह रहा है। जरा-जरा-सी बात के लिए देना चाहिए। कोई इन्तजाम तो करना ही होगा।

नत्थूसिंह को शंकरलाल [illegible] हुए समस्या हल कर दी। [illegible] सीताराम दलाल के यहाँ [illegible] लिया गया। [illegible]

[illegible]

शकरलाल इत्मीनान से हुक्के की नली मुँह मे लगाकर हुक्का गुडगुडाने लगे।

रोहित को जब से यह पता चला कि उसे चुनाव प्रचार के लिए जाना है, तभी से मन म अपार उत्साह भर गया। अब मौका मिला है कुछ कर दिखाने का। कालेज मे एक चुनाव लड चुका है। भाषण कला पर अच्छी पकड है। वैसे भी इण्टर तक सिविक्स पढी है और बी० ए० म पालिटिकल साइस एक विषय है। राजनीति मे गहरी रुचि है। सारी राजनीतिक पार्टियो की कुण्डली मुहू-जबानी रटी हुई है। फिर भी एतियाद के लिए एक दस पेज की स्पीच तैयार कर ली। आजाद उम्मीदवार के पक्ष म बोलना होगा। सारी राजनीतिक पार्टियो को एकदम कण्डम करना है।

बहुत अकड के साथ बनारस से शेखूपुरा के लिए प्रस्थान किया था। जसे कोई दिग्विजय के लिए निकला हो। उम्मीद थी स्टेशन पर कोई लेने आयेगा, फिर जाते ही खातिर-तव्वजो शुरू हो जायेगी। पर यहाँ तो 'घर की मुर्गी दाल बराबर' वाली कहावत सिद्ध हो रही है। शकरलाल अपने दरबारियो मे मस्त हैं, और दरबारी जो हजूरी म। चुनाव के नाम पर बस सिफ बढ-चढकर बात हो रही है और डीगें हाँकी जा रही हैं कही कोई ठोस तैयारी नजर नही आती।

"यह क्या मामा जी आपने न तो बैनर बनवाया, न ही अभी तक लाउडस्पीकर का इतजाम हुआ है। यह भी नही कि अपने चुनाव चिह्न को बनवाकर दो-चार जगह बस्ती मे टँगवा दें।"

"अरे तुम यह सब करो। इसलिए तो तुम्हें बुलवाया है।" शकरलाल ने हँसकर कहा।

"हम करें कसे, हम सामान भी ता चाहिए।" रोहित न झुझलाकर कहा।

"बालो, क्या सामान चाहिए अभी मगवाए देते है।"

"दो तो बडे बाँस चाहिए, जिनको चीरकर हम खपच्चियो का तीर-

कमान बनायेंगे, और जगह जगह टाँग देंगे। दो गज लम्बे सफेद कपड़े के कई टुकड़े चाहिए, काला लाल रग और कूची भी, आपके नाम के बैनर बनाकर टाँग देंगे। एक इक्का और लाउडस्पीकर चाहिए, बस्ती मे घूम-घूमकर आपका चुनाव प्रचार करेंगे।'

शकरलाल ने मातादीन की ओर देखा, "मातादीन तुम अभी बाजार जाओ, रग, कूची, कपडा, बाँस और जो भी ये बताएँ, लाए के दे दो। फिर नत्थूसिंह की तरफ देखकर बोले, और वह "लाउडस्पीकर का क्या हुआ। तुम तो कहते थे दो दिन मे आ जाएगा, आज तो तीसरा दिन हो रहा है।"

"मालिक, सूचना आ गई है। आज शाम तक हरदोई से आदमी लाउडस्पीकर लेकर आ रहा है। कल मे चुनाव प्रचार शुरू कर दें। पुत्तन इक्के वाले को पहले ही कह दिया है। पूरे चुनाव भर बगिया के बाहर इक्का खडा रहेगा।"

सुबह का टाइम था। बाजार अभी खुल ही रहा था कि मातादीन सामान लेने पहुच गए, पहले रग कूची खरीदी, फिर दो दो गज लम्बे सफेद मारकीन के टुकडे थान से फडवा लिए, उनको लपेटकर बगल मे दबा लिया, और बाँस लेने बडे बाजार के छोर पर पहुँच गए।

"दो बाँस देना भाई। यही दो-ढाई गज लम्बे हो, ज्यादा मजबूत नही चाहिए।" मातादीन ने बगल म दबा कपडा वही दूकान के पटरे पर रख-कर बीड़ी सुलगाने के लिए जेब मे बीड़ी के बण्डल को टटोला।

"क्या पण्डित जी, कोई गमी हो गई है घर मे।" दुकानदार मातादीन को जानता है जब तब खाट बुनने की मूज यही मे ले जाते। जब मातादीन के पास कोई काम नही होता तो खाट बुनने का काम ही शुरू कर देते। रुपया धेली हाथ आ ही जाता। अब सुबह-सुबह गमी की बात सुनी तो माथा एकदम गरम हो गया "हमारे घर गमी क्यो हो, हमारे दुश्मनो के यहा गमी हो। तुम्हें ससुर सुबह-सुबह गमी दिखाई द रही है क्या कुछ नशा-पानी किए हो।'

'यह लो पण्डित जी तुम तो बिगर गए।" दुकानदार समझाते हुए बोला, "हमने देखा सफेद कपडा बगल में दबाए हो, और बास माँग रहे हो,

सो "

"ता क्या अर्थी के लिए ही बाँस चाहिए होते हैं चुनाव नहीं हो रहा है बस्ती मे।" मातादीन ने घुड़का।

"अब हम का जाने चुनाव मे बाँस भी लगते हैं, हमने सोचा।"

"रहन देओ ज्यादा सोचन को, सीधे-सीधे बाँस निकालो बस।"

मातादीन एकदम झुंझला गए। दो साल शक्कर मिल मे चौकीदारी की तो वक्त अच्छा कटा। मिल मे ताला न पड़ जाता तो अब भी वहीं होते। यहाँ लम्बरदार की चाकरी मे तो न तीन मे हैं न तेहरा मे सुबह-सुबह गमी की खबर सुन ली राम जी रक्षा करें।

चुनाव प्रचार जोरो से शुरू हो गया। पाँच बड़े-बड़े तीर कमान बाँस की खपच्चों से बनाकर खास-खास चौराहों पर टाँग दिए गए। एक तीर कमान बगिया के बड़े दरवाजे पर भी टँग दिया गया। कपड़े पर भी मोटा मोटा लिखकर टाँगा गया, 'आजाद उम्मीदवार शकरलाल को वोट दो।' खुद रोहित और विजय ने पोस्टर चिपकाने वाले को साथ लेकर सारी बस्ती मे पोस्टर चिपकवा दिए, सब तरफ शकरलाल ही शकरलाल दिखाई देने लगे वाह, चुनाव की बहार आ गई।

रोहित और विजय चुनाव की तैयारी मे दिन रात एक किए दे रहे हैं। अब कल से भाषणबाजी शुरू हो जाएगी। कुल छ दिन तो बाकी रह गए हैं वोटिंग म। पूरा जोर लगा देना है।

सुबह ही इक्का आकर बगिया के दरवाजे पर खडा हो गया। पहले इक्के पर लाउडस्पीकर बाधा गया, फिर पीछे शकरलाल का पोस्टर कपड़े पर चिपकाकर बाँधा गया। एक लाठी मे छोटा सा तीर कमान भी लटक रहा है। लो हो गई तयारी चलो चुनाव प्रचार का। रोहित और विजय इक्के की दोनो साइड पर बैठ गए। घूरा को एक लाठी लेकर इक्के के पीछे-पीछे चलने का हुकम दे दिया शकरलाल ने। चुनाव का मामला है, कोई दगा फसाद हो जाय तो घूरा सब निपटा लेगा। हर बात का ख्याल

रखना होगा ।

"शकरलाल को वोट दो, जिनका चुनाव चिह्न है तीर कमान।" विजय सिफ इतना ही लाउडस्पीकर पर बोल पाता, इससे आगे कुछ बोलन म हक्लाहट उभर आती। आगे का काम तो रोहित का करना है।

बडे बाजार के बीच चौराहे पर जाकर इक्का रोक दिया गया। रोहित इक्के पर ही खडा होकर, माइक हाथ मे लेकर बोलने लगा "भाइयो, शेखूपुरा बस्ती के मेरे प्यारे निवासियो, इस दश भारत के सच्चे नागरिको, आपकी बस्ती मे चुनाव आ गया है, मुनिस्पैल्टी का चुनाव, जिसमे आपको अपने भविष्य का तय करना है, कि आप किस तरह का जीवन जीना चाहते हैं। क्या आप तक्लीफो, मुसीबतों, कष्टो से भरा हुआ जीवन चाहते हैं, या ऐसा जीवन जिसमे खुशी हो, आराम हो, और आपका और आपके बच्चो का भविष्य उज्ज्वल हो। यही वक्त है जब आप हिम्मत और समझ बूझ से काम लेकर अपने भविष्य को बना सकते हैं।" एक मिनट के लिए रुककर रोहित ने दम लिया। फिर बोलना शुरू कर दिया।

"आज अपने देश म तरह-तरह की रग बिरगी राजनीतिक पार्टियाँ खडी हो गई हैं। यह आपकी आँखो मे चकाचौंध पैदा कर रही है। सही निणय पर प्रभाव डाल रही है, लेकिन इस प्रभाव म जो खो गया वह अपन जीवन के साथ खिलवाड करेगा।

"सबसे पहले मे शासक पार्टी को ही लेता हूँ। क्या यह वह काग्रेस है जिसे महात्मा गाँधी ने पाल पोसकर बडा किया। नही वह काग्रेस तो देश की आजादी के बाद समाप्त हो गई। खुद गाँधी जी ने कहा कि काग्रेस का काम पूरा हो गया, अब इसे भग करके नया दल बनाओ पर नेता लोग नही माने, क्योकि यह नेता, काग्रेस के नाम पर सिफ गद्दी चाहते हैं, इसीलिए काग्रेस चल रही है। अब काग्रेस मे त्याग-तप-सेवा नही, अवसरवाद भरा हुआ है। जिधर देखो लूट मची हुई है। कहने को यह काग्रेसी अपने को सेवक कहते हैं, पर सेवा क्या है यह आप देख ही रहे हैं। बढती हुई अनुशासनहीनता, रिश्वतखोरी, महगाई और जनता की खुली लूट। अब भी आप अगर काग्रेस को वोट दने की सोचते हैं तो मैं कहूँगा कि आप अपने भविष्य के साथ खिलवाड कर रहे हैं। आज फिर

आपके सामने कांग्रेस के उम्मीदवार वायदे करेंगे कि साहब हम चुनाव जीत गए तो यह कर देंगे वह कर देंगे। मैं जानना चाहता हूँ कि अभी तक क्यों नहीं किया। यहाँ से लेकर लखनऊ और दिल्ली तक तो इन्हीं सफेद टोपी वालों का राज्य छाया हुआ है। जो चाहते हैं सो करते हैं फिर जनता की भलाई का काम क्यों नहीं करते। सच्चाई यह है कि जनता की भलाई का काम यह कर ही नहीं सकते, क्योंकि इनके नेता जो लखनऊ और दिल्ली की गद्दियों पर बैठे हैं, वह सिर्फ अपनी और अपने परिवार की, भलाई मे लगे हुए हैं, वह जनता को भूल गए हैं। अब ऐसे लोग अपने स्थानीय चाकरों को क्या आदेश देंगे, आपके कस्बे की उन्नति के बारे में क्या सोचेंगे, इसे आप समझ सकते हैं। कस्बे की उन्नति के बारे में तो वही सोच सकता है जिस पर किसी पार्टी का बन्धन न हो, जो आजाद हो जैसे आजाद उम्मीदवार शंकरलाल जी जो आपकी बस्ती के पुराने बाशिन्दे हैं पुराने सेवक हैं, जिनके मन मे देश प्रेम है, जो गांधी जी के सच्चे अनुयायी हैं, जो पिछले बीस साल से खद्दर के वस्त्र पहन रहे हैं जो '

'ऐई इक्का आगे बढाओ क्या भीड़ लगा रखी है, सारा रास्ता रोक दिया ' अचानक पुलिस के एक कांस्टेबिल ने अपना डण्डा फटकारते हुए हुकुम सुनाया।

चौराहे पर काफी भीड़ हो गई थी। एक तरह से रास्ता बन्द सा हो गया। बस्ती के लिए यह एक तमाशा था। इससे पहले या तो मदारी को मजमा लगाते लोगों ने देखा था। या फिर लक्कड़ हजम-पत्थर हजम, चूरन बेचने वाले का तेज आवाज मे अपने आसपास भीड़ जुटाते लोगों ने देखा था। अब यह चुनाव के नाम पर मजमेबाजी खूब मजा दे रही थी। राह चलते लोग ही नहीं दुकानों में बैठे लोग भी निकलकर इक्के के आसपास इकट्ठी हुई भीड़ में शामिल हो गए थे।

लेकिन रोहित को अपने भाषण के बीच में पुलिस की यह दखलन्दाजी बिलकुल पसन्द नहीं आई। भारतीय पुलिस के प्रति जो संस्कारगत घृणा मन में छिपी थी, वह तेजी से उभर आई। पुलिस के जालिम कारनामों के एक नहीं अनेक किस्से रोहित को मुँह-जबानी याद हैं। माइक पर लगभग दहाड़ते हुए रोहित ने कहा, 'भाइयो, आप देख रहे हैं कि किस तरह

यह हवलदार महाशय डण्डे के जोर पर मुझे यहाँ से हटाना चाहते हैं। मैं आपको चुनाव के सम्बन्ध में आपके अधिकार की बात बता रहा हूँ, और यह नागरिक के काम में रोडा अटका रहे हैं, मेरी नागरिकता को चुनौती दे रहे हैं। यह कोई नई बात नहीं है। असल में भारत की पुलिस तो अंग्रेजों की बनाई हुई है। अंग्रेजों ने भारतीय पुलिस को ऐसे संस्कार दिये हैं कि वह जनता की रक्षक की जगह भक्षक बन जाये। स्काटलैंड की पुलिस अगर सुई भी इंग्लैंड के किसी नागरिक की सडक पर गिर जाये, तो उसे खोजकर दे देती है, पर हमारे देश की पुलिस आदमी की इज्जत और आबरू की भी रक्षा नहीं कर पाती। तारीफ तो यह है कि कांग्रेसी सरकार ने बजाये पुलिस को सुधारने के उसे और बिगाडा है, उसे अपने इस्तेमाल की चीज बना लिया है, और यह जो

रोहित का अपनी बात बीच में रोककर ही घूमकर पीछे देखना पडा क्योंकि उसके कुर्ते को पीछे से बार बार झटके के साथ खींचा जा रहा था। नत्थूसिंह रोहित से कुछ कहना चाहते थे। रोहित ने झुंझलाकर पूछा, "क्या बात है ?"

"भइया, बाकी बात आगे के चौराहे पर कहो। यहां रास्ता बन्द हो गया है। पुलिस रास्ता खुलवा रही है।"

नत्थूसिंह की बात को काटा नहीं जा सकता। शंकरलाल मामा का खास आदमी है। रोहित ने माइक पर घोषणा की, 'भाइयो, अगले चौराहे पर मेरे साथ आइये, मैं देश की लाल पीली राजनीति की और बातें आपके सामने रखूंगा।'

इक्का सडक के गड्ढों के कारण हचकोले लेता हुआ आगे बढ चला। पीछे पीछे अच्छी खासी भीड चल रही थी। माइक अब विजय के हाथ में आ गया था, विजय नारा लगा रहा था, 'आजाद उम्मीदवार शंकरलाल को वोट दो। चुनाव चिह्न तीर कमान को वोट दो।"

अगले चौराहे से कुछ पहले ही एक मकान के ऊपरी हिस्से पर रोहित को सोशलिस्ट पार्टी का बोर्ड नजर आया। बस इक्का वहीं रोक लिया गया। रोहित ने माइक हाथ में लेकर बोलना शुरू कर दिया, "भाइयो और बहनो ' एक क्षण के लिए रोहित रुका'। गलती हो गई। भीड में तो कोई

स्त्री है नहीं फिर बहन कहकर किसे सम्बोधित कर रहा है । कस्बे का मामला है। औरतों में जरा भी राजनीतिक चेतना नहीं है। अन्यथा एक-दो औरतों के चेहरे अवश्य दिखाई देते। खैर कोई बात नहीं, आगे से सावधान रहेगा। रोहित ने फिर बोलना शुरू किया, "तो मैं कह रहा था कि सोशलिस्ट क्या हैं कांग्रेस से टूटे हुए लोग, जिन्हें सत्ता में हिस्सेदारी नहीं मिली उन्होंने अपनी सफेद टोपी लाल रंग में रँगकर सर पर ओढ़ ली और सोशलिस्ट बन गये। मैं पूछता हूँ सिर्फ टोपी रँगने से क्या होता है। अब अपना प्रोग्राम बताइये, अपनी पार्टी का प्रोग्राम बताइये, और अब यह बताइये कि आप कांग्रेसी मठाधीशों से कहाँ पर अलग हैं। इनके नेता टी० प्रकाशम ने क्या किया, यह आप अखबारों में पढ़ ही चुके होंगे और भाइयो इसे भी याद रखिये कि राजनीतिक रूप में जो पार्टी भानमती का पिटारा बन गई है वह पार्टी कुछ कर नहीं सकती। इस मुनिस्पैल्टी में भी किसी का कुछ भला नहीं कर सकती सोशलिस्ट पार्टी, यह मैं दावे के साथ कह सकता हूँ।"

सामने से भूसे से भरी बैलगाड़ी आ रही थी। उसे निकलने के लिए जगह देनी होगी। छोटी सड़क, बगैर इक्के को आगे बढ़ाये यह काम नहीं हो सकता। इक्का चलेगा तो भाषण नहीं हो सकता। रोहित को भी भाषण रोक देना पड़ा। फिर विजय ने माइक लेकर आवाज लगाई—"आजाद उम्मीदवार शंकरलाल को वोट दो। तीर कमान निशान वाले उम्मीदवार को वोट दो।"

दोपहर का एक बज गया है। सुबह से बोलते बोलते गला दर्द करने लगा है। एक कप चाय की सख्त तलब लगी है, लेकिन इस कस्बे में चाय की दूकान नहीं दिखाई दी। बहुत पिछड़ा हुआ कस्बा है। अभी यहाँ बहुत सुधार होना है। अगर इस समय बनारस में होता तो चार बार चाय पी चुका होता, पर यहाँ तो खाली चाय दिखाई हो नहीं देती। सिगरेट भी खुलेआम पी नहीं सकता। अभी कालेज का स्टूडेण्ट है, सबसे छिपाकर सिगरेट पीनी पड़ती है।

विजय भी थक गया था। भूख भी लगी थी। इक्का वापस बगिया जाने के लिए मोड़ लिया।

विजय, रोहित बगिया मे नही गये। मंदिर आते ही दोनो इक्के से कूद पडे और सीधे बडी अम्मा के पास पहुँच गये। बडी अम्मा खाना लिए बैठी थी। हाथ मुह धोकर दोनो खाने पर टूट पडे। बडी अम्मा ने कहा, "खूब हल्ला मचा आये।"

रोहित और विजय ने कोई जवाब नही दिया। पहले पेट पूजा, फिर कोई और बात।

खाने के बाद सोना भी जरूरी है। ऊपर का कमरा मेहमानो के लिए ही रिजर्व है। उसी मे पडकर दोना ने लम्बी तान दी। शाम के चार बजे तक सोते रहे।

रोज की तरह ही बगिया मे शकरलाल का दरबार लगा हुआ है। दस-बारह आदमी उन्हें घेरे हुए बैठे हैं। बीच-बीच में ऊँचे ठहाके लगते। रोहित और विजय जब बगिया में पहुँचे, तो उनका जोरो से स्वागत हुआ।

'आ रे बहादुर खेंचे रहो।" माधवप्रसाद दाना हाथ ऊपर उठाकर चिल्लाये, "खूब बोले भइया खूब बोले, शाबाश। कमाल कर दिया।' फिर शकरलाल की तरफ मुह करके कहा, "लम्बरदार, आज सारे कस्बा में तुम्हारी ज ज हो रही है, का समझे। अच्छी जोडी बुलाई है बोलन वालो की।'

शकरलाल अपनी तारीफ सुनकर गदगद हो गये। हँसकर बोले, "अरे माधवप्रसाद, हम जब कोई काम हाथ में लेते हैं तो फिर दुनिया को कुछ करके दिखा देते हैं। अभी तो वोट पडने में कई दिन बाकी हैं, अभी हमने अपना असली रग कहाँ दिखाया है, जब असली रग पे आयेंगे तो नौबतराय को चक्कर न आ जाये तो कहना।"

"वाह वाह जे हुई न बात।" कई दरबारी एकदम से चहक उठे।

महदीहसन अपनी आदत के मुताबिक अब तक चुप बैठे थे। अब खाम-कर गला साफ किया और बोले, ' इसमे कोई शक नही, आपके इन साहब-जादो ने समा बाध दिया है। खूब बोले, जमकर बोले हैं, अगर आगे के

दिनो मे इसी तरह चुनाव प्रचार होता रहा तो बस नाव किनारे लग जायेगी। पर एक बात हम कहना चाहते हैं, इनसे क्या नाम है इन साहबजादे का ," मेहदीहसन ने रोहित की ओर देखा।

"रोहित कुमार ," शकरलाल ने नाम बताया।

"ओ, हाँ हाँ रोहित बाबू, याद आ गया। आपसे बस इतना कहना है कि आप बात को बहुत फैलाइये मत, थोडे अलफ़ाज मे कहिये। और मजमून को कस्बे की चहारदीवारी मे ही बाँधे रखिये।"

रोहित मेहदीहसन की तरफ देखता रह गया। आखिर यह मियाँजी कहना क्या चाहते हैं।

"नही समझे आप।" मेहदीहसन रोहित की परेशानी समझ गये, समझाते हुए बोले, 'हजरत, आप तकरीर करते हुए बहुत डिटेल मे चल जाते हैं। सियासत के एस नाम लेते हैं जिनसे कस्बे की पब्लिक का दूर का भी वास्ता नही है। मसलन, आप जब बडे बाजार के चौक पर तकरीर फरमा रहे थे तो मैं वही खडा था। आपने एक नाम लिया था टी० प्रकाशम। अब जनाब कस्बे की पब्लिक को क्या मालूम कि टी० प्रकाशम किस उडती चिडिया का नाम है। उसके लिए तो अग्रेजी दवा के नाम मे और टी० प्रकाशम के नाम मे, कोई फर्क नही है। इसलिए वह बात कहिये जो कस्बे की पब्लिक की समझ मे आ जाये। कस्बे की जो सियासत है, परेशानिया है, उन पर ही बात को टिकाइये, तब असर पडेगा।"

"सुना तुमने रोहित ,' शकरलाल ने जोर देकर कहा, "बहुत पते की बात कह रहे हैं मेहदीहसन, इस बातो को गाँठ बाँध लो।"

मन ही मन कुढ गया रोहित। अजब आदमी है। खुद से कुछ होता नही दूसरो को उपदेश दिये जाते हैं। न अभी वोटर लिस्ट तैयार हुई है न पोलिंग बूथ की बात, न चुनाव का घोषणा पत्र ही निकाला है, बस बगिया मे बैठकर दरबार लगा लिया। इसी के दम पर चुनाव जीत लेंगे। जी मे तो आया कि दो चार खरी खरी सुना दे, पर मामा जी के सामने मुँह खोलने की हिम्मत नही है।

हरिया भाग लेकर आ गया। शकरलाल ने जय शिव शम्भू कहकर भंग का गोला गले के नीचे उतार लिया। दिल दिमाग मे तरावट आ

गई।"

"लम्बरदार दो रुपया देना।" एक दरबारी न जाने से पहले चुपके से फरमाइश की।

"कल ता दिये थे दो रुपये, सब खा डाले ?" शकरलाल भग की तरग मे थे तुनककर कहा।

"अब लम्बरदार सारा दिन तो आपके चुनाव म लगे रहते हैं, कुछ कमा धमा तो पाते नही। घर में रोटी पानी भी तो करनी है। आप ही का सहारा है।

सही कह रहा है। आखिर अपनी प्रजा का ख्याल शकरलाल नही रक्खेंग ता फिर कौन रक्खेगा। दो रुपया अटी से निकालकर दे दिये। उस आदमी क जात ही बगिया के दो कोनो से दो आदमी और निकल आये। दो रुपये की फरमाइश उन्होने भी शकरलाल के आगे रख दी। उनको भी दो दो रुपय अटी से निकालकर शकरलाल ने दे दिये, और इत्मीनान से फिर हुक्का गुडगुडाने लगे।

कुए के पास विजय और रोहित खडे सारा तमाशा देख रह थ। रोहित ने कुढकर कहा, "यार विजय, हमे तो यह चुनाव का गोरखधन्धा कुछ समझ मे नही आ रहा है। न तो मामा जी खुद हाथ पैर हिलाते है, न अपने आदमियो का कोई काम करने का कहते है। इस तरह ता जीत लिया चुनाव। दिन भर बस बहसबाजी होती है और शाम को दो दो रुपया मागकर चल देत हैं सब। लो हो गया चुनाव-प्रचार।"

"तो इसमे हम क्या कर सकते है। जानते तो हो ताऊ जी का स्वभाव। अपनी अकड के आगे कुछ सुनते नही है। हमे बडे भइया ने कहा ह, सो हम चले आये यहाँ। अब जो होगा कर देंगे, बाकी यह जान, इनका काम जाने। चुनाव जीतन का ठेका हमने ठेका तो लिया नही है।"

तीन दिन मे रोहित सारी बस्ती मे गला फाडकर शकरलाल का चुनाव-प्रचार कर रहा है। सारी बस्ती की जनता मे शकरलाल का नाम फैल गया है,

लेकिन बगिया में पहुँचने पर ऐसा लगता है जैसे उसके काम की कोई कदर ही नहीं है। निठल्ले लोग शकरलाल को घेरे रहते, और शकरलाल उनके बीच में बैठकर सोचते कि वह चेयरमैन की कुर्सी पर बैठ गये है, और उनके हुकुम से सारा काम चल रहा है। मन करता कि एक-एक को फटकारकर भगा दे। ऐसे निठल्ले और आवारा लोगों की भीड़ से क्या फायदा जो धेले का काम न करें और बातें हजार बनायें। खुद नत्थूसिंह की आँख बदल गई है। सुना तो यहाँ तक है कि नौबतराय से नत्थूसिंह ने अन्दर-ही-अन्दर पैसा खा लिया है, एक एक भेद शकरलाल का ले जाकर दे रहा है।

कल रात को एक मुहल्ले मे चुनाव सभा थी। सुबह से ही नत्थूसिंह की ड्यूटी लग गई थी कि चुनाव सभा का इतजाम करे। लेकिन जब सभा स्थल पर सब पहुँचे तो देखा, दरी तक भी नहीं बिछी थी। जैसे-तैसे सभा शुरू हुई। रोहित ने आधे घण्टे भाषण दिया। एक स्थानीय सज्जन और बोले, सिर्फ दो मिनट। झम्मन कीतनियाँ ने एक भजन सुनाया, बस तमाशा खतम हो गया। अन्त मे जब शकरलाल से दो शब्द बोलने के लिए कहा गया तो उनके मुह से आवाज नही निकली। बडी मुश्किल से इतना ही बोल पाये, "भाइयो अपना वोट शकरलाल लम्बरदार को दो जि जि जि न का चुनाव चिह्न है तीं तीं तीर कमान।

इसको कहते हैं घर म दहाडना और मच पर बोलने का अतर। एक मिनट में हकलान लगे। खैर, कोई बात नही है। मच पर बोलना कोई मजाक नही है।

सबसे ज्यादा रोहित को जो बात खल रही थी वह यह कि वह रहता तो था रामस्वरूप के यहाँ, रामस्वरूप के यहाँ ही भोजन करता था, लेकिन चुनाव प्रचार कर रहा था शकरलाल का, जिन्होने एक बार भी खाने और नाश्ते को नही पूछा। हँसी मे चाय की बात उठी तो बोले, "सुबह नाश्ते के टाइम हमारे घर आ जाया करो।' यह भी खूब रही। इस तरह कोई नाश्ता करता है।

चौथा दिन शुरू हो गया। इक्का आकर बगिया के दरवाजे पर खडा हो गया। चलो माइक पर चिल्लाओ शकरलाल के लिए। रोहित का मन अब एकदम ऊब गया था। वही कोई उत्साह शेष नही रहा। यह तो वही

मिसाल हो गई की 'मुददई सुस्त, गवाह चुस्त।' खुद शकरलाल को तो चुनाव जीतने की कोई फिक्र है नही। बस सोच लिया कि लडके चिल्ला रहे हैं तो चुनाव में जीत हो ही जायगी। यह नही पता है कि ऐसी हालत रही तो जमानत भी जब्त हो जायेगी।

इक्के पर लाउडस्पीकर फिट कर दिया गया। विजय अभी तक नही आया था, इसलिए रिकाड ही बजाकर टाइम पास किया जा रहा था "अब तेर सिवा कौन मेरा किशन कन्हैया, भगवान किनारे मे लगा दे मेरी नइया अब तेरे सिवा।'

"अरे बन्द करो यह गाना। किस साले ने यह रिकाड लगा दिया।" माधवप्रसाद जोरो से चिल्लाये। आज इतवार है, इसलिए सुबह से ही वह आकर बगिया के कमर में बैठ गये। शकरलाल से एक एक बाजी शतरज की खेलने के मूड मे थे। अब नया को डूबते देखा तो मूड साफ हो गया।

"चुनाव लड रहे हैं शान से। इसम नया पार लगाने की कौन बात है। बोलो लम्बरदार! ऐसे गाने से तो पब्लिक पर बुरा असर पडता है।'

शकरलाल ने माधवप्रसाद की बात का मम समझ लिया। पास खडे मातादीन पर बरस पडे, 'अरे खडे खडे मुह क्या देख रहे हो, जायके बदलो रिकाड।'

मातादीन इक्के की ओर दौड पडे। तुरन्त रिकाड बदल दिया गया, अब नया गाना शुरू हो गया था, "हिन्दुस्ता के हम हैं, हिन्दुस्ता हमारा, हिन्दू मुस्लिम सिक्खो की आँखो का तारा।

"हाँ यह हुई न बात। ऐसे रिकाड लगाओ, देशभक्ति के। अरे हम क्या किसी देशभक्त से कम है। शकरलाल ने छाती पर हाथ रखकर कहा।

विजय के आते ही इक्का चल दिया। इस बार छोटी बजरिया से चक्कर शुरू करेंगे। इक्का छोटी बजरिया की तरफ बढ चला।

छोटी बजरिया के अन्त मे एक तिराहा आता है। यहाँ सब्जी की कई दुकानें हैं। गाँव से सब्जी लाकर यहीं पर थोक के रूप मे बेच दी जाती हैं, इससे सुबह के समय अच्छी रौनक रहती है। इस समय भी दस बीस आदमी इधर उधर घूम रहे थे। इक्के के रुकते ही लोगो के कान खडे हो

गये, अब भाषणबाजी शुरू हो रही है   सावधान !

रोहित ने बोलना शुरू कर दिया। वही बातें जो पिछले चार दिन से कह रहा है, फिर घुमा फिराकर कहनी हैं   अब कोई विशेष करामात नहीं रहा फिर भी पालिटिकल साइंस के विद्यार्थी होने के नाते राजनीति पर व्यंग्य तो उभर ही आता। पिछले चार दिनों में कस्बे की अन्दरूनी राजनीति से परिचित हो गया है, इसीलिए कुछ उस पर भी छींटा कसी हो ही जाती। बीच-बीच में, प्यारे भाइयों, कस्बे के निवासियों, मेरे देश के नागरिक। जैसे सम्बोधन आने से लोगों में अपनापन सा उभर आता। पन्द्रह मिनट के भाषण में लोग दम साधे इसके आसपास खड़े रहे। अंत में तीर कमान के निशान वाले उम्मीदवार शंकरलाल को वोट देने की अपील से रोहित ने अपना भाषण समाप्त कर दिया।

लाठी के सहारे अपने शरीर को टिकाये   एक किसान ने जो शायद आसपास के गाँव का था और कस्बे में किसी काम से आया था, अपने पास खड़े एक अधेड़ आदमी से पूछा, 'ये किसके बारे में कह रहे हैं ?"

"शंकरलाल के बारे में।"

'कौन शंकरलाल ?"

"अरे वही जुआरी भगड़ी शंकरलाल।' अधेड़ आदमी ने नफरत से मुँह सिकोड़कर कहा "राम मन्दिर के पीछे जुए का अड्डा चलता है, अब चेयरमैन बनने की सोच रहा है। ढोंगी   लफाड़िया।"

पूछने वाला आदमी मुँह बाये देखता रह गया। रोहित भी सकते में आ गया। कहने वाला मुँह पर गाली देकर चला गया। क्या जवाब दे रोहित। पिछले चार दिन से जिसके लिए गला फाड़ फाड़कर चुनाव प्रचार कर रहा है उसकी जनता में यह इमेज है ! पाँच-दस भाषण देकर किसी आदमी की नई छवि नहीं बनाई जा सकती। जो सच्चाई है उसे शब्दजाल और लफ्फाजी से नहीं ढका जा सकता। सच्चाई यह है कि शंकरलाल को चुनाव में खड़े होने का कोई हक नहीं है। एक तरफ जुए की कमाई और दूसरी तरफ जनता की सेवा का दम भरना, यह सब साफ-साफ धोखा है। रोहित को लगा जैसे वह चोरी करते सरे बाजार पकड़ लिया गया, और अब पब्लिक इसी तिराहे पर खड़ा करके उसे पत्थरों से और

जूतो से मारेगी, क्योकि असली दापी तो वही है जो चार दिन से लगातार शकरलाल को एक जननेता, और महान जनसेवक सिद्ध करने पर तुला हुआ है। रोहित का सर शम से झुक गया।

विजय ने भी अपने ताऊ शकरलाल के बारे मे अधेड आदमी की राय अवश्य सुन ली होगी, लेकिन उस पर कोई असर नही हुआ। सडक के किनारे खोखानुमा दुकान के पीछे छिपकर सिगरेट मे दम लगा रहा था। एसा घूमने का मौका बार बार कहा आता है, खूब मजा लूटो।

अब कही भी जान का मन नही हो रहा था, न ही कुछ बोलने का उत्साह रह गया था। विजय से भी क्या कहा जाये उसकी नसो मे तो जमीदार खानदान का खून बह रहा है। अपने खानदान की बुराइ कसे सुन मकता है। अब तो खुद ही निणय करना है कि यहाँ कब तक रहा जाये।

दो घण्टे इधर उधर इक्का घुमाकर रोहित और विजय लौट आये। किसी तरह खाना भी गले से नीचे उतारा। दोपहर को सोने का टाइम होता है, लेकिन नीद नही आई।

"सुन भाई विजय, मैं ता आज रात की गाडी मे वापम बनारस जा रहा हूँ। राहित ने विजय को फमला सुना दिया।

राहित न कुछ सोचा, फिर बोला, 'ठीक है मैं भी चलता हूँ, पर चेयर-मन साहब से इजाजत तो ले लो। वह जाने भी देंगे। वोटिंग से पहले तो वह किमी हालत मे जाने नही दग, वरना उनकी नाव को पार कौन लगायगा।'

'अब नाव चाहे पार लगे या डूबे, मैं तो आज ही रात की गाडी से वापस जा रहा हूँ।' राहित चिढकर बोला, "यह अच्छा चुनाव है, कैंडी-डेट को यह पता ही नही कि उसके वोटर कहा हैं और क्या कह रह हैं। बस दिन भर बगिया मे लफग जुटे रहते है और मुहजबानी चुनाव लडा जाता है। एक वह नत्थूसिंह है वह अपने को न जाने क्या समझता है हर समय उपदश देता रहता है मामाजी की वजह से मैं बोलता नही, वरना साले की मूछें नोच लें।

"पाटनर, यह है नेखूपुरा। यहाँ एक-से एक घाघ पड़े हैं। अवल घेले

की नही, बात करेंगे बढ चढ़कर, इसीलिए तो मैं यहाँ रहना नहीं चाहता। किसी शहर मे ही मैं तो जमूगा।"

"भविष्य की बात बाद म सोचना। पहल यहाँ से भागने की सोचो। इस तरह गला फाड़ते रहे तो हो गया अपना कल्याण।

"तो इसमे सोचना क्या है, आज शाम को बगिया में ऐलान कर दो, हम जा रहे हैं, सम्हालो अपना टडीला, बस।" विजय ने सलाह दी।

हरिया ने भग का गाला तैयार कर दिया था। शकरलाल न लोटे भर पानी के साथ भग का गाला गले से नीचे उतार लिया, "हाँ तो नौबतराय ने नया पोस्टर छपवाया है, कल हम भी नया पोस्टर छपवायेंगे। कहाँ है विजय और रोहित। बुलाओ उन्हें, नया पोस्टर लिख दें। आज ही रात को तैयार हुआ जाता है।" शकरलाल ने बहुत इत्मीनान के साथ कहा।

"मामाजी, मैं आज रात की गाडी से बनारस जा रहा हूँ।" रोहित ने सामने आकर कहा।

क्या !" शकरलाल चौंक गये, "दो दिन बाद वोट पड़ेंगे, और तुम आज जाय रहे हो। चुनाव प्रचार कौन करेगा ?"

"इतन सारे लोग आपके पास हैं, यह सब चुनाव प्रचार करेंगे।" रोहित ने उत्तर दिया।

शकरलाल कुछ बोलें, इससे पहले ही नत्थूसिंह ने कहा, "तुम तो भइया ऐसे बोल रह हो जैसे हम कुछ करते ही नहीं।"

"नही सब कुछ आप ही तो कर रहे हैं। इसलिए तो मैं कह रहा हूँ कि आप सबके होते हुए फिर किसी और की क्या जरूरत है।'

शकरलाल ने कुछ सोचा, वह ताड गये कि अगर ज्यादा रोकने को कहा तो दोनो लडका जबानदराजी पर उत्तर आयेंगे, जो उन्हें बरदाश्त नही होगा।

"ठीक है, जाओ।' शकरलाल न हुक्के की नली मुह म लगा ली।

बनारस मे चुनाव परिणाम की खबर तुरन्त पहुंच गई। शकरलाल बुरी तरह हार गये। जमानत भी बचा नही पाये। यह भी खबर मिली कि शकरलाल रोहित से बहुत खफा है। उनकी राय म अगर रोहित बीच म न चला जाता तो उनकी जीत जरूर होती। इसे कहते हैं, 'चिडिया अपनी जान से गई, खाने वाले को स्वाद न आया।' शेखपुरा के कस्बे की धूल-भरी सडको पर चिल्लाते चिल्लाते रोहित का गला पड गया, पर शकर-लाल उल्टी तोहमत उसी पर लगा रहे हैं कि उसके कारण चुनाव न जीत सके।

विजय को काबू रखने के लिए रामस्वरूप ने एक नई चाल चली। सण्डीला के काशीनाथ ठेकेदार की लडकी से विजय का रिश्ता तय कर दिया। लडकी देखने सुनने मे ठीक-ठाक ही है। सगाई मे पूरे ग्यारह सौ लेंगे। फिर टीके मे डेढ हजार। शादी मे भी दो चार हजार के करीब वसूल ही लेंगे। ऊपर से दहेज अलग। इसी मे अपनी बिटिया के हाथ पीले कर देंगे। विजय भी शादी होने के बाद घर मे बंध जायेगा। बहू आ जायेगी तो कुछ कमाने-धमाने की भी सोचेगा। अवारागर्दी भी खतम हो जायेगी। बडी अम्मा से सलाह की, तो वह गद्गद हो गयी। न जाने कब से आस लगाये बैठी हैं कि घर म शहनाई बजे। शकरलाल भी सहमत थे। डाल दो ससुरऊ के पैर मे बेडी। छुट्टे बैल की तरह घूम रहे हैं। अरे हमारा बस चले तो हम एक ही मढे के नीचे श्रीप्रकाश और विजय दोनो के फेरे डलवा दें। पर श्री-प्रकाश तो हाथ ही नही रखने देते। पढ लिख क्या गये, अक्ल बताने लगे है सब। इससे तो पहले का ही जमाना भला था कि बस होश सम्हालते ही रिश्ता कर दिया जाता, फिर गौना करते रहे दो चार साल बाद। पढाई के चक्कर मे शादी टालती गई तो अब फेरो के ही लाले पड गये।

"अब तुम बडकऊ हमे उपदेश न दो, रास्ता सुलझाओ कि का करें।" दिमाग पर जोर पडने से रामस्वरूप के सर मे दर्द होने लगा था।

"रास्ता क्या बतायें, बस चिट्ठी लिख दो।"

"जायदाद का काम है, दस्तखत कराने हैं, तुरन्त चले जाओ।" शंकरलाल ने दो टूक बात कह दी।

"पर श्रीप्रकाश बड़े हैं, उनसे पहले छोटे भाई की शादी कैसे हो जाय। जात बिरादरी क्या कहेगी। दुनिया तो हम थूकेगी।" रामस्वरूप पसोपेश मे पड गये।

"हाँ हमारे रहत पहले श्रीप्रकाश की हायगी।" बड़ी अम्मा ने राम स्वरूप की बात का समर्थन किया, "घर मे बड़े छोटे का लिहाज करना होगा।"

"सो तो ठीक है। हम कब कह रहे हैं बड़े को कुआरा बिठाये रक्खो और छोटे की कर दो।" शंकरलाल खीझकर बोले, "हम श्री-प्रकाश का रिश्ता भी देख रहे हैं, दो चार महीने मे खोज ही लेंगे, तब पहले श्रीप्रकाश के फेर डाल देंगे फिर विजय के। तब तक रोक होने दो। अच्छा घर मिल रहा है, नगद पैसा भी दे रहा है तो अटकाकर रक्खो।"

'और अगर विजय ने नाही कर दी तो।" रामस्वरूप ने कहा।

'लो, तुमने पहले ही छींक दिया।" शंकरलाल को गुस्सा आ गया, "अरे लड़की की फोटो आ गई है, खूब देख लें। कोई खोट तो है नहीं सूरत मे जो नाही करेंगे। हाँ, अगर ज्यादा तिकिर मिकिर करेंगे तो फिर हम सोटा पकड़ेंगे। मूछें-दाढी आ गयी, कब तक सांड की तरह घूमेंगे। तुम चिन्ता न करो, कल चिट्ठी लिख दो, बाकी हम देख लेंगे।" शंकरलाल ने खड़ाऊ पहनी और उठकर चल दिये।

चिट्ठी पाते ही विजय बनारस से आ गया। शादी की बात सुनकर कुछ बोला नही। लड़की की फोटो पर भी उचटी-सी नजर डाली, और उठकर चल दिया। किसी तरह का कोई उत्साह नही दिखाया। बहन ने आने वाली भाभी की बात चलाई तो डपट दिया, बड़ी अम्मा ने प्यार से कुछ कहा तो मुह बिचका दिया। आखिर जब बाप ने डाँटकर पूछा तो कह दिया, 'अब आप सबको शादी की पड गई है तो कर लो, पर मैं साफ कहे देता हू मैं इस सड़े कस्बे मे नही रहूँगा। शहर मे नौकरी ढूढ ली है। वहीं पर रहूगा।'

'अच्छा अच्छा देख लिया, बहुत शहरी बाबू बन गये हो।" राम स्वरूप चिढ़कर बोले, "जहा मन आये वही गहस्थी बसाना। अब शांति से सगाई होने दो।"

सगाई का मौका पाकर रिश्तेदार आ जुटे। बरली से देवीदत्त भी एक दिन के लिए आ गये। इक्के मे उतरते ही बोले, 'यह क्या इतनी हडबडी मे सगाई करने की क्या सूझी। श्रीप्रकाश भी नही आया। क्या कोई बहुत बडी पार्टी फास ली है।'

देवीदत्त की बाता से रामस्वरूप चिढ गये, "अरे बाबूजी, काहे मजाक उडा रहे हो। जसे तसे जोग बिठाय रहे हैं। आप हैं कि पार्टी फासन की कह रहे हो।'

'तो नाराज क्यो होत हो," देवीदत्त ने बात को सम्हाला, "अच्छा है, लडके का घर बस जाये। शादी तो करनी ही है, फिर आज क्या और कल क्या। ठीक किया जो शादी तय कर दी।"

"हा, बाबूजी। लडका जवान हुआ है तो शादी कर ही देनी चाहिए। आप तो अपनी शादी करके छुट्टी पा गये। रोहित की तो अब कोई फिक्र है नही।" रामस्वरूप ने भी चोट कर दी।

"हम फिक्र करके क्या करें। रोहित का पेट ही ठीक नही रहता। जरा बदपरेजी हुई नही कि तबीयत खराब। अब ऐसे म शादी ब्याह की क्या सोचें?"

'तो क्या जिन्दगी-भर कुआरा रखोगे।' रामस्वरूप ने दूसरी चोट की।

'हमारे किए धरे कुछ हो तो हम करें हमारे भाई को नही जानत, कैसा नेचर पाया है। लडके का भडकाकर ले गये।'

रहने दो बाबूजी, क्यो मुँह खुलवाते हो।" रामस्वरूप ने और तीखे-पन से कहा, 'दूसरी शादी क्या की, पहली औलाद को ही भूल गये। आपके भाई की बदौलत आज रोहित बी० ए० म पहुँच गया है, आपन तो उसकी पढाई लिखाई सब छुडा दी थी।

देवीदत्त का मुह खुला का खुला रह गया। हक्के-बक्के होकर राम स्वरूप की तरफ देखते रह गये, फिर दात पीसकर बोले, "हम जानत हैं

"जायदाद का काम है, दस्तखत करान हैं, तुरत चले जाओ।" शंकरलाल ने दो टूक बात कह दी।

"पर श्रीप्रकाश बड़े हैं, उनके बैठे छोटे भाई की शादी करे हो जाये। जात बिरादरी क्या कहेगी। दुनिया तो हम थूकेगी।" रामस्वरूप पशोपश मे पड गये।

"हाँ हमार रहत पहले श्रीप्रकाश की होयगी।" बडी अम्मा ने राम स्वरूप की बात का समर्थन किया, "घर मे बडे छोटे का लिहाज करना होगा।'

"सो तो ठीक है। हम कब कह रह हैं बडे को कुआरा बिठाये रक्खो और छोटे की कर दो।" शंकरलाल खीजकर बोले, "हम श्रीप्रकाश का रिश्ता भी देख रहे हैं, दो चार महीन मे खोज ही लेंगे, तब पहले श्रीप्रकाश के फेरे डाल देंगे फिर विजय के। तब तक रोक होन दो। अच्छा घर मिल रहा है, नगद पैसा भी द रहा है तो अटकाकर रक्खो।"

"और अगर विजय ने नाही कर दी तो।" रामस्वरूप ने कहा।

"लो तुमने पहले ही छीक दिया।" शंकरलाल को गुस्सा आ गया, "अरे लडकी की फोटो आ गई है, खूब देख लें। कोई खाट तो है नहा सूरत मे जो नाही करेंगे। हाँ, अगर ज्यादा तिक्रि मिक्रि करेंगे तो फिर हम साटा पकडेंगे। मूछें-दाढी आ गयी, कब तक साँड की तरह घूमेंगे। तुम चिन्ता न करो, कल चिट्ठी लिख दो बाकी हम देख लेंगे।" शंकरलाल ने खडाऊ पहनी और उठकर चल दिय।

चिट्ठी पाते ही विजय बनारस से आ गया। शादी की बात सुनकर कुछ बोला नहीं। लडकी की फोटो पर भी उचटी-सी नजर डाली, और उठकर चल दिया। किसी तरह का कोई उत्साह नहीं दिखाया। बहन ने आने वाली भाभी की बात चलाई तो डपट दिया, बडी अम्मा ने प्यार से कुछ कहा तो मुह बिचका लिया। आखिर जब बाप ने डाँटकर पूछा तो कह दिया, "अब आप सबको शादी की पड गई है तो कर लो, पर मैं साफ कहे देता हू मैं इस सडे कस्ब म नहीं रहूँगा। शहर म नौकरी ढूढ ली है। वहीं पर रहूगा।'

'अच्छा अच्छा देख लिया, बहुत शहरी बाबू बन गये हो।" राम स्वरूप चिल्कर बोले, "जहां मन आये वहीं गृहस्थी बसाना। अब शांति से सगाई होने दो।"

सगाई का मौका पाकर रिश्तेदार आ जुटे। बरेली से देवीदत्त भी एक दिन के लिए आ गये। इक्के से उतरते ही बोले, 'यह क्या, इतनी हड़बड़ी में सगाई करने की क्या सूझी। श्रीप्रकाश भी नहीं आया। क्या कोई बहुत बड़ी पार्टी फाँस ली है।"

देवीदत्त की बातों से रामस्वरूप चिढ़ गये, "अरे बाबूजी, काहे मजाक उड़ा रहे हो। जैसे-तैसे लोग बिठाये रहे हैं। आप हैं कि पार्टी फाँसने की कह रहे हो।"

"तो नाराज क्यों होते हो," देवीदत्त ने बात को सम्हाला, "अच्छा है, लड़के का घर बस जाय। शादी तो करनी ही है, फिर आज क्या और कल क्या। ठीक किया जो शादी तय कर दी।'

"हाँ, बाबूजी। लड़का जवान हुआ है तो शादी कर ही देनी चाहिए। आप तो अपनी शादी करके छुट्टी पा गये। रोहित की तो अब कोई फिक्र है नहीं।" रामस्वरूप ने भी चोट कर दी।

"हम फिक्र करके क्या करें। रोहित का पेट ही ठीक नहीं रहता। जरा बदपरहेजी हुई नहीं कि तबीयत खराब। अब ऐसे में शादी ब्याह की क्या सोचें?"

'तो क्या जिन्दगी भर कुंआरा रक्खोगे।" रामस्वरूप ने दूसरी चोट की।

"हमारे किए धरे कुछ हो तो हम करें, हमारे भाई को नहीं जानते, कैसा नचर पाया है। लड़के को भड़काकर ले गये।"

' रहने दो बाबूजी, क्यों मुँह खुलवाते हो।' रामस्वरूप ने और तीखेपन से कहा, "दूसरी शादी क्या की, पहली औलाद को ही भूल गये। आपके भाई की बदौलत आज रोहित बी० ए० में पहुँच गया है, आपने तो उसकी पढ़ाई लिखाई सब छुड़ा दी थी।"

देवीदत्त का मुँह खुला का खुला रह गया। हक्के-बक्के होकर रामस्वरूप की तरफ देखते रह गये, फिर दांत पीसकर बोले, "हम जानते हैं,

सब जानते हैं, यह तुम नही बोल रहे हो रामस्वरूप, यह हमारे बड़े भाई बोल रहे है।"

देवीदत्त बजाये घर की ओर जाने के बाजार की ओर चल दिये। नत्थूसिंह बगिया की दीवार से लगा खडा था। वही से बोला, "आप कहाँ जाय रह है बाबूजी, बगिया मे नाश्ता लगा दिया है। मालिक आपकी राह देख रहे हैं।"

'हम नगीनचन्द के पास जा रहे हैं। देर से लौटेंगे। हमारा इन्तजार न करना।' देवीदत्त आगे बढते ही चले गये।

रामस्वरूप को अब पछतावा हो रहा था। बेकार मे बहस हो गई। पर करें क्या, लागबाजी तो पहले देवीदत्त ने ही शुरू की। अब जवाब करारा मिला, तो पिन्नाय गये।

शंकरलाल के पास पहुँचकर रामस्वरूप ने सारी घटना एक साँस मे सुना दी। शंकरलाल हँसने लगे, "तुम भी भइया बडे भोले हो। बठे-बिठाये छेड दिया। अधेड उम्र मे तो बेचारो ने शादी की है। अब जरा मौज मस्ती मे हैं। हुई एक साल की बात है, सारे नखरे झड जायेंगे"

"हमने ऐसी कौन सी झूठी बात कह दी जो तुनक के चल दिये। दुनिया कह रही है, दूसरी औरत लाये तो पहली औरत की औलाद को घर से बाहर कर दिया।" रामस्वरूप ने सफाई दी।

"दुनिया कुछ भी कहे, हम उससे क्या। हमारे तो वह दामाद हैं हमे तो उन्हे मनाना ही होगा। फिर आज तो सगाई का दिन है, अगर बुरा मानकर चले गये तो बडी बदनामी होगी। तुम चिन्ता न करो, हम अभी मनाय लाते हैं।" शंकरलाल ने पास खडे नत्थूसिंह से कहा, "हुरिया को भेजकर हमारी अचकन, टोपी और छडी मँगाओ, और किसी लडके को भेजकर कल्लन से कहो अपना ताँगा ले आये, बाजार तक चलना है।'

शंकरलाल के सामने देवीदत्त का गुस्सा ठण्डा पड गया। हँस-हँसकर बात करने लगे, फिर ताँगे पर बैठकर चुपचाप घर चले आये। बगिया म

नहाया धाया, फिर बडी अम्मा के सामने बैठकर खाना खाया। रामस्वरूप ने चैन की सास ली। चला राजीनामा हो गया, अच्छा हुआ। वडक्‍उ ठीक कहते है, आखिर वो तो घर के दामाद हैं, उनका गुस्सा होना ठीक नही।

मन्दिर के बीच आँगन मे बडी दरी बिछाई गई है। उसी पर सफेद चाँदनी बिछी हुइ है। यही पर सगाई की रस्म होगी। चार बजे से ही मुहल्ले वाले आने लगे। लडकी वालो को धमशाला मे टिकाया था, वह भी अपना सगाई का सामान लेकर आ गये। पण्डित जी भी तैयार होकर बैठ गये। विजय नया कुर्ता पाजामा पहने पटरे पर बैठा था। लेकिन उसके चेहरे पर कोई उत्साह नहा था। लगता था जैसे किसी बात से परशान है। मारा बदन थका थका सा दिखाई द रहा था। सगाई की रस्म अभी पूरी भी नही हुई कि मन्दिर के सामने आकर एक इक्का रुका, उस पर मे एक बडी तोद वाले लाला जी उतर। हाँफते हुए मन्दिर की सीढियाँ चढी, और आकर दरी पर पसर गय। रामस्वरूप न घुडकी दी, "का हो ब्रजराज, अब तुम्हें आउन की छुट्टी मिली।"

"हम का दाप न दो, सुसरी वस ही रास्ते मे फेल हुई गई।" ब्रजराज ने सफाई दी।

लाला ब्रजराज सनातनी को देखत ही लडकी के पिता का चेहरा उतर गया। यह मनहूस यहाँ से आ गया। मर जितना झुक सकता था झुका लिया, लेकिन ब्रजराज की नजरो से न बच सके। चौंककर ब्रजराज बाले, 'अरे काशीनाथ तुम, तुम हियाँ।' फिर कुछ सोचकर बोले, "अच्छा रिश्ता हा गया है बहुत अच्छा है बहुत अच्छा है।'

'आप लोग पहले से ही परिचित हैं, वाह भई। रिश्ता और मजबूत हो गया।" दाकरलाल बोले, काशीनाथ जी ब्रजराज तो हमारे फूफा लगते हैं।'

लडकी क बाप ने कुछ नही कहा, वस हाथ जोडकर प्रणाम कर

दिया।

पण्डित जी मन्त्र पढ़ रहे थे, लड़की के भाई को इशारा किया, गोला रूमाल विजय को भेंट करे, और तिलक कर दे। दस साल के लड़के ने जैसा कहा गया था वैसा ही किया। फिर रस्म की बाकी विधि पूरी की गई। मगाई हो गई। लड़की के बाप ने पण्डित जी को ग्यारह रुपये के साथ धोती-कुर्ता भी भेंट में दिया।

विजय ने उठकर सबके पैर छुए। सबने आशीर्वाद दिया। एक-एक करके सब लोग जाने लगे। नत्थूसिंह दरवाजे पर खड़े थे, झउआ में बूंदी के लड्डू लिये हरिया साथ था। हर एक आदमी को दोने में रखकर चार-चार लड्डू दिये जा रहे थे। बच्चों और लड़कों का दोना अलग से था।

ब्रजराज सनातनी किसी तरह छड़ी के सहारे उठकर खड़े हुए फिर शंकरलाल को इशारे से अपने पास बुलाकर कहा, "तुमसे बात करनी है रामस्वरूप को भी बुला लो।"

"बगिया में चलकर आराम से बात करेंगे, जल्दी क्या है। दो-एक दिन तो ठहरोगे या उल्टे पाँव भागने की सोची है।" शंकरलाल प्रसन्न थे, हँसकर बोले।

"बात जरूरी है तभी कह रहे हैं, कान खोल के हमारी बात सुन लो, नहीं तो फिर पछताओगे।" ब्रजराज सनातनी छड़ी टेकते मन्दिर के अन्दर वाले कमरे की तरफ चल दिये। पीछे-पीछे शंकरलाल रामस्वरूप को लेकर पहुँच गये। लड़की का बाप टेढ़ी नजर से सनातनी को देख रहा था। उसका मुँह उतर गया था।

कोठरी में पहुँचकर ब्रजराज सनातनी जमीन पर बिछे गद्दे पर लद से बैठ गये, "बड़ी अम्मा को भी बुलाय लो।'

'अरे का चबड़-चबड़ लगाय रक्खी है फूफा। इसे बुलाय लो, उसे बुलाय लो, असली बात का है यह बताओ।'

"बताय रहे हैं, सब तुम्हारी भलाई के लिए बताय रहे हैं। ब्रजराज सनातनी हाँफ रहे थे, कन्धे पर पड़े अपने रामनामी दुपट्टे से मुँह पोंछकर बोले, "यह जो तुमने काशी ठेकेदार के यहाँ रिश्ता किया है सो मत पूछ

दम घबड़ा गये, "हम अभी बड़ी अम्मा को लेकर आते हैं, वही सब तय करेंगी।"

बड़ी अम्मा के साथ रामस्वरूप की दुल्हिन भी आ गयी। रामलाल भी आ गये, उनकी दुल्हिन भी घूघट काढे चली आयीं। अच्छी-खासी भीड़ लग गई। बड़ी अम्मा ने कानों पर हाथ रख लिया, "हाय मोर दइया, इतना पाप भरा है पेट में।"

"अब पाप-पुन्न की बात छोड़ो, यह कहो कि करें क्या। अभी तो सगाई हुई है, कल को ब्याह करना है, फिर क्या होगा।"

"हमें नाहीं मजूर हमें कीचड़ में न सानो। जे तुम्हार फूफा बैठे हैं, जे जो कह रहे हैं सो का झूठ कह रहे हैं।"

"हां हां तोड़ दो सम्बन्ध, लड़कियों की का कमी है। एक नहीं, चार ला देंगे।"

'तो अब तक कहाँ थे लाये काहे नाहीं।" अपनी आदत के मुताबिक शंकरलाल गरजे।

'हमसे किसी ने कहा जो लाकर देते, अब देखो, एक-से एक सुंदर लड़की बताते हैं।"

"पता है हमें, सब पता है।" शंकरलाल उठकर खड़े हो गये, 'तुमने तो आकर विघ्न डाल दिया, बस। हम क्या बस्ती में मुँह दिखायेंगे। घर-घर चर्चा होगी। दूसरे की लड़की से अच्छी मजाक की।"

"तो करो ब्याह पर हम तो ऐसे ब्याह में शामिल नहीं होंगे, हाँ।' फूफा ने नाराज होने की मुद्रा अपना ली।

बड़ी अम्मा शंकरलाल की तरफ मुखातिब होकर बोलीं, "बड़कऊ, जब तक हम जिन्दा हैं, तब तक तो घर में धरम करम से काम करो। हम मर जायें तो सब मन की कर लेना।"

"जे सब हमें का सुनाय रही हो, हम कौन से तुम्हारे काम में टाँग अड़ाय रहे हैं। जे फूफा सगे आय गये हैं अब इनकी राय से चलो।" शंकरलाल ने खड़ाऊं पहन लिये, और तनतनाते फनफनाते कोठरी से बाहर निकल आये। आँगन में अभी भी काफी आदमी जुटे हुए थे। एक नजर से सबको देखा और बगिया की तरफ चले गये।

ब्रजराज सनातनी को देखते ही लडकी के बाप का चेहरा उतर गया था। देवीदत्त ने एक नजर से भांप लिया कि दाल मे कुछ काला है। जब रामस्वरूप और शकरलाल अपने फूफा के साथ सलाह करने अन्दर गये तो देवीदत्त न लडकी के बाप के पास जाकर कहा, "क्या बात है, आप सुस्त क्यो हो गये हो।'

लडकी के बाप ने सिर झुका लिया, उसकी आँखो से आँसू गिरने लगे।

'क्या बात है, हमसे साफ-साफ कहो। हमसे जितनी मदद हो सकेगी, जरूर करेंगे। हम इनके रिश्तेदार हैं।" देवीदत्त ने धीरज बँधाते हुए कहा।

'सब करमो का फल है। हमारे करम ही खोटे हैं।" लडकी के बाप की हिचकियाँ बँध गई थी।

'देखो रोने-धोने से बात नही बनेगी, मन को धीरज दो और साफ साफ बताओ।"

काशीनाथ ने कधे पर पडे अँगोछे से आँखें सुखायी, "बाबूजी, सारी बात यह है कि यह जो सनातनी आये हैं, यह हमसे लागबाजी रखते हैं। हर जगह हमारी जड खोदने पहुँच जाते हैं। हम तो खानदानी ठेकेदार है, इधर यह भी ठेकेदारी मे लखपति बनना चाहते हैं सो हमे मिटाने पर उतारू है। मैदान मे हमसे जीते नही, सो अब हमारी लडकी की इज्जत से खेलने पर उतर आये। पर बाबू जी, अब हम साफ कह, अगर हमारी लडकी के रिश्ते मे सनातनी ने रोडा अटकाया तो हम इन्हे जिन्दा नही छोडेंगे, फिर चाहे हमे फासी हो जाये।'

देखो इस तरह से ताव खाने से तो कुछ होगा नही, उल्टे बात और बिगड जायेगी।' देवीदत्त ने समझाने की कोशिश की, "जो किस्सा है वह सामने आ ही जायेगा, अच्छा रहे कि तुम ही साफ-साफ बता दो तो हम कुछ करें।'

काशीनाथ न कुछ सोचा, फिर कहना शुरू किया, "बाबूजी, हम आप से कुछ छिपायेंगे नही, और सच्ची बात को छिपाना क्या। हमारी पहली औरत शादी के थोडे दिनो बाद ही गुजर गई। एक लडका हुआ था तो बीमार पड गई। सेवा के लिए उसकी दूर की एक गरीब बहन घर आ गई

थी। मरते हुए हमारी औरत ने अपनी बहन का हाथ हम पकड़ा दिया, सो हमारी दूसरी औरत हो गई। हमसे गलती हो गई कि हमने उसस फेरे नहीं डाले, ऐसे ही बैठा लिया। असल में वह पेट से रह गई थी। उससे हमारे तीन बच्चे हैं—एक लड़की, और दो लड़का। हमने कोई भेद नहीं करता। पत्नी की तरह रखता है। अब दुनिया कह रही है कि वह ब्याहता नहीं है, अब हम क्या कहें, जो होना था सो हो गया। लम्बरदार ने जो ब्याह म माँगा है हमने मजूर किया है। कुछ और कह तो वह भी पूरा करेंगे, भले ही हमारे तन के कपड़े बिक जायें।"

"कपड़े क्यों बिकेंगे।" देवीदत्त ने विश्वास-भरे स्वर म कहा, "जो कायदे की बात है वह होगी। पहली बात यह कि तुमने कोई गलती नहीं की। अरे क्या मन्दिर म शादी नहीं होती है। फिर अगर कोई शिकायत है तो लड़की को दुख क्यों मिले, रिश्ता क्यों तोड़ा जाये।"

सनातनी को साथ लिये रामस्वरूप कोठरी से बाहर आ गये। पीछे-पीछे बड़ी अम्मा और रामस्वरूप की दुल्हिन भी थी। रामलाल और उनकी दुल्हिन भी साथ थी। बाहर आते ही रामस्वरूप ने ऊँची आवाज म कहा, "काशीनाथ, तुमने सगाई में तय की हुई रकम नहीं दी है इसलिए अब यह रिश्ता नहीं होगा। अपना सामान वापस ले जाओ। हमें रिश्ता मजूर नहीं है।"

"लम्बरदार, जो तय हुआ था वही हमने दिया है। ग्यारह सौ नगद दिया है, और जो कपड़ा-लत्ता कहा था वह भी दिया, लड़के को अँगूठी पहनाई है। और हुकुम करो, पूरा करेंगे। हम लड़की वाले हैं, आपकी बात टालेंगे नहीं।" काशीनाथ ने हाथ जोड़कर कहा।

"तुमसे नगद सवा तीन हजार की बात हुई है। कहाँ है रकम, निकालो अभी।" रामस्वरूप ने दीवार की तरफ मुह करके कहा। काशीनाथ से आँख मिलाने की उनकी हिम्मत नहीं हो रही थी।

"सवा तीन हजार तो पूरी शादी मे तय हुए हैं, सो हम देंगे। सगाई मे तो ग्यारह सौ की बात हुई थी।"

"तुम झूठ बोलते हो। सवा तीन हजार निकालो, नहीं तो हमे रिश्ता मजूर नहीं है।' रामस्वरूप ने फैसला सुना दिया।

"लम्बरदार, अगर रुपये की ही बात है, तो हम मौका दो हम एक गाडी से जाते है और दूसरी गाडी से रुपया लिये आते हैं।"

"नही नही, हमे अभी चाहिए। अभी निकालो, नही तो बात खतम है।'

काशीनाथ ने कातरता से दवीदत्त की ओर दखा।

"रामस्वरूप इधर आओ, हमारी बात सुनो, शान्ति से काम लो।'

"बाबू जी, आप हमारे बीच मे न बोले।" रामस्वरूप ने चिढकर कहा।

"अच्छा, तो अब यह नौबत आ गई, हमारा बोलना भी अखर रहा है।" देवीदत्त गुस्से से बोले, "यह सनातनी महाराज कैसे बोल रहे हैं बीच मे। इन्हें भी रोको। यह तुम्हारे फूफा हैं तो हम इस घर के दामाद हैं। अगर यह बीच मे टाँग अडायेंगे, तो हम भी बोलेंगे समझे।"

"बाबू जी आप हमे बीच मे न घसीटें, हम कहे देते हैं।" सनातनी ने हाथ मे पकडी छडी जमीन मे ठोकते हुए कहा।

"क्या कहे देते हो तुम्हें क्या हम जानते नही है। राम नाम का दुपट्टा ओढ लिया है, पर अधम करते शरम नहीं आती। झूठ बोलते ईश्वर से तो डरो ब्रजराज, मन्दिर मे खडे हो मन्दिर म।'

"हमने कोई झूठ नही बोला हाँ। यह काशीनाथ बताय दें कि इन्ने बगर फेरे लिये औरत को घर मे रक्खा है कि नही।'

'तो कौन सा गुनाह कर दिया।" देवीदत्त एक कदम आगे बढकर बोले, 'हिन्दू धम मे आठ तरह के विवाह का विधान है, इसमे एक गान्धव विवाह भी है। पूछ लो किसी पण्डत से और देख लो धमग्रन्थ। काशीनाथ ने अपनी साली का हाथ पकडा है किसी गैर का नही। फेर नही भी लिये तो क्या हुआ, घर मे तो पत्नी की तरह रक्खा है। और तुम बडे धमात्मा बनते हो, तो जिससे गुरु मन्त्र लिया है, जरा उसकी भी तो जात जाकर पूछो क्या है।'

"बाबू जी, आप बहुत बेजा बोली बोल रहे हैं। हमारे गुरु महाराज के

बारे म कह रहे हैं।" मनानी गुस्से से काँपने लगे।

"हाँ हाँ तुम्हारे गुरु महाराज के बारे म कह रहे हैं। जितन नीमसार म आश्रम खाला हुआ है, और जो अपने का ब्राह्मण कहता है, वह असल मे जात का बढ़ई है बढ़ई, समझे।"

"यह झूठ है। मनाननी पूरी ताकत से चिल्लाये।

'यह सच है हम हजार की शत लगाते हैं सर बाजार साबित कर देंगे। अगर यह झूठ हो ता जो चोर की सजा वह हम भुगतेंगे। दूसरे के गिरहबान पर हाथ डालना आसान है, पर अपने गिरहबान म मुह डालकर झांकना सबके बस की बात नहीं। तुम्हारे जसे धम क ठेकेदार दूसरो पर कीचड उछालना ही जानते हैं।"

बडी अम्मा बुक्का मार के रो पड़ीं। हाथ जोडकर बोली, 'बस करो भइया, बस करो, हम छिमा करो।"

'हम क्या क्षमा करेंगे बडी अम्मा, क्षमा तो भगवान से मांगो जिसके घर मे खडी हो। तुम्हारे पुरखों न मन्दिर बनवाया और तुम सब इसानियत का गला घोट रहे हो। इस आदमी की लडकी का क्या कसूर है जो सब मिलकर उसको फांसी दे रहे हो।"

"बाबूजी अगर इतना ही लडकी का दद है तो रोहित स रिश्ता क्यो नही कर देत। हम भी तो देखें कितना दम है।" रामस्वरूप ने सीधे वार किया।

एक क्षण के लिए आँखें फाडे देवीदत्त देखते रह गये, फिर चिल्लाकर बोले, "हाँ हाँ हमारा लडका अगर इस समय यहाँ होता तो अभी यही फेरे डालकर दिखा देते, पर हमारे लडके को तो हमारे भाई ने छीन लिया । कोई बात नहा रामस्वरूप, तुमने हमे चलेंज किया है तो अब हम कानून का सहारा लेंगे, अपने लडके को लायेंगे और इसी काशीनाथ के यहाँ शादी करके दिखायेंगे।" देवीदत्त ने मन्दिर से बाहर जाने के लिए पैर बढाया, लेकिन मन्दिर के दरवाजे पर जाकर फिर मुडकर चिल्लाये, "और हाँ, रामस्वरूप लम्बरदार, अब विजय का दूसरा रिश्ता करने से पहले उसका इलाज जरूर करा लेना। काशीनाथ को तो अधेरे म रख लिया कि लडका स्वस्थ है, शादी लायक है, पर किसी और को धोखा न

देना, पहले किसी अच्छे से वैद्य हकीम से लडके का इलाज करा लो, समझे।"

तीर की तरह देवीदत्त मन्दिर से निकलकर नगीनचन्द की दुकान की ओर चल दिये। देवीदत्त की आखिरी बात ने सबको चौंका दिया। यह क्या कह दिया देवीदत्त ने, विजय को क्या कोई बीमारी लग गई है? रामस्वरूप तिलमिला गये, चीखकर बोले, "हटाओ यह सब सामान।" फिर पुजारी जी की तरफ घूमकर बोले, 'पुजारी जी, इनका हिसाब कर दो, जो आज का खर्चा हुआ है वह ग्यारह सौ में से काटकर रुपया वापस कर दो। एक एक चीज फेंक दो। थू है ऐसे रिश्ते को।'

हरिया और नत्थूसिंह ने रामस्वरूप को पकड़ लिया नहीं तो शायद गिर पडते, किसी तरह ऊपर ले जाकर लिटा दिया। उन्हे दौरा पड गया था, डाक्टर को लेने नत्थूसिंह भाग चले।

थोडी देर पहले तक मन्दिर मे जो रौनक थी वह सब उजड गई। अडोसी पडोसी एक एक करके खिसक गये, लेकिन सबकी जबान से सब लम्बरदार के घर में हुए जशन की बात ही कर रहे थे। ऐसी अनोखी शाम? आगे के भी कई दिनो तक बात करने का मसाला लोगों को मिल गया।

देवीदत्त ने नगीनचन्द की दुकान से ही आदमी भेजकर अपना सामान मँगवा लिया और फिर वहीं से वापस बरेली चले गये।

ढाई सौ रुपया काटकर बाकी सगाई का रुपया काशीनाथ को लौटा दिया गया। थाल कपडा भी लौटा दिया। पर इससे क्या, काशीनाथ तो हजार रुपये के नीचे आ गये। लडकी की समस्या ज्यों की-त्यो बनी रही, बदनामी जो हुई सो अलग। अपना सा मुह लेकर काशीनाथ ठेकेदार को वापस जाना पडा।

रामस्वरूप को तो अब खाट से उठने में कम पन्द्रह दिन लगेंगे। दमे का दौरा पड गया है। विजय की बीमारी की बात शंकरलाल के कानो

तब भी पहुँची, चिंता मे पड गये। खानदान मे दो ही हैं जिन पर सारा भविष्य टिका है, श्रीप्रकाश और विजय कुमार। सो श्रीप्रकाश अपनी फोटोग्राफी की पिनक मे खोये हैं, और विजय ने यह बीमारी बुला ली है। कुछ करना होगा। ऐसी क्या बीमारी है जो किसी को कुछ बताता नहा है। सारे दिन अपने दोस्तों के यहाँ पडा रहता है। विजय को बुलाने के लिए नत्थूसिंह को भेजा तो विजय न डाँटकर भगा दिया। पर ऐसे तो काम नहीं चलेगा।

माधवप्रसाद को बुलवा लिया शंकरलाल ने। समझाते हुए बोले, "अब तुम कुछ करो तो काम चले, वरना तो सब गुड गोबर हो जायेगा। विजय तुमसे दबता है, उसे लेकर नौबतराय के पास चले जाओ, बडे डाक्टर हैं, एक मिनट मे सारी बात समझ जायेंगे। जो इलाज बतायें उसे शुरू कर दो, जल्दी करो।"

माधवप्रसाद त्रिपाठी के सामने विजय आँख नहीं उठाता। आखिर को बचपन मे पढाया है। गोदी मे खिलाया है, और चूतडो पर बेंत भी जमाये हैं। मजाल है कि लम्बरदार के घर मे कभी कोई उलाहना आया हो। घर के से आदमी हैं। हर समय इस जमींदार परिवार की भलाई की ही सोचते हैं। इसी से हर समय कठिनाई मे याद किये जाते हैं।

विजय ने माधवप्रसाद का देखा तो सरक्षुका लिया। चुपचाप पीछे पीछे नौबतराय की दुकान पर चला गया। पर्दे के पीछे ले जाकर नौबतराय ने पैण्ट उतरवाकर पूरी तरह देखा। बात बहुत सीरियस है। अलग ले जाकर माधवप्रसाद को समझाया, "लडके की सोहबत बिगड गई है। पेशाब की जगह फुंसियां हो गयी हैं, इसे तो बडे सरकारी अस्पताल मे ले जाओ, वहीं आपरेशन होगा। मैं चिट्ठी लिखे देता हूँ, कल ही हरदोई चले जाओ, देरी स केस बिगड जायेगा।'

रामस्वरूप न सुना तो सर पीट लिया, "हाय, कौन पाप उदय हुए हैं। कहीं का नहीं रक्खा सपूत ने। हाय कमे ही तग है इस पर अब इलाज में हजार-पाँच सौ और फुँक जायेंगे।"

माधवप्रसाद ने स्कूल से दो दिन का अवकाश ले लिया। शंकरलाल ने सेवा के लिए हरिया को साथ लगा दिया। घबराने की कोई बात नहीं

है। इलाज कायदे से होगा तो सारी बीमारी दूर हो जायेगी।

दस दिन से ज्यादा विजय को अस्पताल मे रहना पडेगा। शकरलाल भी विजय को देखन अस्पताल जायेंगे। शकरलाल यात्रा से बहुत घबराते हैं। यात्रा चाहे छोटी हो या बडी, उनके लिए दुखदायी हो जाती। शेखूपुरा से हरदोई तक पहुँचने के लिए भी तैयारी करनी पडती है। सबसे ज्यादा तो भाग के गोले का प्रबन्ध करना होता है। शाम होते ही भग का सेवन किये बिना उनसे रहा नहीं जाता। इसलिए हरिया को सदा साथ रखते। पर इस समय तो हरिया विजय के साथ अस्पताल मे ही है। उसके पास सिलबट्टा तो होगा नहीं। शकरलाल ने सूखी भग का चूर्ण ही साथ रख लिया। इसे ही फाँककर पानी पी लेंगे।

माधवप्रसाद विजय को अस्पताल मे भर्ती कराकर लौट आये थे। अब शकरलाल के साथ फिर माधवप्रसाद जा रहे है। एक दिन की स्कूल से और छुट्टी लेनी पडेगी।

चुनाव की भाग-दौड म ही शकरलाल की तबीयत खराब हो गई थी। उसके बाद से शरीर बराबर टूटता ही जा रहा है। हर समय थका-वट और कमजोरी। रात को तो ऐसा लगता जसे हल्का बुखार आ जाता है। जब भी सिगरट का जोरा से कश खीचते तो खाँसी का दौरा पड़ जाता। खाँसते-खाँसते सारा शरीर हिल जाता। आँखो में पानी भर आता। लगता मर मे जोरा का चक्कर आ गया है।

नत्थूसिह ने दवा लाने के लिए कहा ता साफ इकार कर दिया, "तुम हमे मरीज बनाकर खाट पर लिटाना चाहते हा। अरे थकावट है, दूर हो जायेगी।" शकरलाल को अग्रेजी दवा से सख्त नफरत है। देसी दवा की वकालत करते हैं। दूसरो को देसी इलाज कराने की सलाह देते हैं, पर खुद उसस भी बचना चाहते हैं। दवा के नाम से ही भडक जात। नत्थूसिह ने कुछ साचा, फिर चुपचाप जाकर सारी बात माधवप्रसाद को बता दी।

शाम हाते ही माधवप्रसाद वैद्य अयाध्यानाथ के साथ आ धमके। वैद्यजी न नाडी दिखाने को कहा तो शकरलाल फिर भडक उठे, "हम क्या रोगी हैं जो नाडी दिखायें। तुम लोग नाहक हमारे पीछे पडे हा। इसी से हम

डाक्टर वैद्य से ज्यादा दोस्ती नही बढाते। तुम लोग तो अपने पेशे के खातिर अच्छे भले को रोगी बना देते हो।"

वैद्यजी जोरो से हँस पडे। उन्होंने शकरलाल की बात का बुरा नही माना। हँसते हुए बोले, "आप-जैसे बडे लोगो के थोडा सा रोगी हो जाने से हमारी प्रक्टिस चल जायेगी। चार आदमियो मे कह सकेंगे कि हम लम्बरदार के वैद्य हैं कोई साधारण बात नही है। आपकी नाडी देखेंगे तो हमारा रुतबा बढ जायेगा।' वैद्य जी ने शकरलाल के सीधे हाथ की कलाई पर अपनी उँगलियाँ जमा दी।

नाडी देखने के बाद वैद्य जी ने झोले से छाती देखने का आला निकाला। कस्बे मे आले से छाती देखने से रोब पडता है। सिर्फ नाडी देखने से काम नही चलता। वह क्या किसी डाक्टर से कम हैं। आला हमेशा अपने झोले में साथ रखते हैं।

"अब जे ससुर आला साला काहे निकाल रहे हो। हमें बहुत तग न करो।' शकरलाल चिढकर बोले।

'हम तग कर रहे हैं! वाह भाई उल्टा चोर कोतवाल को डाटे ,"
माधवप्रसाद बोले, "वैद्य जी बिचारे जरा छाती पीठ देख रहे हैं, सो सीधी तरह बैठे रहो।"

माधवप्रसाद ने खुद ही शकरलाल का कुर्ता ऊपर उठा दिया। वैद्य जी ने आला लगाकर छाती देखी, फिर पीठ पर भी कई सेकेण्ड आला टिकाये रहे।

"मान गये लम्बरदार जी, आप जीते हम हारे।' वैद्यजी ने आला समेटते हुए कहा, 'आपको तो कोई बीमारी ही नही है। बीमारी भी आपसे डरती है।"

"लो सुनो माधवप्रसाद, क्या कह रहे हैं वैद्य जी।" शकरलाल अपनी जीत की खुशी मे जोरो से हँसे, इतनी जोरो से हँसे, कि खाँसी उठ आई, देर तक छाती पकडकर खाँसते रहे, के नीचे रखे मे ढेर सारा बलगम थूक दिया। वैद्य बलगम मे रियाँ उभर आयी थी।'

'आप अपने खाने म हरी स दी

खुश्की बहुत हो गई है। चाय भी बहुत तेज मत पियें। रात मे जब भी आख खुल जाय तो ठण्डा पानी जरूर पियें। पानी शरीर मे तरावट देना है।" वैद्यजी ने वातावरण को हल्का करते हुए कहा।

"पानी तो हम खूब पीते हैं, पानी से हमे परहेज थोडी ही है।" शकर-लाल ने अगोछे से मुह पोछते हुए कहा, "आप हरी सब्जी को कहते हो तो हम आज ही से हरी सब्जी खाना शुरू कर देते हैं। इसमे क्या मुश्किल है। हरी सब्जी उबालकर खाये या कच्ची ही खा लें।"

"अच्छा तो यही रहेगा कि दो चार पालक के पत्ते, आप खाने के साथ चबा लिया करें, इससे उसकी शक्ति पूरी की-पूरी शरीर म पहुँचती है।" वद्य जी ने समझाते हुए कहा।

दो चार इधर-उधर की बातें करने के बाद वैद्यजी माधवप्रसाद के साथ बगिया से बाहर आ गय। गली मे चलते हुए वैद्यजी बहुत गम्भीर थे। माधवप्रसाद ने पूछा, "क्या कोई चिन्ता की बात है।"

"हाँ, लम्बरदार को दिक हो गई है, और वह भी बहुत बढ गई है।"

"क्या ,' माधवप्रसाद चलते-चलते ठहर गये, आश्चय से वैद्यजी के मुह को देखते रह गये, "दिक । मतलब तपेदिक हो गई, टी० बी०।

'हा हा विश्वास नहीं हा रहा है आपको।" वद्य अयोध्यानाथ ने अपनी बात पर जोर देकर कहा, "देखा नही आपने, जब तसले म थूका था तो बलगम के साथ खून की फुटकिया भी छाती से निकल आयी थी। एक फेफडा तो काफी खराब हो चुका है। अब तो इनका बँधकर इलाज होना चाहिए। परेज से रहना होगा।"

"परहज से क्या रहेंगे खाक।" माधवप्रसाद ने अपने माथे पर हाथ मारकर कहा, "सुनते तो हैं नही किसी की, अक्ड के मारे मरे जा रहे हैं। काई सलाह दो तो खाने को पडते हैं।'

"परहेज नही करेंगे तो बीमारी इन्हें खा जायेगी। दिक को इसीलिए तो राजरोग कहा गया है। अन्दर-ही-अन्दर घुन की तरह नष्ट कर देता है।"

'इनसे परहेज हो चुका। सिगरेट यह न छोडें, भग यह न छोडें।

डाक्टर वैद्य से ज्यादा दोस्ती नहीं बढाते। तुम लोग तो अपने पेशे के खातिर अच्छे भले को रोगी बना देते हो।"

वद्यजी जोरो से हँस पड़े। उन्होंने शकरलाल की बात का बुरा नही माना। हँसत हुए बोले, "आप-जैसे बड़े लोगो के थाडा-सा रागी हो जाने से हमारी प्रक्टिस चल जायेगी। चार आदमियो से कह सकेंगे कि हम लम्बरदार के वैद्य है, कोई साधारण बात नही है। आपकी नाडी देखेंगे तो हमारा रतवा बढ जायेगा। वैद्य जी ने शकरलाल के सीधे हाथ की कलाई पर अपनी उँगलियाँ जमा दीं।

नाडी दखने के बाद वैद्य जी ने झोले से छाती देखने का आला निकाला। कस्बे मे आले से छाती देखने से रोब पडता है। सिफ नाडी देखने से काम नही चलता। वह क्या किसी डाक्टर से कम हैं। आला हमेशा अपने झोले मे साथ रखते हैं।

"अब जे ससुर आला साला काहे निकार रहे हो। हमें बहुत तग न करो।' शकरलाल चिढकर बोले।

"हम तग कर रहे हैं! वाह भाई उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे ,"
माधवप्रसाद बोले, "वद्य जी बिचारे जरा छाती पीठ देख रहे हैं, सो सीधी तरह बैठे रहो।"

माधवप्रसाद ने खुद ही शकरलाल का कुर्ता ऊपर उठा दिया। वैद्य जी ने आला लगाकर छाती देखी, फिर पीठ पर भी कई सेकेण्ड आला टिकाये रहे।

"मान गये लम्बरदार जी, आप जीते हम हारे।' वैद्यजी न आला समेटते हुए कहा, 'आपको तो कोई बीमारी ही नही है। बीमारी भी आपसे डरती है।'

"लो सुनो माधवप्रसाद, क्या कह रहे हैं वैद्य जी।" शकरलाल अपनी जीत की खुशी मे जोरो से हँसे, इतनी जोरो से हँसे, कि खाँसी उठ आई, दर तक छाती पकडकर खाँसते रहे, फिर तख्त के नीचे रक्खे तस्ले म ढेर सारा बलगम थूक दिया। वैद्य जी ने देखा, बलगम मे खून की फुट-कियाँ उभर आयी थी।'

'आप अपने खाने म हरी सब्जियाँ की मात्रा बढा दीजिए। आपको

खुश्की बहुत हो गई है। चाय भी बहुत तेज मत पियें। रात में जब भी आंख खुल जाय तो ठण्डा पानी जरूर पियें। पानी शरीर म तरावट देता है।" वैद्यजी ने वातावरण को हल्का करते हुए कहा।

"पानी तो हम खूब पीते हैं, पानी से हमे परहेज थोडी ही है।" शकर-लाल ने अगोछे से मुंह पोछते हुए कहा, "आप हरी सब्जी को कहते हो ता हम आज ही से हरी सब्जी खाना शुरू कर देते हैं। इसमे क्या मुश्किल है। हरी सब्जी उबालकर खाये या कच्ची ही खा लें।"

"अच्छा तो यही रहेगा कि दो चार पालक के पत्ते, आप खाने के साथ चबा लिया करें, इससे उसकी शक्ति पूरी की-पूरी शरीर म पहुँचती है।" वद्य जी ने समझाते हुए कहा।

दो चार इधर-उधर की बातें करने के बाद वैद्यजी माधवप्रसाद के साथ बगिया से बाहर आ गय। गली मे चलते हुए वैद्यजी बहुत गम्भीर थे। माधवप्रसाद ने पूछा, "क्या कोई चिन्ता की बात है।"

'हाँ, लम्बरदार को दिक हो गई है, और वह भी बहुत बढ गई है।"

"क्या ," माधवप्रसाद चलते चलते ठहर गये, आश्चय से वैद्यजी के मुह को देखते रह गये "दिक ! मतलब तपेदिक हो गइ टी० बी०।

"हाँ हाँ विश्वास नही हा रहा है आपको।' वद्य अयोध्यानाथ ने अपनी बात पर जोर देकर कहा, "देखा नही आपने, जब तसले मे थूका था ता बलगम के साथ खून की फुटकिया भी छाती से निकल आयी थी। एक फेफडा तो काफी खराब हो चुका है। अब तो इनका बँधकर इलाज होना चाहिए। परेज से रहना होगा।"

"परहेज से क्या रहेंगे खाक।" माधवप्रसाद ने अपने माथे पर हाथ मारकर कहा, "सुनते तो हैं नही किसी की, अकड के मारे मरे जा रहे हैं। काई सलाह दो तो खाने को पडते हैं।'

"परहेज नही करेंगे तो बीमारी इन्हें खा जायेगी। दिक को इसीलिए तो राजरोग कहा गया है। अन्दर-ही-अन्दर घुन की तरह नष्ट कर देता है।'

"इनसे परहेज हो चुका। सिगरेट यह न छोडें, भग यह न छोडें।

और सबसे बड़ी बात यह है कि साली औरत भी इनसे नहीं छूटती।" माधवप्रसाद ने गुस्से में कहा, "अब आपको तो सब मालूम ही है। यह जो साला नत्थूसिंह इनका प्राइवेट सेक्रेटरी बना हुआ है, यह बड़ा हरामी है। यह अपने स्वार्थ के लिए इन्हें तबाह कर रहा है। न जाने कहाँ कहाँ से नीच जात की औरतें लाकर इनके साथ सुला देता है, कुत्ता कमीना।"

वैद्य जी चलते-चलते रुक गये। समझाते हुए बोले, "दिक के मरीज़ के पास दो चीज़ तो भूल के नहीं आनी चाहिए, एक औरत और दूसरा नशा, इससे बचना बहुत जरूरी है। तुम चुपके से श्रीप्रकाश को सारी बातें लिख दो। आकर अपने चाचा को सम्हालें।"

"लिखने को तो हम लिख देंगे, पर उन्हें फुर्सत कहाँ है आने की।"

"तुम अपना धर्म निबाहो आगे राम मालिक। इसके पहले एक काम यह भी कर डालो। जैसे भी हो इनका एक्सरा करा लो। कम-से-कम यह तो पता चले कि बीमारी कहाँ तक पहुँची है।"

"जै ससुर एक नई मुसीबत आ गई। यह लम्बरदार मानेंगे एक्सरे कराने को।"

"तरकीब से काम लो, तरकीब से।" वैद्यजी ने फिर समझाया, "विजय को दिखाने तुम्हारे साथ कल हरदोई जा रहे हैं। वहीं अस्पताल में चाहे हाथ-पाँव जोड़कर, चाहे धमकी देकर, जैसे भी बन एक्सरे लिवा लो। बाकी बात श्रीप्रकाश के आने पर होगी।"

माधवप्रसाद ने सहमति में सर हिलाया।

हरदोई में हास्पिटल में, वार्ड नम्बर चार, बेड नम्बर पन्द्रह पर विजय आराम से लेटा हुआ जासूसी उपन्यास पढ़ रहा था। माधवप्रसाद त्रिपाठी का अस्पताल में अच्छा प्रभाव है। एक डाक्टर तो उनका पढ़ाया हुआ ही निकल आया, इस सबसे विजय का इलाज बहुत अच्छे ढंग से किया गया। एकदम फायदा हो गया। दो-तीन दिन में छुट्टी मिलने वाली है।

खाने पीने के लिए भी कोई तगी नही। अच्छी गिजा ने रग दिखाया। विजय के चेहरे पर रौनक आ गई।

शकरलाल विजय के पलग के पास लोहे के स्टूल पर बैठे हुए गहरे सोच मे डूबे हुए थे। देखते ही-देखते क्या से क्या हो गया। जमीदारी चली गई, रामस्वरूप बीमार चल रहे हैं। उनकी लड़की बडी हो चली है, उसका ब्याह होना है। श्रीप्रकाश और विजय यही खानदान के चिराग हैं, सो एक यहाँ अस्पताल मे पडा है, और दूसरा बनारस मे धूनी रमाय है। न जाने भगवान को क्या मजूर है।

सब गलती उनकी ही है। बहुत ढील दे दी। जरा सख्ती करते तो घर ऐसा न बिगडता। अब सख्ती से ही काम लेंगे। इन गर्मियो मे पहले श्रीप्रकाश की शादी करनी है, फिर विजय को ब्याहेंगे। बस सोच लिया, यही करना होगा।

माधवप्रसाद, शकरलाल को विजय के पास बैठाकर न मालूम कहा चले गये। अब लौटे तो हाथ मे एक पर्ची थामे हुए थे, "चलो उठो, जरा हमारे साथ आओ।"

"कहाँ चलना है।" शकरलाल ने पूछा।

"आओ तो सही, अभी बताते हैं।" माधवप्रसाद ने सक्षिप्त उत्तर दे दिया।'

अस्पताल के लम्बे बरामदे को पार करके माधवप्रसाद शकरलाल को लिये, कोने के बडे कमरे के सामने आ गये। बगर किसी भूमिका के बोले "देखो हमने पर्ची बनवा ली है। इस कमरे मे एक्सरा होता है। बस दो मिनट लगेंगे, छाती का फोटो आ जायेगा।"

शकरलाल की कुछ समझ मे नही आया, "किसकी छाती का फोटो आ जायेगा।"

"तुम्हारी और किसकी।' माधवप्रसाद ने आँखें तरेरकर कहा, "एक्सरे करा लेने से पता चल जायेगा सीने म बलगम क्यो बनता है, बस। इसमे कोई अंग्रेजी दवा पेट मे नही जाती है जो नखरे करा। फ्री फण्ड मे काम हो रहा है, दुई मिनट की बात है, हमारा कहा मान लो नही तो हम सच्ची कह रहे है, अभी दीवार से अपना सर फोड लेंगे।'

माधवप्रसाद की बात सुनकर शंकरलाल को हँसी आ गई, "पर हमें हुआ का है, जो एक्सरे कराय रहे हो।"

"जे हम पता है। हम से ज्यादा बहस न करो। हमारा सर पिराय रहा है। बाबा हमें बहुत दुखी न करो, नहीं तो हम प्राण दे देंगे।" माधव-प्रसाद की आवाज़ सहसा तेज हो गई थी।

शंकरलाल की समझ में नहीं आया क्या कहें। और कहीं यह सब होता तो माधवप्रसाद को डाँटकर चुप करा देते। पर यह तो अस्पताल है यहाँ डाटन-डपटन का मतलब है तमाशा खड़ा कर देना। दो आदमी माधव-प्रसाद की तेज आवाज सुनकर चौंककर देखने लगे थे। शंकरलाल चक्कर में आ गये, "चलो, क्या करना है, बताओ।"

माधवप्रसाद के पीछे पीछे शंकरलाल कमरे में घुस गये। जैसा जैसा कहा गया, वैसा वैसा ही करने लगे। पन्द्रह-बीस मिनट में एक्सरे का काम खतम हो गया।

विजय अस्पताल से निकलकर सीधे बनारस जाना चाहता था, लेकिन शंकरलाल ने सख्त हिदायत कर दी। सीधे घर आना है। उधर तुम्हारे बाबू बीमार पड़े हैं, इधर तुम्हें घूमने की पड़ी है। दो दिन बाद माधव-प्रसाद आकर ले जायेंगे।

माधवप्रसाद का पत्र पाकर श्रीप्रकाश तुरन्त शेखूपुरा के लिए चल पड़े। इस बार कुछ फैसला कर ही लेना होगा। ऐसे तो चाचा जी अपने प्राण दे देंगे। अब उन्हें अकेले नहीं छोड़ना है अकेले रहते हैं तभी न शरीर बिगड़ता है। बदपरेजी करते हैं। बनारस में रहेंगे तो रोज गंगा स्नान करेंगे। शरीर एकदम ठीक हो जायेगा। इस बार साथ लेकर ही लौटना है।

श्रीप्रकाश स्टेशन से सीधे स्कूल पहुँचे। बहुत गम्भीर बात करने के लिए लिखा था माधवप्रसाद ने। ऐसी क्या गम्भीर बात है? अगर चाचा जी की तबीयत ज्यादा खराब होती तो विजय तार देता। कोई और सूचना मिलती, सिर्फ बीमार चल रहे हैं लिख देने से तो कोई बात साफ नहीं

होती।

श्रीप्रकाश को देखते ही माधवप्रसाद ने अपने कमरे से सबको निकाल दिया। अब स्कूल चलाने का काम असिस्टेण्ट हेडमास्टर का है। अब तो वह श्रीप्रकाश से बात करेंगे। कुछ निर्णय लेना है।

"भइया, तुम आय गये, अच्छा हुआ। अब सम्हालो अपने चाचा को, यह देखो बीमारी कितनी बढ़ चुकी है।" माधवप्रसाद ने एक्सरे का निगेटिव दिखाते हुए कहा।

श्रीप्रकाश ने निगेटिव को लौट-पोट कर देखा। उनकी कुछ समझ में नहीं आया, "यह अचानक इतनी बीमारी बढ़ कैसे गई।'

"बढ़ेगी नहीं? जब अपने मन की करेंगे तो बीमारी बढ़ेगी। हमने नौबतराय से बात कर ली है। वैद्य अयोध्यानाथ का भी यही कहना है, बस, तुरंत भुवाली ले जाओ। टी० बी० का वही इलाज हो सकता है। एक फेफड़ा तो बहुत खराब हो गया है। छूत की बीमारी है, साथ भी नहीं रख सकते।"

"लेकिन भुवाली जाने के लिए चाचा जी तैयार हो जायेंगे?

"अब यह सब तुम्हारे सोचने की बात है। हमसे जितना हो सका कर दिया। वह तो छाती का एक्सरे तक नहीं लेने दे रहे थे। यह तो हम थे कि बस अड़ गये। एक्सरे ले के रहे।' माधवप्रसाद ने कहा।

श्रीप्रकाश सोच में पड़ गये। कुछ समझ में नहीं आ रहा है क्या करें। बनारस में नई-नई प्रैक्टिस जमाई है उस पर भी पूरा ध्यान देना है। इधर चाचाजी की बीमारी, इसे भी देखना है। यह सब कैसे होगा?

"तुम चिन्ता न करो, राम सब भली करेंगे।' माधवप्रसाद ने समझाया, 'मैंने सारी बात सोच ली है। बस जैसा मैं कहूँ वैसा करते चलो। तुम्हारे चाचा को तुम्हारी शादी की बहुत जल्दी पड़ी है। उन्होंने पीलीभीत में एक लड़की भी देख ली है। सो भइया शादी तो करनी ही है, आज नहीं तो कल। अब अगर कोई मन की बात है तो हम कुछ नहीं कहते, नहीं तो अपने चाचा का दिल रख लो, जहाँ कह रहे हैं शादी कर लो। हमने खानदान के बारे में मालूम कर लिया है, बहुत अच्छे आदमी हैं। देना लेना भी ठीक रहेगा। लड़की भी देखने-सुनने में भली है। फोटो आई

रक्खी है। ठीक लगे तो हा भर दो।"

"आप भी कमाल करते हैं।" श्रीप्रकाश फट पड़े, "चाचा की जान पर बनी है, पहले उनका इलाज होगा, या मैं अपनी शादी रचाऊँ।"

'यही तो नुक्ता है जिसे तुम नही समझते, बस ताव खा रहे हो।" माधवप्रसाद ने फिर समझाने की कोशिश की, "शादी के लिए तुम हा कह दोगे तो उन्हें संतोष हो जायेगा। फिर जब चाहे तब शादी करना। अगर छ महीना भी भुवाली मे इलाज हो जाये तो पूरी तरह भले चंगे हो जायेंगे।' एक मिनट के लिए माधवप्रसाद रुके, श्रीप्रकाश के चेहरे पर गहरी नजर डाल के मन की थाह लेते हुए बोले, "हाँ, तुम्हारे मन म अगर कोई और बात है तो ।'

"कैसी बात ?" श्रीप्रकाश ने आश्चय से पूछा।

"अब क्या कहें " माधवप्रसाद सकोच मे पड गये। आखिर को श्रीप्रकाश उनके लडके के बराबर है। साफ साफ कहते भी नही बनता। पर फिर भी कहना तो पडेगा ही, "हमारा कहना है कि अगर तुम्हारी अपनी पसन्द की कोई लडकी है तो कहो फिर वसा देखा जाय पर अब ज्यादा टालो नही।"

'आप लोग भी न जान क्या सोच लेते हैं।' श्रीप्रकाश उठकर खडे हो गय, 'मैं चलता हूँ। नाम का तो आप बगिया मे आयेंगे ही।

"हा हाँ जरूर आयेंगे।' माधवप्रसाद ने उत्तर दिया, फिर जसे सहसा कुछ याद आने पर, 'और हाँ देखो जरा विजय को डाँट डपट दो, बहुत हाथ पैर हिलाये जा रहे है। जसे-तसे ठीक हुए हैं तो बस रट लगा दी जाने की। पूछा, जाओगे कहाँ कोई है ठिकाना ? हमको पास को शहर मे कही कोई ढग की नौकरी मिलती है ? यहाँ हमने मुनिसपल्टी म नौकरी ढूढ दी है, सौ रुपया माहवार मिलेगा। सुदर घर के घर म रहें, खेती बारी देखें सो तो नही, बस हर समय शहर म रहने की रट। रामस्वरूप से उठा-बैठा नही जाता रोजगार कोई है नहा बहन बडी हो रही है, पर बेटा जी को शहर की हवा लग गई है।

"आप चिन्ता न करें। हम विजय को सीधा कर देंगे। बहुत रह लिए बनारस म। जो करना था कर लिया।" श्रीप्रकाश गुस्से म उबाल खाने

लगे। तेजी से कमरे से निकले, और बाहर खड़े इक्के पर जाकर बैठ गये। इक्के ने राम मंदिर की दिशा पकड़ ली।

श्रीप्रकाश को देखकर शंकरलाल की आखें भर आयीं। मुह से सिर्फ इतना ही निकला—"आ गये बेटा।"

चाचा के रुँधे गले से निकली आवाज ने श्रीप्रकाश को हिला दिया। पहली बार उन्होंने चाचा की आखें गीली देखी थीं, बड़ी कठिनाई से अपने पर काबू कर पाये।

'आप नही माने चाचा जी, आपने शरीर को नष्ट कर ही लिया।"

शंकरलाल ने हँसने की कोशिश की "अरे नही, हमे कुछ नही हुआ है। थोडी खासी बढ गई है। ठीक हो जायेगी।'

"अब यह खासी लम्बा इलाज लेगी। मैं अब आपको ऐसे नही छोड़ूंगा। पूरा इलाज कराऊँगा।"

'जरूर कराओ बेटा, तुम नहीं कराओगे तो कौन करायेगा।" शंकरलाल को फिर खासी का दौरा पड गया, छाती पकडकर खासते रहे, फिर ढेर सारा बलगम खाट के नीचे रखे तसले मे थूक दिया।

'अब आपको परहेज से रहना होगा। नशा-पानी सब बन्द।" श्रीप्रकाश ने थोड़ा गुस्से से कहा।

शंकरलाल ने फिर हँसने की कोशिश की, "हमने खुद ही सब कम कर दिया है। पहले दिन मे पाँच छ पैकेट सिगरेट के पीने थे, अब कुल दो ठो पीते हैं।'

"आज से यह दो भी बन्द।' श्रीप्रकाश ने कहा, "मैंने आपका पक्का इलाज कराना है। ज़रा भी गलती नही होने दूगा।

श्रीप्रकाश की सख्त आवाज़ से शंकरलाल कुछ डर गये, धीरे से बोले, "चलो हम तुम्हारी सब बात मान लेंगे एक बात तुम भी हमारी मान लो भइया। अब शादी कर लो।"

"ठीक है, कर लेंगे जब आप कहेंगे तभी कर लेंगे, जहाँ कहेंगे, वहीं

कर लेंगे।'

शकरलाल को विश्वास नही हुआ एक क्षण के लिए श्रीप्रकाश के चेहरे की ओर देखते रह गये, 'घर बहुत अच्छा है, लडकी भी सुन्दर है, दसवीं दर्जा पास है, फोटो हमने मँगवा ली है, यह देखो ," शकरलाल ने अपने पास रक्खे तकिये के नीचे से लडकी की फोटो निकालने के लिए हाथ बढाया। लेकिन श्रीप्रकाश ने हाथ पकड लिया, "इसकी कोई जरूरत नहीं है। जब आपने लडकी पसन्द कर ली है तो सब ठीक है। आपकी पसन्द म हीं हमारी पसन्द है। पर हमारी भी एक शर्त है।" श्रीप्रकाश ने कहा।

"हाँ हाँ बोलो।"

"आपको अपना इलाज कराने के लिए हमारे साथ भुवाली चलना होगा।'

"भुवाली! भुवाली किसलिए?" शकरलाल ने आश्चय से कहा, "अरे हम कोई इतना बीमार थोडी ही हैं जो इलाज के लिए परदेश जायें। हम ठीक हो जायेंगे तुम विश्वास करो।"

'आपपर बहुत विश्वास किया, इसी का तो यह नतीजा है।" श्रीप्रकाश ने चिढकर कहा, "मैं अभी आपके सीने का एक्सरे देखकर आ रहा हूँ। फेफडे पर असर हो चुका है। भुवाली ही जाना होगा। मैंने आपकी बात मान ली है अब आपको मेरा कहा मानना होगा। '

शकरलाल खामोश हो गये। क्या उत्तर दें? अपने वस म कुछ भी नही रहा।

"चाचा जी, आपका स्वास्थ्य ठीक न रहा, तो यह घर परिवार किसके सहारे चलेगा।" श्रीप्रकाश ने प्राथना के स्वर मे कहा।

शकरलाल अब भी चुप थे।

"आपको शायद मुझ पर विश्वास नही हो रहा। ऐसा करते है, लडकी वालो को सूचित किये देते हैं। पाँच आदमी चलते हैं। फेरे डालकर विदा कराये लाते हैं।'

शकरलाल सहसा चौंक पडे, "वाह यह कैसे हो सकता है। इतने सालो बाद तो हमारे परिवार मे शादी होने जा रही है। बगैर कुछ धूम-धाम किये ब्याह कैसे हो जायेगा!! हम क्या कोई चोरी कर रहे हैं जो पाँच

आदमी चुपके मे जायें और बिदा करा लायें। यह नही हो सकता। शादी होगी खूब बढ़िया एकदम फस्ट क्लास। हमने सब सोच लिया है दुनिया भी देखेगी लम्बरदार के घर से कसी शान की बारात जा रही है।"

"ठीक है, छ महीने बाद मुहूर्त निकलवाकर पत्र लिख दीजिए। तब तक आपकी तबीयत भी ठीक हो जायेगी।"

शकरलाल के लिए अब कहने को कुछ शेष नहीं था। इतनी देर बात की तो शरीर थक सा गया। सिरहाना ठीक करके लेट गये।

कई दिनो बाद बगिया मे महफिल जुटी थी। शकरलाल धीरे धीरे कदम उठाते बगिया तक चले गये। ऊपर से चाहे जितना ही हँसें-बोलें पर अन्दर शरीर मे बहुत कमजोरी आ गई है यह वह भी महसूस करते। लेकिन अंग्रेजी इलाज के नाम पर अब भी बिदक जाते। वैद्य अयोध्यानाथ पर बहुत भरोसा है, पर जब वैद्य जी ने भी भुवाली जाने की सलाह दी तो खामोश हो गये। अब तो जाना ही होगा। कैसे रहेंगे अस्पताल मे, आज तक तो कभी घर से बाहर दो दिन भी नहीं रहे। अब पूरे तीन चार महीना बाहर रहना होगा।

"आप बेकार म परेशान हो रहे हो लम्बरदार। यहाँ से कोई-न कोई तो भुवाली का चक्कर लगाता ही रहेगा।" लल्लनसिंह ने कहा।

'और क्या आप फिक्र न करें। हर हफ्ते हम मे से कोई-न-कोई आपसे मिलने भुवाली पहुँचेगा।" मेहदीहसन ने लल्लनसिंह की बात का समर्थन किया, 'हमारा दिल भी तो आपके बिना नही लगेगा।"

शकरलाल ने आँख भरकर मेहदीहसन को देखा। बहुत सतोष मिला मन का। कितना चाहते हैं लोग उन्हें।

श्रीप्रकाश और माधवप्रसाद कुएँ के पास खडे धीरे धीरे बात कर रहे थे। शायद किसी निर्णय पर पहुँच गये। श्रीप्रकाश तो वही कुएँ की मेड पर बैठ गये, माधवप्रसाद ने शकरलाल के पास पहुँचकर कहा, "तो फिर क्या विचार किया।"

"काहे के बारे म ?" शंकरलाल ने पूछा।

"वही श्रीप्रकाश बाबू की शादी के बारे म। क्या लिखें पीलीभीत वालो को। अभी बुला लें रोक के लिए, या भुवाली से जब लौट आओ तब रक्खें। शादी तो जाडो मे होनी ही है।"

शंकरलाल कुछ नही बोले। लगता था जैसे कुछ तय ही नहीं कर पा रहे है। शंकरलाल को चुप देखकर वैद्य अयोध्यानाथ बोले, 'मेरा कहा मानो तो आप पहले अपना इलाज करा लो। फिर धूमधाम से सगाई हो जायेगी। आपका स्वास्थ्य ठीक नही है तो किसी को कुछ आनन्द नही आयगा। हाँ, एक पत्र लडकी वालो को अवश्य लिखवा दीजिए, जिसम रिश्ते के लिए 'हाँ हो।"

"ठीक है, वैद्य जी जैसा कह रहे हैं, वैसा ही करो। भइया से एक बार और पूछ लो।" शंकरलाल ने धीरे से कहा।

"श्रीप्रकाश बाबू से हमने पूछा लिया है। उनकी पूर्ण सहमति है, चिन्ता न करो।" माधवप्रसाद ने कहा।

श्रीप्रकाश भी आकर पास बैठ गये, "आपने छुट्टी की मजूरी ले ली," श्रीप्रकाश ने माधवप्रसाद से पूछा।

"बिल्कुल ले ली है। हरदोई आदमी भेजकर इसपेक्टर से खास तौर पर मजूरी ली है।' माधवप्रसाद ने कहा, "डाक्टर का पत्र भी ले लिया है। सेनीटोरियम मे जाते ही जगह मिल जायेगी।"

"तब फिर कल ही चल दें, देरी करने से क्या फायदा।' श्रीप्रकाश ने कहा।

"ठीक है, कल ही चल देते हैं।" माधवप्रसाद ने सहमति जाहिर की।

दो-एक बाते और हुई। सफर के लिए कुछ सुझाव भी दिये गये। किस तरफ से जाना सुविधाजनक रहेगा इस बारे मे भी सोचा गया। बरेली होते हुए हल्द्वानी तक तो ट्रेन का रास्ता है, फिर बस का सफर शुरू हो जायेगा। पहाड पर बस में सफर करते हुए चक्कर आते हैं, इसलिए इलायची मुह म अवश्य रख लें। खाली पेट सफर करना अच्छा रहेगा, नहीं तो उलटी ज्यादा आयेंगी। और भी इसी तरह के सुझाव बताये

गये। इस बीच शंकरलाल बिलकुल खामोश थे। लगता जैसे पत्थर की मूर्ति हो गये हों।

"क्या बात है लम्बरदार साहब, आप तो बिलकुल चुप हैं।" मेहदी-हसन ने कहा।

"अब चुप न रहें तो क्या करें हमारे बोलने की कोई सुनवाई है यहाँ।" शंकरलाल फट पड़े, "आप सब मिलकर हमें यहां से खदेड़ रहे हैं, तो ठीक है भाई। किस्मत में यह दिन भी देखना बदा था, तो देखेंगे।"

चारों ओर सन्नाटा छा गया। सबके मुँह उतर गये। यह क्या कह दिया शंकरलाल ने। ऐसा तो उनके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता।

"चाचाजी, आप कैसी बातें कर रहे हैं। बीमारी बढ़ गई है इसीलिए आपका इलाज कराने भुवाली चल रहे हैं। यहाँ भी डाक्टरों ने यही सलाह दी है। आप नहीं जाना चाहते तो रहने दीजिए, हमारे साथ बनारस चलिये वहीं इलाज करायेंगे।" श्रीप्रकाश ने बुझे हुए स्वर से कहा।

"अरे अब चलना ही है, तो क्या बनारस और क्या भुवाली।" शंकर-लाल ने गहरी सांस लेकर कहा, "हमारी यह समझ में नहीं आता, क्या ससुर डाक्टरी ही एक इलाज रह गया है, वैद्य-हकीमी सब बिलाय गये।"

"लम्बरदार जी, इसमें डाक्टर वैद्य की बात नहीं है, बात है जल वायु परिवर्तन की। इसे सभी मानते हैं। अब यह अप्रैल का महीना शुरू हो रहा है अभी मई और जून में भयंकर गर्मी पड़ेगी। मगर पहाड़ी वाता-वरण बहुत शांत बहुत सुखद है। इस कारण आपसे आग्रह कर रहे हैं कि थोड़े समय के लिए भुवाली रह आइये। वहां की आबोहवा आपको जरूर फायदा करेगी, यह हम शर्त लगाकर कह सकते हैं।" अयोध्यानाथ ने समझाना चाहा।

"ठीक है हम भुवाली जा रहे हैं। पर जिस दिन हमारा मन वहाँ से ऊबा तो हम उल्टे पाँव लौट आयेंगे, फिर हमें कोई कुछ न कहे, यह हम बताये देते हैं।" शंकरलाल ने वैद्य अयोध्यानाथ की शर्त पर अपनी शर्त रख दी।

"बिल्कुल ठीक मानते हैं एकदम मानते हैं।" एक साथ कई कण्ठों से आवाज फूट पड़ी।

"मालिक, हमऊँ का साथ लैंय चलो, हम हियां अकेले नाहीं रहेंगे।" हरिया ने शंकरलाल के पैर पकड़कर रोना शुरू कर दिया।

अजब सीन उपस्थित हो गया। शंकरलाल की बीमारी से सब पहले ही डरे हुए थे, अब हरिया ने अपने रोने से और मनहूसियत फैला दी। माधवप्रसाद ने डाँटकर कहा, "रोता क्यों है, साथ चलना है तो चला चल। आखिर किसी-न-किसी को वहाँ साथ रहना ही होगा।"

शंकरलाल ने गौर से माधवप्रसाद की ओर देखा, इस तरह जैसे पूछ रहे हों, और किस किस ने अपने को साथ रहने के लिए पेश किया है! बुरे समय में ही पता चलता है कि कौन अपना है। किसके मन में सच्चा प्रेम है। लोग तो तपेदिक का नाम सुनकर भाग जाते हैं, यह साथ चलने को कह रहा है। साथ निभाने को तैयार है। जरूर पिछले जन्म का कोई साथी है, तभी न साथ निभा रहा है। प्यार से हरिया के सर पर हाथ फेरते हुए बोले, "रोते नहीं हम तुझे अलग थोड़ी ही कर रहे हैं दो-तीन महीने की बात है हम लौट आयेंगे।"

'न मालिक, हम साथ चलेंगे।" हरिया ने सर हिलाकर जिद की।

"अच्छा अच्छा साथ चल। तू साथ रहेगा तो हमारा भी जी लगा रहेगा।"

शंकरलाल उठकर खड़े हो गये। शाम का अँधेरा चारों ओर छाने लगा। बगिया में अब और बैठने को मन नहीं हुआ। घर जाकर आराम करेंगे।

शाम की गाड़ी से बरेली जाना है। फिर वहाँ से छोटी लाइन हलद्वानी के लिए मिलेगी। सुबह से ही तैयारी शुरू हो गई। छोटी बक्सिया में गिनकर कपड़े रक्खे गय। गम कपड़ा का विशेष ध्यान था। भुवाली तो पहाड़ी स्थान है सुबह शाम गम कपड़े पहनने होंगे। दो छाते खास तौर पर मंगाये गये। बिना छाता के तो पहाड़ पर दो कदम भी चलना कठिन है। न जाने

तब बरसात शुरू हो जाये ।

श्रीप्रकाश की नजर बचाकर हरिया ने भग का बडा डिब्बा बिस्तर मे बाँध दिया । ऐसा ही आदेश था शकरलाल का । बगर भग के नही रह सकते । दो दजन कची सिगरेट की डिब्बी भी चुपके से मगवाकर खकसिया मे ठूस दी । शतरज का बोड और मोहरे रखवाना भी शकरलाल नही भूले । ताश की नई डिब्बी बाजार से तुरत मगवाई गई ।

बडी अम्मा न रास्ते का खाना तैयार करके टोकरी मे रखकर बाध दिया । कौन खायेगा इतनी पूडी । श्रीप्रकाश बिगड गये, "तुम तो बडी अम्मा बेकार मे झमेला खडा कर देती हो ।"

बडी अम्मा ने कोई जवाब नही दिया, बस मुह पर पल्ला लगाकर चुपचाप दूसरा काम करने लगी ।

रामस्वरूप अब चलने फिरने लायक हो गये थे । बोलते बहुत कम । बोलने से जोर पडता है । चलते समय बाहर तक आये ।

दो इक्का बुला लाये थे नत्थूसिह । स्टेशन नक विजय भी चल रहा है । नत्थूसिह ता साइकित पर हैं । हरिया और माधवप्रसाद, विजय के साथ आगे के इक्के पर बैठ गये । पीछे के इक्के पर शकरलाल और श्रीप्रकाश बठेंगे ।

"अपना ध्यान रखना बडकऊ ।" बडी अम्मा की आँखो म आसू आ गये ।

"तुम अपना ध्यान रखो बडी अम्मा हम ठीक हैं ।" शकरलाल हँसे, "जे सब कह रहे हैं सो हम घूमने जा रहे हैं । महीना दो महीना मे लौटे आयेंगे, और क्या ।'

मदिर के अदर जाकर शकरलाल भगवान के सामने हाथ जोडकर खडे हो गये । सब प्रभु की माया है, वही पार करेंगे । पुजारी जी न मत्र पढकर तुलसा दल के साथ गगाजल दिया । शकरलाल ने सीधे हाथ की हथेली पर गगाजल ले लिया और श्रद्धा के साथ पी गये ।

नत्थूसिह पीछे ही खडे थे । यही ऊँचनीच समझा दना ठीक रहगा । स्टेशन पर जाने वखत मिले या न मिले ।

"देखो नत्थूसिह एकदम चौकस रहना । जमाना खराब है, फिर

"जी घबराय रहा है!" माधवप्रसाद ने पूछा।

हाथ के इशारे से शकरलाल ने चुप रहने के लिए कहा। बोल मुह से निकल ही नहीं सकता। उबकाई के मार दम निकला जा रहा है। कहा ला के पटका है। पहाड़ म ले जाकर क्या खाक स्वास्थ्य बनायेंगे, यहा अभी स मरे जा रहे है। शकरलाल के मन म आ रहा था, इसी दम वापस चले जायें, पर बस तो बराबर आगे की आर खीचे लिय जा रही थी।

श्रीप्रकाश खिडकी से ऊचे ऊँचे पहाडो को देख रहे थे। चीड के वृक्षा ने उनका मन मोह लिया। इसी को कहते है महान प्राकृतिक सुषमा। अफसोस कैमरा साथ नही लाये वरना ढेर सारे चित्र खीच लेत। अब जब आयेंगे ता कैमरा जरूर साथ लायेंगे।

हरिया भौचक्का-सा बस की पिछली सीट पर बैठा था। उसके जिम्मे सामान की रखवाली का काम था। मैदान का रहने वाला, ऊँचे ऊँचे पहाडा को दखकर डर-सा गया। बस मे बठे बठे माथा चक्कर खाने लगा सो अलग।

रास्त मे दो एक जगह बस कुछ देर के लिए रुकी, ता शकरलाल ने थोडी राहत पाई, लकिन बस मे बैठते ही फिर पहले-जैसा हाल हो गया। राम जान कब रास्ता पूरा होगा, "अर अब कितनी दूर और जाना है?" शकरलाल ने झुझलाकर पूछा।

"बस आधे घण्टे का सफर और रह गया है।" श्रीप्रकाश ने कहा।

भुवाली मे जाते ही कहा ठहरना होगा, यह माधवप्रसाद ने पहल ही तय कर लिया था। हरदोई मे एक भुवाली का आदमी भी खाज निकाला, उसी के कहे मुताबिक, तिवारी होटल मे पहले से ही कमरा बुक करा लिया था। होटल के कमरे मे पहुँचते ही शकरलाल निढाल से हाकर पलँग पर गिर पडे।

दो चार बडे शहरो को छाडकर शेष पहाडी स्थानो पर आबादी मुट्ठी भर ही मानी जाती है। दो पहाडो के बीच घुमावदार सडक होती है कुछ ऊँची–

पहले वाली बात भी नही रही, न जाने कौन कब की दुश्मनी निकाल ले। हमारे पीछे घात लगाकर वार कर सकता है दुश्मन, का समझे।"

'मालिक आप चिंता न करो, हम एकदम चौकन्ने हैं।" नत्थूसिंह ने सर हिलाकर कहा।

"थोर नाल का पैसा हर हफ्ते हमे भेजते रहना। परदेश म पसे की कब जरूरत पड जाये, कौन जाने। लापरवाही न करना।" शकरलाल ने अपनी बात पर जोर दिया। नत्थूसिंह ने फिर सर हिलाकर समथन किया।

मन्दिर के बाहर खडे श्रीप्रकाश बुला रहे थे। गाडी का टाइम हो रहा है। स्टेशन पहुचने मे भी पूरा एक घण्टा लगता है। शकरलाल नत्थूसिंह के साथ मन्दिर से बाहर आ इक्के पर बैठ गये। नत्थूसिंह ने साईकिल सम्हाल ली।

मुहल्ले के काफी लोग इकट्ठा हो गये थे। शकरलाल इलाज कराने जा रहे है। जिसने भी सुना दौडा चला आया। दस-पाच ने पैर छूकर प्रणाम किया। बाकी हाथ जोडे खडे थे। शकरलाल हाथ उठाकर सबको आशीर्वाद दत रहे। अब बोला नही जाता। दिल भर आया है।

इक्के के आँखो से ओझल होने तक भीड वही खडी रही। फिर धीरे-धीरे सब इधर-उधर हो गये। मन्दिर के सामने फिर सूनी सडक उभर आई।

हल्द्वानी तक का सफर शान्ति से कट गया। लेटने को सीट मिल गई, इसलिए कोई कष्ट नही हुआ। इसके बाद की यात्रा कष्ट देने लगी। भुवाली की ओर बढते हुए जब भी बस पहाडी रास्ते पर मोड लेती तो शकरलाल का जी मिचलाने लगता। एक के बाद दूसरी इलायची मुह म दबाये हुए थे पर फिर भी लगता जैसे पेट का सारा पानी बाहर आ जायेगा। एक मिनट को चन नही। मुह के आगे तौलिया लगाये हुए आँखें बन्द किये बैठे थे।

"जी घबराय रहा है!" माधवप्रसाद ने पूछा।

हाथ के इशारे से शकरलाल ने चुप रहने के लिए कहा। बोल मुँह से निकल ही नहीं सकता। उबकाई के मारे दम निकला जा रहा है। कहा ला के पटका है। पहाड मे ले जाकर क्या खाक स्वास्थ्य बनायेंगे, यहा अभी से मर जा रहे है। शकरलाल के मन म आ रहा था, इसी दम वापस चले जायें, पर बस तो बराबर आगे की ओर खीचे लिये जा रही थी।

श्रीप्रकाश खिडकी से ऊचे ऊँचे पहाडो का देख रहे थे। चीड के वृक्षा ने उनका मन मोह लिया। इसी को कहत है महान प्राकृतिक सुषमा। अफसोस कैमरा साथ नहीं लाय वरना ढेर सारे चित्र खीच लते। अब जब आयेंगे ता कैमरा जरूर साथ लायेंगे।

हरिया भौचक्का सा बस की पिछली सीट पर बठा था। उसके जिम्मे सामान की रखवाली का काम था। मदान का रहने वाला, ऊँचे-ऊँचे पहाडो को देखकर डर-सा गया। बस म बठे बैठे माथा चक्कर खाने लगा सो अलग।

रास्ते मे दो एक जगह बस कुछ देर के लिए रुकी, ता शकरलाल ने थोडा राहत पाई, लेकिन बस मे बठते ही फिर पहले-जैसा हाल हो गया। राम जान कब रास्ता पूरा होगा, "अरे अब कितनी दूर और जाना है?" शकरलाल ने झुझलाकर पूछा।

"बस आधे घण्ट का सफर और रह गया है।" श्रीप्रकाश ने कहा।

भुवाली म जाते ही कहा ठहरना होगा, यह माधवप्रसाद ने पहले ही तय कर लिया था। हरदोई म एक भुवाली का आदमी भी खाज निकाला, उसी के कह मुताबिक, तिवारी होटल म पहले से ही कमरा बुक करा लिया था। होटल के कमरे मे पहुँचत ही शकरलाल निढाल से हाकर पलँग पर गिर पडे।

दो चार बडे शहरो को छाडकर शेष पहाडी स्थानो पर आबादी मुट्ठी भर ही मानी जाती है। दो पहाडो के बीच घुमावदार सडक हाती है, कुछ ऊँची-

नीची-सी। उसी के दोनो ओर जो मकान बने होते हैं उसमे दूकानें निकालकर बाजार का रूप द दिया जाता है। बीच मे किसी दुमजिली इमारत मे होटल बन जाता है। बस, इसके आगे तो नगर सरचना के बारे म कुछ सोचने को बाकी ही नही रहता। भुवाली तो वैसे भी बदनाम है। कहा जाता है कि इस स्थान पर डाक्टरो को भी टी० बी० के कीटाणु घेरे रहते हैं, दिन भर रोगियो के बीच रहने से वह भी टी० बी० से बच नही पाते। हवा मे टी० बी० के कीटाणु उडते हैं। कोई हिम्मत नही करता भुवाली मे ठहरने की। जिन्हे अलमोडा जाना होता है वह भुवाली से गुजरते समय बस अड्डे पर भी नही उतरते। उतरते भी हैं ता सिफ पेशाब करने के लिए। डर के मारे पानी भी नही पीते। कहीं दिक की बीमारी न घेर ले। छूत की बीमारी ठहरी। जो लोग यहाँ के वाशिंदे है वही यहाँ रह रहे हैं। या फिर ऐसे भी चेहरे देखने को मिल जायेंगे, जो अपने फेफडो को बचाने के लिए मरीज की हालत मे यहा बस तो गये, पर साथ ही जीविका के लिए कोई छोटी मोटी दूकान खोलकर बाजार की शोभा बढाने लगे। पहाडी मजदूर जरूर काफी तादात मे दिखाई दिये। ये ज्यादातर सामान ही ढोते हैं, या फिर डाडी ढोने वाले। दो बाँसो के बीच मे कुर्सी बँधी होती है। इसे ही डाँडी कहते हैं। इस कुर्सी पर मरीज को बैठाकर कन्धे पर उठा लेते हैं, फिर पहाड की उतराई चढाई पर जहाँ कहो वहाँ पहुँचा देते हैं। शकरलाल ने डाँडी का देखा तो आश्चय से बोले, "जे ससुर अच्छी सवारी है। जिन्दा आदमी को ही कन्धे पर ढोये लिये जा रहे हैं।"

शकरलाल का बस चलता तो कभी भी पहाडी लोगो के कन्धे पर न चढते। लेकिन यहाँ मजबूर थे। पैदल चलने की उन्हें वैसे भी आदत नही थी फिर यहाँ तो सडक भी ऊँची-नीची है। चार कदम चलो तो सास फूल जाती है। सेनीटोरियम तक ता डाँडी पर ही जाना होगा।

आज इतवार है। इतवार को सेनीटोरियम मे भर्ती नही हो सकती। कल श्रीप्रकाश और माधवप्रसाद सेनीटोरियम म जाकर सारा प्रबन्ध करेंगे, हरिया के लिए भी सेनीटोरियम के पास ही कोई जगह रहने की देखनी होगी, फिर शकरलाल को ले जायेंगे।

दिन खाने और सोने मे बीत गया। छोटा-सा होटल। एक ताइा में

दूसरी मंजिल पर आठ कमरे बने हुए हैं। सामने छोटा सा छज्जा, जिस पर खड़े होकर बाजार का मुआइना किया जा सकता है। कमरे के पीछे रसोई घर, बाल में गुसलखाना है। इससे ज्यादा और कोई सुविधा नहीं। इसी म दो दिन काटन है, सो कट जायेंगे।

शाम को कमरे मे नहीं बैठा जायेगा। थोड़ा घूमना फिरना भी हो जाये। सामने और पीछे पहाड़ो पर इधर उधर छोटे छोटे बँगले भी बने हैं वह भी किराये पर मिलते हैं, पर उनमे दो दिन के लिए क्या रहा जाये, होटल ही ठीक है। घूमने जाना है, लेकिन चाचाजी पैदल कैसे चल पायेंगे। उनके लिए तो डाँडी करनी ही होगी श्रीप्रकाश ने तीन घण्टे के लिए किराये पर डाँडी का प्रबन्ध कर लिया।

माधवप्रसाद ने सुबह दो चक्कर बाजार के लगाये और अपने काम का आदमी खोज लिया। सरकारी मिडिल स्कूल म अंग्रेजी के मास्टर जगदीश प्रसाद पाण्डे उनके मित्र बन गये। एक ही पेशा, फिर दोस्ती क्यो न हो। पाण्डे जी अब भुवाली घुमायेंगे, गाइड की तरह साथ रहेंगे।

"हमे तुम यहीं पडा रहने दो, तुम सब घूम फिर आओ। हम जाकर क्या करेंगे।" शकरलाल ने होटल से बाहर जाने के लिए साफ मना कर दिया।

"यह कैसे हो सकता है। हम सब घूमने जाएँ और आप यहा पडे रहे। थोडा बाहर निकलेंगे तो मन बहल जायेगा। पता है आपको, थोडी-सी दूर पर वह बँगला है जिसम जवाहरलाल नेहरू स्वीटजरलैण्ड जाने से पहले अपनी पत्नी कमला नेहरू को इलाज के लिए लेकर यहा रहे थे।' श्रीप्रकाश ने अपनी नई खोज पर प्रकाश डाला।

"बहुत देख लिया बँगला-सँगला। हमे भइया चैन से पडा रहने दो।" शकरलाल न हाथ जोडकर कहा।

श्रीप्रकाश नहीं माने। शकरलाल को तयार होना ही पडा। छडी हाथ म लिये जब वह होटल से बाहर आये तो डाँडी को देखकर फिर भडक गये, ' इसे ससुर क्यो मँगवाया। हम क्या अपाहिज हैं जो दूसरो के कन्धे पर चढकर घूमे फिरें। अभी हमारे शरीर मे दम है, हम पैदल ही चलेंगे।" शकरलाल सबसे आगे आगे छडी हिलाते चलने लगे। डाँडी वाले

पीछे पीछे चल रहे थे। साथ ही रहेंगे, न मालूम कब जरूरत पड़ जाय। माधवप्रसाद ने हिदायत कर दी थी।

जगदीश प्रसाद पाण्डे भी आ गये। उन्होंने गाइड का काम शुरू कर दिया।

"तिवारी होटल के पीछे जो आप पहाड़ देख रहे हैं वह सारी जमीन गोविन्द वल्लभ पन्त की है। आजादी से पहले बेचना चाहते थे, कोई खरीदार नहीं मिला। अब दस खरीदार भी खड़े हो जायें तो भी नहीं खरीद सकते। पंत जी चीफ मिनिस्टर जो हैं यू० पी० के। अब उन्हें बेचने की क्या जरूरत।"

"ठीक कहते हो भाई। समय बड़ा बलवान है।" माधवप्रसाद ने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए समर्थन किया।

जगदीश प्रसाद पाण्डे उत्साहित होकर बोले, "आपको आजादी से पहले की एक घटना सुनाता हूँ। यह बात १९४५ या ४६ की गर्मियों की है। मैं घूमने नैनीताल चला गया था। अंग्रेजों का जमाना था। क्या मजाल कि परिन्दा पर मार जाये। गरम सड़क पर अंग्रेज सरेआम अश्लील हरकतें करते घूमते थे। जिसे चाहते थे पकड़कर बन्द कर देते। एक शाम को मैंने देखा खादी का मैला फटा कुर्ता पायजामा पहने एक आदमी हाथ में बड़ी सी घण्टी हिलाता हुआ, चिल्ला रहा था, 'आज शाम को कांग्रेस के महान नेता पण्डित जवाहरलाल नेहरू फ्लैटग्राउण्ड में भाषण करने आ रहे हैं अधिक से अधिक संख्या में पधारकर अपने प्रिय नेता के विचार सुनिये।'

'पण्डित नेहरू अलमोड़ा जेल से छूटे थे। दिल्ली की तरफ जाते हुए उन्होंने नैनीताल में भाषण दिया था। भीड़ तो थोड़ी-बहुत हो गई थी, लेकिन यह किसे मालूम था कि आजादी इतने पास आ गई है। आजादी, जिसे आज हम सब भोग रहे हैं, उसमें उस गरीब कांग्रेसी वर्कर का क्या हुआ, जो घण्टा बजाकर कांग्रेस के महान नेताओं की भाषण सभा का आयोजन करता था और पुलिस के बेंत खाता था। आज कोई उस-जैसे हजारों गरीब वर्करों की सुनने वाला है ?

"यही तो रोना है पाण्डेजी कि आजादी की लड़ाई का असली योद्धा

भीड मे खो गया। अब किसी को उसकी चि ता नही है।" माधवप्रसाद ने कहा।

श्रीप्रकाश आसपास बिखरे प्राकृतिक सौ दय से अभिभूत थे। कि तु साथ ही भुवाली मे काई शहरी चमत्कार न देखकर दुखी भी थे, यहा पतजी ने कुछ सुधार नही किया ?" श्रीप्रकाश न पूछा।

"कैसा सुधार ?"

"यही, इस जगह को नया रूप देना।' श्रीप्रकाश न समझाना चाहा, "अब यह दखिय न, यह सामने थाडा मैदान आ गया है। इसके बीच म एक पानी की धारा बह रही है। सुबह मैंने देखा था यहा धोबी कपडे धा रह थे अगर यही पर एक सु दर बाग लगा दिया जाये ता यह जगह घूमन-फिरने लायक हो जाये। ऐसी कोई याजना नही बनी। सडकें भी अभी काफी छोटी हैं।"

"वह सब प्लान बन रहा है।" पाण्डेय जी न कहा, "बाग, बँगल होटल, सिनेमा, सभी कुछ बनने की बात सुन रहे हैं, पर यह सब कब हागा कोई नही जानता। लखनऊ से याजना चलती है, मगर बीच म कहा खा जाती है, यह पता नही चलता।'

पाण्डेय जी की बात पर सभी हँस पडे। सिफ शकरलाल खामाश थे।

सामने पहाड का मोड आ गया था। इसके बाद थोडी ढलान जाती है फिर जो मोड आया तो उसी के किनारे कुछ ऊँचाई पर जा बगला बना था उसी मे कभी कमला नेहरू इलाज के लिए रही थीं।

शकरलाल काफी थक गये। लेकिन वह यह जाहिर नही करना चाहते थे। पीछे पीछे डाँडी लिये पहाडी मजदूर भी आ गये। सब वहीं पत्थर पर बैठकर सुस्तान लगे।

सामने लम्बा विस्तार था। दूर एक सफेद धब्बा दिखाई दे रहा था। पाण्डे जी ने बताया, यह सात ताल है। इसके बाईं ओर रास्ता जो फूटता है, वह भीमताल को जाता है उससे थोडा आगे है नौकुचिया ताल। गोवि द वल्लभ प त का पुश्तैनी घर यहीं पर है।

"देखने लायक जगह हैं यह सब। नैनीताल तो साहबी जगह बन गया है असल म तो इन तालाबा को देखना चाहिए।" पाण्डेय जी न सुनात्र

दिया।

शकरलाल की इन बातो मे कोई रुचि नही थी, जिद मे इतनी दूर पैदल चले तो आये, पर अब काफी थक गये थे, "ज़रा पानी दो माधव-प्रसाद, हम तो पस्त हो गये।"

माधवप्रसाद ने कन्धे से लटकते फलास मे से पानी निकालकर दिया। शकरलाल एक साँस मे ही पी गये। अब कुछ जान मे जान आई। जेब से कची सिगरेट की डिब्बी निकालकर एक सिगरेट सुलगाई। लम्बा कश लिया तो खाँसी उठ आई।

"अब तो चाचाजी आपको सिगरेट छोडनी पडेगी।" श्रीप्रकाश ने कहा।

"छोड देंगे भाई, सब कुछ छोड देंगे।" शकरलाल की आवाज मे गुस्सा झलक रहा था।

पाण्डे जी पहाड से सम्बन्धित और भी कई किस्से माधवप्रसाद को बताते रहे। लेकिन श्रीप्रकाश का मूड उखड गया था। चाचा जी के फायदे की बात करो तब भी खफा हो जाते है।

कुछ देर के बाद वापसी शुरू हुई। माधवप्रसाद के एक बार कहने पर ही शकरलाल डाँडी मे बैठ गये। अब एक कदम भी चलना उनके लिए सम्भव न था।

आबादी से दूर चीड के पेडो के बीच सेनीटोरियम बना हुआ था। कहते हैं चीड के पेडो को छूकर आती हवा टी० बी० के मरीज की आधी बीमारी तो बगर दवा के ही ठीक कर देती है। लेकिन शकरलाल तो सब तरफ टी० बी० के मरीज ही मरीज देख रहे हैं। सूखे, मरियल, रह रहकर खाँसते चेहरो को देखते ही दहशत सी होती। एक ऐसा वातावरण जहाँ मौत का भय हर समय व्याप्त है। शकरलाल की मन स्थिति माधवप्रसाद से छिपी नही रही, दिलासा देते हुए बोले, "लम्बरदार, चिन्ता न करो, भइया ने तुम्हारे लिए स्पेशल वार्ड म सीट बुक की है।"

"अरे माधवप्रसाद, क्या झूठा दिलासा देते हो।" शंकरलाल ने कहा, "जब ससुर टी० बी० के मरीजों के बीच ही रहना है तब फिर क्या स्पेशल और क्या गैर-स्पेशल।"

माधवप्रसाद से आगे कुछ कहते नहीं बना। वैसे स्पेशल वार्ड की बात सही है। कुछ ज्यादा पैसा लग गया लेकिन श्रीप्रकाश ने अपने चाचा के लिए स्पेशल वार्ड में ही जगह ठीक की। मेन गेट से बाईं ओर जाकर आगे जो पहला हाल आता है वही स्पेशल वार्ड है। इसमें सिर्फ बीस पलंग पड़े हैं। इन्हीं बीस पलंगों में से सात नम्बर के पलंग पर शंकरलाल का कब्जा हो गया। स्पेशल वार्ड होने के कारण सफाई का विशेष प्रबन्ध, हर समय नर्स हाजिर, चौकीदार की ड्यूटी अलग से, और जमादार को जब चाहो घण्टी बजाकर बुला लो।

बीस पलंग हर समय भरे नहीं रहते। दो-एक खाली भी रहते हैं, पर ऐसा भी होता है कि काफी इन्तजार के बाद जगह मिलती है क्योंकि मरीज ठीक होने या मरने का नाम ही नहीं लेते। पलंग खाली होगा तभी न दूसरे को जगह मिलेगी।

इस समय तो वैसे भी गर्मी का मौसम शुरू हो गया है। जो मरीज दवा लेकर जाड़ों में अपने घर चले गये थे वह भी लौट आये। सभी पलंग भरे हुए थे। यह तो भाग्य की बात है कि शंकरलाल को सीट मिल गई, नहीं तो जनरल वार्ड में सड़ना पड़ता।

हरिया के रहने का भी इन्तजाम हो गया। अस्पताल के पीछे सर्वेंट क्वार्टर हैं। इनमें नर बहादुर चौकीदार का क्वार्टर खाली रहता है, क्योंकि वह अपनी औरत को गाँव से नहीं लाता, अकेला ही रहता है। दस रुपये माहवार पर क्वार्टर की एक कोठरी में हरिया को रहने का स्थान मिल गया।

डा० हरिमोहन स्पेशल वार्ड के इन्चार्ज हैं। लखनऊ के रहने वाले हैं। श्रीप्रकाश को उन्हें प्रभावित करने में देरी नहीं लगी। खुद चलकर शंकरलाल के बेड के पास तक आये, "आप कोई चिन्ता न करें जमींदार साहब। हम बहुत जल्द आपकी सारी बीमारी दूर कर देंगे।" डा० हरिमोहन ने कहा।

"लेकिन हम बीमार हैं कहाँ! खाँसी-जुकाम तो चलता ही रहता है।

यह तो मैं इन सबका दिल रखने के लिए यहाँ चला आया हूँ। गर्मियाँ खतम होते ही लौट जाऊँगा।" शकरलाल ने उत्तर दिया।

"हम भी यही चाहते हैं।" डा० हरिमोहन ने हँसकर शकरलाल की बात का समर्थन किया, 'आप तो यह समझिये गर्मिया मे पहाड पर घूमने आये हैं।"

"चाचा जी, एक बात ध्यान रखियेगा, आपको यहाँ थोडा अनुशासन मे रहना है। गरम चीज एकदम बन्द। सिगरेट भी मना है, चाय हल्की पत्ती की।" श्रीप्रकाश ने कहा।

एक क्षण के लिए शकरलाल श्रीप्रकाश की ओर एकटक देखते रह गये, "कुछ और बताना हो तो वह भी बता दो।" शकरलाल ने बुझे स्वर से कहा।

"यह हिदायतें तो डाक्टरी हैं। मैं भी यही सुझाव दूगा। आपके फायदे के लिए हैं। कोई भी नशा फेफडो को नुकसान पहुँचाता है।" डा० हरिमोहन ने समझाना चाहा।

'अब तो हम आपके बन्धन म हैं। जैसा चाहें नाच नचायें।" शकरलाल ने हताश स्वर मे कहा, "वर्षों की आदत एक दिन म छुडाकर आप हमे स्वस्थ करना चाहते हैं।"

'नही नही हम ऐसा नही कर रहे हैं।" हरिमोहन ने फिर सम झाना चाहा, 'हम जानते हैं आप सिगरेट-चाय के शौकीन हैं एकदम स इस सबको न छोडिय, कम कर दीजिए। सिगरेट दिन मे दो तीन पीजिये फिर हो सके तो इसे छोड दीजिए। हल्की चाय आप बराबर पीते रहिये, इसके लिए कोई मना नही है। एकदम काली चाय तो जरूर नुकसान करेगी।"

शकरलाल चुप रहे लगता था जैसे उन्होने हथियार डाल दिये हों।

"आप यहाँ घर-सा ही महसूस करेंग। स्पेशल वाड म कोई विशेष बन्धन नहीं है। बरामद म कुर्सी डालकर बैठिये और पहाडी दृश्य देखिये। सामने लॉन है, सुबह शाम घूमिये। और अगर कभी मन ऊबे, बाजार घूमना चाह तो डाडी मँगवा लीजिए, हम पास बना देंगे, बाजार घूम आइय।

"तुम घबराय काहे रहे हो लम्बरदार।" माधवप्रसाद बोले, "हम महीना मे दो चक्कर लगायेंगे यहाँ के।"

"रहन देओ माधवप्रसाद, बहुत बातें न बनाओ।" शकरलाल ने डाँटते हुए कहा, "हम ससुर डरते होते तो यहाँ आते ही क्यो।"

श्रीप्रकाश ने बात बदलते हुए कहा, "मैंने हरिया को दुकान दिखा दी है, आपके लिए ताजे फल ले आया करेगा।'

इतना हम कहाँ खाते हैं।' शकरलाल ने मना करते हुए कहा, "फल तो हमे वैसे भी अच्छे नही लगते।"

"अब अच्छे-बुरे की बात थोडी है, अब तो ताकत के लिये फल खाने हैं।" श्रीप्रकाश ने फिर समझाने की कोशिश की।

चलते समय श्रीप्रकाश ने सौ रुपये देते हुए कहा, ' इसे रख लीजिए, बाकी हम जाकर और भेजते रहेंगे।"

"हमारे पास ह, बेकार म परेशान न हो।" शकरलाल को एकदम रुपये लेने मे हिचक हुई, मगर फिर रुपय लेकर उन्होन अपनी बण्डी मे रख लिये।

श्रीप्रकाश डाक्टर हरिमोहन को अलग ले जाकर कुछ बात करने लगे थे। मौका पाकर शकरलाल ने माधवप्रसाद से कहा, "हमारे घर का ख्याल रखना, और नत्थूसिह से हर हफ्ते रुपया भिजवाते रहना, समझे।'

माधवप्रसाद ने सर हिलाकर सहमति प्रकट की।

चलते समय श्रीप्रकाश ने पैर छुए तो शकरलाल का दिल भर आया। पर उन्होने जल्द ही अपने पर काबू पा लिया। पीठ पर हाथ फेरते हुए आशीर्वाद दिया। हरिया बस अड्डे तक छोडने साथ जा रहा है।

मेन गेट तक शकरलाल मना करने के बाद भी चले आये, फिर वही रुक गये। ढलान खाती हुई सडक पर श्रीप्रकाश और माधवप्रसाद को जाते हुए शकरलाल देखते रहे। न मालूम क्या उन्हें पहली बार अन्दर से कुछ टूटता, कुछ बिखरता-सा लगा। क्या आखरी बार श्रीप्रकाश को देख रहे हैं बहुत समय बाद उनकी आखों मे आँसू आ गये। फिर जसे सोते से जाग गये हो। यह कसा ग दा विचार मन म आ गया, यह सब इस जगह की करामात है। यहाँ मुर्दों के बीच आ गये हैं तो मरन का ही ख्याल आयेगा।

नहीं अभी बहुत जीना है, हम कोई बीमार थोड़ी हैं जो मरने की सोचें।

जब तक हरिया लौट नहीं आया, शंकरलाल बरामदे में ही बैठे रहे। हरिया से एक एक बात पूछी। बस में भीड़ तो नहीं थी। सामान ठीक से रखवा दिया, श्रीप्रकाश कुछ कह तो नहीं रहे थे।

रात झुक आई थी। अब तो अपने बेड पर जाना ही होगा। अब से रोज इसी अस्पताल के पलंग पर सोना होगा। 'हे प्रभु तेरी माया कहीं धूप कहीं छाया।' शंकरलाल ने गहरी साँस लेकर ईश्वर को याद किया।

अस्पताल की उबाऊ जिन्दगी शुरू हो गई। सुबह आँख खोलते ही दवा पीने और इंजेक्शन लेने का दौर शुरू हो जाता। जबकि शंकरलाल आँख खुलते ही सिगरेट या हुक्का पीने, फिर चाय पीने, फिर भंग का गोला चढ़ाने के आदी थे। सारी जिन्दगी तहस नहस हो गई। हरिया साथ है, इसलिए प्राण बच गये नहीं तो बगैर सिगरेट और भंग के प्राण ही निकल जाते। टहलने के बहाने कमरे से बाहर लॉन में आ जाते हैं। वहीं हरिया चुपके से भंग की गोली पुड़िया में बाँधकर दे जाता है। जैसे-तैसे पानी से गले के नीचे उतार लेते, कुछ राहत मिलती। सिगरेट भी इसी तरह छिपा-कर पीनी पड़ती। अपनी मर्जी से कुछ भी नहीं कर पाते। अजब बन्धन है। बगैर किसी जुर्म के कैद भुगतनी पड़ रही है।

एक सप्ताह में ही शंकरलाल को पहाड़ डरावने लगने लगे। चारों ओर ऊँचे ऊँचे पहाड़ों से घिरे सेनीटोरियम के बरामदे में बैठकर शंकर लाल को लगता जैसे वह किसी काल कोठरी में बन्द कर दिये गये हैं, जहाँ कोठरी की दीवारों के स्थान पर पहाड़ खड़े हो गये हैं। आधे फर्लांग से ज्यादा तो कुछ देख नहीं सकते। जहाँ जरा आँख खोलकर सामने देखने की कोशिश करते कि आँखों के आगे दैत्याकार पहाड़ आ जाता है। रात के अँधेरे में तो लगता जैसे पहाड़ की परछाई धीरे धीरे आगे बढ़ती हुई उन्हें लील जायेगी। श्रीप्रकाश को न जाने इन पहाड़ों के बीच क्या सुन्दरता

दिखाई दी। खूब तारीफ कर रहे थे। ऐसा ही होता है। दो दिन के लिए यहा आये, तफरी हो गई। बँधकर रहना पडे तो पता लगे। शकरलाल को बार बार शेखूपुरा का घर, बगिया, खुला माहौल, खुली लम्बी लम्बी सडकें, और दूर दूर तक फले खेत याद आते। जिधर चाहो, आख भरकर देख लो, कोई रोक-टोक नही। पर यहाँ तो आँख के आगे पहाड खडे कर दिये गये, वह भी एक-दो नही दजनो।

चीड के ऊँचे-ऊचे पेड भी शकरलाल को अच्छे नही लगे। ऐसी भी ऊँचाई क्या जो आसमान को ढक ले। हवा चलती है तो यह चीड के पेड हिल हिलकर सीटी बजाने लगते हैं। निर्जन वातावरण मे तो यह साय साय की सीटी और भी डरावनी बन जाती है। फिर जो पेड फल न दे वह भी कोई पेड हुआ। पेड तो आम का है, अ हा हा क्या बात है। आम के पेड के नीचे खटिया डालकर दोपहर को भी पड रहो तो ऐसी छाह कि जी खुश हो जाये। अब तो आम मे फल भी आ गया होगा। अपने गाव का कलमी आम कितना मीठा होता है। टपका भी खूब मीठा। कितना ही चूसो, मन नही भरता। शकरलाल ने आँखें मूद ली। मन-ही मन वह अपने गाव के आमो की बगिया के बीच भ्रमण करने लगे।

शाम को शकरलाल टहलते हुए सेनीटोरियम के गेट तक आ जाते। गेट के बाहर सडक के किनारे लगे बडे से पत्थर पर बैठकर सिगरेट सुलगा लेते। यहाँ बैठने पर उन्हें कुछ शान्ति मिलती। सेनीटोरियम से बाहर जाती हुई सडक मोड लेने से पहले, काफी दूर तक दिखाई देती। इससे उन्हे राहत मिलती। कभी कभी कोई मोटर भी सडक पर आती-जाती दिखाई दे जाती, इसी के साथ सेनीटोरियम के पीछे से जवान पहाडी औरतें सर पर लकडी का गटठर लादे हुए सामने से गुजरती। पहाडी औरतो की कसी देह को देखकर शकरलाल का मन जुडा जाता। कैसा सुन्दर रग है। एकदम टमाटर सा। इन्हे अच्छा रहने-सहने को मिले तो और भी सुन्दर बन जायें।

हरिया साथ रहता, उसी से दुख-सुख की बात करते रहते शकरलाल। पिछले दिनो को याद करते तो एक के बाद दूसरी बात अपने आप ही निकल आती। सिर्फ पिछली बातो मे ही शकरलाल का मन नहीं

लगता, आगे की भी सोचते हैं। कब क्या क्या करना है इसकी स्कीम भी मन-ही मन बनाते। कभी-कभी हरिया को देखकर उनका मन बहुत भर आता। कितनी सेवा करता है उनकी, जरूर पिछले जन्म का साथी है तभी तो आज तक आदर भाव है इसके मन मे।

सहसा शकरलाल को ख्याल आया। हरिया का भविष्य भी बनाना उनका ही काम है उसे शेखूपुरा मे ठेला तो लिया ही दिया है। खान लायक कमा सकता है। अब उसका घर भी बसा दें तो बात पूरी हो जाय, पर करें क्या, श्रीप्रकाश ने तो उनके हाथ बाँध रखे हैं। जब तक श्रीप्रकाश की शादी नही हो जाती तब तक हरिया की शादी की बात सपने मे भी नही सोची जा सकती।

सामने सडक पर पहाडिनें सर पर लकडी का गटठर लादे जाती दिखाई दी। शकरलाल के मन मे एक नया ही विचार आया, क्यो न किसी पहाडिन से हरिया का ब्याह रचा दें। हँसकर बोले, ' हरिया, अब की जाडो म श्रीप्रकाश की शादी कर दें, फिर तेरा भी ब्याह करा देंगे।"

"मालिक अब हमारा ब्याह क्या होगा, हमारा ब्याह तो हो चुका।" हरिया ने दुखी स्वर से कहा।

"न रे, वह भी कोई ब्याह था।" शकरलाल ने समझाया, "बचपन मे ब्याह तेरा हुआ जरूर, पर लडकी तो दो साल भी न काट सकी। जरा-सी बीमारी मे तेरा साथ छोड दिया। अब तुझे जिन्दगी भर रडुआ तो रखना नही है। ब्याह तो हम जरूर रचायेंगे तेरा।"

"मालिक हम का कह," हरिया ने सर झुका लिया।

' हम सोचते हैं हरिया तेरे लिए अगर कोई गोरी चिटटी पहाडिन मिल जाये तो उसे ही लिए चलें। तू चौकीदार से बात कर, रुपये पैसे की परवाह नही, दो चार सौ लग जायें तो लग जायें, पर काम बन जाय तो अच्छा रहे।"

"मालिक, हिया के लोग बहुत शक्की हैं। मैदानी आदमी को घूर घूर कर देखते हैं, हमारा छुआ तो पानी भी इन्हें पाप है पाप''

"अरे सब कहे की बातें हैं।" शकरलाल ने कहा ' देखता नही कितने गरीब हैं भूखो मरते है साले। रोज तो हम किस्सा सुनते हैं फला

औरत डूब के मर गई फला भाग गई। पैसे के आगे सब राजी हो जायेंगे। तू बात तो करके देख।"

हरिया ने सर झुका लिया, उसके मुह म जसे ताला लग गया हो। कुछ कहते नही बना।

डा० हरिमोहन बहुत परेशान थे। एक महीने से ऊपर हो गया शकरलाल का इलाज करते लेकिन कोई फर्क दिखाई नही दे रहा। उल्टे तन्दुरुस्ती और ज्यादा गिर गई है। बुखार तो हर समय बना ही रहता है, खाँसी भी बढ गई। इसी के साथ बलगम थूकने पर खून दिखाई देता। दवा ठीक दी जा रही है, इजेक्शन भी लग रहे है, इलाज म तो कोई कोताही है नही, फिर तबीयत क्यो नही सुधरती!

"आपने सिगरेट ज्यादा तो नही कर दी है?" डा० हरिमोहन ने पूछा।

"नही तो आपने तीन चार सिगरेट दिन मे पीने को कहा था वही हम पीते हैं।" शकरलाल ने नाराजगी से कहा।

"अब तो आपको यह भी छोडनी पडेगी।" डाक्टर ने लाचारी जाहिर करते हुए कहा, "न तो आपका बुखार उतर रहा है, और न ही आपकी खासी रुक रही है। बलगम भी काफी निकल रहा है। कमजोरी तो आप भी महसूस करते होगे।"

"हम कोई कमजोरी महसूस नही करते हैं। हम तो भले चगे है, आप नही मानते यह और बात है।" शकरलाल ने उपेक्षा के साथ जवाब दिया।

डा० हरिमोहन हँस दिये। एक-से एक जिद्दी मरीजो से उनका रोज ही पाला पडता है। मरीज अपना नफा नुकसान नही सोचते, बस बहस किये जाते है। शकरलाल भी उन्ही मे से एक हैं।

"आप ज्यादा चलें फिरें नही, आराम करें। थकावट से भी तबीयत खराब हो जाती है।"

"आराम ही तो यहाँ कर रहे हैं, और कर क्या रहे हैं।" शकरलाल

बोले, "डाक्टर साहब, हमारा मन तो यहाँ बिल्कुल ऊब गया है, बस जून का महीना कट जाय, फिर हम अपने घर चले जायेंगे।"

"हाँ हाँ आप अच्छे होकर घर जायें, हम भी यही चाहते हैं।" डा० हरिमोहन ने बात को सम्हाला, आप चाहें तो डांडी मगवाये देते हैं, बाजार घूम आइये।"

"नहीं नहीं हमें बाजार नहीं घूमना। डांडी पर तो हम बिल्कुल नहीं बैठेंगे। अच्छी सवारी है, जिन्दा आदमी को ही चार जने कन्धे पर उठा लेते हैं! हद हो गई।"

इस बार डा० हरिमोहन को बरबस ही हँसी आ गई। पहाड़ पर डांडी कितनी लोकप्रिय है, इसे कहने की जरूरत नहीं। जहाँ मोटर नहीं पहुँचा सकती, वहाँ डांडी पहुँचा देती है। शंकरलाल ने डांडी की जो नई व्याख्या कर दी, उससे तो हर आदमी डांडी को देखते ही घबरा जायेगा।

पिछले महीने नत्थूसिंह ने दो बार मनिआर्डर से रुपये भेजे। एक बार तीस रुपये, दूसरी बार बीस रुपये। इस महीने की पाँच तारीख को तो सिर्फ पन्द्रह रुपये का मनिआर्डर ही आया। क्या सिर्फ इतनी ही माल निकली। गुस्से में शंकरलाल की भउएँ फड़कने लगीं। सब साले चोर हैं, सामने जो हजूरी करते हैं, पीछे बेईमानी। अब की शेखूपुरा पहुँचकर सबसे पहले इस नत्थूसिंह को ही ठीक करना है।

माधवप्रसाद पर भी शंकरलाल को बहुत गुस्सा आ रहा था। कहते थे महीने में दो चक्कर लगायेंगे। अब पौने दो महीने होने को आ गये एक चिट्ठी तक नहीं लिखी। सबकी आँख का पानी मर गया। एक नम्बर के बेईमान, धोखेबाज किसे किसे कहें।

श्रीप्रकाश जरूर हर सप्ताह पत्र लिखते हैं। बनारस पहुँचते ही सौ रुपया और भेज दिया। उसी से काम चल रहा है। जून में आने को भी लिखा है। ठीक है, जून में आयें तो उन्हीं के साथ वापस चले जायेंगे। नहीं रहना है, अब इस मरघट में।

शुरू-शुरू में शकरलाल ने अपने आसपास लेटे मरीजो से हेलमेल बढ़ाने की पूरी कोशिश की। पर कोई भी उनके मन मुताबिक नहीं निकला। सब अपनी-अपनी हाँकते हैं घर का रोना ले बैठते हैं। रोना धोने से शकरलाल को सख्त नफरत है। अरे कुछ हँसी-खुशी की बात करो, कुछ गाओ नाचो, यह क्या कि हर समय अपना रोना रोते रहते हैं। रोना हो था तो घर पर रोते, यहाँ क्यों मरने का आ गये।

सामने के पलग पर ठाकुर अजायब सिंह लेटे हैं। शुरू मे दो चार दिन उनसे शतरज की बाजी जमी, लेकिन गाडी खिंची नहीं। शतरंज का खेल शाही खेल है, इसमें दिल खोलकर खेला जाता है, यह नहीं कि वजीर पिट गया, तो हाय हाय करने लगे, चाल बदल दी। ऐसे कहीं खेल खेला जाता है। और कोई उनकी जोडी का खिलाडी वार्ड मे है नहीं जिससे दो बाजी खेल लें। सब साले नौसिखिये हैं, उनकी चालें भी बतानी पड़ती हैं। इस तरह तो शतरज नहीं खेली जा सकती।

नई ताश की गड्डी भी जसी की-तैसी धरी है। कोई दमदार खेलने वाला नहीं मिलता। जिसे देखो कोटपीस की फरमाइश करता है। रमी तक खेलने से घबराते हैं। अरे जिस बाजी में दो चार रुपये की हार-जीत न हो वह भी कोई बाजी है। ताश के खेल को भी औरतो का खेल बना दिया।

शुरू के दो हफ्ते हरिया से फल मगवाकर सारे वार्ड में बाँट दिये, लेकिन, किसी के मुह से तारीफ के दो बोल नहीं फूटे। बस खुमानी या लीची ली और मुह में ठूस ली। इसे कहते हैं बेहयाई। सब साले छोटे घरो के हैं, सहूर तो छू तक नहीं गया।

पहली पूणमासी को शकरलाल ने खीर बनवाकर सारे वार्ड में बाटी थी। अरे सालो याद करोगे, कोई दिल वाला आया था। वह तो नत्थूसिंह बदमाशी कर रहा है, रुपया ठीक से नहीं भेजता नहीं तो हम रोज ही खीर खिलाते। शकरलाल को नत्थूसिंह पर फिर गुस्सा आ गया।

जन के पहले हफ्ते मे पहाड की पहली तेज बारिश हुई। खूब तेज। जहाँ वही टीन की छत थी उस पर तो लगा जैसे कोई हथौडे से चोट कर रहा है। चारा तरफ अघेरा सा छा गया। बरामदे म खडा नहीं हुआ जा सकता, आधा बरामदा बौछार से भीग गया था। शकरलाल खिडकी के पास जाकर खडे हो गये। थोडी देर पहले तक खिडकी से जो पहाड दिखाई दे रहा था अब वह भी धुध मे खो गया। पचास गज की दूरी पर सेनीटोरियम की चहारदीवारी का बस एक हल्का-सा आभास हो रहा था। अजब-सी घुटन होने लगी, कोई बात करने वाला नही, कोई बोलने वाला नहीं। कमरे के सारे पलग मरीजो से भरे हैं लेकिन लगता है जैसे यह मरीज नहीं, जिदा लाशें हैं। सिफ खाँसने और कराहने की आवाज आती है, बाकी तो खामोशी से भरी ऐसी दुनिया है, जिसमे अपनी भी सासें गिनी जा सकती हैं।

दो नर्सों की ड्यूटी बराबर रहती है, लेकिन दिखाई एक ही देती है, वह भी कमरे के कोने मे अपनी कुर्सी पर बठी ऊँघती है। खाने और नाश्ते के समय ही कमरे मे हलचल होती है, या फिर डाक्टर के आने पर।

पाँच बजने को आ गये। बारिश रुक गई है। अब धुध थोडी साफ हुई है। सामने का पहाड फिर उभरने लगा है मगर बीच-बीच मे बादलो के बडे-बडे टकडे रुई के गोलो के समान आते हैं और पहाड को अपने ओट मे छिपा लेत हैं।

हरिया छाता लगाये, बायें हाथ की मुट्ठी म भग की गोली छिपाये बरामदे म आ गया। उसके बायें हाथ की कलाई पर घडी भी बँधी है। शकरलाल ने अपनी घडी हरिया को द दी है। इससे हरिया को टाइम का पता चलता है। सुबह और शाम टाइम से अगर भग की गोली गले के नीचे नहा उतरती तो शरीर ऐंठने लगता है। बहुत कम कर दी है भग। पहले तो पूरा गोला लेते थे, अब तो बस बच्चो के खेलने वाली शीशे की गोली के बराबर भग लेते हैं। यह भी छिपाकर लेनी पडती है। क्या करें, सब वक्त की बात है, अपनी ही चीज को दूसरा से छिपाकर लना पडता है।

हरिया ने कुर्सी बरामदे म निकाल दी। शकरलाल कुर्सी पर बैठ गये। हरिया गिलास मे पानी भी ले आया। शकरलाल न इधर-उधर

सतकता से दवा और फिर चुपके से भग की गाली मुँह म डालकर पानी से गटक गय। गहरी राहत मिली। चेहरे पर तृप्ति का भाव उभर आया।

"मालिक, पहाड मे तो बहुत पानी गिरता है। बादल काठरिया मे घुसे आउन। हम ता डराय गय।" हरिया ने आश्चय से कहा।

"अरे तू क्या अच्छे-अच्छे पहलवान डर जायें। ससुर यह भी कोई जगह है। पानी क्या गिरा, चारा तरफ अँधेरा छा गया। हर चीज पर सफेदी पुत गई।" शकरलाल बोलन के मूड मे आ गये थे, "अरे बारिश तो अपने यहाँ होती है। इधर पानी गिरा उधर सब चीजें धुलकर साफ हो गयी। कितना हा तेज पानी गिर, पर दूर तक देख लो सडक पर कौन आ-जा रहा है। हियाँ ता हाथ को हाथ न सूझे। उल्ट पानी क्या गिरा, जैस नगाडा बजने लगा। तूने पानी गिरन के शोर को नही सुना ?"

"सुन मालिक, हमहूँ सुने।' हरिया ने हामी भरी, 'हम ता सोचे ओला पडित है।'

"अरे ओला गिरेंगे तो न जान क्या होगा। अभी तो यह पहली बारिश है, आगे ता राम मालिक। श्रीप्रकाश ने अच्छा फँसाया। खुद ता बनारस मे गगा नहाय रह है, हमे ससुर हिया पहाडन म लाय पटका।"

कमरे का दरवाजा खोलकर नस सामने आकर खडी हो गई 'अपन बड पर चलिय टैम्प्रेचर लेने का टाइम हो गया है। दवा भी दनी है।"

नस आडर दकर चली गई, अब ता उठना होगा, "ससुर एक मिनट को चैन नही, आय गयी हुकुम देन।" शकरलाल हरिया के हाथ का सहारा लकर भुनभुनाते हुए उठकर खडे हो गये।

"मालिक चौकीदार बताय रहै नया डाक्टर आय रहा है। मोहन बाबू छुट्टी पर जाय रह ह।

"क्या।' शकरलाल चौंक गये, "यह एक नई मुसीबत और हुई। कब आ रहा है नया डाक्टर।'

'कल।' हरिया ने जबाब दिया।

डा० हरिमोहन बगैर मिले ही चले गये। शकरलाल को बहुत बुरा लगा। बोलने में इतने मीठे, पर व्यवहार मे इतने रूखे। मिलकर तो जाना चाहिए था। चलते समय तो दुश्मन से भी राम राम हो जाती है। फिर हम तो उन्हें अपना मानने लगे थे। कुछ उपहार सुपहार देते। भइया डाक्टरों का जी पत्थर का होता है। आदमियत खतम हो जाती है। जब तक मरीज से काम पडा, हँस-बोल लिये, जब काम खतम हो गया तो मुह मोड लिया।

नये डाक्टर को लेकर पूरे वार्ड मे देर रात तक चर्चा होती रही। सुना है बहुत सख्त आदमी है, किसी को नही छोडता। मरीजों से तो कसाई की तरह सलूक करता है। इंगलैण्ड मे पढाई की है। इसी से बहुत घमण्ड है।

सुबह से ही जमादार चारों ओर सफाई मे जुट गये। पलग की चादरें बदल दी गयी। तकिये के गिलाफ एकदम साफ नजर आ रहे थे। पानी मे फिनाइल डालकर फर्श को खूब धोया गया। सब तरफ सफाई-ही सफाई थी।

ठीक नौ बजे नया डाक्टर वार्ड में आ गया। थोडा भारी शरीर, चेहरे पर फ्रेंच कट दाढी, आँखो पर मोटे फ्रेम का चश्मा। एक एक मरीज को घूर घूरकर देखता तो ऐसा लगता जैसे अभी फाँसी का हुक्म सुनाने जा रहा हो। अपने साथी जूनियर डाक्टर से ही सारी बात पूछता। मरीज से तो एक भी बात नहीं की, सिर्फ सिरहाने टँगा टेम्प्रेचर का चार्ट देखा, और तीखी नजरो से घूरता हुआ आगे बढ गया।

डाक्टर के जाने के बाद भी दस मिनट तक दहशत छाई रही। किसी के मुह से कोई बोल ही नहीं निकल रहा था। अन्त मे शकरलाल ने ही सामने बेड पर पडे बडे ठाकुर अजायबसिंह से बात शुरू की, 'भई ठाकुर साहब, यह डाक्टर था या यमदूत। घूर तो ऐसे रहा था जैसे गोली मार देगा। न किसी से हाल पूछा, न किसी की नब्ज देखी, बस आँधी की तरह आया और तूफान की तरह चला गया। यह भी कोई बात हुई।''

'आपको नही मालूम जमादार साहब, यह सीधा इंगलैण्ड से चला आ रहा है, इसी मे इतनी अकड दिखा रहा है। सुना है लण्डन मे कोई ऊँची डाक्टरी की डिग्री ली है, इसी से दिमाग सातवें आसमान पर है।'

"हूँ तो यह कहो लण्डन पलट हैं बेटा।' शकरलाल ने व्यंग कसा, "अँग्रेजी राज चला गया पर अंग्रेजियत न गई। लण्डन क्या हो आया अपने को खुदा समझता है। हमें तो ठाकुर साहब शुरू से ही अँग्रेजी इलाज नापसन्द है। दवा भी कडवी और मिजाज भी कडुआ। शरीर मे सुई घुसेड़ना भी इसी अँग्रेजी इलाज की करामात है। अपने देसी इलाज मे तो बस नब्ज देखकर सात पुश्त का हाल बता देत हैं। शरीर का मास नही नोचते।'

"अब करें क्या। बीमारी ऐसी लग गई है कि अपन बस का कुछ नही रहा। घर वाले अपनी जान छुडाने को यहा छोड गये। छूत की बीमारी है सो हम भी कुछ नहीं कह पाये, वरना भगवान की दया स खेती बाडी, मकान दुकान सब कुछ है। किसी बात की कमी नही। दोष किसे दें, अपने अपने भाग की बात है। जिस साली औरत को जिन्दगी भर हमने पैर की जूती क बराबर रक्खा, वह घरवाली ही जब छुआछूत बरतने लगी तो फिर सोचा घर से परदेश भला।" ठाकुर अजायब सिह न पहली बार अपना दुख उगल दिया।

"ठीक कहते हो भइया। सब वखत की बात है। बखत बुरा आया तो राजा हरिश्चन्द्र काशी मे डोम के हाथो बिके थे। अपना बुरा बखत आया तो यहा आ पड़े। हम भी श्रीप्रकाश की जिद के आगे झुक गय, नही तो कौन कमी थी हमे घर पर। कभी सोचा भी नही था घर के बाहर पैर निकालेंगे।"

अजायब सिह को खाँसी उठ आई थी। बात का दौर बीच मे ही टूट गया। जब अजायब सिह खास चुके तो शकरलाल ने पूछा, 'क्या नाम है डाक्टर का।"

"डाक्टर श्रीवास्तव नर्स कह रही थी।"

"अच्छा तो बेटा कायस्थ हैं। तभी पढाई पर इतना घमण्ड है।' शकरलाल ने सर हिलाकर ऐसे कहा जसे कोई बहुत बडा रहस्य का सूत्र खोज लिया हो।

शकरलाल थोडा और सतक हो गये। हरिया को भी समझा दिया। सबकी आंख बचाकर वाड मे आया करे। भग की गोली को कागज म लपेटकर जेब मे रखकर लाना। सिगरेट भी पीना हराम हो गया। दिन म जा चार छ सिगरेट पीते तो उसके लिए भी पेशावघर मे जाना पडता। पेशावघर म बैठने की कोइ जगह नही, सो दीवार पकडकर सिगरेट फूकते। खडे-खडे शरीर मे और भी कमजोरी आ जाती। चक्कर-सा आने लगता। आधी सिगरेट भी पीना हराम हो गया। किसी तरह दो-चार दम लगाकर हाफते हुए अपने पलग पर आकर पडे रहते।

इतनी सावधानी के बाद भी पाँचवें दिन ही डाक्टर श्रीवास्तव से शकरलाल की भिडत हो गई। डाक्टर के डर से ही शकरलाल अब सुबह सात बजे ही भग की गोली लेने लगे थे। डाक्टर नौ बजे वाड म आता है। इतनी सुबह मरीज भी सोकर नही उठते। हरिया के पैरो की आवाज पहचानते हैं। जैसे ही हरिया बारामदे मे आता शकरलाल पलग से उठकर बारामदे मे आ जाते। कुर्सी पर भी बैठना छोड दिया। वही जमीन पर बैठ जाते और भग की गोली पानी के साथ लील लेते।

लेकिन अभी जेब से कागज मे लिपटी भग की गोली निकालकर हरिया दे ही रहा था, कि यमदूत की तरह डाक्टर श्रीवास्तव एक नस और एक जूनियर डाक्टर को साथ लिये आ गये।

"यह क्या खिला रहा है।" डाक्टर श्रीवास्तव ने हरिया के हाथ से कागज मे लिपटी भग की गोली झटक ली।

"सर, यह भग की गोली है।" नस ने कहा।

"भाग ! ! नशा ' डाक्टर श्रीवास्तव की आँखें गुस्से से फल गयीं, "कौन आदमी है यह ? मरीज को नशा कराता है, अभी निकालो इसको यहा से अभी।'

हरिया हाथ जोडे थर थर काँप रहा था। शकरलाल दीवार का सहारा लेकर किसी तरह उठकर खडे हो गये "इससे कुछ न कहिए, वह हमारा सवक है। जो कुछ कहना है हमसे कहिये।"

"आपसे ही कह रहे हैं। यह सेनीटोरियम है, यहाँ के कायदे-कानून नही मालूम। यहाँ इलाज करने-कराने आये हैं या नशा करने।'

"'हम सब मालूम है। हम सब जानते हैं। ' शकरलाल भी अब गुस्से मे आ गये। ''भग की हम शुरू से आन्न है, यह हमारे खून मे रच-बस गई है, हम भग के बगर जी नही सकते।"

"यह सब यहाँ नहीं चलेगा। यहाँ रहना है तो यहाँ के कायदे स रहना हागा। बुला लो अपन रिश्तेदारा को, खाली कर दो सेनीटोरियम।" डा० श्रीवास्तव न दाँत पीसते हुए कहा।

"किसी को बुलान की कोई जरूरत नहीं है, हम खुद ही चले जायेंगे।'

"लिखकर देना हागा, हमारी कोई जिम्मेदारी नही है।"

"जो लिखना हो लिख लीजिए, हम दस्तखत कर देंगे।"

डा० श्रीवास्तव ने एक बार फिर जलती आँखा से शकरलाल को ऊपर से नीचे तक देखा, अपने जूनियर डाक्टर को हुकुम दिया, "इनके डिस्चार्ज के कागज तैयार करो। इनसे लिखा लो, अपनी मर्जी से, अपनी जिम्मेदारी से जा रहे हैं।" डाक्टर श्रीवास्तव ने अपने सीधे हाथ की पहली उँगली को ऊपर उठाकर जूनियर डाक्टर को धमकाते हुए कहा, "आगे से किसी भी मरीज के साथ उसका नौकर नही रहेगा। कोई बाहर का आदमी सेनीटोरियम मे दिखाई न दे।"

डा० श्रीवास्तव तेजी से चले गये। पीछे पीछे नर्स भी चली गई। जूनियर डाक्टर अभी भी शकरलाल के सामन खडा था। उसकी समझ म नही आ रहा था क्या कहे। कमरे के अन्दर के मरीज जाली वाले दरवाजे के पीछे खडे हा गये थ। देखते ही देखते तमाशा हो गया। सब हक्के-बक्के रह गये।

'आप चिन्ता न करें, थाडी देर मे डाक्टर साहब का गुस्सा उतर जायेगा। माफी माँग लीजिएगा। मैं भी समझा दूगा।" जूनियर डाक्टर ने कहा।

'माफी!" शकरलाल के चेहरे पर गहरी नफरत उभर आई, "माफी तो हमने अपने बाप से भी नही माँगी। यह श्रीवास्तव समझता क्या है अपन को। इग्लण्ड से अपनी काली चमडी गोरी करा आता, तब हम जानत। अरे सेनीटोरियम म भी इलाज नही होता है, और जगह भी इलाज होता

है। इसी सेनीटोरियम मे रिटायड डाक्टर शाह बाजार म प्राइवेट प्रक्टिस करते हैं। हमे सब मालूम है। हम चाहे तो तिवारी होटल म रहकर डा० शाह स इलाज करा सकते हैं। पर नहीं अब हम अपने घर जा रहे हैं। घर पर ही इलाज करायेंगे। हम तो कोई बीमारी ही नही है। पर हम करें क्या, हमे तो हमारे घर के वहमी लोगो ने मार डाला। यहाँ ला के पटक दिया।

जूनियर डाक्टर चुपचाप खडा रहा। शकरलाल को जैसे कुछ याद आया, "आप किसी बात की चिन्ता न करो। हम ठीक से घर चले जायेंगे। आप परेशान न हो। हम आपसे बहुत खुश हैं। आपने हमारी बहुत सेवा की। भगवान आपको तरक्की दे।" फिर हरिया की ओर घूमकर बोले, "तू खडा खडा मुंह क्या देख रहा है। जा तैयारी कर चलने की। बकसिया मे सब सामान ठीक से रख ले।" शकरलाल ने कमरे म जाने के लिए कदम बढाया, एक मिनट कुछ सोचा, "और हाँ, डाक्टर बाबू आप इतना करो, एक डाडी हमारे लिए मँगा दो। बस अड्डे तक हम पैदल तो जा नही सकते।"

'मँगवाये देता हूँ, आप चलिये आराम कीजिये।' जूनियर डाक्टर लाचारी मे हाथ हिलाता चला गया।

शकरलाल कमरे म आकर बड पर लेट गये। बहुत थकावट लग रही थी। दो चार मिनट लेटेंगे ता तबीयत ठीक हो जायगी।

पलग के आसपास कई मरीज आकर खडे हो गये। अजायब सिंह पायतियाने बठ गये, "यह नया डाक्टर है बडा बमुरउअत। एक बात सुनने को राजी नही, अपना ही हेकडी दिखाता है।'

"हेकडी तो इन बेटा की हम एक मिनट मे ठीक कर देते।' शकरलाल ताव मे आकर उठकर बठ गये, "हमारी तबीयत कुछ ठीक नही है, इसलिए हम ज्यादा बोल नहीं। ऐसे नालायक आदमियो को हम जूते की नोक पर रखते हैं। हाँ हम आप लोगो को सावधान किये देत हैं, एकदम होशियार रहना। जरा भी दबोगे ता यह एकदम दबा लगा। नीच प्रकृति का आदमी है यह।"

जूनियर डाक्टर डिस्चाज के कागज तैयार करके आया था।

शकरलाल ने डाक्टर के पन से ही दो कागजों पर दस्तखत कर दिये। एक कागज डाक्टर ने उन्हे दे दिया। दो टेबलेट स भरी छोटी शीशी देते हुए डाक्टर ने कहा, "यह दवा आपको रास्ते मे काम आयेगी। अगर सीने म दद हो तो सफेद गोली खा लीजिएगा। और चक्कर आने पर या बुखार बढने पर पीली गोली ल लीजिएगा।"

शकरलाल ने हँसकर दोनो शीशी लेकर बास्कट की जेब म रख ली, "आपने हमारा बहुत ख्याल रक्खा, भगवान आपका भला करेंगे।" शकर लाल ने बण्डी की अन्दर वाली जेब टटोलकर देखी। दो दिन पहले ही श्रीप्रकाश ने सौ रुपये भेजे थे। वह सब सुरक्षित अ दर की जेब मे रखे थे। रास्ते का खच इनसे चल जायेगा। ऊपर के खच के लिए भी बीस तीस रुपय हैं ही, चिता की कोई बात नही है।

हरिया बक्सिया और बिस्तर लेकर बरामद मे आ गया। शकरलाल ने कोट पहना, टोपी लगाई, मफलर गले मे लपेट लिया। हरिया ने पर मे मोजे पहना दिये। जूते पहनकर शकरलाल खडे हो गय। छडी हाथ म ले ली। अब वह चलने को तयार थे।

"अरे वह जमादार और बाकी सब लाग कहा गय ? शकरलाल न इधर-उधर देखते हुए कहा। दोनो नर्सो के साथ तुरन्त तीन आदमी खाकी वर्दी पहने आकर सामने खडे हो गये।

'अच्छा अच्छा आ गये। शकरलाल ने जब से एक रुपय के छ सिक्के निकाले। दो दो रुपये जमादार और दूसर कमचारियो को देते हुए बाले, 'लो हमारी तरफ से मिठाई खा लेना।" तीनो न रुपये लेकर सलाम किया। -

शकरलाल ने जेब से दा पाँच पाच के नोट निकाले। नर्सो को दकर बोले, "आप लोग भी मिठाई खाना।"

नस रुपय लेते हुए थोडा सकोच से हँसी।

अब शकरलाल ने एक दस का नोट निकाला। जूनियर डाक्टर का देते हुए बोले, 'आप भी हमारी तरफ से मिठाई खाना।"

"नही नही यह आप क्या कर रह हैं जमादार साहब। हमे तो आपका आशीर्वाद ही बहुत है।' जूनियर डाक्टर न बहुत विनम्रता से

कहा।

"अच्छा तो ऐसा करो, इन रुपये की मिठाई मंगवाकर यहाँ सबमें बाँट देना।" शंकरलाल ने जूनियर डाक्टर के हाथ में जबरन्स्ती दस का नोट पकड़ाते हुए कहा।

जो मरीज पलंग से उतरकर चल फिर नहीं सकते थे, शंकरलाल ने उनके पास जाकर विदा ली। सबको हाथ जोड़कर नमस्कार किया। फिर छड़ी टेकते धीरे धीरे कमरे के बाहर आकर बरामदे में खड़े हो गये। अजायब सिंह के साथ ही दस-पाँच मरीज भी विदा करने बरामदे में आ गये।

चार पहाड़ी मजदूर कन्धे पर डाँडी लिये आ गये। डाँडी पर बैठने से पहले शंकरलाल अजायब सिंह से बोले, "ठाकुर साहब, आओ गले मिल लें। तुम्हारे साथ अच्छा वक्त बीता। तुम जरा ध्यान से खेला तो शतरंज अच्छी खेल सकते हो। घोड़े पहले न पिटाया करो, इसी से बाजी हार जाते हो।"

अजायब सिंह कुछ बोल नहीं पा रहे थे। उनकी आँखें भर आयी थीं। गले मिलकर एक ओर खड़े हो गये। शंकरलाल ने फिर सबको हाथ जोड़कर नमस्ते की, "आप सब ठीक होकर शेखूपुरा आना पता हमने आप सबको दे ही दिया है।"

'पहुँचते ही पत्र लिखना जमींदार साहब।" अजायब सिंह इतना ही कह पाये।

'हाँ हाँ क्या नहीं। पहुँचते ही पत्र लिखेंगे।" शंकरलाल डाँडी पर बैठ गये, लेकिन चलने से पहले जूनियर डाक्टर से बोले, "उस श्रीवास्तव से कह देना, इस बार हमने उसे माफ किया। आगे ध्यान रक्खे। आदमी देखकर बात किया करे नहीं तो किसी दिन जूते खायगा कह देना उससे।"

डाँडी चल पड़ी। पीछे-पीछे हरिया सर पर बक्सिया और बिस्तर लिये चल रहा था। बारामदे में खड़े साथी मरीज जहाँ तक देख सकते थे शंकरलाल को जाते हुए देखते रहे।

सनीटोरियम से निकलते ही शंकरलाल को लगा जैसे किसी जेलखाने में

छूटे हो। खुली सडक, चारो ओर छाई हरियाली, पेडो पर चहचहाते पक्षी,
और ऊँचे-ऊँचे खडे पहाड, लगता सब उनके सम्मान मे स्थिर होकर उन्हें
देख रहे हैं। डाडी की सवारी इस समय उन्हें अच्छी लग रही थी। आखिर
राजे महाराजे भी तो इसी तरह ऊँची सवारी पर बैठकर अपनी प्रजा का
अभिवादन स्वीकार करते हुए सडक से गुजरते थे। वे प्रसन्न होकर चारो
ओर का नजारा आँख भरकर देखने लगे। बस कभी कभी जब ढाल पर
डाँडी नीची होती तो वह डगमगाते। अपने दोनो हाथो से डाँडी के डण्डे
मजबूती से पकडने की कोशिश करते, कही गिर न जायें। डाडी के सीधा
होते ही फिर अपनी सीट पर अकडकर बैठने का प्रयास करते।

बस स्टैण्ड ज्यो-ज्यो निकट आ रहा था, उनके मन मे उत्साह बढता
जा रहा था। वह अपने घर जा रहे हैं, जहाँ उन्हे सब सुविधायें उपलब्ध
हैं। सब उनके आदमी हैं, उनकी राह देख रहे होंगे। कल शाम तक तो वह
अपने घर पहुँच ही जायेंगे।

सुबह से ही बादल घिरे हुऐ थे। लगता पानी आज भी बरसेगा। अभी
तक तक तो सब ठीक है। पानी की एक बूद नही गिरी। बस स्टैण्ड पहुँच
कर बस मे बठ जायें, फिर जितना चाहे पानी गिरे, कोई परवाह नही।

मगर शकरलाल की सोची हुई बात पूरी नही हुई। बस स्टैण्ड से दा-
ढाई फर्लांग पहले बूदा-बादी शुरू हो गई। डाँडी वाले चाहते थे किसी साये
दार पड के नीचे रुक जायें, बारिश खतम हो जाये तो फिर आगे बढें,
लेकिन शकरलाल नही माने। उन्हें घर पहुँचने की जल्दी है। हुकुम सुना
दिया, सीधे बस स्टैण्ड चलो। भीगते हैं तो कोई बात नही। बस स्टैण्ड पर
जाकर कपडे बदल लेंगे।

वह सामने बस स्टैण्ड दिखाई द रहा है। डाडी वाले तेज चाल से चल
रहे हैं। पानी पडने से सडक गीली हो गई है। बहुत तेज नही चल सकते।
पर फिसलने का डर है। आधे तो भीग ही गये हैं, थोडा और भीग
जायेंगे। मरीज का मामला है, सम्हालकर बस स्टैण्ड तक पहुचाना है।

बस स्टैण्ड के शेड मे पहुचकर डाडी वालो ने डाँडी को कन्धे से
उतारकर नीचे रख दिया। शकरलाल डाँडी से उतरकर बेंच पर बैठ
गये। कोट और मफलर पानी से तर हो गये थे। मुह और गला भी भीग

गया था। अन्दर के कपड़े भीगने से बच गये, लेकिन ठण्ड जोरों की लगने लगी। सीना भी दर्द करने लगा। शकरलाल ने बण्डी की जेब में पड़ी शीशियों में से सफेद टिकिया वाली शीशी निकालकर दो टिकिया मुँह में रख ली।

शकरलाल ने डाँडी वालों को मजदूरी के अलावा दो रुपये इनाम में दिये। डाँडी वाले दो रुपये इनाम में पाकर बहुत खुश हो गये। हाथ जोड़-कर झुक-झुककर नमस्कार करने लगे। शकरलाल ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया।

अभी तो आधा जून ही बीता है। अभी तो पहाड़ पर आने वालों की लाइन लगी है। काठगोदाम जाने वाली बसों में इसी से भीड़ नहीं है। बैठने की जगह आसानी से मिल जायेगी। बस जाने में एक घण्टे की देरी है। हरिया ने बेंच पर बिस्तर खोल दिया। शकरलाल ने जूते उतारकर लेटने से पहले एक रुपया हरिया को देते हुए कहा, "ले, तू पूड़ी खा आ।"

"मालिक, आप का भूखे रहोगे।" हरिया ने पूछा।

"अरे हम भूखे काहे रहेंगे अभी कुछ खाने की इच्छा नहीं है। तू खा आ। चलते समय एक कप चाय पी लेंगे।" शकरलाल बिस्तर पर लेट गये।

बस में आगे की सीट मिल गई। आराम की सीट। शकरलाल ने पैर ऊपर सिकोड़कर खिड़की के शीशे से सर टेक दिया। ठण्ड अब भी लग रही थी। लगता था कुछ बुखार भी तेज हो गया।

काठगोदाम पहुचते पहुचते शकरलाल अधमरे से हो गये। सारा शरीर दर्द कर रहा था। बुखार भी तेज हो गया। दो बार पीली गोली भी खा चुके। अब तो घर जाकर ही आराम मिलेगा।

किसी तरह हल्द्वानी आ गया। बस ने समय से पहुचा दिया। ट्रेन में लेटने की जगह मिल गई। सीट के नीचे फर्श पर हरिया ने अपनी दरी बिछा ली। मालिक के पास ही लेटना ठीक है। जब जरूरत हो दवा-पानी दे सकता है।

बरेली तक का सफर कट गया। अब बरेली से गाड़ी में भीड़ मिलेगी। एक रहमदिल टी टी ने राय दी, "आराम से जाना चाहते हो तो इलाहा-बाद पैसिंजर पकड़ो। टाइम कुछ ज्यादा लगेगा, लेकिन लेटने की जगह

मिल जायेगी।"

किसी तरह हरिया का सहारा लेकर शकरलाल ने छोटी लाइन से बड़ी लाइन के प्लेटफार्म तक की दूरी तय की। इलाहाबाद पैसिंजर प्लेट फार्म पर खडी थी। गाडी छटने मे अभी बहुत दर है। यहाँ इजन कोयला पानी लेता है, कोई जल्दी नही है। हरिया ने पीछे के डिब्बे मे एक खाली सीट देख ली। शकरलाल हाँफते हुए डिब्बे मे चढ गये। सीट पर बिस्तर बिछाते ही गिर से पडे। अब बैठा नही जाता। आँख भी नही खुल रही। सारा शरीर बुखार से तप रहा है।

डिब्बे मे टी० बी० का मरीज सफर कर रहा है। किसी को बताने की जरूरत नही। शकरलाल का चेहरा ही सब कुछ कहे दे रहा है। आधा डिब्बा अपने आप ही खाली हो गया। छूत की बीमारी है। जिस आदमी की समझ म यह सच्चाई आ जाती, वही मुह पर कपडा रखकर दूर हट जाता। डिब्बे के दूसरे सिरे पर कुछ गाँव वाले बठे हैं। एक गरीब मुसलमान फमिली भी बैठी है, जिसकी औरतें अपने बदरग काले बुर्के म ऊपर से लेकर नीचे तक ढकी हुई हैं। एक शहराती किस्म का आदमी भी बैठा है। आँखो पर चश्मा लगाय अंग्रेजी की किताब पढ रहा है। नया स्टेशन आने पर हरिया उसी से स्टेशन का नाम पूछता। तीसरी बार पूछने पर शहराती आदमी चिढ गया, "क्या बार बार पूछते हो, तुम्हे एगवाँ जाना है, चुपचाप बैठे रहो। चार बजे से पहले एगवाँ नही आयेगा, समझे।"

शहराती आदमी से डाँट खाकर, अपना-सा मुह लिए हरिया शकरलाल के सामने वाली सीट पर आकर बठ गया।

जब भी किसी स्टेशन पर गाडी रुकती, हरिया पूछता, "मालिक, पानी लाय चाय लायें।'

शकरलाल आँख खोलकर हरिया की ओर देखते, फिर सर हिलाकर इशार करके, आख बन्द कर लेते।

दो बार मामने से आती मेल गाडी को रास्ता देने के लिए पैसिंजर ट्रेन का छाट स्टशनो पर काफी देर रुकना पडा। पूरे एक घण्टा लेट हो गई। चार की जगह पाच बजे एगवा स्टेशन पर पहुचाया।

डिब्बे से प्लेटफाम पर शकरलाल को उतरना भी एक समस्या हो

गया था। अन्दर के कपड़े भीगने से बच गये, लेकिन ठण्ड जोरों की लगने लगी। सीना भी दद करने लगा। शकरलाल ने बण्डी की जेब में पड़ी शीशियों में से सफेद टिकिया वाली शीशी निकालकर दो टिकिया मुह म रख ली।

शकरलाल न डाँडी वालो को मजदूरी के अलावा दो रुपये इनाम मे दिये। डाँडी वाले दो रुपये इनाम में पाकर बहुत खुश हो गये। हाथ जोड-कर झुक-झुककर नमस्कार करने लगे। शकरलाल ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया।

अभी तो आधा जून ही बीता है। अभी तो पह . पर आने वालो की लाइन लगी है। काठगोदाम जाने वाली बसो म इसी से भीड नही है। बैठने की जगह आसानी से मिल जायेगी। बस जाने मे एक घण्टे की देरी है। हरिया ने बेंच पर बिस्तर खोल दिया। शकरलाल न जूते उतारकर लेटने से पहले एक रुपया हरिया को देते हुए कहा, "ले, तू पूडी खा आ।"

"मालिक, आप का भूखे रहोगे।" हरिया ने पूछा।

"अरे हम भूखे काहे रहेंगे अभी कुछ खाने की इच्छा नही है। तू खा आ। चलते समय एक कप चाय पी लेंगे।' शकरलाल बिस्तर पर लेट गये।

बस मे आगे की सीट मिल गइ। आराम की सीट। शकरलाल ने पर ऊपर सिकोडकर खिडकी के शीशे से सर टिका दिया। ठण्ड अब भी लग रही थी। लगता था कुछ बुखार भी तेज हो गया।

काठगोदाम पहुचते-पहुचते शकरलाल अधमरे से हो गये। सारा शरीर दद कर रहा था। बुखार भी तेज हो गया। दो बार पीली गोली भी खा चुके। अब तो घर जाकर ही आराम मिलेगा।

किसी तरह हल्द्वानी आ गया। बस ने समय से पहुँचा दिया। ट्रेन म लेटने की जगह मिल गई। सीट के नीचे फश पर हरिया ने अपनी दरी बिछा ली। मालिक के पास ही लेटना ठीक है। जब जरूरत हो दवा-पानी दे सकता है।

बरेली तक का सफर कट गया। अब बरेली से गाडी मे भीड मिलेगी। एक रहमदिल टी टी ने राय दी, "आराम से जाना चाहते हो तो इलाहा-बाद पैसिंजर पकडो। टाइम कुछ ज्यादा लगेगा, लेकिन लेटने की जगह

मिल जायेगी।"

किसी तरह हरिया का सहारा लेकर शंकरलाल ने छोटी लाइन से बड़ी लाइन के प्लेटफार्म तक की दूरी तय की। इलाहाबाद पैसिंजर प्लेट फार्म पर खड़ी थी। गाड़ी छूटने में अभी बहुत देर है। यहाँ इंजन कोयला पानी लेता है, कोई जल्दी नहीं है। हरिया ने पीछे के डिब्बे में एक खाली सीट देख ली। शंकरलाल हाँफते हुए डिब्बे में चढ़ गये। सीट पर बिस्तर बिछाते ही गिर से पड़े। अब बैठा नहीं जाता। आँख भी नहीं खुल रही। सारा शरीर बुखार से तप रहा है।

डिब्बे में टी० बी० का मरीज सफर कर रहा है। किसी को बताने की जरूरत नहीं। शंकरलाल का चेहरा ही सब कुछ कहे दे रहा है। आधा डिब्बा अपने आप ही खाली हो गया। छूत की बीमारी है। जिस आदमी की समझ में यह सच्चाई आ जाती, वही मुंह पर कपड़ा रखकर दूर हट जाता। डिब्बे के दूसरे सिर पर कुछ गाँव वाले बैठे हैं। एक गरीब मुसलमान फैमिली भी बैठी है, जिसकी औरतें अपने बदरंग काले बुर्के में ऊपर से लेकर नीचे तक ढकी हुई हैं। एक शहराती किस्म का आदमी भी बैठा है। आँखों पर चश्मा लगाये अंग्रेजी की किताब पढ़ रहा है। नया स्टेशन आने पर हरिया उसी से स्टेशन का नाम पूछता। तीसरी बार पूछने पर शहराती आदमी चिढ़ गया, "क्या बार बार पूछते हो, तुम्हें एगवां जाना है, चुपचाप बैठे रहो। चार बजे से पहले एगवां नहीं आयेगा, समझे।"

शहराती आदमी से डाँट खाकर, अपना-सा मुंह लिए हरिया शंकरलाल के सामने वाली सीट पर आकर बैठ गया।

जब भी किसी स्टेशन पर गाड़ी रुकती, हरिया पूछता, "मालिक, पानी लायें चाय लायें।

शंकरलाल आँख खोलकर हरिया की ओर देखते, फिर सर हिलाकर इंकार करके, आँख बन्द कर लेते।

दो बार सामने से आती मेल गाड़ी को रास्ता देने के लिए पसिंजर ट्रेन को छोटे स्टेशनों पर काफी देर रुकना पड़ा। पूरे एक घण्टा लेट हो गई। चार की जगह पाँच बजे एगवां स्टेशन पर पहुँचाया।

डिब्बे से प्लेटफार्म पर शंकरलाल को उतरना भी एक समस्या थी

गई। शरीर एकदम निढाल था। पूरी तरह हरिया पर टिक गये। एक गांव वाले ने मदद की। किसी तरह खींचकर प्लेटफार्म पर पड़ी बेंच पर लाकर लिटा दिया। एक दूसरे आदमी ने डिब्बे से लाकर बकसिया और बिस्तर भी पास मे रख दिया।

स्टेशन मास्टर के सामने हरिया हाथ जोड़े रो रहा है। मालिक को घर तक कैसे ले जाये। आंख भी नही खोल रहे, एकदम बेहोश से हैं। स्टेशन मास्टर ने भी शकरलाल लम्बरदार का नाम सुन रखा है। तेजी से सीट स उठकर शकरलाल के पास आकर खड़े हो गये। ठीक कह रहा है नौकर, तबीयत बहुत खराब है। देखते-ही देखत नीली वर्दी पहने और भी रेलवे के कर्मचारी आ गये। जहां स्टेशन मास्टर होंगे वहां रेलवे के कर्मचारियो की भीड़ लग ही जायेगी।

इक्के पर बैठकर शकरलाल घर तक जा नही सकते। कोई दूसरा इन्तजाम करना होगा। बलगाडी तो घर पहुचाने मे बहुत टाइम लेगी। तांगा ठीक रहेगा। स्टेशन के बाहर एक ही तांगा खड़ा है। दो सवारियां तांगे पर बैठ चुकी हैं, दो-तीन सवारियां और मिल जायें तो तांगा चल दे। तांगे वाला सवारियो को बुलाने के लिए आवाज लगा रहा है। लेकिन उसे अपनी आवाज़ बीच मे ही रोक देनी पड़ी। स्टेशन मास्टर के हुकुम से तांगे मे बैठी दोनो सवारियो को भी नीचे उतरना पड़ा। तांगा शकरलाल को लेकर जायेगा। तांगे की बीच की खड़ी गद्दी निकाल दी गई। अब बिस्तर बिछाकर शकरलाल को लिटाया जा सकता है। यही ठीक है।

तांगे के साथ साइकिल पर रेलवे के जमादार को भी घर तक पहुचाने की ड्यूटी लगा दी स्टेशन मास्टर साहब ने। अकेला नौकर क्या-क्या देखेगा। फिर यह भी तो पता लगना जरूरी है कि लम्बरदार घर तक सकुशल पहुच गये कि नहीं।

शाम का धुधलका रात के अंधेरे मे बदलने लगा था। मन्दिर म आरती हो चुकी थी। मुनिस्पैल्टी का आदमी सड़क के मोड़ पर लगे लैम्प पोस्ट म

दिया-बाती न र गया था, अब उसम से हल्की पीली रोशनी निकलकर सडक पर फल रही थी। नत्थूसिंह रान को होन वाले जुए की तयारी कर रहे थे। आगन म झाड़ू लगाकर दरी बिछा दी गई थी। उस पर फटी हुई, गन्दी सी सफेद चादर भी बिछ चुकी थी। थोडी दर बाद रोज का कायक्रम शुरू हो जायगा। ताश फेंटे जायेंग, चालें चली जायेंगी और देर रात तक हार जीत के बीच कई गन्दी आवाजें उठती गिरती रहगी।

अचानक अपने सामने हरिया को देखकर नत्थूसिंह चौक गये। ''मालिक आय गये, जल्दी आवो।'' हरिया वापस तागे की तरफ भाग गया।

नत्थूसिंह गुस्से से तिलमिला उठे, ' जे इत्ती जल्दी काहे आय मर, अच्छी खासी आमदनी होय रही थी।'

पर अब क्या हो सकता था। अब तो शकरलाल को घर मे लाना ही होगा। जल्दी से दालान मे खाट बिछा दी गई। मातादीन रसोई घर से निकल आये। शकरलाल को तागे से उतारने के लिए चार आदमी चाहिए।

आग की तरह चारो ओर खबर फल गई। लम्बरदार पहाड से लौट आये हैं। बहुत बीमार हैं, बोल भी नही पाते। जिसने भी सुना शकरलाल के मकान की ओर दौड पडा। लकिन मकान के अन्दर कोई कदम नही रख रहा। बस गली मे खडे खडे दरवाज़े से झाककर दालान मे पडे शकरलाल को देख लेते। छून की बीमारी है मरीज से दूर ही रहना चाहिए।

घर के अन्दर पैर रक्खा माधवप्रसाद न, साथ मे हैं डा० नौबतराय। नौबतराय पलग के पास आकर ठिठक गये। पलग के नीचे रक्खे तसले मे कुछ देर पहले ही शकरलाल ने उल्टी की थी खून की उल्टी।

"अरे तसले मे राख डालो, इस खुला क्यो छोड दिया, जल्दी करो।" नौबतराय ने डाटते हुए कहा।

हरिया भागकर आँगन के कोने मे पडी राख उठा लाया। तसले को राख से भर दिया।

"तसले को बाहर ले जा। दूर गड्ढे मे डाल आ। मिटटी से तोप दे।" नत्थूसिंह ने भी हुकुम सुनाया। हरिया तसला लेकर बाहर चला गया।

डाक्टर नौबतराय ने आला निकालकर शकरलाल की छाती को

चाचा, अब हम अपना देसी इलाज चलायेंगे हाँ।" फिर जैसे कुछ याद आ गया, "और ससुर तुम जे सब काहे पूछ रहे हो। तुम्हें हमसे का मतलब, हम मरें, चाहे जियें। तुमने ता अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। हम उठाय के हुआ पहाडन मे फँक आये लौट के सुध नाही लई।"

माधवप्रसाद का सर झुक गया किसी तरह बोले, "हम कसूरवार हैं लम्बरदार, जो चाहो कह लेओ। पर सच्ची बात जे है कि हम हियाँ स्कूल म ऐसे फँसे कि बस का कह, निकल ही नाही पाय ।"

"मालिक चाय लायें।" हरिया ने पास आकर पूछा।

सहसा शकरलाल की नजर हरिया के सीधे हाथ की कलाई पर चली गई। कलाई पर से उनकी दी हुई घडी गायब थी।

"घडी कहाँ है? घडी काहे उतारी, बोल?" शकरलाल न पूछा।

'मालिक हमन ले ली। कीमती घडी है, कही जे खोय न दे।" पीछे से नत्थूसिह की आवाज आई।

"तुम कौन हो घडी उतरवाउन वाले। निकालो घडी, अभी निकालो।' शकरलाल उठकर बैठ गये। जोर से बोलने के कारण वह हाँफ रहे थे, 'जे घडी हमन हरिया को दे दी। अब हरिया इस हरम अपने हाथ पे बाँधेगा, समझे। अरे- पिछले जनम का सेवक है हरिया हमारा परदस में कैसी सेवा की अब हम क्या-क्या कह। तुम ससुर का खाय के मुकाबला करोगे हरिया का। तुम्हें हमने दख लिया। हम घर बार सौंप गये, पीछे तुमने आँख फेर ली, दुई-तीन बार दस-बीस रूपली भेज के हाथ झाड लिया वाह भाई खूब निबाहा।"

नत्थूसिह का चेहरा गुस्से स लाल हो गया। लेकिन तुरन्त अपने को सम्हालकर बोले, "मालिक, जे हेडमास्टर साहब गवाह है, जो हमने अपने काम मे जरा कोताही की हो। हम कसी-कसी मुसीबत मे जिये हैं अब का कहें। थाने का डर मुहल्ले वालो का डर, सारे दुश्मन पीछे लग लिये और "

बडी अम्मा घूघट से आधा माथे ढँक, दरवाजे से ही जोरो स रोती हुई आकर खाट की पाटी पकडकर बैठ गयी, 'हाय बडकऊ, जे तुमका कौन बीमारी खाय रही है।'

बडी अम्मा का देखकर शकरलाल की आखें भर आयी। बालना

देखा। उनका चेहरा उतर गया, आँखों में निराशा-सी उतर आई, "गम पानी लाओ, इजेक्शन लगाना है।"

मातादीन पानी गम करने के लिए रसाई घर मे घुस गये।

"श्रीप्रकाश को तार कर नो। उनका यहाँ रहना बहुत जरूरी है।" डा० नौबतराय ने माधवप्रसाद से कहा।

'क्या लिख दें, कण्डीशन सीरियस, कम सून।"

"नही नही, कण्डीशन के बारे मे कुछ मत लिखो, घबरा जायेंगे।" नौबतराय ने कहा, "लिख दो, शकरलाल हियर, कम सून, बस, इतना ही काफी है।"

इजेक्शन लगाने के बाद नौबतराय ने दो गोलियाँ पीसकर पानी म घोली और शकरलाल के मुह मे उडेल दी। "इससे उल्टी भी नही होगी, और नीद भी ठीक से आयेगी।' नौबतराय ने चलते हुए कहा।

सुबह शकरलाल की देर से आख खुली। इजेक्शन ने अपना असर दिखाया था। शकरलाल अपने अ दर एक नई चेतना महसूस कर रहे थे। सिरहाने दो तकिये लगाकर बठने की काशिश की। अपने चारो ओर गौर से देखा, 'हाँ अपना ही घर है। अपने घर मे आ गये।' सतोष की गहरी साँस ली शकरलाल ने।

"कैसी तबीयत है नम्बरदार। रात तो तुम्हारी आँखो नाहीं खुल रही थी।' माधवप्रसाद ने खाट के पास कुर्सी खिसकाकर पूछा।

"तबीयत हमारी ठीक है। तबीयत को क्या हुआ।' शकरलाल ने बडी सहजता मे कहा, "लम्ब सफर की थकावट हो गई, बस।"

"रात डाक्टर नौबतराय का हम लाय थे, इजेक्शन दिया तो तुम्हारी तबीयत सम्हली।'

"क्या !' शकरलाल न गुस्से से कहा, "तुमने फिर हमारे सुई घुसड-वाय दई। अर काहे हमारी जान के पीछे पड़े हो माधवप्रसाद। य ससुर डाक्टरी इलाज ने हमारे शरीर को छलनी कर दिया। अब बस करो

बाबा, अब हम अपना देसी इलाज चलायेंगे हा।" फिर जैसे कुछ याद आ गया, "और ससुर तुम जे मब काहे पूछ रहे हो। तुम्हें हमसे का मतलब, हम मरें, चाहे जियें। तुमने तो अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। हमे उठाय के हुआ पहाडन मे फेंक आये, लौट के सुध नाही लई।'

माधवप्रसाद का सर झुक गया किसी तरह बोले, "हम कसूरवार हैं लम्बरदार, जो चाहो कह लेओ। पर सच्ची बात जे है कि हम हिया स्कूल म ऐसे फँस कि बस का कह, निकल ही नाही पाय ।'

"मालिक चाय लायें।" हरिया ने पास आकर पूछा।

सहसा शकरलाल की नजर हरिया के सीधे हाथ की कलाई पर चली गइ। कलाई पर से उनकी दी हुई घडी गायब थी।

'घडी कहा है? घडी काह उतारी, बोल ?" शकरलाल न पूछा।

"मालिक हमने ले ली। कीमती घडी है, कही जे खोय न दें।" पीछे से नत्थूसिह की आवाज आई।

'तुम कौन हो घडी उतरवाउन वाले। निकालो घडी, अभी निकालो।' शकरलाल उठकर बैठ गये। जार से बालने के कारण वह हाँफ रहे थे, "जे घडी हमने हरिया को दे दी। अब हरिया इस हरम्म अपने हाथ पे बाँधेगा, समझे। अरे पिछले जनम का सेवक है हरिया हमारा परदेस मे कैसी सेवा की अब हम क्या-क्या कह । तुम ससुर का खाय के मुकाबला करोगे हरिया का। तुम्ह हमने देख लिया। हम घर बार सौंप गये, पीछे तुमने आँख फेर ली, दुई-तीन बार दस-बीस रूपली भेज के हाथ झाड लिया वाह भाई खूब निबाहा।"

नत्थूसिह का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। लेकिन तुरन्त अपन को सम्हालकर बोले, "मालिक, जे हेडमास्टर साहब गवाह है, जा हमन अपन काम म जरा कोताही की हो। हम कैसी-कैसी मुसीबत मे जिये हैं पव का कहें। थाने का डर मुहल्ले वाला का डर, सारे दुश्मन पीछे लग लिये और "

बडी अम्मा घूघट से आधा माथे ढँके, दरवाजे से ही जोरा स रोती हुइ आकर खाट की पाटी पकडकर बैठ गयी, 'हाय बडकऊ जे तुमका कौन बीमारी खाय रही है।'

बडी अम्मा का देखकर शकरलाल की आँखें भर आयी। बालना

चाहा तो मुह से बोल नही फूटा। माधवप्रसाद ने किसी तरह दोनो को सम्हाला। बडी अम्मा को नत्थूसिंह उठाकर दूसरे कमरे मे ले गये।

एक एक करके सभी देख गये। पहले छडी टेकते, हाँफते हुए रामस्वरूप आये, फिर रामलाल, फिर लोकलाज का ख्याल करके हरनारायण भी आ गये। जब से गाँव वालो ने पिटाई की है, सीधे पैर मे लाठी की चोट लगने से कुछ लचक सी आ गई है। सीधा पैर ठीक से नहीं पडता, जरा फलाकर धरती पर टिकाना पडता है। लाठी के सहारे ही चलते हैं, ज्यादातर घर मे ही रहते, इधर उधर नही आते जाते। मगर इस समय तो घर से निकलना ही था। शकरलाल भाई लगते हैं, इस समय देखने न गये तो दुनिया कहेगी, बीमारी मे भी दुश्मनी निभाई। शकरलाल ने सबको हाथ जोड कर राम राम की। इससे ज्यादा कुछ नहीं कह सकते। एकदम कमजोरी आ गई है। बोला भी नही जाता।

वैद्य अयोध्यानाथ ने खरल मे घोटकर लाल-लाल देसी दवा चटा दी। शकरलाल ने गहरा मानसिक सतोष पाया। देसी दवा जरूर फायदा करेगी धीरे धीरे मुह से बोल फूटे 'प्रभु तेरी माया।'

शकरलाल का देसी दवा मे अटूट विश्वास शाम तक खण्डित हो गया। शाम को फिर खून की उल्टी हुई। माधवप्रसाद डाक्टर नौबतराय के पास दौडे। लेकिन डाक्टर नौबतराय अपनी कुर्सी पर अटल बैठे रहे, "सुनो हेडमास्टर साहब, अब आसार अच्छे नही हैं। हमारे हाथ से केस निकल चुका है। इजेक्शन लगा देते हैं, तो थोडा आराम-सा आ जाता है। टाइम बीता नही, फिर हालत खराब। ऐसे काम नही चलेगा। इन्हें तो हरदोई के बडे अस्पताल मे ले जाना पडेगा। श्रीप्रकाश आ जायें फिर तय करो, क्या करना है।' एक क्षण के लिए डा० नौबतराय रुके फिर बोले, "और अब हम तो जायेंगे नहीं इजेक्शन लगाने। शकरलाल को होश हुआ, और हमे इजेक्शन लगाते देख लिया तो बिगड जायेंगे। तबीयत और खराब हो जायगी। तुम चाहो तो हमारे कम्पाउण्डर को ले जाओ, अब

होश म न हो तो चुपके से इजेक्शन लगवा देना ।"

माधवप्रसाद कम्पाउण्डर को लेकर आ गये । शकरलाल होश म नहीं हैं, गहरी साँस लेते हुए आँख मूद पडे है। कम्पाउण्डर न इजेक्शन तैयार किया और बाँह मे सुई घुसेडकर दवा अन्दर पहुँचा दी ।

शाम से ही तेज हवा चलने लगी । लगता जैसे रात मे आँधी आयेगी। हरिया ने दोनो लालटेन जला दी । एक लालटेन चौके मे रख दी, एक अन्दर कमरे म । बाहर हवा म तो लालटेन बुझ जायेगी ।

चौके की देहरी पर बठे मातादीन बीडी फूक रहे हैं । मन बहुत उचाट हो रहा है । नत्थूसिंह अब ज्यादा देर अपने ही घर रहते है । रात का भी यहाँ नही सोते । बस घर मे शकरलाल के अलावा दो प्राणी और, मातादीन और हरिया । हवा न चल रही होती तो मातादीन लालटेन की रोशनी मे कुछ समय रामायण का पाठ करते राम नाम मे बडी शक्ति है मन को शाति मिलती है ।

सहसा आसमान म बवण्डर सा उठने लगा, हवा मीलो की रफ्तार से चलने लगी । आँधी आ गई । हरिया ने आँगन मे बिखरी दो-चार चीजें समेटकर रख दी शायद पानी का छीटा भी पडेगा ।

सहसा जोरो की आवाज हुई, जसे कुछ गिर गया, कुछ टूट गया । मातादीन हडबडाकर उठ खडे हुए, चारो ओर नजर घुमाकर देखने लगे । हरिया भी काँप गया, एक बार छत की ओर देखा, फिर अटकते हुए बोला, "जे काहे की आवाज भई पण्डत जी ।

"का जाने, का टूटा-फूटा ।" मातादीन ने लाचारी से कहा ।

एक घण्टे के बाद आँधी थम गई । आसमान से धूल छँट गई तो चाँद दिखाई देने लगा । हल्की चादनी मे आसपास की चीजे स्पष्ट हो गयी । मातादीन ने पहले मकान क आगे गली मे आकर देखा, सब कुछ ठीक, कही कुछ नहीं, फिर आवाज कैसी आई । अब पीछे भी देख लें । मातादीन मकान के पीछे का दरवाजा खोलकर सूनी पडी छोटी बगिया मे आ गये । सामने लगे

दोना पेड ठीक से खडे हैं। कुएँ की मेड भी सही है, फिर कैसी आवाज थी ?

सहसा मातादीन की नजर मकान के पिछले कमरे की दीवार पर गई। भय से मुह खुला रह गया। अपनी जगह पर जड-से हो गए। मकान की पिछली दीवार तडक गई थी। साफ देखा जा सकता था। नीचे से लेकर ऊपर तक एक इच मोटी दरार पड गई थी।

अपसगुन घोर अपसगुन मातादीन की आंखो से आंसू बहने लगे। मालिक बीमार पडे हैं और मकान तडक गया !!! रामजी हमारे अपराध क्षमा करो हमारी रक्षा करो। मातादीन ने अपने कांपते हाथो को जोडकर माथे से लगा लिया।

श्रीप्रकाश आ गये। चाचा को देखा तो रोने लगे। रोते-रोते हिचकियाँ बँध गयी।

"रोते नही बेटा रोने की क्या बात है अब हम ठीक हो रहे हैं वैद्य जी की दवा बहुत फायदा कर रही है।" शकरलाल ने श्रीप्रकाश का हाथ अपने हाथ मे लेकर कहा। उनका चेहरा चमक रहा था। अजब-सी दीप्ति चेहरे पर छा गई थी, "अब हम बिल्कुल ठीक हैं, जरा कमजारी है सो खायेंगे-पियेंगे, ठीक हो जायेंगे।" शकरलाल एक क्षण के लिए रुके, "हाँ, तुमसे बहुत-सी जरूरी बात करनी है। अपने घर के पीछे जो छोटी बगिया है, हम सोचते हैं उसे बेच दें। तुम्हारी शादी करनी है, विजय की शादी करनी है, और इस हरिया का घर भी बसाना है। इसने हमारी बहुत सेवा की। हम इसे कुछ नही दे पाये। तुम इसे पांच सौ दे देना, इतने मे इसका घर बस जायेगा।" शकरलाल फिर थोडा रुके। लम्बी सांस लेकर दम साधा, "औरबेटा रामस्वरूप की लडकी है उनका भी कुछ करना है, हजार-डेढ हजार उसमे नेग मे भी देना है। अरे हमने जो भी काम किया धूमधाम से, खूब शान-शौकत से किया। अब हमारी अर्थी उठे तो वह भी धूमधाम से उठे, खूब बाजे-गाजे के साथ खूब "

"चाचाजी बस करो। श्रीप्रकाश जोरो से रो पडे।

"अच्छा अच्छा नहीं कहेंगे, तुम्हे अच्छा नहीं लगता है तो कहग," शकरलाल ने हँसने की कोशिश की, "चाय लाओ तुम्हारे हम चाय पियेंगे।"

आधा कप चाय शकरलाल के गले के नीचे उतरी। इतना ही है और नही पी जाती। शकरलाल ने श्रीप्रकाश के हाथ म पकडे च प्याले को एक ओर हटा दिया, आख बन्द करके लेट गये।

।

डाक्टर नौबतराय के दवाखाने मे श्रीप्रकाश माधवप्रसाद के साथ बर मरीजो की भीड से कम्पाउण्डर अकेले ही निपट रहा है। नौबतराय श लाल की बीमारी से बहुत चिन्तित हैं।

'केस बहुत बिगड चुका है। जो इलाज हो सकता था किया। तो हरदोई के अस्पताल मे ही इलाज हो सकता है।" नौबतराय ने कह

"वहाँ से तो पहले ही भुवाली भेजे जा चुके हैं अब वहाँ क्या र है। इतना होगा कि जाते ही आक्सीजन की नली नाक मे लगा दें माधवप्रसाद ने कहा।

श्रीप्रकाश खामोश थे, कुछ समझ मे नहा आ रहा था क्या कहे, ि तरह बोले, 'अब सब ईश्वर के हाथ है। कही ले जाने लायक भी तो है। जो भाग्य मे लिखा है वह सहना होगा,, आप दवा देते रहिए। ईश्वर मालिक है।"

"दवा हम बराबर दे रहे हैं। इंजेक्शन भी लगा रहे है। अगर की उल्टी बन्द हो जाये तो फिर बहुत कुछ उम्मीद हो सकती है।" नौबतराय ने लाचारी जाहिर कर दी।

लेकिन खून की उल्टी नही रुकी। शाम होते-होते फिर खून की उ हुई। मुह से निकलकर खून गाला पर बहता हुआ खाट पर बिछी च पर फैल गया। श्रीप्रकाश और हरिया ने जल्दी जल्दी तौलिय से पोछा। चादर भी बदलनी पडी।

रात के तीसरे पहर सास भी उखड गई। घर घर की आव

के साथ साँस निकलने लगी। बड़ी अम्मा आ गयी।
का पल्ला ठूँसे रो रही थी, फिर अपने को सम्हाल
का गोबर मँगाय लेओ, धरती लीप दें।"
दालान में एक ओर ईंटों के फर्श पर,
धीप्रकाश, मातादीन, हरिया ने शंकरलाल को
धरती पर लिटा दिया।
विजय नहीं माना। चाचा के ...
हैं चाचा, अब उनके पास ही बैठेगा। माँ ने।
साफ समझाया। चाचा को ठिक है,
दूर रहना चाहिए। विजय ने माँ के
ही भाग चला।
मुँह से निकली घर्र घर्राहट
चादर से ढका है। सिरहाने बैठे
बड़ी अम्मा मुँह पे कपड़ा लगाये
कपड़े से मक्खी उड़ा रहे हैं।
विजय आँगन से
रखकर मना किया।
चुप कराने की कोशिश करने
मुहल्ले के दो चार आदमी
...पूसिंह रामस्वरूप को सहारा
भी आ गये। सब आँगन में बिछी
पुजारी जी एक
मन्त्र पढ़ रहे हैं, "हे रामजी, ...
रात का अँधेरा कम होने लगा,
भी सुनाई दे रही है सुबह होने वाली
-तभी जोरों से हिचकी आई
तीसरी हिचकी में मुँह कुछ और खुल
ब्रह्म में विलीन हो गई।
चारों ओर कोहराम मच गया ["हाय ...

अम्मा जोरो मे रो पडी, "हाय हमार पूत हमसे बिछुरि गये।"

श्रीप्रकाश की हिचकियां बँध गयी थी, कुछ बोल नही पा रहे थे बस एक ही शब्द मुह से निकला "चाचाजी चाचा।"

मातादीन और हरिया दीवार से लगे चिल्ला-चिल्लाकर रो रहे थे 'हाय हमार मालिक हाय हमार मालिक।'

हरनारायण ने कन्धे पर पडा अपना अँगोछा आँखो पर लगा लिया। रामस्वरूप बेहोश से हो गये। रोते हुए विजय बाप को सम्हालने की कोशिश कर रहा था।

चारो ओर तेजी से खबर फैल गई। लम्बरदार नही रहे। जिसने सुना भागा चला आ रहा है। मकान के सामने वाली गली आदमियो से भर गई। आँगन मे खडे होने की जगह नही बची।

सत्तो ताई, मँझली बहू, नई बहू मुहल्ले की दो-चार औरतो के साथ आ गयी हैं। दालान के कोने मे झुण्ड बनाकर बैठी एक स्वर मे कुछ बोल बोलकर रो रही हैं।

आदमियो ने अपने को सम्हाल लिया है। जो होना था हो गया, अब रोने से काम नही चलेगा। आगे की तैयारी करनी है। श्रीप्रकाश उठकर आँगन म आ गये। सारा काम उन्हे ही करना है। चिता मे अग्नि वही तो देंगे।

"हम बाजे वालेन को कह आयें," नत्थूसिंह ने कहा।

"कोई बाजा-वाजा नही आयेगा।" श्रीप्रकाश ने गुस्से से कहा, 'जाने वाला चला गया, अब हम बाजा बजायें?"

"मालिक की इच्छा थी कि अर्थी धूम धाम से निकले इसीलिए कह रहे।"

"हमे सब पता है, ज्यादा अक्ल न पढाओ।" श्रीप्रकाश ने नत्थूसिंह की बात बीच म काट दी, "सब काम सादगी से होगा, दिखावा हमे पसन्द नही है।"

नत्थूसिंह अपना सा मुह लेकर परे हट गये। सोचा था अर्थी धूमधाम से निकलेगी तो तयारी म कुछ पैसा बना लेंगे। बाजे वालो से तो कमीशन पहले ही तय कर लिया था। अब श्रीप्रकाश ने भाँजी मार दी।

के साथ साँस निकलने लगी। बड़ी अम्मा आ गयी। मुह मे अपनी धोती का पल्ला ठूसे रा रही थी, फिर अपने को सम्हालकर बोली, "गऊ माता का गोबर मँगाय लेओ, धरती लीप दें।"

दालान मे एक ओर ईंटो के फर्श पर, गोबर से लीप दिया गया। श्रीप्रकाश, मातादीन, हरिया ने शकरलाल को खाट से नीचे उतारकर धरती पर लिटा दिया।

विजय नही माना। चाचा के पास इसी समय जायेगा। कितना चाहते हैं चाचा, अब उनके पास ही बैठेगा। माँ ने फिर रोकना चाहा, साफ साफ समझाया। चाचा को दिक है, छूत की बीमारी। जवान लडके को दूर रहना चाहिए। विजय ने माँ के हाथ को झटक दिया, और नगे पैर ही भाग चला।

मुह से निकली घर्र घर्राहट भी धीमी पडने लगी है। शरीर सफेद चादर से ढका है। सिरहाने बैठे मातादीन रामायण का पाठ कर रहे हैं। बडी अम्मा मुह पे कपडा लगाये सिसक रही हैं और श्रीप्रकाश पास बैठे कपडे से मक्खी उडा रहे हैं।

विजय आँगन मे पहुचकर रोने लगा। श्रीप्रकाश ने मुह पर उगली रखकर मना किया। जब विजय का रोना नही रुका तो उठकर गये और चुप कराने की कोशिश करने लगे।

मुहल्ले के दो चार आदमी आ गये हैं। आँगन मे दरी बिछा दी गई। नत्थूसिंह रामस्वरूप को सहारा देकर ले आये। उनके पीछे हरनारायण भी आ गये। सब आँगन मे बिछी दरी पर बैठ गये।

पुजारी जी एक-एक बूद गगाजल शकरलाल के खुले मुह मे डालकर मत्र पढ रहे हैं, "हे रामजी, शान्ति दो, अपने भक्त पर कृपा करो।"

रात का अँधेरा कम होने लगा, एक दो पक्षियो के बोलने की आवाज भी सुनाई दे रही है सुबह होने वाली है।

—सभी जारों से हिचकी आई पहली दूसरी और फिर तीसरी। तीसरी हिचकी मे मुह कुछ और खुल गया, आत्मा शरीर को छोडकर ब्रह्म मे विलीन हो गई।

चारो ओर कोहराम मच गया। "हाय वडकऊ हमे छोडि गये।" बडी

अम्मा जोरो से रो पड़ीं, "हाय हमार पूत हमसे बिछुरि गये।"

श्रीप्रकाश की हिचकियाँ बँध गयी थीं, कुछ बोल नही पा रहे थे बस एक ही शब्द मुह से निकला "चाचाजी चाचा।"

मातादीन और हरिया दीवार से लगे चिल्ला चिल्लाकर रो रहे थे 'हाय हमार मालिक हाय हमार मालिक।'

हरनारायण ने कन्धे पर पड़ा अपना अँगोछा आँखो पर लगा लिया। रामस्वरूप बेहोश से हो गये। रोते हुए विजय बाप को सम्हालने की कोशिश कर रहा था।

चारो ओर तेजी से खबर फैल गई। लम्बरदार नही रहे। जिसने सुना भागा चला आ रहा है। मकान के सामने वाली गली आदमियो से भर गई। आँगन मे खड़े होने की जगह नही बची।

सत्तो ताई, मँझली बहू, नई बहू मुहल्ले की दो चार औरतो के साथ आ गयी हैं। दालान के कोने मे झुण्ड बनाकर बैठीं एक स्वर मे कुछ बोल बोलकर रो रही हैं।

आदमियो ने अपने को सम्हाल लिया है। जो होना था हो गया, अब रोने से काम नही चलेगा। आगे की तयारी करनी है। श्रीप्रकाश उठकर आँगन मे आ गये। सारा काम उन्हें ही करना है। चिता मे अग्नि वही तो देंगे।

"हम बाजे वालेन का कह आयें," नत्थूसिंह ने कहा।

"कोई बाजा-वाजा नही आयेगा।" श्रीप्रकाश ने गुस्से से कहा, "जाने वाला चला गया, अब हम बाजा बजायें?"

"मालिक की इच्छा थी कि अर्थी धूम धाम से निकले इसीलिए कह रहे।"

"हमें सब पता है ज्यादा अक्ल न पढ़ाओ।" श्रीप्रकाश ने नत्थूसिंह की बात बीच मे काट दी, "सब काम सादगी से होगा, दिखावा हम पसन्द नही है।"

नत्थूसिंह अपना-सा मुह लेकर परे हट गये। सोचा था अर्थी धूमधाम से निकलेगी तो तैयारी मे कुछ पैसा बना लेंगे। बाजे वालो से तो कमीशन पहले ही तय कर लिया था। अब श्रीप्रकाश ने भाँजी मार दी।

"रामलाल भइया तो फतेहपुर गये हैं उनको कैसे खबर करें ," हरनारायण ने एक समस्या और रख दी।

"अब तो बहुत मुश्किल है।" श्रीप्रकाश ने सर हिलाकर कहा, "फतेहपुर से ताऊ का आना आज तो हो नहीं सकता, न जाने कितना टाइम लग जाये। तब तक कैसे रुकेंगे। बरसात के दिन हैं, ज्यादा देर नहीं रुक सकते।" श्रीप्रकाश ने जेब से रुपया निकालकर मातादीन को देते हुए कहा, "बाजार जाओ, दुकान खुलवाकर कपड़ा, बाँस लाओ।" फिर रामस्वरूप की ओर देखकर बोले, "नाऊ को बुलाना होगा।"

"हाँ हरिया को भेज दो।" रामस्वरूप ने कहा। हरिया नाऊ को बुलाने चला गया।

खूबचन्द ने बाजार में कहला दिया। कोई दुकान नहीं खुलेगी। पूरा बाजार ठाकुरलाल के सम्मान में बन्द रहेगा। गर्मियों की छुट्टियाँ अभी चल रही हैं, लेकिन फिर भी नौबतराय ने लड़कियों के स्कूल के प्रेसीडेण्ट के नाते एक दिन की छुट्टी कर दी। आफिस में भी काम नहीं होगा। बस्ती का खास आदमी चला गया। छुट्टी तो होनी ही चाहिए। माधवप्रसाद त्रिपाठी ने भी अपने स्कूल के बाहर लकड़ी के काले बोर्ड पर लिखकर टाँग दिया, "स्वर्गीय ठाकुरलाल लम्बरदार के सम्मान में आज विद्यालय में कोई काम नहीं होगा।"

आँगन के एक कोने में पटरे पर बैठकर श्रीप्रकाश ने नाऊ से सर मुड़वाया। नई कोरी सफेद धोती को आधा कमर के नीचे लपेटकर लाँग लगा ली, और आधी धोती को ओढ़ लिया। कोरा जनेऊ भी मातादीन ने पहना दिया।

दस बजते-बजते सारी तैयारी हो गई। बाँस की टिकटिकी पर ठाकुरलाल की देह को रखकर सुतली से कस दिया गया। ऊपर से एक लाल दुशाला उढ़ा दिया।

एक बार फिर कोहराम मच गया। औरतें जोर-जोर से रोने लगीं।

हरिया हाय मालिक, हाय मालिक करके रो रहा था। दूसरे कई लोग आखों पर कपडा लगाये सुबुक रहे थे। गली बस्ती के लोगो से भर गई। आसपास के मकानो की छतो पर भी औरतें, बच्चे खडे होकर झाँक झाँक-कर देख रहे थे।

राम नाम सत है सत बोलो मुक्त है के साथ ही अर्थी कधो पर उठा ली गई। अर्थी मे सबसे आगे कधा देने वालों मे थे, डा० दौलतराय और मेहदीहसन। पीछे की तरफ थ माधवप्रसाद और लाला खूबचद।

घर से चलकर अर्थी को मदिर म लाया गया। अर्थी को धरती पर रखकर सबने हाथ जोड लिए। श्रीराम का भक्त श्रीराम की माया मे विलीन हो गया। पुजारी जी ने मत्र पढकर देह पर गगाजल छिडका, अर्थी फिर कधा पर उठा ली गई।

अर्थी के आगे पुजारी जी घण्टा बजाते चल रहे थे। राम नाम सत् है सत बोलो मुक्त है बायें हाथ मे पकडे पीतल के घण्टे पर सीधे हाथ मे पकडी लकडी की हथौडी से पुजारी जी जोर की चोट करते दूर तक आवाज गूँजती टन टन टन टन।

प्रह्लाद कीर्तनियाँ भी सबसे आगे आगे चल रहा था। उसके दोनो हाथो मे करताले थी। मुह स बोल नही निकल रहा था, लेकिन जब सत्य बोलो मुक्त है शब्द गूजता तो जोरो से करतालें खडखडा देता। शकरलाल की यह भी इच्छा शायद पूरी हो गई कि उनकी अर्थी खूब गाजे-बाजे के साथ निकले।

अर्थी के साथ चलती भीड के पीछे इक्के पर रामस्वरूप और हर-नारायण बठे थे। पैदल नही चल सकते। अपने-अपने ढग से दोनों ही अपाहिज हैं, सो इक्के पर बैठकर जाने में कोई अपराध नही है।

इक्के के पीछे एक आदमी लाठी टेकता खाँसता-हाफता हुआ चल रहा है। नाम है सुरजन मामा। पिछले छ महीने से बीमार है। डाक्टर ने आराम करने को कहा है, मगर इस समय आराम नही कर सकते। जिस मालिक का अन्न खाया उसकी अन्तिम यात्रा मे शामिल न हों, तो महापाप लगेगा। ईश्वर को क्या मुह दिखायेंगे।

तेरह दिन तक श्रीप्रकाश को घर मे ही रहना होगा। तेरही के बाद ही घर से बाहर निकल सकते हैं। इस बीच घर की मरम्मत करा रहे हैं, पुताई होनी बहुत जरूरी है। टी० बी० का मरीज घर मे रहा है। चूने की पुताई सारे कीटाणुओं का नाश कर देगी।

नत्थूसिंह दिन रात श्रीप्रकाश की सेवा में हाजिर हैं। एक मिनट के लिए भी आँख से ओझल नही होते। बातो-बातो में कह दिया—"आप फिकर न करो बड़े भइया, मालिक चले गये तो क्या, हम तो सेवा म हाजिर हैं। आप बनारस रहो, घर को हम देखें भालेंगे। हर महीने किराया भेजा करेंगे टाइम से।"

श्रीप्रकाश चुप रहे अभी कुछ कहना नही चाहते। तेरही हो जाये, फिर बतायेंगे। सारा उत्पात इसी आदमी का है। चाचा के रहते उन्हें सारी ऐबदारी इसी ने सिखाई, अब मकान पर कब्जा करना चाहता है।

तेरही को भी बहुत सादे ढग से किया गया। किसी की बात नही सुनी। श्रीप्रकाश ने ग्यारह ब्राह्मण जिमा दिये, सवा रुपया और एक धोती-कुर्ता भेंट करके ब्राह्मणो के पैर छू लिए। मुहल्ले वाला को एक टाइम का खाना खिला दिया, मन्दिर को भी थोड़ा-बहुत दान दे दिया, बस इससे ज्यादा और कुछ नही।

लेकिन इस सबमे भी काफी रुपया लग गया। श्रीप्रकाश ने इसका इन्तजाम पहले ही कर लिया था। मकान के पीछे की जमीन बेच दी। वह क्या करेंगे छोटी बगिया का, कौन उन्हें यहाँ रहना है। मकान भी बेचना है, पर वह बाद की बात है। आराम स बेचेंगे तो अच्छे पैसे मिलेंगे। अभी तो लोगो ने यह कहकर भाव गिरा दिया है कि मकान मे दिक की बीमारी का मरीज मरा है।

हरिया के साथ श्रीप्रकाश ने पूरा न्याय किया। इस आदमी का अहसान नही भूल सकते। अन्तिम समय चाचाजी की कसी सेवा की। सगा-से-सगा आदमी भी इतना नही कर सकता। टी० बी० के मरीज का साथ देने को कोई तयार नही होता। फिर इसने तो पेशाब थूक सब उठाया, अपनी जान की परवाह नही की। नौकर हो तो ऐसा, पूरा नमक हलाल। श्रीप्रकाश ने सब्जी बाजार मे एक दुकान देखकर हरिया को सब्जी की दुकान

खुलवा दी। दो सौ इसमें खर्च हो गये। तीन सौ रुपया बाकी रहा वह भी देंगे। जब कमाने लगा है तो घर भी बसेगा, उसी समय तीन सौ रुपया देंगे। पूरा हिसाब चुकता कर देंगे। चाचा की आत्मा को कहीं से भी नहीं दुखायेंगे।

रामस्वरूप की लडकी की शादी मे भी रुपया देंगे। नक्द नहीं, किसी उपहार के रूप मे, ताकि लडकी के काम आये।

तेरही होते ही नत्थूसिह ने मकान की बात फिर चलाई। श्रीप्रकाश ने जलती आँखो से इस तरह नत्थूसिह को देखा कि नत्थूसिह के बदन मे ऊपर से नीचे तक कपकपाहट दौड गई, "मकान मैं अपने पास रखूगा। किराये पर नहीं देना। यहीं रहना है मैंने ।'

नत्थूसिह चोट खाते साँप की तरह बल खाते चले गये। मगर चन से नहीं बैठे। सारे बाजार म उन लोगो को उकसा दिया जिनके पास शकर-लाल ने अपने घर की चीजें गिरवी रखी थीं। दो चार को ऐसे ही पीछे लगा दिया, 'जाओ जाओ अपना पैसा माँगो, बेटा जी हजारो की जायदाद अक्ले ही हडप ले रहे हैं। नत्थूसिह ने सडक पर खडे-खडे एक ओर थूकक्र दात पीसते हुए कहा "सारी जिन्दगी हमने लम्बरदार की टहल की, अब जे आय गये बच्चा जी भतीजा बन के मकान पर कब्जा करने। हम भी देखेंगे। ईंट-से इट न बजाय दई मकान की, तो हम कुत्ता हैं।"

देखत ही देखते मकान के बाहर रुपया मागने वालो की लाइन लग गई। श्रीप्रकाश वकालात पढ़ हुए हैं, इतनी आसानी से हथियार नहीं डालने वाले दो टूक जवाब सबको सुना दिया, "जिस जिस के पास लिखा पढ़ी का कागज हो, वह आ जाये अपना रुपया ले ले, मुह जबानी कोई बात नहीं। जिसे ज्यादा रुपया लेन का शौक चराया हो उसके लिए हरदोई मे कचहरी का दरवाजा खुला है, जाकर दावा कर दे, हम देख लेंगे।"

बस्ती का एक लाला जरा ज्यादा ही अकडू बनता था, अपनी बात पर अड गया। माधवप्रसाद को पकड लाया, कसम खाने लगा, "गीता की कसम ले लो, लम्बरदार को हमने चार सौ रुपया उधार दिया था।"

श्रीप्रकाश ने ऊपर से नीचे तक लाला को देखा। बस्ती के एक एक आदमी को जानते हैं, फिर भला लाला को कैसे नहीं जानेंगे। बहुत कमीना

आदमी है अपने भाइयों की जायदाद दबाकर रहीस बन गया है। पर ऊपर वाला सब देखता है, एक के बाद एक करके पाँच लडकियां हो गयी हैं। लडके के नाम पर कुछ नहीं। सो बडा दान पुन किया, जिस तिस साधू महात्मा के चरणों मे नाक रगडी, तब जाकर लडका पैदा हुआ। छ बरस के लडके को घर से बाहर नही निकलने देता लाला, कही दुनियाँ नज़र न लगा द। पाच बहनो का भाई है।

"बस चार सौ रुपये की बात है। चार सौ रुपये चाचा ने लिए थे यही न?" श्रीप्रकाश ने पूछा।

"हाँ जी चार सौ रुपये लिए थे।" लाला ने सीना फुलाकर कहा।

'तब ऐसा करो, अपने लडके को ले आओ, मंदिर मे चलते हैं। श्री रामजी की मूर्ति के आगे लडके के सर पर हाथ रखकर कसम खा जाना, मैं रुपये दे दूगा।'

लडके की कसम पर लाला ऊपर से नीचे तक हिल गया। इधर-उधर की बात करने लगा। श्रीप्रकाश उठकर खडे हो गये, "जो बात कही है, सुन ली न। अब मजूर हो तो लडके को ले आओ, नही तो निकल जाओ यहाँ स। दुबारा मुँह न दिखाना।"

लाला सिटपिटाया-सा मन ही मन गालियाँ देता चला गया।

'सब नत्थूसिंह की बदमाशी है।' माधवप्रसाद बोले, "साले ने सारे बाजार को भडका दिया।'

"हमे पता है।' श्रीप्रकाश ने सर हिलाया, "जिस थाली मे खाया उसी मे छेद किया, ऐसो को ही नमक हराम कहते हैं।"

"बडा दिमाग चढ गया है इस आदमी का। तुमने मकान नही दिया, तो अपने घर मे जुआ खिलाना शुरू कर दिया। हिन्दी का एक अखबार रोज मँगाने लगा। बडा पढाकू बन गया है। अकडकर कहता है, "नवर-लाल क्या थे, जो कुछ करते थे सो हम करते थे। हमने कमाया सो उसने खाया।"

"क्या!" श्रीप्रकाश चौंक से गये। गुस्से से उनकी आँखें चढ गयी "और क्या कहता था कमीना।'

"कहने को तो बहुत कुछ कहता था अब क्या-क्या बतायें।"

माधवप्रसाद समझाते हुए बोले, "तुम चाहे दुखी हो, बकता है तो बका करे। तुम्ह कौन-सा यहाँ रहना है जा अदावत मोल लो।'

'वाह, यह खूब कही आपने।" श्रीप्रकाश भडक उठे, "हमे यहा नहीं रहना है तो क्या हम उस साले की बकवास सुनते रहें। कल तक हमारे टुकडो पर पलने वाला हमे आँख दिखाता है। इस साँप के तो दात उखाडने ही होंगे।" श्रीप्रकाश एक मिनट को रुके, कुछ सोचा, फिर बोले, "पण्डितजी आप ज़रा यह ठीक से मालूम करके बताओ, जुआ रात को किस टाइम से किस टाइम तक होता है।"

'छोडो भइया, काहे झझट में पड रहे हो।'

"पण्डितजी, आप ठहरो, ज़रा तमाशा देखो। दुष्ट को दण्ड तो देना ही चाहिए।" श्रीप्रकाश ने कहा, "आप मुझे ठीक-ठीक बताओ किस टाइम से किस टाइम को जुआ खेला जाता है, बस। हाँ चुपचाप, किसी को कानो-कान खबर न हो।

सारी खोज-खबर लेकर श्रीप्रकाश अगले दिन ही हरदोई जा पहुँचे। सीधे कलेक्टर से मिले। स्पेशल पुलिस फोर्स लेकर शेखूपुरा लौटे। रात के बारह बजे पुलिस ने नत्थूसिंह का घर घेर लिया। दरवाजे पर सादे कपडो मे पुलिस के आदमी ने दस्तक दी, तो अन्दर से गालियो की बौछार आई, "कौन है बे हरामी भाग जा।" नत्थूसिंह ने थोडी देसी शराब चढा रक्खी थी। आवाज इसी से लडखडा रही थी।

कच्चा मकान, मुश्किल से पाच छ फुट ऊँची दीवार। इसे फाँदकर आँगन मे पहुँचना कौन सा मुश्किल काम है। देखते ही-देखते तीन पुलिस के जवान आँगन मे कूद गये। रंगे हाथों पकड लिया। ताश की गड्डी, फर्श पर पडी रेज़गारी, जुआ खेलते आठ आदमी, और उनकी जेबो से मुडे तुडे एक और पाच के नोट, सबको लेकर पुलिस थाने आ गई।

नत्थूसिंह ने अपनी औरत, माँ-बाप, लडके और लडकियो को दूसरे मकान मे रहने भेज दिया था। छापा पडने की बात सुनकर रोना-पीटना मच गया। रात को ही नत्थूसिंह का बूढा बाप लाठी टेकता थाने पहुँचा। थानेदार ने एक ही डाँट मे दूर भगा दिया।

श्रीप्रकाश ने हरदोई जाकर सिफारिश ही नहीं भिडाई थी, दो सौ

रुपया भी खर्च किया था। सौ रुपया शेखूपुरा के थाने में बाँट दिया, सौ रुपया स्पेशल फोर्स जो हरदोई से आई थी उसके नाश्ते पानी को दिया था। एकदम हिदायत ऊपर से हो गई थी, नत्थूसिंह की जमानत नहीं होनी चाहिए। इन टुच्चे जुआरियो को पूरा सबक मिलना चाहिए। पूरा कस्बा गन्दा कर दिया। पब्लिक का रहना मुश्किल हो गया।

तीन जुआरियो को उनके घर वाले जैसे-तैसे थानेदार की जेब गरम करके और हाथ-पैर जोडकर रात को ही छुडा ले गये। थानेदार ने पुलिस रिकार्ड मे लिख दिया, सिर्फ पाँच आदमी जुआ खेलते पकडे गये। नत्थूसिंह और चार दूसरे आदमी। तीन आदमियो के नाम एकदम गायब हो गये। इसी को भाग्य कहते हैं, ऐन वक्त पर पैसे की मदद मिल गई, छूट गये, नहीं तो नत्थूसिंह और उनके चारे साथियो की तरह रात भर पुलिस के लात घूसे खाते रहते।

पुलिस वाले श्रीप्रकाश के पैसो से तली हुई कलेजी के साथ देसी शराब का घूट भरकर और पासिंग शो सिगरेट का दम लगाकर नत्थूसिंह और उनके चार जुआरी साथियो की रात भर पिटाई करते रहे। लात घूसो से ही पीटा जाता है। इससे शरीर पर निशान नही पडता। बेंत मारने से शरीर पर बरत पड जाती है। मजिस्ट्रेट के सामने मुजिम पीठ पर से कपडा हटाकर पुलिस को कसूरवार साबित कर देता है। थप्पड, घूँसे, और लात की चोट का कोई निशान नही रहता इसमें पूरी सावधानी है। पुलिस तो अपना कर्त्तव्य पालन करती है, जिससे पैसा लिया है उसका काम तो करना ही है, साथ ही खाकी वर्दी का रोब डालना है सो अलग।

दूसरे दिन बाजार खुलते ही एक नया तमाशा शेखूपुरा वालो को देखने को मिला। नत्थूसिंह के साथ चारो जुआरी सर मुडाये, मुँह पर कालिख पोते, गधे पर उल्टे बैठे हुए थे। उनके गले मे गत्ते का एक फुट का टुकडा लटक रहा था, जिस पर लिखा था, 'हम जुआरी हैं, हमारे मुह पर थूको।'

दूकानदार अपनी-अपनी दुकानो पर खडे होकर इस नये जलूस को देख रहे थे। कस्बे मे पहली बार ऐसा जलूस निकला था। कुछ चुपचाप मुह बाये देख रहे थे, कुछ दबी जबान मे पुलिस और सरकार की तारीफ

कर रहे थे।

"ठीक किया, ऐसे ही बदमाशी दूर होगी।" कुछ जुआरियों के काले पुते चेहरे को गौर से देखकर उन्हें पहचानने की कोशिश कर रहे थे—"जे आगे-आगे का नत्थूसिंह हैं।"

"हाँ-हाँ नत्थूसिंह है, चीन्ह नाहीं पाये। शंकरलाल लम्बरदार का पुराना नौकर है।" एक आदमी ने जोर देकर कहा, "लम्बरदार के साथ रह के पर निकल आये थे। बूझो भला, तुम ससुरऊ दुई कौडी के आदमी, तुम लम्बरदारन की हिरस करने निकले अब बटा लो मजा।"

"मियाँ शंकरलाल की बात और थी शेर दिल आदमी था। जो काम किया डंके की चोट पर किया। जे साले पिद्दी न पिद्दी का शोरबा, सियार हो के शेर की नकल करने चले वाह मियां खूब हुई।" कचहरी के पुराने मुंशी रहमतउल्लाह ने अपनी बात कह दी।

श्रीप्रकाश अपने घर में बैठे बैठे जलूस का मजा ले रहे थे। हरिया एक-एक मिनट की खबर ला रहा था। जमींदार घरान से टकराया था, चूर चूर करके रख दिया। परम शान्ति मिली श्रीप्रकाश के मन को। स्वर्ग में चाचाजी को भी सुख मिला होगा। नमकहराम को रगड के रख दिया।

बीस साल बाद

बीस साल बाद रोहित शेखूपुरा जा रहा है। देखते ही-देखते कितना समय बीत गया। बस मे आगे की सीट पर बैठा रोहित, खिडकी से दिखाई देने वाले एक एक दृश्य को आँखो से पी जाना चाहता है। पुरानी सारी स्मतिया ताजा हो आयी हैं। बचपन से ही शेखूपुरा से मन का जुडाव रहा है। पर अब तो शेखूपुरा भी काफी बदल गया होगा। बीस साल मे जब सारे देश मे परिवतन आया है, तो फिर शेखूपुरा मे भी परिवतन देखने को जरूर मिलेगा।

बडे भइया श्रीप्रकाश ने बनारस बहुत पहले छोड दिया। बनारस ही नही, अपना देश भी छोडकर विदेश जा बसे। सुना है फ्रास मे फोटाग्राफी म काफी नाम कमाया है। लगता है सारा जीवन वही बितायेंगे। अपन देश से कोई मोह नही रहा। चाचा जी के मरने के बाद से शेखूपुरा से ता किनारा कर ही लिया था, फिर बनारस भी छाड दिया। कुछ दिना बम्बई रहे, उसके बाद सीधे फ्रास जा बसे। सुना था नीति शर्मा भी अपन पति के साथ योरोप के किसी देश मे पहुँच गई। तो क्या अब भी बडे भइया नीति शर्मा का पीछा कर रहे हैं। ! रोहित ने सर को झटका देकर अपने को स्थिर करना चाहा। जब भी बड भइया का ख्याल आता है बहुत दुख होता है। बडे भइया की जिदगी चौपट हो गई। इसी को कहत हैं 'लव ट्रैजेडी'।

विजय की भी बराबर याद आती रहती, लेकिन मिलना नही हो पाया। शेखूपुरा से हजार मील की दूरी पर रोहित न अपना काम जमाया। दक्षिण भारत में ही अधिकतर घूमना होता रहता। उत्तर भारत से नाता ही टूट गया। पत्र व्यवहार भी नही चल पाया। इस समय भी एक जरूरी

काम से लखनऊ आना पड़ा। काम में ही सिलसिले में हरदोई तक आ गया अब शेखूपुरा दूर ही कितना है। दिल्ली वापस जाने से पहले शेखूपुरा देखने का मोह छोड नही पाया। इसी से मई की भरी दोपहर मे, लू के थपेडे खाते हुए बस की यात्रा कर रहा है। एक बजे बस हरदोई से चली थी तीन बजे तक शेखूपुरा पहुँचा देगी। ऐसा ही बस कण्डक्टर ने कहा है।

श्री राम मन्दिर, बगिया, बडा बाजार, भैरो घाट सब याद आ रहे हैं। इन सबके साथ यादें जुडी हुई है। कुछ चेहरे भी याद आ रहे हैं, लेकिन इनमे से अधिकतर तो स्वर्गवासी हो गये, जो बचे भी होंगे वे शायद पहचाने भी न जायें समय की मार ने बहुतो को बूढा, अपाहिज बना दिया होगा।

विजय भी न जाने किस हालत मे हो। उसे भी तो टी० बी० की बीमारी लग गई थी। बीमारी मे ही मुनिस्पैल्टी की नौकरी भी छूट गई। अब तो जमींदारी से बची जमीन पर खेती से जीविका चलती होगी। भाग्य की भी कैसी विडम्बना है, जिस शेखूपुरा से नफरत थी उसी में रहना पड़ा। शहर मे बसने की लालसा मन में ही रह गई। खेती-बारी को नीचा काम समझता था विजय, सो अब पेट भरने के लिए उसी खेती पर आश्रित हो जाना पड़ा।

दिल्ली मे शेखूपुरा के एक परिचित आदमी से मुलाकात हो गई थी, उसी से बहुत सी बातें मालूम हो गयीं। टी० बी० की बीमारी ने विजय की शादी मे रोडा अटका दिया। पहले अच्छे रिश्ते आये तो उन्हें जमींदारी के रोब मे रामस्वरूप ने दुतकार दिया बाद को घर बसाने के लिए एक गरीब अपढ किसान की बेटी को सात फेरे डालकर लाना पडा। परिचित आदमी ने यह भी बताया था, विजय बहुत मारता है अपनी औरत को। एक दिन तो लाठी से सर ही फाड दिया। सारा मुहल्ला इकट्ठा हो गया, थाने में रपट लिखाने की नौबत आ गई, तब से किसान की बेटी बार बार पिटने से बची है।

एक के बाद एक कई तरह के बिजनस किये विजय ने, मगर किसी मे सफलता नहीं मिली। सबमे घाटा उठाया। अन्त मे किसी ने राय

दी तो मन्दिर के पीछे खाली जगह मे पोल्ट्रीफार्म खोल दिया, यानी मुर्गीखाना। यह भी खूब रहा। बाबा ने मन्दिर बनवाया, पोते ने मुर्गीखाना खोल दिया। कहा तो रसोईघर मे अगर प्याज का छिलका तक पहुँच जाये तो चौक चूल्हा फिर से धोया जाता था, कहाँ अब मुर्गे की बाग और मुर्गियो की कुडकुडाहट। इसी को कहते हैं समय की मार। आदमी धरम-करम सब भूल जाता है।

ऐगवा स्टेशन निकल गया अब दस मिनट मे शेखूपुरा के बस स्टड पर बम पहुँच जायेगी। वहा स फिर इक्का लेना होगा, अहा कितने सालो बाद इक्के पर बैठने का सुख मिलेगा। बडा मजा आता है जब इक्का डगमगाता हुआ चलता है। इस पर इक्के वाले के मुह से निकलती आवाज तिक तिक तिक चल बेटा घोडे, जल्दी चल इक्के वाला घोडे की पूछ मुरेडता हुआ इक्के की चाल तेज करने की कोशिश करता। रोहित का मन अपने बचपन मे लौट गया था।

बस एक झटके के साथ रुक गई। शेखूपुरा का बस स्टैण्ड आ गया। दूसरी सवारियो के साथ ही रोहित भी अपना ऐयर बैग और छोटी अटैची लिए हुए बस से उतर पडा। आखो पर चढे गॉगल को उतारकर अचरज से चारो तरफ देखा यह क्या, यह तो शेखूपुरा का शहरीकरण हो गया। बस स्टैंड उतरती दोपहर मे भी काफी चहलपहल से भरा हुआ था। एक ओर लाइन से टीन शेड मे कई दुकानें दिखाई द रही थीं, जिसमे गोल्ड स्पाट, कैम्पा, आरेंज और दूसरे तरह-तरह के माडन पय की बोतलें रक्खी हुई थी। शहर से चलकर यह बोतलें यहा तक आ गयी! कस्बे के लोग ही क्यो आधुनिक सुविधाओ से वचित रहें? चाय और ढाबेनुमा होटल पर ग्राहको को आकर्षित करने के लिए छोटे छोटे बच्चे बरे के रूप मे आवाज लगा रहे थे। ऊँची आवाज मे खाने पीने की चीजो के रेट भी बता रहे थे ताकि ग्राहक को कोई भ्रम न रहे ठगी की कोई गुजाइश नही। यह बात दूसरी कि दाल बासी मिले और चाय मे पडी पत्ती से बदबू आये।

सडक के दूसरी ओर का दृश्य तो और भी रोचक है। तहसील की पुरानी इमारत अब भी खडी है, लेकिन उसके आग चार कमरे पक्के बन

गय। उसी के पास खडा हो गया, लक्ष्मी टाकीज। कच्ची-पक्की इटो पर टीन शेड डालकर सिनेमा हाल बनाया गया, फिल्म चल रही है, मिस्टर नटवरलाल। अमिताभ और रेखा की जोडी बडे से कपडे के पोस्टर पर उभारी गई है, इस तरह कि सडक पर चलता हुआ आदमी एक क्षण के लिए खडा होकर देखने लगे। हीरो और हीरोइन के रूप मे अमिताभ और रेखा डास का पोज बनाकर अपनी-अपनी पिछाडी एक दूसरे से टकराने की मुद्रा अपनाये हुए हैं। कपडे का पोस्टर जजर हालत तक पहुँच गया है। हवा पास्टर को उडा ले जाना चाहती है। दीवार पर कीलो से जडे होने के कारण पोस्टर उड नही पा रहा। उडना चाहिए भी नहीं। अगर पोस्टर उड गया तो अमिताभ रेखा के साथ जनता का मनोरजन कैसे कर पायेंगे?

इससे भी ज्यादा चौंकाने की बात है बस अड्डे पर एक भी इक्के का न होना। जिस सवारी के लिए वर्षों से मन मे मोह बना हुआ है, वही आँखो के आगे से गायब है। इक्के की जगह ले ली है साइकिल-रिक्शा ने। नये पुराने सभी तरह के रिक्शा बस स्टैण्ड पर इधर उधर छितराय हुए हैं। रोहित को कई रिक्शे वालो ने चारों ओर से घेर लिया। सभी उम्र के रिक्शा चालक सामने हैं। पचास की उम्र पार कर गये मिया जी,भी, जिनकी कमर झुक-सी रही है, लेकिन पेट की खातिर रिक्शा खीचने को मजबूर है और चौदह साल का वह लडका भी, जिसकी मसें भी अभी पूरी तरह भीग नही पायी हैं। सबके गले से एक ही आवाज निकल रही है "कहाँ चलेंगे बाबू जी?"

रोहित ने जान छुडाने की गरज से कहा, "अभी तो हम मुह धोयेंगे, कुछ ठण्डा पियेंगे थोडा सुस्तायेंगे, फिर चलने की सोचेंगे। हमे बहुत समय लगेगा, दूसरी सवारी देखो तुम सब।"

सब रिक्शे वालो के मुह उतर गये। एक शहरी सवारी मिली थी, दस-पाँच ज्यादा पैसे मिल जाते, सो सवारी ने जाने से ही इकार कर दिया। रिक्शे वाले दूसरी सवारी पकडने के लिए इधर-उधर हो गय।

भरी दोपहर मे बस के सफर ने उकताहट भर दी। रास्ते मे जब भी सामने से आती बस या ट्रक धूल उडाती तो लाख मुह पर रूमाल रखो

दिमाग म धूल चढ ही जाती। अब मुह हाथ धोना जरूरी हो गया।

रोहित ने ठण्डा पेय बेचने वाली एक दूकान के सामने पडी बेंच पर अपना सामान रख दिया। हैण्ड पाइप से किसी तरह पानी निकालकर मुह धोया। कुछ ताजगी आई। प्यास से गला सूख रहा था, एक एक करके दो बोतल आरेंज गले के नीचे उतार लिया। अब आराम से चला जा सकता है।

एक जवान रिक्शे वाला रोहित की पूरी गतिविधि पर नजर रखे हुए था। रोहित को चलने के लिए तैयार देखकर पास आकर बोला, "चलें हजूर।"

रोहित ने ऊपर से नीचे तक रिक्शे वाले को देखा। उसके जिस्म पर सिर्फ तीन कपडे थे, मली फटी बनियायन, चारखाने वाला पुराना तहमद, और गले म लिपटा एक गन्दा सा कपडा जिससे वह बार बार अपना मुह पोछ लेता। चेहरे पर बेतरतीब बढी हुई दाढी, मगर दाढी की काट यह बताती थी कि वह मुसलमान है।

"छोटी बजरिया के पास, पुराना श्रीराम का मन्दिर है, वही चलना है क्या लोग।' रोहित ने पूछा।

'जो आपकी मर्जी हो सरकार, दे देना।"

'नहा भाई, पहले बता दो। हम बहसबाजी पसन्द नही करते।"

"दो रुपया दे देना।"

"डेढ होता है।"

'ठीक है, आप डेढ ही देना।" रिक्शा वाला भागकर अपना रिक्शा ले आया। जल्दी से अपने गले मे लिपटा कपडा निकालकर गद्दी पोछी, अटैची और बैग रिक्शे मे रखा, और रोहित को रिक्शे मे बैठने का इशारा किया।

रिक्शे वाले ने रिक्शे को सडक पर न ले जाकर गली मे मोड दिया। रोहित ने तुरन्त पूछा, "क्या बाजार से होकर नही चलोगे।"

"उधर भीड बहुत होती है कई बार रास्ता बन्द हो जाता है। नये-नये दुकानदार आ गये हैं। सडक तक सामान फला देते हैं, जरा सा रिक्शा उनके सामान से छू जाये तो डण्डा लेकर मारने दौडते हैं, इधर से जल्दी

ले चलेंगे।"

"श्रीराम मन्दिर मालूम भी है, कहीं इधर-उधर न भटका देना
रोहित ने कहा।

श्रीराम मन्दिर को कौन नहीं जानता हजूर। बहुत पुराना मन्
है। इस बस्ती के पुराने जमींदारों ने बनवाया था। हमारी यहीं की पैदाइ
है, हम यहां की एक एक इमारत को जानते हैं।" रिक्शे वाले ने बड़े प
से कहा।

रिक्शे वाला शेखूपुरा का ही रहने वाला है यह जानकर रोहित
खुशी भी हुई, थाड़ा आश्चय भी, "क्या शुरू से ही यही काम कर रहे हो

"नहीं हजूर, हम जुलाहे हैं। हमारे यहाँ कपड़ा बुना जाता था
हमारे बाप-दादा खट्टी पर काम करते थे, बड़ी-बड़ी चादरें बनाते थे, शेर
पुरा की चादरें दूर-दूर तक मशहूर थीं। अब यह सिन्धी पंजाबी शरणा
कस्बे में आ गये हैं। इन्होंने मिल के कपड़े का ढेर लगा दिया। हमा
काम बन्द हो गया। हाथ का बुना कपड़ा कोई नहीं लेता।"

"मियाँ पहले बस्ती में इक्के बहुत चलते थे, अब तो दिखाई नहीं
रहे। क्या इक्के चलने पर पाबन्दी लग गई।" रोहित बहुत देर से अप
इक्का सम्बन्धी जिज्ञासा को रोके हुए था। अब पूछ ही लिया।

"इक्का चलना बन्द नहीं हुआ है। अब भी चलते हैं, तादात ज्याद
नहीं है, दस पांच ही होंगे। पर्दे वाली औरतें पसन्द करती हैं इक्कों को
चारों तरफ चादर लपेट दी, अन्दर सवारी बन्द हो गई। स्टेशन से बस्त
तक भी इक्के चलते हैं। गांव की कच्ची सड़क पर भी यह चल लेते हैं
रिक्शा तो चल नहीं सकता।"

गली में इंटें जड़ी हुई हैं। जहाँ भी ईंट उखड़ जाती, वहीं गड्ढा ह
जाता। रिक्शे का पहिया ऊपर-नीचे होने लगता। ऐसे में बातों क
सिलसिला अपने आप ही टूट जाता।

थोड़ी थोड़ी दूर पर नाली भी आ जाती। यह भी एक मुसीबत है
अगर नाली ज़रा भी गहरी हुई तो रिक्शे से नीचे उतरना पड़ता तभ
रिक्शा नाली पार कर पाता।

रोहित ने देखा, गली के दोनों ओर बने मकान ज्यादातर कच्चे हैं।

कुछ पुरानी छोटी ककइया इंट के बने हैं, जिन्हे बारिश की तेज बौछार ने खोखला कर दिया है। मकान मे रहने वाला के लिए फिर भी यह बहुत बडी नियामत हैं। आखिर को सर छुपाने के लिए घर तो चाहिए ही।

रिक्शा अब एक ऐसी पुरानी इमारत के आगे से गुजर रहा था, जिसका बडा फाटक किसी छोटे मोटे किले के फाटक की तरह नोकीली कीलो से भरा हुआ था। हालाकि अब फाटक म एक ही पल्ला रह गया था। बाहर की दीवारें किसी तरह खडी हुई थी, लेकिन अन्दर की कई दिवालें मलवे के ढेर मे बदल गयीं।

"इस जगह का क्या कहते हैं ?' रोहित न पूछा।

"यह गढी रायसाहब मुख्तियारसिंह की है। रायसाहब तो बहुत पहले मर गये, दो लडके थे सो एक को साँप ने काट लिया, मर गया। दूसरा अमेरिका मे बस गया है। अब तो पोते हैं, सो खेती-बारी करके पट पाल रहे हैं।

रोहित की आँखा के आगे पिछली सारी स्मृतियाँ ताजी हो आयी। शकरलाल मामा के चुनाव प्रचार मे रायसाहब ने बहुत मदद की थी। दोनों एक दूसरे का बहुत सम्मान करते थे, हालाकि अपनी अपनी रईसी की अकड भी दिखाने से बाज़ नहीं आते। उस समय यहाँ कैसा मेला लगा रहता था, आज मरघट की तरह सुनसान है।

'यह जगह तो बिलकुल टूट फूट गइ है। इसमे रायसाहब के भतीजे रहते कसे हैं ?" रोहित ने पूछा।

"रह ही लेते हैं।" रिक्शे वाले ने जवाब दिया, "अन्दर जनानखाने की इमारत के दो कमरे साबुत हैं, उसी मे गुजर हो जाती है। असल म तो यह जगह अब तक कई बार बिक जाती, कोशिश भी बहुत की बेचने की, खरीददार भी मिल गये, लेकिन वह रायसाहब के छोटे लडके जो अमेरिका मे हैं उनके दस्तखत के बगर कैसे बिके। वही से बठे-बठे कानूनी नुक्त निकालते रहते है। जिला कचहरी मे नोटिस भेज दिया। अब कोई कसे खरीदे जायदाद।'

गली का मोड आ गया था। अब बजरिया वाली बडी सडक पर रिक्शा आ गया। सामने दो नये तिमजले मकान खडे है, देखते ही आदमी

की अक्ल चक्करा जाये।

"यह किसके मकान हैं। बडा पैसा लगाया है ?" रोहित ने आश्चर्य से कहा।

"यह बस्ती के नये रईसो के मकान हैं।" रिक्शे वाले ने हँसने की कोशिश की। "एक सिन्धी का मकान है, दूसरा पजाबी का। शरणार्थी बनकर बस्ती मे आये थे। अब इतना पैसा आ गया, दो चार को खरीद लें।"

सामने मन्दिर दिखाई दे रहा है। श्री राम मन्दिर, जिसकी भव्यता के डके दूर दूर तक बजते थे। लेकिन यह क्या, मन्दिर के सबसे बडे गुम्बद पर सोने का पानी चढी कलसी गायब है। कुएँ के पास वाली दीवार भी ढह गई है। मन्दिर की पुताई तो शायद पिछले बीस साल से नही हुई है। मन्दिर एकदम काला पड गया है।

रिक्शा मन्दिर के सामने जाकर रुक गया। मन्दिर का बडा दरवाजा बन्द है। पर उसके बन्द होने न होने से कोई अन्तर नही पडता। दरवाजा इतना जजर हो गया है और उसमे इतने सूराख हो गये हैं, इतनी दरारें पड गयी हैं कि बाहर से ही अगर कोई अन्दर का दृश्य देखना चाहे तो दूर से ही खडे खडे देख सकता है। दरवाजे मे लगी पीतल की कीलें गायब हैं। अब उनकी जगह टेढी मेढी कीलें ठोक दी गयी, जो देखने वाले को अपनी बदसूरती के कारण खटका सा देती हैं। चबूतरे पर एक चाट वाला बैठा अपने खाचे पर से मक्खी उडा रहा है। रोहित ने उसी से पूछा, "विजय कुमार से मिलना है, किधर से जायें।"

"पीछे से, मन्दिर मे पिछवाडे रहते हैं।" चाटवाले ने रास्ता दिखाया।

रोहित ने दो का नोट निकालकर रिक्शे वाले को दिया।

"मेरे पास अठन्नी नही है।" रिक्शेवाले ने कहा।

'कोई बात नही, दो रुपये रख लो।'

रिक्शेवाले ने एक बार गौर से रोहित को देखा, फिर खुश होकर बोला, "सलाम साहब। शाम को फिल्म देखने जाना हो, लेने आ जाऊँ हजूर।"

"नहीं भाई, हम यहाँ रिश्तेदारो से मिलने आये हैं, सिनेमा देखने नही।" रोहित ने एक हाथ म बैग और दूसरे हाथ मे अटैची उठाकर चलते हुए कहा।

मन्दिर के पीछे आकर रोहित आश्चय मे देखता रह गया। यह पिछवाडे की क्या दशा हो गई है, बडा दरवाजा एकदम गायब हो गया। सिफ चौखट रह गई !! नीचे एकदम सुनसान। क्या गाय भस सब बेच दी। नीचे आगन मे तो दुधारू जानवर बाँधे जाते थे। आगन के तीनो तरफ की कोठरियों मे जानवरो के लिए भूसा खल भरा रहता था। अब तो कोठरिया मे जग खाये ताले लटक रहे हैं।

पिछवाडे के सामने पडी खुली जगह मे कूडा करकट के साथ ही कच्ची पक्की इटा के ढेर लगे हैं। हा, मन्दिर की दीवार से मिला हुआ एक नया पाखाना जरूर बनवाया गया है। आगन म ना हैण्ड पम्प लगा हुआ है उसके नीचे कीचड इकट्ठी हो गयी है। एक बडा सा पत्थर जमा दिया गया है। इसी पर बतन रखकर पानी निकाला जाता होगा।

रोहित को जीने की सीढियो पर चढते हुए डर-सा लगने लगा। बीस साल पहल सीढियो पर जो ईंटें लगी थी वह उखड गयी। रोडे उभर आये और सीढियाँ ऊँची नीची हो गयी हैं। एक एक कदम सम्हालकर सीढिया चढनी पडी।

ऊपर पहुँचकर रोहित ने देखा, सामने का कमरा अपनी पुरानी हालत मे है। प्लस्तर उखड जाने से कुछ खस्ताहाल और हो गया। कमरे के दरवाजे बन्द हैं। कुण्डी चढी हुई है, इसका मतलब है कमरे म कोई नही है। फिर कहाँ हैं घर के सब लोग ।

दायी ओर जो दो कमरो के बीच बडा सा गलियारा है, उसमे टाट बिछाकर कई छोटे छोटे बच्चे सो रहे हैं, उन्ही के बीच एक आदमी की आकृति भी रोहित को दिखाई दी।

"विजय कुमार हैं क्या ?" रोहित ने जरा जोर की आवाज दी।

बच्चो के बीच मे लेटी हुई मानव आकृति हडबडाकर उठी।

ऐ यह क्या !! यह विजय है क्या ? आश्चय मे रोहित देखता रह गया। सर के बाल झड गये। मुह के दाँत गिर जाने से गाल पिचककर

अन्दर घुस गये। विजय सस्ते कपड़े का अण्डरवियर पहने हुए था। सारे शरीर की एक एक हड्डी गिनी जा सकती है। लगा जैसे कोई कोई अस्थिपिंजर उठकर खडा हो गया।

"अबे साले यह तेरा क्या हाल हो गया ?" रोहित जोरो से हँस पडा।

विजय के चेहरे पर कुछ गुस्सा, कुछ नफरत, और कुछ झेंप का मिला-जुला भाव उभर आया, "हमारी याद कैसे आ गई !!" विजय ने व्यंग से कहा।

उसने मिलने का कोई उत्साह नही दिखाया, आगे बढ़कर कमरे के दरवाजे की कुण्डी खोल दी। रोहित सामान लिये कमरे मे आ गया। कमरे के बीच में पडी चारपाई पर अटैची और बैग रखकर बोला, "हम तो तेरी बराबर याद आती रही, यह बात दूसरी है इधर आना नही हुआ। अब इधर आये तो देख ल, तुझसे मिले बगर वापस नही गये।"

"बडा अहसान किया, मान गये।' विजय के स्वर मे अभी भी व्यग कम नहीं हुआ था।

"मानेगा कसे नही, आखिर इतनी दूर चलकर आये हैं कोई मजाक नही है।" रोहित फिर हँसने लगा, ' और तू तो यार ऐसे कह रहा है जैसे तूने बहुत पत्र लिखे हमे।"

' लिखते कहाँ से, पता दिया था हमे अपना।" विजय ने पलटकर उत्तर दिया।

"अच्छा बाबा, तू जीता मैं हारा।' रोहित ने हाथ जोडकर कहा। "अब एक गिलास ठण्डा पानी पिलायेगा, या प्यासा ही मारेगा।"

बारह साल का एक कमजोर-सा लडका पास आकर खडा हो गया। विजय ने लडके से कहा, "जा बेटा, चाचा के लिए मदिर के कुएँ स ताजा पानी ले आ '

रोहित ने जूते उतारकर एक ओर रख दिये। पैण्ट और बुश्शर्ट भी उतार दी। बैग से पैजामा निकालकर पहन लिया और खाट पर आराम से बैठता हुआ बोला, "हाँ, अब बता, क्या-क्या शिकायत है तेरी।'

'हमारी काहे की शिकायत, हम तो गरीब आदमी हैं।" विजय ने

चोट करते हुए कहा।

"ले, तू भी खूब है। आजकल तो सबसे ज्यादा गरीबो को ही शिकायत है। मगर यार तू तो खानदानी रईस है, लम्बरदार ! तू साले अपने को गरीब कैसे कह रहा है।" रोहित ने हँसते हुए कहा।

"रईस तो हमारे बाप-दादा रहे हैं, उन्होने ही तो तबाह कर दिया। सब खा-उडा डाला, हमारे लिए कुछ छोडा ही नही। उन्होने ही तो हम गरीब बना दिया।" विजय के स्वर मे मायूसी झलक रही थी।

"क्यो, खेती तो ठीक चल रही है ?" रोहित ने पूछा।

"क्या ठीक चल रही है। दोनो टाइम पेट भी पूरा नही भरता। जमीदारी जब गई तब किसी ने ठीक से अपनी काश्त दिखाई ही नही। बहुत मुश्किल से कुछ बीघा जमीन मिली है। उसे बटाई पर दे देते हैं। बटाईदार जो फसल का हिस्सा दे देता है, उसे खा लेते हैं, बस। हमसे तो खेती हो नही सकती। खेत मे हल चल नही सकता, मजबूर है। हा, जितनी जमीन इस समय पास मे है, अगर इतनी ही और होती तो चैन से बैठकर खा सकते थे। आगे का मकान पचास रुपया पर किराये पर दे दिया है, पच्चीस रुपये पर नीचे की कोठरिया किराये पर दे दी, बस इतनी ही आमदनी है।"

वह तुमने जो मुनिस्पैल्टी मे नौकरी की थी, उसका क्या रहा।'

"वही तो गलती हो गई, एक साल नौकरी करने के बाद इस्तीफा दे दिया। असल म तो हमारा मन इस जगह शुरू से ही रहने को नही था। सो नौकरी छोड दी। चाहते थे किसी शहर मे बसे। अब क्या मालूम था यह हाल होगा, साली दूसरी कोई नौकरी मिलती नही।"

"कोई बिजनेस करते यहा तो डेरी फाम अच्छा चल सकता है।"

"वह भी करके देख लिया, पोल्ट्री फाम खोला था। उसमें ऐसा घाटा हुआ, कमर टूट गई, दूसरा कोई काम जमा नही। जी रहे हैं बस।'

छोटी बाल्टी म ताजा कुएँ का पानी खीचकर लडका ले आया था। पीतल के पुराने लोटे मे पानी भरकर पीने को दिया।

"गिलास ले आ अन्दर से, ऐसे कसे पियेंगे।' विजय ने लडके से कहा।

"रहने दो, मेरे पास गिलास है।" रोहित ने अपने बैग से प्लास्टिक का गिलास निकालकर लोटे से गिलास मे पानी डाला और एक सांस मे ही गिलास खाली कर दिया।

"अब खाना खाओगे या ।" विजय अपनी बात पूरी करने से झिझका।

"अरे यार अभी कहाँ से खाना, अभी तो चार ही बजे हैं।" रोहित ने लताड़ा, "एक कप चाय बनवाओ। शाम के टाइम तो चाय की लत पुरानी है।"

विजय का चेहरा उतर गया, "अच्छा अभी बनवाते हैं।" विजय ने उठकर कमरे के कोने वाली अलमारी के ताले को खोला, पैसे निकाले, और कमर के बाहर चला गया।

विजय फिर आकर रोहित के सामने खाट पर बैठ गया। इस बीच तीन साल से लेकर बारह साल तक के कई बच्चे कमरे मे आकर खाट के आसपास खड़े हो गये। किसी के शरीर पर एक भी साबुत कपड़ा नही था। पाँच छ वर्ष की दो लड़कियाँ भी थी, उनके फ्राक फटे हुए और बहुत गन्दे थे।

"यह बच्चे किसके हैं?" रोहित ने पूछा।

"मेरे ही हैं, और किसके हैं।' विजय ने खिसियाई हँसी हँसते हुए कहा।

"तेरे !" रोहित ने आश्चर्य से विजय की ओर देखते हुए पूछा, "कितने बच्चे हैं तेरे ?'

"सात।"

"सात !!" रोहित की आँखें आश्चर्य से फल गयी। लगा किसी ने आकाश से उठाकर धरती पर पटक दिया हो। "हमने तो सुना था शुरू मे तेरे बच्चे हुए ही नही, फिर यह सब क्या चक्कर है?'

विजय ने देखा बात बच्चो की है और बच्चे वहीं खड़े-खड़े चाव से अपनी ही बातें सुन रहे हैं। यह ठीक नही है, "चलो अन्दर जाकर खेलो।" विजय ने बच्चो को अन्दर भगाकर अपनी बात का सूत्र जोड़ते हुए कहा, "हाँ, शुरू मे तो कई साल हुए ही नहीं। यहाँ भी सबके ताने

सुनने पडते थे और ससुराल जाओ तो वहाँ सब पीछे पड जाते। गाँव का मामला। कई औरतें तो इतनी ढीठ थी, पूछो मत सीधे अण्डरवियर मे हाथ डालकर पूछती "क्, तुम्हारे कुछ है नहीं क्या ," विजय हँसने लगा। हँसते हँसते बोला, "अब हुए, तो होते ही चले गये।"

"अब बस भी करो महाराज।" रोहित ने हाथ जोडते हुए कहा, "उधर सरकार परिवार नियोजन का नारा लगा रही है, इधर तुम्हारे जमे महापुरुष धडाधड बच्चे पदा किये जा रहे है, धन्य हो। आपरेशन क्या नहीं करा लेते।"

"अब उसकी जरूरत नहीं है। हमने अपने पर कण्ट्रोल कर लिया है।' विजय ने विश्वास से कहा, "तीन साल से कहा हुआ है बच्चा। इसी से तो हम यहाँ सोते हैं, और बच्चों को लेकर वह उधर कोठरी मे सोती है। हमारे हाथ परो म चाहे कितना ही दद हो, इन बच्चो से हम हाथ पेर दबवा लेते हैं, पर उसका हाथ नहीं लगने दते। अगर एक बार वह घुटनो से ऊपर हाथ लगा दे, तो फिर हमसे नहीं रहा जाता।" विजय फिर इस तरह हँसने लगे, जसे उन्होंने अपने बचपन के दोस्त को कोई बहुत गहरी रहस्य की बात बता दी हो।

सामने से एक लडका गुजरा। उसके एक हाथ मे गिलास था, दूसरे हाथ मे चाय का चार आने वाला पैकेट और दो पुडियाँ थीं। हो सकता है उनम चीनी और नमकीन हो। तो क्या घर से दोनों टाइम चाय भी नहीं बनती है जो बाहर से दूध और चाय चीनी मँगानी पडी ! रोहित के चेहरे से हँसी गायब हो गई। सर झुक गया। ऐसी बुरी हालत मे परिवार जी रहा होगा, यह तो स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता। यह सब अधनगे तो पहले ही से थे, उसने आकर इन्हे पूरी तरह नगा कर दिया।

विजय उठकर अन्दर चला गया। चाय के लिए अब मना भी नहीं किया जा सकता। तीर हाथ से निकल चुका है। अब तो जो परेशानी उन्हें होनी है, वह होकर रहेगी।

दो टूटे कपो मे चाय लिये हुए विजय आ गया। उसके पीछे बडा लडका प्लेट म दालमोठ लिए हुए था। चाय के रंग को देखकर ही चायपीने से अरुचि हो गई। पर दिखाने के लिए थोडी-बहुत चाय तो पीनी ही होगी।

आखिर उसी के लिए तो चाय बनाने की परेशानी उठानी पडी।

"क्या नाम है तुम्हारा बेटे।" रोहित ने प्यार से लडके को अपने पास बुलाकर पूछा।

"अनिल।" लडके ने शरमाते हुए धीरे से कहा।

"किसी तरह आधे कप को गले के नीचे उतारकर रोहित उठकर खडा हो गया, "चलो, जरा घूम आयें।"

"हाँ, चलो, सब्जी भी लानी है।" विजय ने पैंण्ट-कमीज पहन ली। आखो पर चश्मा भी चढा लिया, "शाम को सडक पर चलने म थोडी दिक्कत होती है।" रोहित कुछ पूछे इससे पहले ही विजय ने बात साफ कर दी।

शाम का समय है। बगिया देखने की इच्छा स्वाभाविक है। विजय ने पहले टालना चाहा, लेकिन जब रोहित ने बगिया चलने के लिए दुबारा कहा तो विजय को साथ देना ही पडा।

बगिया के बडे दरवाजे के सामने रोहित और विजय खडे हैं। रोहित को एक बार फिर झटका लगा। बडे दरवाजे के दोनो पल्ले गायब थे। आदमी को जाने से कोई नही राक सकता, लेकिन जानवरो को रोकने क लिए दरवाजे के बीच मे एक पुरानी टूटी टीन फँसा दी गई। विजय ने टीन को धीरे से हटाकर रोहित को आने का इशारा किया।

सीढियाँ चढकर रोहित बगिया मे आ गया। वह आश्चय से चारों ओर देख रहा था। क्या यह वही बगिया है जिसमे वह बीस साल पहले आया करता था। हाँ वही बगिया है, क्योकि पहचान के लिए अब भी बगिया के बीच म वह चारो पत्थर की बेंचो के अवशेष बाकी हैं, जिन पर बैठकर शकरलाल हुक्का गुडगुडाते हुए अपना दरबार लगाया करत थ। बेंचो के बीच की जमीन पर चौपड बिछी हुई थी। चौपड के खानो क लाल, पीले, हरे रग उड गये, लेकिन लकीरो के उभार अब भी कायम हैं। रोहित को लगा जैसे उसके कानो मे चौपड के पाँसे फेंकने की आवाज

गूंज उठी हो।

"क्या सोच रहे हो। बाजार नहीं चलना है।' विजय ने कहा।

"चलते हैं यार," रोहित ने कहा, 'पुरानी जगह आये हैं, एक मिनट देख ता लेने दो। क्या हाल हो गया बगिया का। इसे कोई ठीक नही कराता।"

"कौन ठीक कराये।" विजय ने कहा, "हम तो दूर से ही हाथ जोडते हैं। मन्दिर की सवा करो ऊपर से गालियां भी खाओ। मारपीट हो जाये सो अलग। हमने तो हाथ खीच लिया। स्वरूपनारायण के लडके बलराम और बालकिशन ने मन्दिर पर कब्जा कर रक्खा है। वही मन्दिर के नाम पर चन्दा वसूलते हैं, वही सारा इन्तजाम करते है। इन्तजाम तो तुम देख ही रहे हो।"

ठीक कह रहा है विजय। मन्दिर के नाम पर पैसा बटोरा जा सकता है, लेकिन खच कुछ नही किया जा सकता। बगिया मे चारो ओर धरती बजर पडी हुई थी। फूल पत्ती के नाम पर एक पौधा तक नजर नही आ रहा था। बस कुएँ के पास लम्बा पीपल का पेड खूब बडा हो गया। हरे हरे पत्ते छाह किए हुए थे। पेड पर हनुमान के वशज बहुत बडी सख्या मे बैठे खौखिया रहे थे।

कुएँ के पास शकरलाल का बनवाया कमरा अब भी खडा था। कमरे के आगे दालान म खाट पर एक स्त्री घूघट काढे, दो छोटे बच्चो को लिए बैठी थी।

"यह लोग कौन हैं?" रोहित ने पूछा।

"किरायेदार हैं। मुनिस्पैल्टी के चौकीदार ने किराये पर कमरा ले लिया है। गुजर कर रहे हैं। कोई अच्छी जगह मिली तो चले जायेंगे। इस टटे फूटे कमरे म कौन रह सकता है। न जाने छत कब गिर पडे। साप बिच्छू का डर सो अलग।'

वाकई समय तेजी से बदला है। व्याख्या करने से क्या लाभ। बिखरे सूत्र पकडना आसान नही। रोहित ने दखा, दालान के ऊपर बडे-बडे अग्रेजी अक्षरो मे सीमेंट से लिखा शकरलाल का नाम भी ठीक से पढा नही जा रहा था। पहला अक्षर एस ता बिलकुल ही गायब हो

गया।

बगिया म अब और नही खडा हुआ जा सकता। विजय तो पहले ही बगिया से निकलकर गली म खडा हो गया। मन मारकर रोहित का भी बगिया के बाहर आ जाना पडा।

बाजार मे चहल-पहल बहुत कम हो गई थी। अभी साढे छ का समय भी नही हुआ था लेकिन आधे से भी ज्यादा बाजार बन्द हो चुका था। सिर्फ हलवाई, पनवाडी, और लेमन-सोडा की दुकानें खुली हुई थीं। रोहित की नजर चौराहे की एक दुकान पर गई। इसे छोटी-मोटी बकरी की दुकान कहा जा सकता है। कई तरह के बिस्कुट, लैमनचूस और नमकीन दाल सेव के पैकेट रक्खे हुए थे। रोहित ने दुकान पर जाकर बिस्कुटो के भाव पूछने शुरू किये तो विजय ने मना करते हुए कहा, "बिस्कुट लेकर क्या करोग।'

"अबे, तेरे लिए नही बच्चो के लिए ले रहे हैं। हम तो बच्चो के लिए कुछ ला ही नही पाये। हमे तो पता ही नही था तेरे बच्चे हैं कितने बडे।' राहित ने एक-एक किलो नमकीन और मीठे बिस्कुटो का आडर दिया, पाव पाव भर लैमनचूस और टाफियाँ भी देने को कहा।

दूकानदार घबरा-सा गया। शायद इतना बडा आडर दुकान म पहले कभी नहीं आया था। तौलने मे बार-बार गडबडी हो जाती। रोहित को हँसी आ गई।

बिस्कुटो के पैकेट लेने के बाद राहित ने बाजार मे एक चक्कर लगाने की इच्छा जाहिर की 'याद नही, इसी बाजार मे इक्के पर बैठकर मैंने-तुमने चुनाव प्रचार मे हिस्सा लिया था। वह भी यार अच्छा तमाशा रहा। खूब चोटें लडी थीं।' रोहित हँसने लगा।

विजय ने कुछ नही कहा, सिर्फ एक हल्की सी खिसियाई हँसी उसके चेहरे पर उभर आई। अनमने मन से वह रोहित के साथ बाजार मे घूमने लगा।

चार छ दुकानो के बाद ही एक बडी बिल्डिंग आ गई। इमारत के नीचे छ दुकानें ऊपर रहने को मकान, दुकानो के बीच म बडा-सा भव्य दरवाजा, और दरवाजे के ऊपर दस हाथ लम्बा बोर्ड लगा हुआ है—

'मोक्ष आश्रम'।

"यह यहा मोक्ष दिलाने का धन्धा कौन कर रहा है ?" रोहित ने पूछा।

वही नमिषारण के महात्मा जी हैं, । एक हजार आश्रम खोलने का बाडा उठाया है, सो एक यहा भी खोल दिया। साल म दो चक्कर लगाते हैं यहाँ के, यज्ञ करते हैं और हजारो रुपया बटोर ले जाते हैं।"

'कमाल है, वह आदमी अभी जिन्दा है !" रोहित ने आश्चय मे मुह पर उँगली रख ली, "मान गये यार, गेरुए रग म कपडे रग लेने से आदमी की उमर ही नहीं, बन्द जाती, तिकडमे भी बढ जाती है। एक आश्रम तो सम्हाला जाता नही, एक हजार खोलेंगे। हर साल कोई-न-कोई शिष्य हजारो का गबन करके भाग जाता है। दसियो मुकदमे चल रहे है, मगर नये आश्रम खोलने से बाज नही आते।"

"नये आश्रम न खोलें तो जनता को चतिया कैसे बनायें। नया आश्रम खुलता है तो पैसा भी आता है, और पूजा भी होती है।" विजय ने समझाने की कोशिश की।

सडक के बायी तरफ थोडा अन्दर हटकर जामा मस्जिद दिखाई दे रही थी। रोहित यहा भी ठिठककर खडा हो गया, "यह क्या नई बनाई गई है।'

"नहा भाई, ऊपर से सगमरमर जड दिया गया है। फश भी सगमरमर का हो गया है। पीछे अरबी का स्कूल भी खुल गया है।'

"यह भी खूब है।" रोहित ने परेशानी से कहा, "मुझे याद आ रहा है, जब चुनाव प्रचार करत हुए यहा इक्का रुकता था तो यह बडी पुरानी मस्जिद लगती थी। अब ता एकदम नई हो गई है।"

"नई क्यो न होगी। अरब कन्ट्रीज का सपोट है। यहाँ के हजारा मुसलमान साऊदी अरब में जमे हुए हैं, खूब पैसा भेजते है। मस्जिद के लिए तो वसे भी मदद आती है।"

अचानक ही रोहित का रिक्शे वाले की याद आ गई। [illegible] जुलाहा अब रिक्शा चला रहा है। उसके लिए साऊदी अरब म भाई

जगह नहीं है, न ही वह एक पैसे की मदद पाने का अधिकारी है, क्योंकि वह जुलाहा है, नीचे के तबके का आदमी। उसके खानदान म तो बस कभी भूल भटके कोई कबीर भले ही पदा हो जायें, पैसे वाला बड़ा आदमी पैदा नहीं हो सकता। इसका ठेका तो ऊँची जात वाले पठान, सयद, लोदी आदि ने ले रक्खा है। यही बडे लोग अरब कन्ट्रीज से ताल्लुक रख सकते हैं।

खूब जोरो से अजान की आवाज आने लगी थी। जामा मस्जिद की मीनार पर लाउडस्पीकर के भोपू चढा दिये गये थे। अजान की आवाज अब न सुनने का बहाना कोई नहीं कर सकता। आधुनिक विज्ञान की प्रगति म सभी धर्मों को लाभ पाने का पूरा-पूरा हक है।

"अब लौट चलें, आगे कहाँ जाना है।" विजय ने ऊबकर कहा।

"बाजार मे आये हैं तो पूरा चक्कर लगा लें, कौन रोज रोज आते हैं।" रोहित की बात काटना आसान नहीं। पूरे बीस साल बाद शेखूपुरा आया है। उसे पूरा बाजार घुमाना होगा।

कुछ और आगे बढने पर एक नया तमाशा देखने को मिला। सड़क के आमने सामने दो मकानो पर दो बोर्ड लटक रहे थे। एक पर लिखा था भगवान रजनीश आश्रम, दूसरे पर लिखा था 'महेश योगी परमार्थ केन्द्र'। रोहित खुलकर हँसा, "वाह बहुत खूब। यह अमेरिका के चेले अच्छा एक दूसरे के सामने मोर्चा जमाये हुए हैं। यार विजय, यह शेखूपुरा तो 'होलीसिटी' बन गया है। बीस साल म बडी तरक्की की है इसन।' फिर जैसे कुछ याद आने पर रोहित बोला, "सुनो, जब यहाँ इतने साधू-सत जमा हो गये है, तब फिर गुरुद्वारा और आय समाज भी होना चाहिए।"

"हाँ, वह भी हैं।" विजय ने उत्साह से कहा, "बस स्टैण्ड से थोडा आगे गुरुद्वारा कायम हो गया है। खूब जमीन घेरी है। पाँच सौ आदमी एक साथ बैठकर गुरु का प्रसाद खा सकते हैं, हालांकि कस्बे म सिर्फ उन्नीस सिख परिवार रहते हैं। इनम मे भी पाँच घरो के आदमी तो हमेशा कस्बे के बाहर ही घूमते रहते हैं। पर इससे क्या, जगह घरनी थी सो घेर ली। हाँ, आय समाज की बुरी हालत है। बगिया के पीछे

एक खपरैला मे आय समाज मन्दिर है। सारे सप्ताह तो ताला लटकता रहता है, इतवार को चार छ जन इक्ट्ठा होकर हवन कर लेते हैं। चन्दे के नाम पर एक फूटी कौडी नही आती।"

"तब फिर वह सब महामूख हैं।' रोहिन न हिदायत दते हुए कहा, "कल तुम मुझे मिलाओ उन सबसे, मैं उन्हे सही रास्ता बताता हूँ। अरे, दिल्ली जाये और वहाँ से ट्रेनिंग लें, कसे स्वामी दयानन्द के नाम पर व्यापार जमाया जाता है। आये दिन अखबारो म छपता रहता है, डी० ए० वी० ट्रस्ट के पदाधिकारियो ने अमुक जगह कैसा कसा गुल खिलाया, अमुक जगह इतने की हेरा फेरी पकडी गई। मगर मजाल है चेहरे पर शिकन आ जाय। कोट-पण्ट डाटे, मोटरो पर चढे, स्वामी दयानन्द सरस्वती के यह नये चेले-चपाटे शान से घूमते रहते है। दिल्ली मे कई आय समाज मन्दिर ऐसे भी हैं जो अपनी शान शौकत मे किसी थ्री स्टार होटल से कम नजर नही आते। दिल्ली के पजाबी आय समाजियो ने दयानन्द को ऐसा सीधा किया है कि दुबारा भारत मे पैदा होने की हिम्मत नही कर सकते। सारी पुरानी डी० ए० वी० सस्थाओ को पब्लिक स्कूलो मे बदल दिया। दोनो हाथो से रुपया बटोर रहे है। है कोई माई का लाल जो ज़रा बोल के दखे, गुण्डो से पिटवायेंगे।"

विजय खामोशी से रोहित के गुरु ज्ञान को ग्रहण करता रहा।

"और यार वह हम जब मामा जी के चुनाव प्रचार मे आये थे तो यहा इसी बाजार मे सोशलिस्ट पार्टी का कार्यालय भी था, और कम्युनिस्ट पार्टी का भी बोड दिखाई देता था। अब तो कुछ नजर ही नही आता।"

"वह सब भाग गय। अब तो कस्बे म सिफ दो राजनीतिक पार्टियो के कार्यालय हैं, एक काग्रेस का जो देश पर राज करती है, दूसरा जनसघ का। राजनीति पर तो अब यहा बात भी नही कर सकते। ज़रा-सी देर मे तू-तू, मैं मैं हो जाती है, फिर सर फट जाते हैं। दूसरी पार्टी के कायकर्त्ताओ को तो पुलिस एक मिनट मे थाने मे बन्द कर देती है। जनसघ वाले जरूर काग्रेस से मोर्चा लेते है, पैसे का जोर है इनके पास। फिर सारे हिन्दू दुकानदार इस पार्टी के मेम्बर हैं, एक आवाज पर मारा बाजार बन्द हो जाता है। हडताल मे जिला कलेक्टर भी बहुत घबराता है, सो इनका

भी दबदबा है। वैसे, खाँड के मजूरों के खिलाफ यह दोनों भी एक हो जाते हैं। सारी राजनीतिक लड़ाई भाई चारे में बदल जाती है।"

"यह खाँड के मजूरों का क्या किस्सा है, जरा बताओ भाई।" रोहित ने उत्साह से पूछा।

'कोई नई बात थोड़ी ही है। अखबारों में पढ़ा ही होगा।' विजय ने टालने की गरज से कहा, "यहाँ और कोई बड़ा उद्योग धंधा तो है नहीं, बस गोंड़ के प्रेशर जगह-जगह पैसे वालों ने लगा लिये हैं। इस इलाके में गन्ना अच्छा होता है, सो सीजन पर देसी खाँड़ में खूब रकम पीट ली जाती है। एक-एक प्रेशर पर दजनों मजूर काम करते हैं। उन्हीं में जब-तब झगड़ा फसाद होता रहता है। काम तो मालिक जमकर लेते हैं पर मजूरी देते वक्त जान निकलती है। जरा-सी राय तक तो वान को नहीं दे सकते। इन सबकी यूनियन बनाने बाहर से पाँच छः नौजवान आ गए थे कस्बे में। नारेबाजी शुरू हो गई। चौथे दिन दो हड़ताली मजदूरों के गले रेतकर सड़क के किनारे डाल दिये गए, और मडर के केस में उन्हीं बाहर से आये नौजवानों को थाने में बन्द करा दिया गया, जो खँडसारी मजूर यूनियन बनाने चले थे। एक लाइन से सबके हाथ कस्बे के कांग्रेसी और जनसंघी भाइयों ने बाहर से आये नौजवानों के खिलाफ गवाही दी। बेचारे खँडसारी यूप मजूरों के खिलाफ एक हो गये। आज तक वे चारों जेल में पड़े सड़ रहे हैं। हाईकोर्ट में अपील जरूर की है, देखो वहाँ भी न्याय मिलता है या नहीं।'

"जै हो वामपंथ की।" रोहित ने हाथ उठाकर कहा, "ठीक कहते हैं राजधानी दिल्ली में बैठे हमारे समाजवादी और कम्युनिस्ट भाई। अब इस देश को किसी क्रान्ति की कोई आवश्यकता नहीं है। हो गई क्रान्ति आ गया समाजवाद। अरे, जिस देश में गंगा महान में मार मार घुस जाते हो वहाँ क्रान्ति की जरूरत ही क्या है।'

विजय ने रोहित की बाँह पकड़कर खींचते हुए कहा, "गोंधी ठाट पर चला, ज्यादा लेक्चरबाजी न झाड़ो। भाषण है [illegible] बस मा[illegible] सिर, उससे पेट नहीं भरा। अब वह बसत नहीं [illegible] ले[illegible] लेगी। यहाँ हर दूसरा-तीसरा [illegible] अपना [illegible] निकलता है। अब दिन तो गाली [illegible]

हैं सो अलग।"

राहित की बोलती एकदम बन्द हो गई। ठीक कह रहा है विजय। वह तो घूमने फिरने आया है, कोई क्रान्ति करने तो आया नहीं है। क्रान्ति करने जब निकलेगा तब सर पर कफन बँधा होगा। इस समय तो सर बिलकुल नगा है। नगे सर को बचाने के लिए जबान को मुह के अन्दर रखना होगा।

बच्चो ने ढेर सारी टाफी, लमनचूस, बिस्कुट देखे तो खुशी से चहकने लगे। एक-एक लेमनचूस की गोली मुह मे जाते ही उनके बदन मे उछाल आ गया। कूद कूदकर लेमनचूस की गोली का मजा लेने लगे।

रोहित ने बहुत कहा, खाना सादा बनवाओ, बस रोटी दाल। पेट खराब होने की भी दुहाई दी, मगर विजय नही माना। परांवठा, दो तरह की सब्जी, रायता, पापड, चटनी, थाली मे सभी प्रकार के व्यजन थे। शायद इतना सब कुछ उसी के लिए बनवाया गया, बच्चो को तो वही सूखी रोटी मिलेगी। मुह मे रखा गया हर कौर गले में जाते ही अटक जाता था। मगर कुछ तो खाना ही होगा, न खाने पर भी तो विजय को दुख होगा।

इतनी देर बाद रोहित ने विजय की पत्नी को देखा। अब तक अन्दर की कोठरी मे घुसी रही थी, अब खाने के बारे मे पूछने के लिए बाहर आयीं। रोहित ने देखा, शरीर बहुत भारी हो गया था, विशेष रूप से ऊपर का हिस्सा। जैसे किसी बीमारी से फूल गया हो, दो कदम चलते हुए हाँफती, "लाला जी खाना और लायें।" किसी तरह इतना ही वह पायी।

"नही, बहुत खाया।' रोहित ने हाथ हिलाकर मना किया।

कमरे के आगे सोने के लिए खाटें बिछा दी गयी थीं। रोहित ने अपनी अटैची से दरी चादर निकालकर बिस्तर बिछा लिया। विजय को इस मामले मे परेशान नही होना पड़ा। विजय की अपनी खाट पर न साबुत दरी थी, न चादर। तकिये के नाम पर कपडे म लिपटा गूदड था। मेहमान

के लिए बिस्तर कहाँ से आता।

खाना खाने के बाद सिगरेट पीने की आदत है। रोहित ने जेब से सिगरेट का पैकेट निकालकर एक सिगरेट सुलगाई।

"एक सिगरेट मुझे भी देना।" विजय ने कहा।

"अरे तुम सिगरेट पीते हो, लो लो " रोहित अपनी ना जानकारी पर झेंप सा गया, "मैंने सोचा शायद बीमारी के कारण छोड दी हो।"

'कोई आदत नही है मेरी, कभी-कवार पी लेता हूँ।" विजय ने सिगरेट सुलगाते हुए कहा।

' यह भाभी को क्या हो गया है, कुछ तबीयत खराब है क्या ? शरीर बडा बडौल हो गया है।" रोहित ने पूछा।

"कुछ नही यार, बीमारी-सीमारी कुछ नही, यह सब काहिली का नतीजा है। हर समय लेटी रहती है। रत्ती-भर काम करना नही चाहती। पडे पडे खाना चाहती है। असल मे शादी के मामले मे हमे बहुत धोखा हो गया।' विजय के स्वर म चिडचिडाहट उभर आई थी।

"कैसा धोखा ?"

"तुम्हें पता ही है, हमे टी० बी० हो गई थी। चाचा जी के पास उठते बैठते थे, सो उनसे यह छूत की बीमारी लग गई। इस चक्कर म शादी वखत से नही हुई। रिश्ते तो कई आ रहे थे, पर ससुर डाक्टर ने मना कर दिया। जब ठीक हुए तो हमारी माँ ने जल्दी जल्दी सडीला के पास एक गाँव मे शादी तय कर दी। शादी भी इसकी छोटी बहन से तय हुई थी, उन्होंने धोखे से इसे ब्याह दिया। अब क्या कहें किसी काम की नही निकली। बच्चो को बखत से खाना भी नही दे सकती। बच्चों की आदत बिगड गई है। अब जब भी खाने को बैठते हैं पेट भरकर नही खा पाते। हमने तो इसे बहुत मारा-पीटा, मगर साली ठीक ही नही होती।"

रोहित अपनी जगह जड-सा हो गया। औरत को कसे पीटा जाता है यह वह समझ नहीं सकता। इस तरह के सस्कार ही नही हैं। जी म आया कह दे, तुम्हारे बाप दादा ने किसानो को पीटा, अब तुम किसान की बेटी को पीट रहे हो। आखिर हो तो जमीदार खानदान के।

"हमे तो बीमारी ने मार डाला। डाक्टर कहता है आराम करो।

आराम करें, तो पेट कहाँ से भरें। हर तीसरे चौथे दिन साइक्लि पर गाँव जाना पडता है। बस लौटते ही तबीयत खराब हो जाती है। खेत देखने न जायें, तो पूरा नाज न मिले। हर तरफ जान आफत मे है। हमारे बच्चो से तो यह खेती बारी होगी नही। सो हमने सोच लिया है, अच्छा पैसा मिला तो खेत बेच देंगे।"

'ऐसा न करना महाराज, आफत मे फँस जाओगे।' रोहित ने समझाया, "खेत हैं तो घर मे अनाज तो आता है। खेत बेच दोगे तो खाओगे क्या। बच्चो की पढाई लिखाई, सब इसी खेती पर ही तो निभर करती है।"

"हमारी राय मे तो ज्यादा पढाई लिखाई बेकार है। डिग्री लेकर कौन सा किला खडा हो जायेगा। हम तो दसवें बाद अपने लडको को काई हाथ का काम सिखायेंगे। अब बाजार मे देखो न, आदमी सूई-डोरा ले के बठता है, और पैण्ट कमीज की सिलाई लेता है पच्चीस रुपये।"

रोहित विजय की आर देखता रह गया। जमीदारो की तीसरी पीढी म ही 'दर्जी' के काम को श्रेष्ठ बताया जाने लगा। जिन लोगो ने हाथ से तिनका नही तोडा, उन्ही के वश मे लडक दर्जी का काम करेंगे। वैसे दखा जाये तो यह ठीक भी है। आज तो पैसा आना चाहिए, काम चाहे कोई सा हो। आखिर दिल्ली मे भी तो बडे बडे साइनबोर्ड लटक रहे हैं, सेठी टेलस, बेदी टेलस, मलहोत्रा टेलस, वे सब तो ठाठ से जी रहे हैं फिर शेखूपुरा मे ही शरम कैसी। दिल्ली मे टेलस, यहाँ दर्जी। शब्दो के हेर फेर को नही दखना चाहिए। जियो बाबू विजय कुमार लम्बरदार, खूब जियो, खुश रहो। भविष्य को अच्छा रगडा दने जा रहे हो। रोहित का मन हुआ कि खुलकर हँसे। मगर नही ऐसी गलती रोहित नहीं करेगा। विजय के तुनुक मिजाज को जानता है, जरा सी बात से बिगडकर जो अपनी औरत का डण्डा से पीट सकता है, वह घर आये हुए भाई का सामान भी उठाकर फेंक सकता है रोहित ऐसा कुछ नहीं कहेगा जिससे विजय का भेजा एकदम गरम हो जाये। जरा-जरा सी बात मे भेजा गम हाने से ही तो आज विजय यह दिन देख रहा है।

"तुम कोई साइड बिजनेस क्यो नही कर लेत, मेरा मतलब है छाटा-मोटा काम जिससे कुछ सहारा हो जाये।" रोहित न फिर समझाना चाहा।

"क्या काम करें, समझ मे नही आता। इस-उसके कहे म आकर जिस काम मे हाथ डाला उसी म घाटा खाया। बाजार मे एक एक दुकान की पगडी पचास पचास हजार हो गई है, दुकान किराये की ले नही सकते। घर बैठे कोई काम होता नही। होम्योपैथी मे थोडी बहुत पढाई की थी सोचा होम्योपैथी की दुकान खोल लें, सो उसमे भी ससुर सरकार ने टाँग अडा दी। अब बगैर पूरा कोर्स किये, डिग्री लिये, कोई प्रैक्टिस नही कर सकता। सारा रोना तो हमारे पुरखो का है। तुम्ह तो पता है, आधा शेखूपुरा हमारे बाबाओ ने खरीद लिया था, मगर कब्जा किसी जमीन पर नही किया। जो भी आया मुँह जबानी अपनी जमीन बेचकर और पैसा लेकर चला गया। लिखा पढ़ी कुछ नही, कब्जा उसी का बना रहा। अगर कब्जा ले लिया होता तो हमारे पास भी जमीन जायदाद की कमी न होती। हमारे बच्चे भूखो न मरते।" विजय की आवाज भर्रा गई थी। रात का अँधेरा छाया हुआ था दूर रखी लालटेन इतनी रोशनी नहीं फेंक रही थी कि विजय की आँखो मे भर आये पानी को साफ देखा जा सके।

रोहित को चिढ सी होने लगी। एक तरफ बच्चो की उगलियो में सूई डोरा पकडाने की योजना, दूसरी तरफ सौ साल पहले पुरखो के काम म दोष निकालना। कभी अपने बारे मे भी सोचा है कि हमने क्या किया? अभी भी पुश्तैनी जायदाद भोगने की तमन्ना बाकी है। मगर यह सब कहने से दुख दूर नहीं हो जायेगा, उल्टे और बढ जायेगा, इसीलिए बात का रुख दूसरी ओर मोडते हुए कहा, "वह हरनारायण का भी तो एक लडका है। वह क्या कर रहा है।"

"उसे नहर विभाग में नौकरी मिल गई है। अपनी माँ के साथ सरकारी क्वाटर मे रहने चला गया। यहाँ अपने हिस्से का मकान किराये पर उठा दिया है। खेती बटाई पर पहले से ही है।'

"समय भी कितनी तेजी से बीतता है। देखते ही देखते बीस साल बीत गये। एक पूरी पीढी आँखो के आगे से हट गई। हम भी तो चालीस से ऊपर हो गये हैं।" रोहित हँसा, 'शेखूपुरा भी कितना बदल गया है। बस स्टैण्ड पर भीड देखकर तो मैं चक्करा गया। काफी तरक्की हो गई है।"

"हाँ जो बाहर से शेखूपुरा मे आकर बस गये हैं उन्होंने भी तरक्की

की। जो शेखूपुरा के पुराने रहने वाले बाहर चले गये, उन्होंने भी तरक्की की। बस जो मेरे जसे यहाँ के थे और यही रह गये, वही डूब गये।" विजय ने लम्बी साँस लेकर कहा।

सुबह रोहित की आँख जरा देर से खुली। सूरज ऊपर तक चढ आया था। रोहित ने चाय के झझट को दूर करने की गरज मे कहा, "सुनो विजय, चाय वाय का चक्कर छोडो, खाना तुम्हारे यहाँ जल्दी बनता ही है, बस खाना ही खायेंगे।"

"चाय तो बन भी गई है। अनिल दूध लेने गया है। अभी आया जाता है।" विजय ने रोहित की बात काट दी।

अनिल पीतल के गिलास म दूध ले आया था। थोडी देर मे अन्दर से एक टूटी केतली मे चाय आ गई। एक प्लेट मे बिस्कुट रक्खे हुए थे। विजय ने केतली से चाय प्यालो मे डालनी शुरू की, लेकिन यह क्या, चाय का दूध तो फट गया। विजय का चेहरा एकदम उतर गया।

"कोई बात नही, चाय की इच्छा भी नही है। बिस्कुट खाते हैं।" रोहित ने बिस्कुट कुतरते हुए कहा।

विजय ने केतली उठाकर अनिल को देते हुए कहा, "लो तुम सब इसे पी लो।"

अनिल और पास खडे उसके दो भाइयो का चेहरा खुशी से दमकने लगा। चाय पीने को मिलेगी, इससे उनमे नया उत्साह भर गया था। वह केतली लेकर अन्दर चले गये।

' यहाँ ताजा दूध नही मिलता है।" रोहित ने पूछा।

"ताजा दूध तो सब शहर का चला जाता है। हलवाइयो की दुकान पर ही दूध मिलता है। न जाने साले क्या मिला देते हैं, एक मिनट के लिए भी नही टिकता है।" विजय ने लाचारी जाहिर की।

"चलो, मन्दिर देख आयें।" रोहित ने कहा, "जब यहाँ तक आये हैं तो भगवान को भी प्रणाम करना चाहिए।'

"तुम अनिल के साथ हो आओ। मैं तो मंदिर में जाता नहीं हूँ। बेकार में झगड़ा खड़ा करने से क्या फायदा।" विजय ने मन्दिर में जाने से इनकार कर दिया।

"मंदिर में आजकल पुजारी कौन है ?"

"पुजारी कोई नहीं है। पुजारी रखने के दिन बीत गये। एक बूढ़ा ब्राह्मण पड़ा रहता है, वही मंदिर में सुबह शाम आरती उतार देता है। इधर उधर से दो-चार रोटी खाने को मिल ही जाती है। कभी कोई मन्दिर में चढ़ावा चढ़ा जाता है। किसी के यहां श्राद्ध होता है तो कपड़ा लत्ता मिल जाता है। इसी तरह दिन कट रहे हैं। घर वालों से पटी नहीं, सो यहाँ आ पड़ा।

"सरकार कुछ रुपया तो देती है मंदिर को।" रोहित ने पूछा।

"रुपया सालाना बँधा हुआ है, अगर थोड़ा जोर लगाया जाये तो बढ़ भी सकता है, पर करे कौन। बड़े भइया तो फ्रांस में जाकर बैठ गये। हम कुछ बोलें, तो बलराम के आग लग जाती है। मार पीट पर उतर आते हैं, सो हमने भी हाथ खींच लिया। ले जायें मंदिर को, छाती पर रख लें। मन्दिर के ऊपर-नीचे की कोठरियाँ भी किराये पर उठा दी हैं। उनका भी पैसा हजम कर जाते हैं। अब क्या-क्या कहूं।" विजय बात को खतम करने के लिए अन्दर की तरफ चला गया।

मंदिर के आँगन में पहुँचते ही सारी पिछली यादें ताजा हो गयीं। कभी इस आँगन में तरह-तरह के जश्न मनाये जाते थे। नगाड़े कूटे जाते थे, आज चारों तरफ अजब-सी मनहूस शान्ति विराज रही है। यहाँ भी कुएँ के पास लगा पीपल बहुत बड़ा हो गया। पीपल की जड़ों ने कुएँ के पास वाली दीवार को ढा दिया। हनुमान मंदिर की भी एक ओर की दीवार धँस रही थी। आँगन का फर्श उखड़ चुका था। नंगे पैर चलना कठिन है। पैरों में कंकड़ चुभते हैं।

सामने बरामदा पार करके बड़ा हॉल आ जाता है। कभी इस हाल में

सीतापुर और खैराबाद की मशहूर तवायफें अपने हुनर का कमाल दिखाती थीं। अब तो हाल का भी फर्श उखड गया है। आदमी सीधी तरह बैठ भी नही सकता। चारो ओर अँधेरा-सा है। वर्षो हो गये पुताई हुए। सीलन और जगली कबूतरो की बीट की बदबू से दिमाग भिन्नाने लगा। रोहित ने जेब से रूमाल निकालकर नाक पर रख लिया।

"कौन है।" बायी ओर के बरामदे मे अँधेरा छाया हुआ है। इसी बरामदे म खटिया पर एक मानव शरीर पडा हुआ था। आवाज सुनकर किसी तरह उठा और लाठी टकता बाहर आ गया।

'हमारे चाचा जी हैं, मदिर देखने आये है।" अनिल ने कहा।

'अच्छा, अच्छा।" पुजारी जी लाठी टेकते हुए आगे बढे और सामने के तीनो कक्षो पर पडे लाल पर्दे एक ओर हटा दिये। भगवान के तीन रूप एकदम प्रगट हो गये। सामने राम और सीता, बायी ओर राधा और कृष्ण और दायी ओर शिव और पार्वती।

रोहित के दोनो हाथ एक-दूसरे से जुड गये। यह सस्कारगत ईश्वर के प्रति श्रद्धा थी, जो कही भी मूर्ति देखकर प्रगट हो जाती। किन्तु रोहित का, न तो सर झुका, और न ही नेत्र मुदे। वह एकटक राम और सीता की मूर्ति की ओर देख रहा था। क्या दरिद्रता का प्रभाव भगवान पर भी पड रहा है? मूर्तियाँ सगमरमर की हैं, परन्तु अब अपनी सफेद चमक खोकर पीली-पीली-सी लग रही हैं। मुकुट चाँदी का है वह भी अपनी आभा स वचित है। मूर्तियो न लाल सिल्क के वस्त्र पहन रक्खे हैं। साफ दिखाई दे रहा है, सिल्क कई जगह से फट गया है और वस्त्रो के किनारे जडा सफेद गोटा तो एकदम काला-सा पड गया। यही हाल राधा कृष्ण की मूर्तियो का और शिव पार्वती की मूर्तियो का है। यह क्या हो गया प्रभु! तुम्हारी माया स्वय तुम्हारे लिए ही भारी पडने लगी!

पुजारी जी राम सीता की मूर्तियो के आगे पडे छोटे से तख्त पर बैठ गय। ऊचे स्वर मे मत्र पढते हुए, तुलसीदल के साथ गगा जल का प्रसाद देने लगे। रोहित जैसे सोते स जाग गया। जल्दी से जेब से दो रुपये निकालकर पुजारी जी के सामने रखी थाली मे डाल दिये, और सीधे हाथ की हथेली

को बायें हाथ की हथेली पर रखकर गंगाजल लेकर होठों से छुवा लिया।

"कहाँ से पधारे हैं ?" पुजारी जी ने थाली में पड़े दो रुपयों को बड़ी ललक से देखते हुए पूछा।

"दिल्ली से।"

'अच्छा अच्छा।" पुजारी जी ने सर हिलाया।

रोहित की नजर सामने दीवारों पर से फिसलती हुई ऊपर छत तक चली गई, और रोहित सिहरकर एक कदम पीछे हट गया। छत काफी ऊँची थी। लकड़ी की धन्नियों के बीच चपटी इंटों को फसाकर छत बनाई गई थी। कई ईंटें निकल गयी थीं। उनके ऊपर का खाली चूना दिखाई दे रहा था। दो तीन ईंटें और भी निकलने की तैयारी में थीं। एक ईंट तो आधी लटक रही थी, ठीक रोहित के सर के ऊपर, इसी को देखकर रोहित एक कदम पीछे हट गया।

"भय की कोई बात नहीं है। ईश्वर के दरबार में खड़े हैं आप। आज तक किसी को चोट नहीं लगी। पिछले साल वर्षा बहुत हुई, सो छत की कई ईंटें गिर गयीं। दिन में गिरी थीं। भक्तगण यहीं बैठे पूजा कर रहे थे, पर किसी के चोट नहीं लगी। भगवान अपने भक्तों की रक्षा करते हैं।"

"इस आधी निकली इंट को तो किसी लम्बी बल्ली से गिरवा दीजिए। यह तो कभी भी गिर सकती है।" रोहित ने शंका से कहा।

'नहीं गिर सकती।" पुजारी जी ने राम-सीता की मूर्तियों की ओर उँगली से संकेत करते हुए कहा, "जब तक यह नहीं चाहेंगे, तब तक कुछ नहीं हो सकता। रामायण में तुलसीदास जी ने कहा है, भक्तों के रखवारे राम।' भक्त की हर दशा में रक्षा करते हैं श्री राम।" पुजारी जी ने दोनों हाथों को जोड़कर श्रीराम को प्रणाम किया।

रोहित ने भी हाथ जोड़ दिये। अब चलना चाहिए। भक्तों की रक्षा करते हैं भगवान। पर जो भक्त न हो उसका तो नाश होकर ही रहेगा। छत से गिरी एक इंट ही काफी है पतित व्यक्ति के लिए। रोहित एक कदम और पीछे हट गया। फिर भगवान को प्रणाम किया और घूमकर आँगन में आकर अपने जूते पहन लिये। मंदिर में और नहीं ठहरना है। पुजारी जी ने रामायण का प्रसंग छेड़ दिया है। 'हरि अनन्त, हरि कथा

अनन्ता', रामायण की कथा सुनने के मोह मे नही फँसना होगा, नही तो हो सकता है शाम यही हो जाये। अब और नहीं ठहरा जा सकता शेखूपुरा मे।

"अब मैं चलूगा।" रोहित ने अपने बैग को ठीक करते हुए कहा।

"क्यो, इतनी जल्दी क्या है। एक दो दिन और रुक जाते।' विजय के स्वर मे साफ औपचारिकता दिखाई दे रही थी। वह रोहित से आख नही मिला पा रहा था।

"नही अब चलने दो, फिर आयेंगे। हरदोई से चार बजे की गाडी पकड लेंगे।"

"अरे खाना तो खा लो। अभी तो दस ही बजा है। ऐसी भी क्या जल्दी है। बस तो हर आधे घण्टे के बाद जाती है।"

"खाने को रहने दो। बेकार मे परेशान न हो। गर्मी का मौसम है। थोडा हल्के पेट ही ठीक है।" रोहित ने टालना चाहा।

"नहीं नहीं खाना खाकर जाना। पन्द्रह बीस मिनट मे बना जाता है।"

गाँव का एक आदमी आकर कमरे के बाहर खडा हो गया था। धोती-कुर्ता, सर पर टोपी, और पैर मे रबड के जूते पहने हैं। बगल म एक टूटा छाता दबाये है, उसको देखते ही विजय मे नई चेतना आ गई। "यह हमारा बटाईदार है, मैं जरा इससे बात कर लू, तुम बैठो, खाना खाकर जाना।' विजय किसान को लेकर नीचे चला गया।

रोहित न अपना सामान ठीक करना शुरू कर दिया। पहले अटैची ठीक की, फिर बैग ठीक करना शुरू किया। सुबह नहाकर जो कपडे बाहर सुखाये थ, वह सूख गये थे, उन्हें लेने के लिए रोहित कमरे के बाहर निकला।

अचानक रोहित की नजर नीचे आँगन मे चली गई। उसने देखा बीच आँगन में कच्चे फर्श पर विजय अण्डरवियर और बनियाइन पहन, पालथी मारकर बैठा हुआ अपने बटाईदार किसान से बातें कर रहा है। किसान

भी सामने बैठा है, लेकिन उसने अपनी धोती गन्दी होने से बचाने के लिए अपने छाते पर बैठना ठीक समझा। विजय को इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी कि वह जमीन पर बैठा हुआ है और कोई उसे इस हालत में देख भी सकता है। वह अपने में ही मग्न किसान से खेत में पैदा हुए अनाज का हिसाब ले रहा था। क्या समय न पलटा खाया है। इसी आँगन में विजय के बाप दादों ने किसानों को डण्डों से मार-मारकर अधमरा कर दिया, अब उन्हीं किसानों की औलाद के सामने विजय धूल भरी धरती पर बैठा, अन्न के एक एक दाने का पाई की कोशिश कर रहा है। रोहित धूप में सुखाये अपने कपड़े लेकर कमरे में आ गया।

खाने में सभी प्रकार की चीजें थीं। रोहित को फिर संकोच हो आया। यह सब उसके लिए बच्चों के हिस्से से काटकर तैयार किया गया है, इसे गले के नीचे उतारना आसान नहीं है। मगर छोड़ा भी नहीं जा सकता। कुछ न-कुछ तो खाना ही होगा।

चलते समय कमरे के बाहर एक दर्जन से ज्यादा बच्चे इकट्ठा हो गये। बालकिशन के भी तीन बच्चे आ गये, दो-एक इधर उधर के थे। विजय के तो सातों बच्चे उपस्थित थे ही। विजय ने अपने बच्चों को हुकुम दिया, "चाचा के पैर छुओ।"

सातों बच्चों में रोहित के पैर छूने की होड़ लग गई। रोहित का मन भर आया। कैसे भोले बच्चे हैं। भाग्य ने इन्हें बड़े घर में पैदा करके भी अभावों में जीने के लिए बाध्य कर दिया है। किसी तरह बच्चों को अपने पैर छूने से रोहित ने रोका।

रोहित का मन हुआ, विजय के बच्चों को कुछ रुपये दे दे कि 'मिठाई खा लेना।' लेकिन इतने बच्चों के बीच कुछ को रुपये देना ठीक नहीं लगा। दूसरे भी तो रिश्ते में भाई के ही बच्चे हैं, उन्हें न देना अपराध हो जायेगा। और इतने सारे बच्चों को रुपये बाँटने से अपनी यात्रा का बजट गड़बड़ा जायगा। रोहित मन मारकर खामोश हो गया।

"हम पकड़ाय देओ बाबू जी।" किसान ने आगे बढ़कर अटैची उठा ली।

"ठीक है, यह तुम्हें रिक्शा तक छोड़ देगा।" विजय ने कहा।

विजय रोहित को छोडने सडक तक भी नही आया। ऊपर से ही बिदा कर दिया। एक क्षण के लिए रोहित को बुरा लगा, फिर उसने अपने को समझाया, 'विदा उसे किया जाता है जिसके आने से खुशी होती है। जो अचानक आकर बोझ बन जाये, उसे विदा भी क्या किया जाये।'

चौराहे से पहले ही रिक्शा मिल गया। रिक्शे पर अटची रखकर किसान चला गया। रोहित ने रिक्शे वाले से बस अड्डे चलने के लिए कहा।

रिक्शे वाला किस रास्ते से ले जा रहा है, रोहित ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसे बस अड्डा पहुँचना है, फिर वहा से बस लेकर शेखूपुरा से बाहर निकल जाना है। क्या सोचकर शेखूपुरा आया था और क्या हो गया। सोचा था विजय के साथ बैठकर पुरानी बातो को दोहरायगा। कुछ नई बातें सुनेगा। हो सका तो विजय के साथ उसके खेत देखने गाँव भी जायगा। दो चार दिन तो शेखूपुरा मे रहेगा ही। लेकिन क्या मालूम था कि उल्टे पैरो लौटना पडेगा। शेखूपुरा से जुडी सारी यादो को रोहित ने एक ओर झटक दिया। यादो के साथ जीना तकलीफ देता है। बेकार मे अपने को तकलीफ देने से क्या फायदा।

बस के लिए ज्यादा इतजार नही करना पडा। कुछ समय बाद ही हरदोई जाने वाली बस आ गई। रोहित ने खिडकी के पास वाली सीट ले ली।

बस अड्डा पीछे छूट गया। अब खुली सडक आ गई। सडक के दोनो ओर दो चार आम के पेड दिखाई दिये, कभी यह इलाका आमो के लिए प्रसिद्ध था। तरह-तरह की किस्मो के आम होते थे। अब तो आम के पेड उँगलियो पर गिनने लायक रह गये हैं। आम के पेडो की जगह उगाये गये हैं। यूकिलिप्टस के लम्बे-लम्बे पेड। हरित क्रान्ति को उजागर करने के लिए यूकिलिप्टस के पेड हर जगह लगाये जा रहे हैं। एकदम बढते हैं और आसमान को छूने की कोशिश करते है। भले ही यह कददावर पेड धरती की सारी नमी को सोख लेते हैं और अनजाने ही उपजाऊ जमीन को बजर बनाने मे सहायक हो जाते हैं। यह आम की तरह मीठा फल नही देते, और नीम, शीशम की तरह उपयोगी लकडी भी

प्रदान नही करते। इनकी डालें इतनी छितरी और पत्तियाँ इतनी छोटी होती हैं कि इन पर पक्षी अपना घोसला भी नही बना पाते। पर इस सबसे क्या, देखने मे यह सुन्दर लगते हैं, और जो देखने मे सुन्दर लगता है वर्तमान मे उसी की महत्ता है। उसी को आदर देना होगा। यही सीख मिली है आजादी के बाद।

शेखूपुरा भी देखने मे अच्छा लगता है। नई-नई दुकानें, नये-नये साइनबोर्ड, बिजली के जगमगाते लट्टू, उमडती हुई भीड, और भीड मे रग-बिरगे टैरीलीन और टैरीकाट पहने चेहरे सब कुछ देखने मे नया लगता है। रोहित नये को न भी स्वीकारे तो भी क्या फर्क पडता है। नया अपनी सत्ता को खुद मनवा लेगा।

गर्म लू के थपेडे बस की खिडकी से अन्दर आने लगे थे। रोहित ने खिडकी का शीशा खीच दिया। शायद बहुत दिनो से बस की सफाई नही हुई थी। शीशा बहुत गन्दा था, धूल की मोटी परत शीशे पर जम गई थी। बाहर का कुछ भी स्पष्ट दिखाई नही दे रहा था। सब कुछ अस्पष्ट-सा हो गया।

●●●

धर्मेंद्र गुप्त

प्रकाशित कृतिया

नगरपुत्र हसता है	(उपन्यास)
नोन-तेल लकडी	,
खुशबू और पत्तियाँ	(लघु उपन्यास)
सफर दर सफर	,
च द रोमासहीन कहानिया	(कहानी सग्रह)
कथाहीन	,,
तीस पात्रो का ससार	,
दस्तकें और आवाज़ें	,,
याचक तथा अन्य कहानिया	,,
सूत्रधार नाटय सकलन	(सम्पादन)
समकालीन जीवन सन्दर्भ और प्रेमचन्द	,
सघषशील लेखन की भूमिका रहबर	

सम्प्रति—विषयवस्तु त्रमासिक पत्रिका का सम्पादन

सम्पक—अक्षरवाडी २७४ राजधानी एन्क्लेव
रोड नम्बर-४४, शकूरबस्ती, दिल्ली ११००३४